—प्रकाशक—
नाथूराम प्रेमी,
मंत्री, माणिकचन्द्र-जैनग्रन्थमाला
हीराबाग, बम्बई ४

सितम्बर १९५२

—मुद्रक—
लक्ष्मीबाई नारायण चौधरी
निर्णयसागर प्रेस,
२६-२८ कोलभाट स्ट्रीट, बम्बई २

स्वागत

जैनशिलालेखसंग्रहका प्रथम भाग आजसे चौबीस वर्ष पूर्व सन् १९२८ ईस्वीमें प्रकाशित हुआ था। उसके प्राथमिक वक्तव्यमें मैंने यह आशा प्रकट की थी कि यदि पाठकोंने चाहा, और भविष्य अनुकूल रहा तो अन्य शिलालेखोंका दूसरा संग्रह शीघ्र ही पाठकोंको भेंट किया जायगा। पाठकोंने चाहा तो खूब, और माणिकचन्द्र-दिगम्बर-जैनग्रंथमालाके परम उत्साही मंत्री पं० नाथूरामजी प्रेमीकी प्रेरणा भी रही, किन्तु मैं अपनी अन्य साहित्यिक प्रवृत्तियोंके कारण इस कार्यको हाथमें न ले सका। तथापि चित्तमें इस कार्यकी आवश्यकता निरन्तर खटकती रही। अपने साहित्यिक सहयोगी डॉ० आदिनाथजी उपाध्येसे भी इस सम्बन्धमें अनेक बार परामर्श किया किन्तु शिलालेखोंका संग्रह करने करानेकी कोई सुविधा न निकल सकी। अतएव, जब कोई दो वर्ष पूर्व श्रद्धेय प्रेमीजीने मुझसे पूछा कि क्या पं० *विजयमूर्तिजी एम० ए० (दर्शन, संस्कृत) शास्त्राचार्यद्वारा शिला*-लेखसंग्रहका कार्य प्रारम्भ कराया जावे, तब मैंने सहर्ष अपनी सम्मति दे दी। आनन्दकी बात है कि उक्त योजनानुसार जैनशिलालेखसंग्रहका यह द्वितीय भाग छपकर तैयार हो गया और अब पाठकोंके हाथोंमें पहुँच रहा है।

यह बतलानेकी तो अब आवश्यकता नहीं है कि प्राचीन शिलालेखोंका इतिहास-निर्माणके कार्यमें कितना महत्त्वपूर्ण स्थान है। जबसे जैन शिला-लेखोंका प्रथम भाग प्रकाशित हुआ, तबसे गत चौबीस वर्षोंमें जैनधर्म और साहित्यके इतिहाससम्बन्धी लेखोंमें एक विशेष प्रौढता और प्रामाणिकता दृष्टिगोचर होने लगी। यद्यपि वे शिलालेख उससे पूर्व ही प्रकाशित हो चुके थे, किन्तु वह सामग्री अँग्रेजीमें, पुरातत्त्वविभागके बहुमूल्य और बहुधा अप्राप्य प्रकाशनोंमें निहित होनेके कारण साधारण लेखकों तथा पाठकोंको सुलभ नहीं थी। इसीलिये समस्त प्रकाशित शिलालेखोंका सुलभ संग्रह नितान्त आवश्यक है।

जैनशिलालेखसंग्रह प्रथम भागमें पाँच सौ शिलालेख प्रकाशित किये गये थे। वे सब लेख श्रवणबेल्गुल और उसके आसपासके कुछ स्थानोंके ही थे।

अब प्रस्तुत संग्रहमें गेरीनोद्वारा संकलित जैन प्राचीन लेखोंकी सूची (Repertoire D'epigraphie Jaina by A. Guerinot) के क्रमानुसार लेख उपस्थित करनेका प्रयत्न किया गया है। नामोंको मोटे टाइपमें छापने तथा लेखोंका सारांश हिन्दीमें दे देनेकी शैली प्रथम भागके अनुसार यहाँ भी अपनाई गई है। किन्तु खेद है कि प्रत्येक लेखके भीतर पद्योंकी संख्याका क्रमसे अंकन नहीं किया गया, जिससे उनके उल्लेख करनेमें कुछ असुविधा हो सकती है।

इन शिलालेखोंका इतिहासकी दृष्टिसे मूल्य आँकना आवश्यक है। किन्तु अब यह कार्य उचित रीतिसे तभी निष्पन्न किया जा सकता है जब शेष शिलालेखोंके संग्रह भी इसी शैलीसे प्रकाशित हो जावें। अतएव, संग्राहक और प्रकाशकका इस महत्त्वपूर्ण प्रकाशनके लिये अभिनन्दन करते हुए मैं आशा करता हूँ कि वे अपने इस कार्यको गतिशील बनाये रखेंगे और बिना अधिक विलम्बके संग्रहका कार्य पूरा करके लेखकों और पाठकोंकी दीर्घकालीन पिपासाकी पूर्णतः तृप्ति करनेका अनुपम यश प्राप्त करेंगे।

नागपुर महाविद्यालय
नागपुर, ६-३-१९५२

हीरालाल जैन

जैन-शिलालेख-संग्रह

द्वितीय भाग

१

दिल्ली (टोपरा)—प्राकृत।

अशोकके सातवें धर्मशासन-लेखका अन्तिम भाग[1]

[लगभग २४२ ईसवी पूर्व]

[१] धंमवढिया च वाढं वढिसति [।] एताये मे अठाये धंमसावनानि सावापितानि धंमानुसथिनि विविधानि आनपितानि [यथा मे पुलि]सापि वहुने जनसि आयता एते पलियोवदिसंति पि पवियलिसंतिपि [।] लजूका पि वहुकेसु पानसतसहसेसु आयता ते पि मे आनपेता[:] हेवं च हेवं च पलियोवदाय

[२] जनं धंमयुतं [।] देवानं पिये पियदसि हेवं आहा[:] एतमेव मे अनुवेखमाने धंमथंमानि कटानि[,] धंममहामाता कटा[,] धंमसावने] कटे [।] देवानं पिये पियदसि लाजा हेवं आहा[:] मगेसु पि मे निगोहानि लोपापितानि[:] छायोपगानि होसंति पसुमुनिसानं[;] अंबाडिक्या लोपापिता[;] अढकोसिक्यानि पि मे उदुपानानि

[३] खानापितानि[;] निंसिधिया च कालापिता[;] आपानानि मे बहुकानि तत तत कालापितानि पटीभोगाये पसुमुनिसानं [।] लहुके [चु] एस पटीभोगे नाम [।] विविधायाहि सुखायनाया पुलिमेहिपि लाजी

---

1. ए कनिंघम, Corpus inscriptionum indicarum, Vol. I, Inscriptions of Asoka, p. 115, t.

हि ममया च सुखयिते[1] लोके [।] इमं चु धंमानुपटीपंतीअनुपटी-पजंतुति[,] एतदथा मे

[४] एस कटे [।] देवानं पिये पियदसि हेवं आहा[:] धंममहामातापि मे ते वहुविधेसु अठेसु अनुगहिकेसु वियापटा से पवजीतानं चेव गिहियानं च [;] सव[पासं]डेसु पि च वियापटा से [।] संघठसि पि मे कटे इमे वियापटा होहंतिति[;] हेमेव वाभनेसु आजीविकेसु पि मे कटे

[५] इमे वियापटा होहंतिति [।] **निगंठेसु पि मे कटे इमे वियापटा होहंति[;]** नानापासंडेसु पि मे कटे इमे वियापटा होहंतिति [।] पटिविसठं पटीविसठं तेसु तेसु ते ते महामाता [।] धंममहामाता चु मे एतेसु चेव वियापटा सवेसु च अंनेसु पासंडेसु [।] देवानं पिये पियदसि लाजा हेवं आहा[:]

[६] एते च अंने च वहुका मुखा दानविसगसि वियापटा से मम चेव देविनं च[;] सवसि च मे आलोधनसि ते वहुविधेन आ[का]लेन तानि तानि तुठायतनानि पटी [पादयंति] हिद चेव दिसासु च [।] दालकानं पि च मे कटे अंनानं च देविकुमालानं इमे दानविसगेसु वियापटा होहंति ति

[७] धंमपदानठाये धंमानुपटिपतिये [।] एस हि धंमापदाने धंमपटीपति च या इयं दया दाने सचे सोचवे मदवे साधवे च लोकस हेवं वढिसतिति [।] देवानं पिये [पियद] सि लाजा हेवं आहा[;] यानि हि कानि चि ममिया साधवानि कटानि तं लोके अनूपटीपंने तं च अनुविधियंति[;] तेन वढिता च

---

१. सुखीयते Indian Antiquary, Vol. XIII, p. 310, t.

[८] वढिसंति च मातापितुसु सुसुसाया गुलुसु सुसुसाया वयोमहालकानं अनुपटीपतिया बाभनसमनेसु कपनवलाकेसु आव दासभटकेसु संपटीपतिया [।] देवानंपिये [पि]यदसि लाजा हेवं आहा[:] मुनिसानं चु या इयं धंमवढि वढिता दुवेहि येव आकालेहि धंमनियमेन च निझतिया च

[९] तत च लहु से धंमनियमे[,] निझतिया व भुये[।] धंमनियमे च खो एस ये मे इयं कटे इमानि च इमानि जातानि अवधियानि[,] अंनानि पि चु बहु [कानि] धंमनियमानि यानि मे कटानि[।] निझतिया व चु भुये मुनिसानं धंमवढि वढिता अविहिंसाये भुतानं

[१०] अनालंभाये पानानं[।] से एताये अथाये इयं कटे[,] पुतापपोतिके चंदमसुलियिके होतु ति[,] तथा च अनुपटीपजंतु ति[।] हेवं हि अनुपटीपजंतं हिदतपालते आलधे होति[।] **सतविसतिवसाभिसितेन मे इयं धंमलिवि लिखापापितातिं**[।] एतं देवानंपिये आहा[:] इयं

[११] धंमलिवि अत अथि सिलाथंभानि वा सिलाफलकानि वा तत कटविया एन एस चिलठितिके सिया ।

[यह धर्मशासन-लेख अशोकके द्वारा महास्तम्भोंपर लिखाये गये लेखोंमेंसे अन्तिम है। इसको कोई-कोई आठवां धर्मशासन-लेख (Edict) मानते हैं, तो कोई मात्र सातवें धर्मशासन-लेखका ही अन्तिम भाग मानते हैं।

इसमें बताया है कि सम्राट् अशोकने अपने राज्याभिषेकसे २७ वें वर्षमें यह धर्मशासन-लेख लिखाया था। इसमें उसने अपने द्वारा नियोजित धर्ममहामात्योंका उल्लेख किया है। ये धर्ममहामात्य 'संघ' (बौद्धसंघ), आजीवक, ब्राह्मण और निर्ग्रन्थोंकी देखरेख रखनेके लिये

नियुक्त किये गये थे। यहां 'निर्ग्रन्थ' शब्दसे जैनोंका तात्पर्य है। इसपरसे मालूम पड़ता है कि उस समयके अनेक अग्रेसर धर्मोंमें जैनधर्म भी एक था।]

२

हाथीगुंफाका शिलालेख—प्राकृत।
जैन-सम्राट् खारवेलका इतिहास।[1]
[मौर्यकाल १६५ वाँ वर्ष]

[१] नमो अरहंतानं [।] नमो सवसिधानं [।] ऐरेन महाराजेन **महामेघवाहनेन** चेतराजवस-वधनेन पसथसुभलखनेन चतुरंतल थुन-गुनोपहितेन कलिंगाधिपतिना सिरि-खारवेलेन।

[२]. पन्दरसवसानि सिरि-कडार-सरीर-वता कीडिता कुमारकीडिका [।] ततो लेखरूपगणना-ववहार-विधिविसारदेन संवविजावदातेन नववसानि योवरजं पसासितं [।] संपुण-चतुवीसति-वसो तदानि वधमानसेसयोवे(=व) नाभिविजयो ततिये

(३) कलिंगराजवंसे पुरिसयुगे **महारजाभिसेचनं** पापुनाति [।] अभिसितमतो च पधमे वसे वात-विहत-गोपुर-पाकार-निवेसनं पटिसंखारयति [।] कलिंनगरि [।] खबीरं इसि-तालं तडाग-पाडियो च वन्धापयति [।] सवुयान-पतिसंठपनं च

[४] कारयति [।] पनतीसाहि सतसहसेहि पकतियो च रंजयति [।] दुतिये च वसे अचितयिता सातकणिं पछिमदिसं हय-गज-नर-रध-बहुलं दंडं पठापयति [।] कण्हवेनां गताय च सेनाय वितापति[2] **मुसिकनगरं** [।] ततिये पुन वसे

---

१ जैनहितैषी, भाग १५, अङ्क ५, मार्च १९२१, पृष्ठ १३९–१४५ से उद्धृत। २ वितापितं इति वा।

[५] गंधव-वेदबुधो दंत-नत-गीत-वादितसंदसनाहि उसव-समाज-कारापनाहि च कीडापयति नगरिं [।] तथा चवुथे वसे विजाधराधिवासं अहत-पुवं कालिंगपुवराजनिवेसितं·········वितध-मकुटे सविलमढिते च निखित-छत-

[६] भिंगारे हित-रतन-सापतेये **सव-रठिक भोजके** पादे वंदापयति [।] पंचमे च दानी वसे **नंदराज** ति-वससत-ओघाटितं तनसुलियवाटा पनाडिं नगरं पवेस[य]ति [।] सो [पि च वसे] छडम्भिसितो च राजसुय [?] सन्दसयंतो सवकर-वणं

[७] अनुगह–अनेकानि सतसहसानि विसजति पोरं जानपदं[।] सतमं च वसं पसासतो वजिरघरवं **धुसि** ति घरिनी समतुक-पद-पुंनासकुमार[।]············[।] अठमे च वसे महतिसेनाय मह[तभित्ति] गोरधगिरिं

[८] घातापयिता **राजगहं** उपपीडापयति[।] एतिना च कंम पदान-पनादेन संवितसेन-वाहिनीं विपमुंचितुं मधुरां अपयातो येव नरिंदो [नाम]············[मो?] यछति [विछ]·············पलवभरे

[९] कपरुखे हय-गज-रथ-सह-यंते सव-घरावास-परिवसने स अगिणठिये[।] सवगहनं च कारयितुं वम्हणानं जाति-पंतिं परिहारं ददाति[।] अरहत·············व·············न·········गिय

[१०]····[क] [ि] मानेहि रा[ज] संनिवासं महाविजयं पासादं कारापयति अठतिसाय सत-सहसेहि[।] दसमे च वसे महधीत' भिसमयो भरधवस-पथानं महिजयनं····ति कारापयति···············[निरितय] उया तानं च मणि-रतना[नि] उपलभते ।

[११]·······मंडे च पुव-राजनिवेसित—पीथुडग-द[ल]भ-नंगले नेकासयति जनपदभावनं च तेरस-वस-सत-केतुभद-तित' मरदेह-संघातं[।] वारसमे च वसे···········सेहि वितासयति उतरापथराजानो

[१२]···········मगधानं च विपुलं भयं जनेतो हथिसु गंगाय पाययति[।] मागधं च राजानं **वहसतिमितं**[१] पादे वंदापति[।] **नंदराज**-नीतं च **कालिंग-जिन-संनिवेसं**···········गहरतनान पडिहारेहि **अंगमागध**-वसुं च नेयाति [।]

[१३]···········त जठर-लिखिल-वरानि सिहिरानि नीवेसयति सत-विसिकनं परिहारेन[।] अभुतमछरियं च हथि-नावन परीपुरं उ [प-]देणह हयहथी-रतना-[मा]निकं **पंडराजा** एदानि अनेकानि मुत-मणिरतनानि अहरापयति इध सत-[स] [।]

[१४]······सिनो वसीकरोति [।] तेरसमे च वसे सुपवत-विज-यिचके कुमारीपवते अरहिते य[।] प-खिम-व्यसंताहि काय्यनिसीदीयाय यापञावकेहि राजमितिनि चिनवतानि वोसासितानि [।] पूजानि कत-उ-वासा **खारवेल-सिरिना** जीवदेव-सिरि-कल्पं राखिता [।]

[१५]···········[ता] सु कतं समण-सुविहितानं (नुं ?) च सातदिसानं (नुं ?) ञातानं तपसइसिनं सघायनं (नुं ?) [;] अरहतनिसीदिया समीपे पभारे वराकर-समुथापिताहि अनेक-योजना-हिताहि·······सिलाहि सिंहपथ-रानियं[२] धुसिय निसयानि

[१६]·······पटालिको चतरे च वेडूरियगभे थंभे पतिठापयति [,] पानतरिया सतसहसेहि [।] **मुरिय**-कालं वोछिंनं (नें ?) च चोयठि-

१ वहसतिमित्रं इति । २ रानिस वा इति हरनन्दनपाण्डेयाः ।

अगस-निकंतारियं उपादायति [।] खेमराजा स वढराजा स भिखुराजा धमराजा पसंतो सुनंतो अनुभवंतो कलाणानि

[१७]………गुण-विसेस-कुसलो सवपासंडपूजको सव-देवायतन-संकारकारको [अ]पति-हत-चकि-वाहिनि-बलो चकधुर-गुतचको पवत-चको राजसि-वस-कुल-विनिश्रितो महा-विजयो राजा खारवेल-सिरि

अनुवाद—[१] अर्हतोंको नमस्कार। सर्व सिद्धोंको नमस्कार। ऐल-महाराज महामेघवाहन, चैत्रराजवंशवर्धन, प्रशस्तशुभलक्षणसम्पन्न, अखिल-देशस्तम्भ, कलिङ्गाधिपति श्री खारवेलने

[२] पन्द्रह वर्षतक श्रीसम्पन्न और कडार (गन्दुमी) रंगवाले शरीरसे कुमार-क्रीड़ाएँ कीं। बादमें लेख, रूपगणना, व्यवहार-विधिमें उत्तम योग्यता प्राप्त करके और समस्त विद्याओंमें प्रवीण होकर उसने नौ वर्षोंतक युवराजकी भाँति शासन किया।

जब वह पूरा चौबीस वर्षका हो चुका तब उसने, जिसका शेष यौवन विजयोंसे उत्तरोत्तर वृद्धिगत हुआ,—तृतीय

[३] कलिंगराजवंशमें, एक पुरुषयुगके लिये महाराज्याभिषेक पाया। अपने अभिषेकके पहले ही वर्षमें उसने वातविहत (तूफानके बिगाड़े हुए) गोपुर (फाटक), प्राकार (चहारदीवारी) और भवनोंका जीर्णोद्धार कराया; कलिङ्ग नगरीके फव्वारेके कुण्ड, इषितल्ल (?) और तड़ागोंके बाँधोंको बँधवाया; समस्त उद्यानोंका प्रतिसंस्थापन कराया और पैंतीस लक्ष प्रजाको सन्तुष्ट किया।

[४] दूसरे वर्षमें, सातकर्णिकी चिन्ता न करके उसने पश्चिम देशको बहुत-से हाथी, घोड़ों, मनुष्यों और रथोंकी एक बड़ी सेना भेजी। कृष्ण-वेण नदीपर सेना पहुँचते ही, उसने उसके द्वारा मूषिक-नगरको सन्तापित किया। तीसरे वर्षमें फिर

[५] उस गन्धर्व-वेदमें निपुणमतिने दंप, नृत्य, गीत, वाद्य, सन्दर्शन, उत्सव और समाजके द्वारा नगरीका मनोरञ्जन किया।

और चौथे वर्षमें, विद्याधर-निवासोंको, जो पहले कभी नष्ट नहीं हुए थे और जो कलिङ्गके पूर्व राजाओंके निर्माण किये हुए थे······उनके मुकुटोंको व्यर्थ करके और उनके लोहेके टोपोंके दो खण्ड करके और उनके छत्र,

[६] और भृंगारों (सुवर्णकलशों) को नष्ट करके तथा गिराकर, और उनके समस्त बहुमूल्य पदार्थों तथा रत्नोंका हरण करके, उसने समस्त राष्ट्रिकों और भोजकोंसे अपने चरणोंकी वन्दना कराई।

इसके बाद पाँचवें वर्षमें उसने तनसुलिय मार्गसे नगरीमें उस प्रणाली (नहर) का प्रवेश किया जिसको नन्दराजने तीन सौ वर्ष पहले खुदवाया था।

छठे वर्षमें उसने राजसूय-यज्ञ करके सब करोंको क्षमा कर दिया,

[७] पौर[1] और जानपद (संस्थाओं) पर अनेक शतसहस्र अनुग्रह वितरण किये।

सातवें वर्ष राज्य करते हुए, वज्र घरानेकी धृष्टि (प्राकृत=धिसि) नाम्नी गृहिणीने मातृक पदको पूर्ण करके सुकुमार [?]···(।)

आठवें वर्षमें उसने (खारवेलने) बड़ी दीवारवाले गोरथगिरिपर एक बड़ी सेनाके द्वारा

[८] आक्रमण करके राजगृहको घेर लिया। पराक्रमके कार्योंके इस समाचारके कारण नरेन्द्र [नाम]···अपनी घिरी हुई सेनाको छुड़ानेके लिये मथुराको चला गया।

(नवें वर्षमें) उसने दिये······पल्लवयुक्त

[९] कल्पवृक्ष, सारथीसहित हय-गज-रथ और सबको अग्निवेदिका-सहित गृह, आवास और परिवसन। सब दानको ग्रहण कराये जानेके लिये उसने ब्राह्मणोंकी जातिपंक्ति (जातीय संस्थाओं) को भूमि प्रदान की।

अर्हत्······व······न······गिया (?)

---

१ राजधानीकी संस्थाको 'पौर' और ग्रामोंकी संस्थाको 'जानपद' कहते थे। वर्तमान समयमें हम इन्हें 'म्युनिसिपल' और 'डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड'के नामसे पुकारते हैं।

[१०] [क] [ि] मानैः (?) उसने महाविजय-प्रासाद नामक राजस-निवास, अड़तीस सहस्रकी लागतका बनवाया।

दसवें वर्षमें उसने पवित्र विधानोंद्वारा युद्धकी तैयारी करके देश जीतनेकी इच्छासे, भारतवर्ष (उत्तरी भारत) को प्रस्थान किया।··· क्लेश (?) से रहित·······उसने आक्रमण किये गये लोगोंके मणि और रत्नोंको पाया।

[११] (ग्यारहवें वर्षमें) पूर्व राजाओंके बनवाये हुए मण्डपमें, जिसके पहिये और जिसकी लकड़ी मोटी, ऊंची और विशाल थी, जनपदसे प्रतिष्ठित तेरहवें वर्ष पूर्वमें विद्यमान केतुभद्रकी तिक्त (नीम) काष्ठकी अमर मूर्तिको उसने उत्सवसे निकाला।

बारहवें वर्षमें·······उसने उत्तरापथ (उत्तरी पञ्जाब और सीमान्त प्रदेश) के राजाओंमें त्रास उत्पन्न किया।

[१२]········और मगधके निवासियोंमें विपुल भय उत्पन्न करते हुए उसने अपने हाथियोंको गंगा पार कराया और मगधके राजा बृहस्पतिमित्रसे अपने चरणोंकी वन्दना कराई···········(वह) कलिंग-जिनकी मूर्तिको जिसे नन्दराज ले गया था, घर लौटा लाया और अंग और मगधकी अमूल्य वस्तुओंको भी ले आया।

[१३] उसने·········जठरोल्लिखित (जिनके भीतर लेख खुदे हैं) उत्तम शिखर, सौ कारीगरोंको भूमि प्रदान करके, बनवाये और यह बड़े आश्चर्यकी बात है कि वह पाण्डवराजसे हस्ति नावोंमें भरा कर श्रेष्ठ हय, हस्ति, माणिक और बहुतसे मुक्ता और रत्न नजरानेमें लाया।

[१४] उसने········वशमें किया।

फिर तेरहवें वर्षमें व्रत पूरा होनेपर (खारवेलने) उन याप-ज्ञापकोंको जो पूज्य कुमारी पर्वतपर, जहाँ जिनका चक्र पूर्णरूपसे स्थापित है, समाधियों-पर याप और क्षेमकी क्रियाओंमें प्रवृत्त थे; राजभृतियोंको वितरण किया। पूजा और अन्य उपासक कृत्योंके क्रमको श्रीजीवदेवकी भाँति खारवेलने प्रचलित रखा।

[१५] सुविहित श्रमणोंके निमित्त शास्त्र-नेत्रके धारकों, ज्ञानियों और तपोबलसे पूर्ण ऋषियोंके लिये (उसके द्वारा) एक संवायन (एकत्र होनेका भवन) बनाया गया । अर्हत्की समाधि (निषद्या) के निकट, पहाड़की ढालपर, बहुत योजनोंसे लाये हुए, और सुन्दर खानोंसे निकाले हुए पत्थरोंसे, अपनी सिंहप्रस्थी रानी 'धृष्टी' के निमित्त विश्रामागार—

[१६] और उसने पाटालिकाओंमें रत्न-जटित स्तम्भोंको पचहत्तर लाख पणों (मुद्राओं) के व्ययसे प्रतिष्ठापित किया । वह (इस समय) मुरिय कालके १६४ वें वर्षको पूर्ण करता है ।

वह क्षेमराज, वर्द्धराज, भिक्षुराज और धर्मराज है और कल्याणको देखता रहा है, सुनता रहा है और अनुभव करता रहा है ।

[१७] गुणविशेष-कुशल, सर्व मतोंकी पूजा (सन्मान) करनेवाला, सर्व देवालयोंका संस्कार करानेवाला, जिसके रथ और जिसकी सेनाको कभी कोई रोक न सका, जिसका चक्र (सेना) चक्रधुर (सेना-पति) के द्वारा सुरक्षित रहता है, जिसका चक्र प्रवृत्त है और जो राजर्षिवंश-कुलमें उत्पन्न हुआ है, ऐसा महाविजयी राजा श्रीखारवेल है ।

इस शिलालेखकी प्रसिद्ध घटनाओंका तिथिपत्र—

बी. सी. (ईसाके पूर्व)

,, १४६० (लगभग)	... केतुभद्र
,, ...४६० (लगभग)	... कलिंगमें नन्दशासन
,, [२२०	... अशोककी मृत्यु]
,, [२२० (लगभग)	... कलिंगके तृतीय-राजवंशका स्थापन]
,, १९७ ...	... खारवेलका जन्म
,, [१८८ ...	... मौर्यवंशका अन्त और पुष्यमित्रका राज्य प्राप्त करना]
,, १८२ ...	... खारवेलका युवराज होना
,, [१८० (लगभग	... सातकर्णि प्रथमका राज्य-आरम्भ]

,, १७३	... ...	खारवेलका राज्याभिषेक
,, १७२	... ...	मूषिक-नगरपर आक्रमण
,, १६९	... ...	राष्ट्रिकों और भोजकोंका पराजय
,, १६७	... ...	राजसूय-यज्ञ
,, १६५	... ...	मगधपर प्रथम वार आक्रमण
,, १६१	... ...	उत्तरापथ और मगधपर आक्रमण, पाण्डवराजसे अदेय (नजराने) की प्राप्ति
,, १६०	... ...	शिलालेखकी तिथि

३

वैकुण्ठ (स्वर्गपुरी) गुफा उदयगिरि—प्राकृत।

[लगभग १६५ मौर्यकाल]

अरहन्तपसादनं कलिंग····य····नानं लेनकाडतं रजिनोलस····
हेथिसहसं पनोतसय····कलिंग····वेलस अगमहि पिडकाडं[1]

[इस शिलालेखमें अर्हन्तोंकी कृपाको प्राप्त गुहानिर्माण (Excavation) बताया गया है। इस लेखका शेषभाग इतना टूटा हुआ है कि वह पढ़नेमें नहीं आसकता। वैकुण्ठ गुफा, जिसके नामसे यह शिलालेख प्रसिद्ध है, राजा ललाकके द्वारा अर्हन्तों और कलिंगके श्रमणोंके लाभ या उपयोगके लिये बनाई गई थी।]

[JASB, VI, p. 1074]

४

मथुरा—प्राकृत।

[विना कालनिर्देशका] लेकिन करीब १५० ई० पूर्वका [बूल्हर]-

१ पितकड in JASB, vol VI, p. 1074.

समनस माहरखितास आंतेवासिस वछीपुत्रस सावकास उतरदासक[ा] स पासादोतोरनं [॥]

अनुवाद—माहरखित (माघरक्षित) के शिष्य, वछी (वात्सी माता) के पुत्र उतरदासक (उत्तरदासक) श्रावकका (दान) यह मन्दिरका तोरन(ण) है।

[El, II, n° XIV, n° 1.]

५

मथुरा—प्राकृत।

[महाक्षत्रप शोडाशके ४२ वें (?) वर्षका]

१. नम अरहतो वर्धमानस।

२. स्व[ा]मिस महक्षत्रपस शोडासस सवत्सरे ४० (?) २ हेमंतमासे २ दिवसे ९ हरितिपुत्रस पालस भयाये समसाविकाये[1]

३. कोछिये अमोहिनिये सहा पुत्रेहि पालघोषेन पोठघोषेन धनघोषेन आयवती प्रतिथापिता प्राय—[भ]—

४. आर्यवती अरहतपुजाये [॥]

अनुवाद—अर्हंत् वर्धमानको नमस्कार हो। स्वामी महाक्षत्रप शोडासके ४२ (?) वें वर्षकी शीतऋतुके दूसरे महीनेके नौवें दिन, हरिति (हरिती या हारिती माता) के पुत्र पालकी स्त्री, तथा श्रमणोंकी श्राविका, कोछि (कौत्सी) अमोहिनि (अमोहिनी) के द्वारा अपने पुत्रों पालघोष, पोठघोष, (प्रोष्ठघोष) और धनघोषके साथ आयवती (आर्यवती) की स्थापना की गई थी।

[El, II, n° XIV, n° 2]

६

पभोसा (अलाहाबादके पास)—संस्कृत।

[द्वितीय या प्रथम ईसवी पूर्व (फ्यूरर)]

---

[1] पढ़ो 'समनसाविकाये'।

१. राज्ञो गोपालीपुत्रस

२. वहसतिमित्रस

३. मातुलेन गोपालीया[1]

४. वैहिदरीपुत्रेन [आसा]

५. आसाढसेनेन लेनं

६. कारितं [उदाकस][2] दस—

७. मे सवछरे कश्शपीयानं अरहं—

८. [ता] न े – ी – ि – – – ो [॥]

अनुवाद—गोपालीके पुत्र राजा वहसतिमित्र (बृहस्पतिमित्र) के मामा, तथा गोपाली वैहिदरी (अर्थात् वैहिदर-राजकन्या) के पुत्र आसाढसेनने कश्शपीय अरहंतोंके......दसवें वर्षमें एक गुफाका निर्माण कराया।

[EI, II, p. 242.]

७

पभोसा (प्रभात)—प्राकृत।

[द्वितीय या प्रथम शताब्दि ई. पू.]

१. अधियछात्रा राञो शोनकायनपुत्रस्य वंगपालस्य

२. पुत्रस्य राञो तेवणीपुत्रस्य भागवतस्य पुत्रेण

३. वैहिदरीपुत्रेण आषाढसेनेन कारितं [॥]

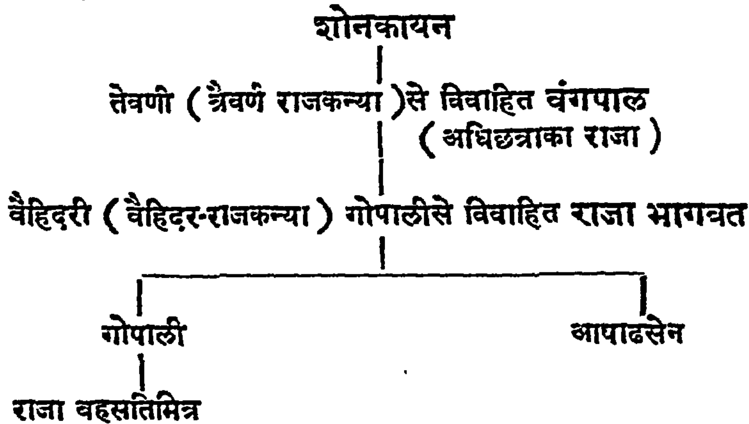
अनुवाद—अधिछत्राके राजा शोनकायन (शौनकायन) के पुत्र राजा वंगपालके पुत्र (और) तेवणी (अर्थात् त्रैवर्ण-राजकन्या) के पुत्र राजा भागवतके पुत्र (तथा) वैहिदरी (अर्थात् वैहिदर-राजकन्या) के पुत्र आषाढसेनने बनवाई।

[नोट—शुङ्गकालके अक्षरोंसे मिलने-जुलनेके कारण दोनों शिलालेखोंका काल विश्वासके साथ द्वितीय या प्रथम शताब्दि ई० पूर्व निश्चित किया

---

१ संभवतः 'गोपालिया'। २ सभी अक्षर संशयापन्न हैं।

जा सकता है। खास ऐतिहासिक चीज जो यहां अङ्कित करनेकी है वह अधिछत्राके प्राचीन राजाओंकी वंशावलि है। अधिछत्रा किसी समय प्रतापी उत्तर पाञ्चालके राजाओंकी राजधानी थी। वंशावली इस प्रकार है:—



वहसतिमित्र कहांका राजा था और उसके पिताका नाम क्या था, यह नहीं बताया गया है। लेकिन, ए० फ्यूरर की सम्मतिमें हम उसे कौशाम्बीका राजा मान सकते हैं, क्योंकि वह (कौशाम्बी) प्रभास (पभोसा) के निकट है तथा बहुत-से उसके (वहसतिमित्रके) सिक्के कौशाम्बीमें मिले हैं।

[El, II, n° XIX, n° 2 (p. 243.)]

८

मथुरा—प्राकृत।

[विना कालनिर्देशका]

१. नमो आरहतो वधमानस दण्डाये गणिका—

२. ये लेणशोभिकाये धितु शमणसाविकाये

३. नादाये गणिकाये वासये आरहता देविकुला

४. आयगसभा प्रपा शीलापटा पतिष्ठापितं निगमा—

५. ना अरहतायतने स [ह]ा मातरे भगिनिये धितरे पुत्रेण

६. सविन च परिजनेन अरहतपुजाये।

अनुवाद—अर्हत् वर्धमानको नमस्कार हो। श्रमणोंकी उपासिका (श्राविका) गणिका नादा, गणिका दन्दाकी बेटी वासा, लेणशोभिकाने अर्हन्तोंकी पूजाके लिये व्यापरियोंके अर्हत्मन्दिरमें अपनी माँ, अपनी बहिन, अपनी पुत्री, अपने लड़केके साथ और अपने सारे परिजनोंके साथ मिलकर एक वेदी, एक पूजागृह, एक कुण्ड और पाषाणासन बनवाये।

[I. A., XXXIII, p. 152-153.]

९

मथुरा—प्राकृत।

(कालनिर्देश नहीं दिया है, किन्तु जे. एफ. फ्लीटके अनुसार लगभग १४-१३ ई० पूर्वका होना चाहिये)

१. [न] मो अरहतो वर्धमानस्य गोतिपुत्रस पोठयशक-

२. कालवाळस

३. [भार्याये] कोशिकिये शिमित्राये[1] अयागपटो प्रि [प्रतिष्ठापितो]

अनुवाद—वर्धमान अर्हन्तको नमस्कार हो। गोतिपुत्र (गौतीपुत्र) की स्त्री कौशिककुलोद्भूत शिवमित्राने एक अयागपट स्थापित किया। गोतिपुत्र पोठय और शक लोगोंके लिये काला सर्प (कालवाल) था।

[EI, I, n° XLIV, n° 33]

१०

मथुरा—प्राकृत।

[बिना कालनिर्देशका सम्भवतः १४-१३ ई० पूर्व]

१. मा अरहतपूजा[ये]

२. गोतीपुत्रस ईंद्रपा[ल]....

---

१ इसकी जगह 'शिवमित्राये' पढ़ना चाहिये (J. F Fleet)।

अनुवाद—गोती (गौप्ती माता) के पुत्र इद्रपाल (इन्द्रपाल) के…… ……अर्हन्तोंकी पूजाके लिये…………प्रतिमा……

[El, II, n° XIV, n° 9.]

११

गिरनारः—संस्कृत।

[विक्रमसंवत् ५८]

हुमदके पवित्र स्थानके आङ्गनमें वृक्षके नीचे एक चौकोर चबूतरा है। उसके किनारेपर निम्नलिखित लिखा हुआ है:—

सं० ५८ वर्षे चैत्र वदी २

सोमे धारागञ्जे

पं० नेमिचन्दशिष्य

पंचाणचंदमूर्ति

अनुवाद—संवत ५८ के वर्षमें, सोमवार, चैत्र वदी २ को, धारागञ्जमें नेमिचन्द्रके शिष्य पंचाणचंदकी मूर्ति।

[ASI, XVI, p. 357, n° 20]

१२

मथुरा—प्राकृत।

(विना कालनिर्देशका)

१. भदंतजयसेनस्य आंतेवासिनीये

२. धामघोषाये दानो पासादो [॥]

अनुवाद—भदन्त जयसेनकी शिष्या धमघोषा (धर्मघोषा) के दानस्वरूप यह मन्दिर है।"

[El, II, n° XIV, n° 4]

१३

मथुरा—प्राकृत।

भगवा नेमेसो भग— —

—"भगवान नेमेस (नैगमेष), भगवान…

[El, II, n° XIV, n° 6]

१४

मथुरा—प्राकृत।

[बिना कालनिर्देशका]

१. ना अर्हंतानं[1] श्रमणश्राविका[ये]

२.....लहस्तिनीये तोरणं प्रति [ष्ठापि][2]

३. सह माता पितिहि सह

सश्रू—शशुरेण

अनुवाद—अर्हन्तोंको नमस्कार। अपने माता पिता और सास-ससुरके साथ साधुओंकी एक शिष्या···लहस्तिनी (बलहस्तिनी), के हुक्मसे एक तोरण खड़ा किया गया।

[ऐसा मालूम पड़ता है कि उस समय माता-पिता और सास-ससुरके साथ कोई धार्मिक कार्य करनेसे, उनको भी पुण्यप्राप्तिमें साझीदार समझा जाता था।]

[EI, I, XLIII, n° 17]

१५

मथुरा—प्राकृत।

[बिना कालनिर्देशका]

१. अ. नमो अरहंतानं फगुयशस

२. अ. नतकस भयाये शिवयशा—

३. अ. – –ि – –ा——ा–काये

१. ब. आयागपटो कारितो

२. ब. अरहतपुजाये [।।]

---

१ 'नमो अरहंतानं' पढ़ना चाहिये। २. 'प्रतिष्ठापितं' पढ़ो। संभवतः पहली और दूसरी पंक्तिके अन्तमें और अधिक अक्षर टूटे हुए मालूम पड़ते हैं।

अनुवाद—अर्हन्तोंको नमस्कार! फगुयश (फल्गुयशस्) नर्तककी पत्नी शिवयशा (शिवयशस्) के द्वारा अर्हन्तोंकी पूजाके लिये एक आयागपट बनवाया गया।

[EI, II, n° XIV, n° 5]

१६

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[विना कालनिर्देशका]

नमो अरहतो महाविरस। माथुरक-लवाडस[ा]-भयाये-त्र.... ताये [आयागपटो] [॥]

अनुवाद—महावीर अर्हत्को नमस्कार। मथुरानिवासी-लवाड (?) की पत्नी—ि ताके [दानस्वरूप] यह आयागपट है।

[EI, II, n° XIV, n° 8]

१७

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्ककाल ?] वर्ष ४

अ. सिद्धं स ४ ग्रि १ दि २० वारणातो गणातो अर्य्यहाट्ट-कियातो कुलतो वजणगरित [ो शा]--

ब. पुश्यमित्रस्य शिशिनि साथिसहाये शिशिनि सिहमित्रस्य सढचरि ---

स. दाति सहा ग्रहचेटेन ग्रहदासेन --

अनुवाद—सिद्धि हो। चतुर्थ वर्षके ग्रीष्म ऋतुके १ ले महीनेके २० वें दिन, वारणगण, अर्य हाट्टकिय ('आर्य हाट्टकीय) कुल, वजणगरी (वज्र-नगरी) शाखाके --- पुष्यमित्रकी शिष्या, साथिसिहा (षष्ठिसिंहा) की शिष्या, सिहमित्र (सिंहमित्र) की सढचरी (श्राद्धचरी)...।

[EI, II, n° XIV, n° 11]

१८

मथुरा—प्राकृत—भग्न ।

[हुविष्ककाल ?] वर्ष ५

····स्य व ५ गृ ४ दि ५ कोट्टिया················

त [ो] शाखात [ो] वाचकस्य अर्य्य····

अनुवाद—···के ५ वें वर्षकी ग्रीष्म ऋतुके चौथे महीनेके ५ वें दिन, ···········कोट्टिय (गण)······शाखाके वाचक अर्य्य···(आर्य)···

[EI, II, n° XIV, n° 12]

१९

मथुरा—प्राकृत ।

[कनिष्क सं० ५]

अ. १.····[1] दे [व] पुत्रस्य क[नि]ष्कस्य सं ५ हे १ दि १ एतस्य पूर्व्व [ा] यं कोट्टियातो गणातो ब्रह्मदासिका [तो]

२. [कु]लातो [उ]चेनागरितो शाखातो सेथि–ह–स्य ि– ि– ि– सेनस्य सहचरिखुडाये दे [व]—

ब. १. पालस्य धि [त]········

२. वधमानस्य प्रति[मा] ॥

अनुवाद—देवपुत्र कनिष्कके ५ वें वर्षकी हेमन्त ऋतुके १ ले महीनेके १ ले दिन, कोट्टियगण, ब्रह्मदासिका कुल और उच्चनागरी शाखाकी खुदा (क्षुद्रा) ने वर्धमानकी प्रतिमा समर्पित की । यह क्षुद्रा श्रेष्ठी······ सेनकी पत्नी और देव·····पालकी पुत्री थी ।

[EI, I, XLIII, n° 1]

---

१ 'सिद्धं' की पूर्ति करो ।

२०

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[?] वर्ष ५

अ. १. सिद्ध[म्] स ५ हे १ दि १० २ अस्य[ा] पूर्व्व[ा] ये कोट्टि[याती]।

२. [ग] णातो व्रह्मदासिकातो उच[ा] ना (क) रितो [शाखातो]

ब. १. श्र[ि] गृहातो स[—भोगातो·······················।

२.············स निड(?)

स. १.·······ि वोधिलाभे ए वासुदेवा पुत्रि·······················

२.····सर्व-सत्[त्वा] न[म्] ह[ि]त—सुख[ा] ये।

अनुवाद—सिद्धि हो। वर्ष ५, हेमन्तका पहिला महिना, १२ वाँ दिन। इस दिन कोट्टिय गण, व्रह्मदासिक (कुल), उचेनाकरी (उच्चानागरी) शाखा, (श्रीगृह) सम्भोग·············के···········(प्रार्थना पर)·········सब जीवोंके हित और सुखके लिये········।

[IA, XXXIII, p. 36–37, n° 5]

२१

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[?] वर्ष ५

·········तो पतिव······व्रह्मजाति····स ५ हे ४ दि २० अस्य पूर्व्वाये कु महिलनस्य शिष्य अर्य्यगरिकतो

[यह शिलालेख अर्य्य गरिकके किसी दानका उल्लेख करता है। गरिक महिलनके शिष्य थे। यह दान सं० ५ के वर्षमें, शीतऋतुके चौथे महीनेके २० वें दिन किया गया।]

[A Cunningham, Reports III, p. 31 n° 3]

२२

मथुरा—प्राकृत ।

[विना कालनिर्देशका]

अ. १. सिद्ध को[ट्टि] यतो गणतो उचेन—
२. गरितो शखतो ब्रम्हा(ह्मा)दासिअतो
३. कुलतो शिरिग्रिहतो संभोकतो
४. अय्य जेष्टहस्तिस्य शिष्यो अ [र्य्यमि] [हि] लो]

ब. १. तस्य शिष्य [ो] अर्य्यक्षेर
२. [को] वाचको तस्य निर्वत—
३. न वर [ण] हस्ति [स्य]

स. १. [च] देवियच धित जय—
२. देवस्य वधु मोपिनिये
३. वधु कुटस्य कसुथस्य

द. १. धम्रप [ति] ह स्थिरए
२. दन शवदोभद्रिक
३. सर्व्वसत्वन हितसुखये

[EI, II, n° XIV, n° 37]

अनुवाद—कोट्टिय गण, उचेनगरी (उच्चनागरी) शाखा, (और) ब्रह्मदासिअ (ब्रह्मदासिक) कुल, शिरिग्रह संभोगके अय्य जेष्टहस्ति (ज्येष्ठहस्तिन्) के शिष्य अर्य्य मिहिल (आर्य मिहिर) थे; उनके शिष्य वाचक अर्य्य क्षेरक (आर्य क्षैरक ?) थे; उनके कहनेसे वरणहस्ती और देवी, दोनोंकी पुत्री, जयदेवकी वहू तथा मोपिनीकी वहू, कुट कसुथकी धर्मपत्नी स्थिराके दानमें, सर्व जीवोंके कल्याण और सुखके लिये, सर्वतोभद्रिका प्रतिमा दी गई ।

२३

मथुरा—प्राकृत।

[विना कालनिर्देशका]

अ. १. सिद्धम् ॥ कोट्टियातो गणातो ब्रह्मदासिकात[ो] कुलातो

२. उ[च्चे]नागरितो शाखातो—रिनातो सं[भ]ो[गातो] अ [र्य्य]-

ब. १. जेष्टहस्ति[स्य] शि[ष्यो] अर्य्यमहलो अर्य्यजेष्ट[हस्तिस] [शिशो] अर्य्य[गा]ढक [ो] [त] स्य शिशिनि [अर्य्य-]

२. शामये निर्वतना। उ[स]····प्रतिमा वर्मये घीतु [गुल्हा] ये जयदासस्य कुटुंविनिये दानं

अनुवाद—सफलता प्राप्त हो। अर्य्य (आर्य) ज्येष्ठहस्तिके शिष्य अर्य्य महल थे। वे कोट्टिय गण, ब्रह्मदासिक कुल, उच्चनागरी शाखा और··· रिन संभोगके थे। ज्येष्ठहस्तिके एक और शिष्य आर्य गाढक थे। उनकी शिष्या शामाके कहनेसे गुल्हाने, जो कि वर्माकी पुत्री और जयदासकी पत्नी थी, एक ऋषभदेवकी प्रतिमा समर्पित की।

[EI, 1, XLIII, n° 14]

२४

मथुरा—प्राकृत।

[कनिष्क सं० ७]

१. [सिद्धम् ॥] महाराजस्य राजातिरास्य देवपुत्रस्य षाहि-क्रणिष्क्रस्य सं० ७ हे १ दि १० ५ एतस्य पूर्व्वायां अर्य्यो-देहिकियातो

२. गणातो अर्य्यनागभुतिकियातो कुलातो गणिस्य अर्य्यबुद्ध-शिरिस्य शिष्यो वाचको अर्य्यस[न्धि]कस्य भगिनि अर्य्यजया

अनुवाद—सफलता हो। महाराज, राजाधिराज, देवपुत्र, शाहि कनिष्कके ७ वें वर्षमें, हेमन्तऋतुके पहले महीनेके १५ वें दिन (समावला) (Lunar day) अर्य्योदेहिकीय (आर्य उद्देहिकीय) गण और अर्य्य-नागभुतिकिय (आर्य नागभूतिकीय) कुलके गणी अर्य्य बुद्धिशिरि (आर्य-बुद्धश्री) के शिष्य वाचक अर्य्य (संधि) ककी भगिनी अर्य्य जया (आर्य जया) अर्य्य गोष्ठ……

[EI, I, XLIII, n° 19]

२५

मथुरा—प्राकृत।

[कनिष्क वर्ष ९…]

१. सिद्धं महाराजस्य कनिष्कस्य संवत्सरे नवमे……………… मासे प्रथ १ दिवसे ५ अस्य पूर्व्वाये कोट्टियातो गणातो

२. ………वत्र…दिन्न………न बुद्………म शिसिन निर्वत

[यह महत्त्वपूर्ण लेख नववें संवत्, पहले महीने (ऋतुका नाम लुप्त है) पाँचवें दिनका है। यह महाराज कनिष्कके राज्यकाल (ईस्वी पूर्व ४८) का है।]

[A Cunningham, Reports, III, p. 31, n° 4]

२६

मथुरा—प्राकृत।

[कनिष्कका १५ वाँ वर्ष]

अ. १.………[1] सं १० ५ गृ ३ दि १ अस्या पूर्व्वे [1] य

ब. १.………हिकातो[2] कुलातो अर्य्यजयभूति…

स. १. स्य शिशीनिनं अर्य्यसङ्गमिकये शिशीनि…[3]

ड. १. अर्य्यवसुलये [निर्वर्त्त] नं

१ 'सिद्धं' की पूर्ति करो। २ 'मेहिकातो' पढ़ो। ३ 'शिशीनिनं' पढ़ो।

अ. २.·······लस्य धी [तु]····[ि]·······धु[1] वेणि

ब. २.····श्रेष्टि [स्य] धर्मपत्नियं भट्टि[से]नस्य

स. २. [मातु] कुमरमितयो[2] दनं भगवतो [प्र]····

द. २. मा सव्वतोभद्रिका [॥]

अनुवाद—[सफलता हो।] १५ वें वर्षकी ग्रीष्म ऋतुके तीसरे महीने के पहले दिन, भगवानकी एक सर्वतोभद्रिका प्रतिमाको कुमरमिता (कुमारमित्रा) ने [मेहिक] कुलके अर्य्यजयभूतिकी शिष्या अर्य्य सङ्गमिकाकी शिष्या अर्य्य वसुलाके आदेशसे समर्पित की। कुमारमित्रा···लकी पुत्री,···की वहू (वधू), श्रेष्ठी वेणीकी धर्मपत्नी और भट्टिसेनकी माँ थी।

[EI, 1, n° XLIII, No 2]

२७

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क?] वर्ष १८

अ. स १० ८ गृ ४ दि ३ [अस्या पु]–[य] ···· [या] तो गण [तो]····

ब. संभोगातो वच्छलियातो कुलातो गणि·······

द. १. ····वासि जयस्य–तु मासिगिये [?] दानं सव्वेत[ो]भ–[द्र]·······

२. – [सव्वस] वा [नं] सुखाय भवतु।

अनुवाद—वर्ष १८ ग्रीष्मऋतुका ४ था महीना, तीसरे दिनके अवसर पर, [कोट्टि] य गण,···संभोग, वच्छलिय (वात्सलीय) कुलके गणि······के आदेशसे जयकी (माता) मासिगिका दान एक सर्वतोभद्र [प्रतिमा] के रूपमें किया गया।

[EI, II, n° XIV, n° 13]

---

१ 'वधु' पढ़ो। २ इसे 'कुमारमितये' पढ़ना चाहिये।

५. ना अरहतायतने स [ह]ा मातरे भगिनिये धितरे पुत्रेण
६. सविन च परिजनेन अरहतपुजाये ।

अनुवाद—अर्हत् वर्धमानको नमस्कार हो । श्रमणोंकी उपासिका (श्राविका) गणिका नादा, गणिका दन्दाकी बेटी वासा, लेणशोभिकाने अर्हन्तोंकी पूजाके लिये व्यापारियोंके अर्हत्मन्दिरमें अपनी माँ, अपनी बहिन, अपनी पुत्री, अपने लड़केके साथ और अपने सारे परिजनोंके साथ मिलकर एक वेदी, एक पूजागृह, एक कुण्ड और पाषाणासन बनवाये ।

[I. A., XXXIII, p. 152-153.]

९

मथुरा—प्राकृत ।

(कालनिर्देश नहीं दिया है, किन्तु जे. एफ. फ्लीटके अनुसार लगभग १४-१३ ई० पूर्वका होना चाहिये)

१. [न] मो अरहतो वर्धमानस्य गोतिपुत्रस पोठयशक.
२. कालवालस
३. [भार्याये] कोशिकिये शिमित्राये[1] अयागपटो प्रि [प्रति-ष्ठापितो]

अनुवाद—वर्धमान अर्हन्तको नमस्कार हो । गोतिपुत्र (गौतीपुत्र) की स्त्री कौशिककुलोद्भूत शिवमित्राने एक अयागपट स्थापित किया । गोतिपुत्र पोठय और शक लोगोंके लिये काला सर्प (कालवाल) था ।

[EI, I, n° XLIV, n° 33]

१०

मथुरा—प्राकृत ।

[विना कालनिर्देशका सम्भवतः १४-१३ ई० पूर्व]

१. मा अरहतपूजा[ये]
२. गोतीपुत्रस इंद्रपा[ल]····

१ इसकी जगह 'शिवमित्राये' पढ़ना चाहिये (J. F Fleet) ।

अनुवाद—सिद्धि हो। १९ वें वर्षकी वर्षाऋतुके चौथे महीनेमें, वाचक अर्य्य वलदिन (वलदत्त) के शिष्य वाचक अर्य्य मातृदिनके आदेशसे भगवान शान्तिनाथकी प्रतिमा ले······की तरफसे अर्पित की गई। यह अर्पण करनेवाली स्त्री सुचिल (शुचिल) की धर्मपत्नी थी और वह कोट्टिय गण, ठानीय कुल, श्रीगृह सम्भोग तथा अर्य्य वेरि (आर्य-वज्र) शाखाकी थी। सर्व लोकोंमें उत्तम ऐसे अर्हतोंको नमस्कार हो।

[El, 1, n° XLIII, n° 3]

३०

मथुरा—प्राकृत।

[कनिष्क वर्ष २०]

अ १. सिद्ध स [२०] गृमा-दि १० ५ कोट्टियातो गणतो [ठ] णियातो कुलतो वेरितो शखतो शिरिकातो

ब १. [संभो]गातो वाचकस्य अर्य्यसघसिहस्य निर्व्वर्त्तना दातिलस्य········मति–

२. लस्य कुठुविणिये जयवालस्य देवदासस्य नागदिनस्य च नागदिनय च मातु

स. १. श्राविकाये दि–

२. [ना] ये दानं॥

३. वर्द्धमानप्र–

४. तिम।

अनुवाद—सिद्धि हो। २० वें वर्षकी ग्रीष्मऋतुके १ ले महीनेके १५ वें दिन, कोट्टियगण, ठानीय कुल, वेरि (वज्री) शाखा और शिरिक सम्भोगके वाचक अर्य्य सघसिह (आर्य सङ्घसिंह) के आदेशसे श्राविका दीना (दिन्ना) की तरफसे वर्धमानकी प्रतिमा [अर्पित की गई]। यह

दिन्ना ग्रांतिल [की पुत्री], मातिलकी पत्नी और जयपाल, देवदास, नागदिन (नागदत्त) तथा नागदिना (नागदत्ता) की माँ थी।

[EI, I, n° XLIV, n° 28]

३१

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[हुविष्क सं० २०]

अ. १. [सिद्धं सं २० गृ ३] दि [१०] ७ [एत]स्य पूर्व्वाय कोट्टिय[ा] तो गणातो ब्रह्मदासियातो कुलातो उच्चे [नागरितो शा] खातो [श्री] गृह [ा] तो संभोगातो [बृहंतव]चक च गणि च ज [—मित्र] स्य.....[1]

२. अर्य्ये [ओ] घस्य शिष्यगणिस्य [अ] र्य्यपालस्य [दत्त] रो [वाच]कस्य अर्य्य[दत्त]स्य शिष्यो वाचको अर्य्य सीहा [त] स्य निर्व्वर्तणा [ग्वो] ट्टमि [त्त]स्य मानिकारस्य [गो] जयभ[ट्टि] वीतु दास्य—

ब. १. [लो] हवाणियस्स वाघर....वधू [ह] ग्गु [देव]स्य वर्म्मपत्निये मित्राये [दानं].... [सर्व्व] स [त्वानं] हि [तसु] खाये काक [तेय]......क्ष—

२.—वाज.......ि.... ो............रज............।

अनुवाद—सिद्धि हो। हुविष्कके २० वें वर्षकी ग्रीष्मऋतुके तीसरे महीनेके १७ वें दिन, वाचक अर्य्य सीह (सिंह)—जो वाचक दत्तके शिष्य थे, और जो कोट्टियगण, ब्रह्मदासीय कुल, उच्चनागरी शाखा तथा श्रीगृह

---

१ 'शिष्य' पढ़ो।

संभोगके थे—की आज्ञासे सब सत्त्वोंके सुख और कल्याणके लिये, मित्रा-की तरफसे…समर्पित की गई । यह मित्रा हग्गु देव (फल्गुदेव) की धर्मपत्नी, लोहेका व्यापार करनेवाले वाधरकी वहू खोट्टमित्रके मानि-कर…जयभट्टिकी पुत्री………। अर्य्यदत्त गणी अर्य्यपालके श्राद्धचर थे। अर्य्यपाल अर्य्य ओघके शिष्य थे और अर्य्य ओघ महावाचक गणी जय-मित्रके शिष्य थे।

[El, 1, n° XLIII, n° 4]

३२

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[विना कालनिर्देशका है, पूर्ववर्ती शिलालेखसे ही मिलता-जुलता होनेसे इसका भी समय हुविष्क सं. २० है]

वाचकस्य दत्तशिष्यस्य सीहस्य नि………

[El, 1, p. 383, n° 60]

३३

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क सं. २२]

१. सिद्ध सत्र २०…२ ग्रि १ दि स्य पुर्व्वायं वाचकस्य अर्य्य-मात्रिदिनस्य णि…[1]

२. सत्तवाह्निये धर्म्मसोमाये दानं ॥ नमो अरहंतान

अनुवाद—सिद्धि प्राप्त हो। [हुविष्कके] २२ वें वर्षकी ग्रीष्मके पहले महीनेके ··दिन, वाचक अर्य्य-मात्रिदिन (आर्य-मातृदत्त) के आदेशसे यह धर्म्मसोमाका दान है। धर्मसोमा एक सार्थवाहकी स्त्री थी। अर्हन्तोंको नमस्कार हो।

[El, 1, n° XLIV, n° 29]

---

१ 'निर्वर्तना'।

३४

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क सं. २२]

[सि] द्धं सं २० (?) [२] ग्रि २ दि ७ वर्धमानस्य प्रतिमा वारणातो गणातो पेतिवामि[क]···

अनुवाद—सिद्धि प्राप्त हो। २२ वें वर्षकी ग्रीष्मके दूसरे महीनेके ७ वें दिन, वारणा गण, पेतिवामिक [कुल] की तरफसे वर्धमानकी प्रतिमा [प्रतिष्ठापित की गई]।

[EI, I, n° XLIII, n° 20]

३५

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क वर्ष २५]

अ. १. सवत्सरे पचविशे हेमंतमा [से] त्रितिये दिवसे वीशे अस्मि क्षुणे

ब. १. कोट्टियतो गणतो ब्र[ह्म]दासिकतो कुलतो उचेनागरितो शाखातो अयवलत्रतस्य शिषो सधि

२. स्य शिषिनि ग्रहा ———ि···· — वतन [ना] दिअ [रि] त जभ[क] स्य वधु जयभट्टस्य कुंटुविनीय रयगिनिये [बु]सुय [॥]

अनुवाद—२५ वें वर्षकी शीतऋतुके तीसरे महीनेके १२ वें दिनके समय रयगिनिने जो नान्दिगिरि (?) के जभककी वहू थी, एक बुसुय[१] ग्रहा — — की आज्ञासे समर्पित की। रयगिनि जयभट्टकी पत्नी थी। ग्रहा — — सधिकी शिष्या थी। सधि अर्य्य वलत्रत (वलत्रात) के शिष्य थे। यह वलत्रात कोट्टिय गण, ब्रह्मदासिक कुल (और) उच्चनागरी शाखाके थे।

[EI, I, XLIII, n° 5]

---

१ यह एक प्रकारकी या तो प्रतिमा है या कोई दान है।

३६

मथुरा—प्राकृत।

[विना कालनिर्देशका, संभवतः हुविष्कके २५ वें वर्षका]

१. उचेनगरितो शखतो अर्य्यवलत्रतस्य शिसिणि अर्य्यब्रह्म——

२. अर्य्यवलत्रतस्य शिष्यो अर्य्यसन्धिस्य परिग्रहे नवहस्तिस्य धिता ग्रहसेनस्य वधु ···· ····

३. शिवसेनस्य देवसेनस्य शिवदेवस्य च भ्रात्रिनं मातु जायये प्रतीमा प्र···· ····

४. [मा] नस्य सर्व्वसत्वानं हितसुखय॥

अनुवाद—अर्य्य ब्रह्म (आर्य ब्रह्म) [और] अर्य्य वलत्रत (आर्य वलत्रात) के शिष्य अर्य्य सन्धि (आर्य सन्धि) के ग्रहणके लिये उचेनगरि (उच्चनागरी) शाखाके अर्य्य वलत्रत (आर्य वलत्रात) की शिष्या, जयाने सब जीवोंके कल्याण और सुखके लिये वर्धमानकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा की। यह जया नवहस्तीकी पुत्री, ग्रहसेनकी बहू तथा शिवसेन, देवसेन और शिवदेव इन तीन भाइयोंकी माँ थी।

[EI, 11, n° XIV, n° 34]

३७

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क वर्ष २९]

अ. महाराज········ष्कस सं. २० ९ हे २ दि ३० अम क्षुणे भगवतो वर्धमानस प्रति [मा] प्रतिष्ठापिता ग्रहह[थ]स्य धितर सुखिताये वोधिनदि [ये]

ब. कुटुंविनिये वारणे गणे पुश्यमित्रीये कुले गणिस अर्य [दत्तस्य ··] गह [प्र] कि [व] स निर्वर्त [ना] अर[हं] तपुजाये।

अनुवाद—महाराज···ष्क के २९ वें वर्षकी शीतऋतुके दूसरे महीनेके तीसवें दिन, एक विवाहिता योधिनदि (योधिनन्दि ?) की आज्ञासे भगवान वर्धमानकी प्रतिमाकी प्रतिष्टा की गई। योधिनदि ग्रहहथि (ग्रहहस्ती) की प्यारी लड़की थी। यह प्रतिष्टा ग्रहप्रक्रिव (?) की प्रेरणासे हुई। यह ग्रहप्रक्रिव आर्य दत्तके जो वारण गण और पुश्यमित्रीय (पुष्यमित्रीय) कुलके थे, शिष्य थे।

[El. I, n° XLIII, n° 6]

३८

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[संभवतः हुविष्क वर्ष २९]

अ. १. एकुनतीं [श] व. १. अ [गं] [हि] नो सं. १.....

२. वा— —   २. [ह] स्त्रल   २ प्रतिम— —

द. १. स्य म-र- स्य देव [पु] त्रस्य [हु] क्षस्य

२. [वा] सि [क] नगदतस्य शिपो मि [ग क]··· ो स— —

[इस खण्ड-लेखका ठीक ठीक अनुवाद नहीं दिया जा सकता। इतना निश्चित है कि द. १. २. पंक्तियाँ हमें महाराज देवपुत्र हुक्ष (हुष्क या हुविष्क) और एक भिक्षु नगदत्त (नागदत्त) का नाम बताती हैं। यह भी हो सकता है कि यह लेख द. १ से शुरू हुआ हो, क्योंकि उस पंक्तिमें 'स्य', 'सिद्ध' का स्थानीय मालूम पड़ता है, तथा उसमें राजाका भी नाम है। इसकी धारा अ. १ हो सकती है। २९ वां वर्ष हुविष्कके राज्यमें आयेगा।

[El, II, n° XIV, n° 26]

३९

मथुरा—संस्कृत—भग्न।

[काल लुप्त-संभवतः हुविष्कका २९ वां वर्ष]

········ [व] पुत्रस्य हुविष्कस्य स ····[1]

---

१ 'देवपुत्रस्य' और 'संवत्सरे' पढ़ो।

अनुवाद—··· देवपुत्र हुविष्कके ······ वर्षमें ···

[El 11, n° XIV n° 25]

४०

मथुरा—प्राकृत।

[वर्ष ३१ हुविष्ककाल]

अ-स ३० १ व १ दि १० अस्म क्षुणे

व. १.····यातो गणतो [अ]र्य्य वेरितो शाखतो [ठा] णियातो कुलातो वह [-तो]। कुटुम्बिणिये [ग्र] ह

२. ···· [अर्य]—दासस्य निवर्तना वुद्धिस्य धितु देविलस्य शिरिये दाणं।

[ऊपरके शिलालेखका ठीक क्रम, जी. बूलहरकी सम्मतिमें, इस तरह है:—]

[कोट्टि]यातो गण [ातो] अर्य्यवेरितो शाखतो [ठा]णियातो कुलातो वह [तो] (?) [गणिस्य] अर्य [गो] दासस्य निवर्तना वुद्धिस्य धितु देविलस्य कुटुम्बिणिये ग्रहशिरिये दाणं॥

अनुवाद—३१ वें वर्षकी वर्षाऋतुके पहले महीनेके १० वें दिन, वुद्धिकी पुत्री (तथा) देविलकी पत्नी गृहशिरि (गृहश्री)ने, कोट्टिय गण, अर्य्य वेरि (आर्य वज्री) शाखा, ठाणिय (स्थानीय) कुलके [गणी] आर्य गोदासके आदेशसे दान किया।

[El, II, n° XIV, n° 15]

४१

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क काल] वर्ष ३२

अ. १. सिद्धम्। सव [त्स] रे ३० २ हेमन्तमासे ४ दिवसे २ चारणातो गणा····यातो [कु] ० ?[1]

२. ····································

व. १. –णि अर्यनन्दिकस्य निर्व्वर्त्तना जितामित्रय[रितु] नन्दिस्य धीतु बुद्धिस्य कुटुम्बिनिये प्रा—[2]

तारिकस्य–नी ि – प्य मातु गन्धिकस्य अरहन्तप्रतिमा सर्व्वतोभद्रिका।

अनुवाद—सिद्धि हो। ३२ वें वर्षकी शीतऋतुके चौथे महीनेके दूसरे दिन, रितुनन्दि (ऋतुनन्दि) की पुत्री, बुद्धिकी पत्नी तथा गँधिककी माँ ···जितामित्राने, वारण गण···य कुल···अर्य-नन्दिक (आर्यनन्दिक) के आदेशसे एक अर्हन्तकी सर्वतोभद्रिका प्रतिमाकी प्रतिष्ठापना की।

[EI, II, n° XIV, n° 16]

४२

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क वर्ष ३५]

अ. १. [सिद्धं]। सं ३० [५] व ३ दि १० अस्य [ां] पूर्व्वायां कोट्टियातो गणतो [स्थानि] या [तो] कु—

व. १. वइरातो श [ा] ख [ा]तो शिरिकातो सं[भो]कातो अर्य्य-बलदिनस्य शिशिनि कुमरमि[त]

---

१ संभवतः 'गणातो हट्टियातो' पढ़ो। २ संभवतः 'प्रातारिकस्य' पढ़ना चाहिये।

२. तस्य पुत्रो कुम[ा]रभटि गंधिको तस····नं प्रतिमा वर्धमा नस्य प्रशितमखित [वो] धित

स. १. अ [र्य]

२. कुमार-

३. मित्रा-

४. ये-

द. १. र्व्व

२. [त] न [॥]

सारांश—आर्य बलदिन (बलदत्त) की शिष्या कुमरमित्रा (कुमारमित्रा) थी। वह कोट्टिय गण, स्थानीय कुल, वइरा शाखा (तथा) शिरिक संभोक (संभोग) की थी। उसका पुत्र कुमारभटि गन्धिक (तेल, इत्रका व्यापार करनेवाला) था। उसने तीक्ष्ण, उज्वल, प्रबुद्ध कुमारमित्राके आदेशसे वर्धमानकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा की।

[EI, 1, n° XLIII, n° 7]

४३

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क संवत् ३९—हस्तिस्तम्भ]

१. महाराजस्य देवपुत्रस्य हुविष्कस्य सं० ३९

२. हे ३ दि० ११ एतय पुर्व्वये नन्दि विशाल

३. प्रतिष्ठपितो सिवदास श्रेष्ठिपुत्रेण श्रेष्ठिना

४. अर्य्येन रुद्रदासेन अरहंतनं पुजाये

अनुवाद—देवपुत्र महाराज हुविष्कके राज्यमें, सं० ३९ की शीतऋतुके तीसरे महीनेके ११ वें दिन, यह विशाल नन्दी शिवदास श्रेष्ठीके पुत्र आर्य श्रेष्ठी रुद्रदासने अर्हन्तोंकी पूजाके लिये बनवाया (१८ ई० पूर्व)।

[A Cunningham, Reports, III, p. 32-33, n° 9.]

४४

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क वर्ष ४०]

अ. १.—४०—हे—दि १०

ब. १. ए [त] स्य पू [र्व्वा] य वरणतो ग [ण]-

स. १. नो आर्य्य हाटिकियतो कुलतो

द. १. वजनगरित[ो] स्र [ा] ख [ा] त [ो] शि [रि] यत [ो]

अ. २.— — [ग] नो [द] तिस्य शिशिनिये

ब. २. महन [न्दि] स्य सढचरिये

स. २. बल [वर्म] ये [नन्द] ये च शिशिनिये

द. २. अ [कक] ये [निर्व्वर्त्तना]······

अ. ३.—[स्य] धीतु ग्रमि [क] जयदेवस्य वधूये

ब. ३.···मिको जयनागस्य धर्म्मपत्नियं सिहदता [ये]

स. ३.···[स्थंभ][1] दनं =····

अनुवाद—[सिद्धि हो।] ४० वें [वर्षमें] शीत ऋतुके······महीनेके दसवें दिन, सिहदता (सिंहदत्ता) ने एक पाषाण-स्तम्भकी स्थापना की। यह सिंहदत्ता ग्रामिक जयनागकी धर्मपत्नी, जयदेव ग्रामिक (गाँवका मुखिया) की बहू (तथा) ·····की पुत्री थी। इस पाषाणस्तम्भकी स्थापना वारण गण, आर्य-हाटीकीय कुल, वज्रनागरी शाखा तथा शिरिय संभोगकी अकका (?) के आदेशसे हुई थी। यह अकका नन्दा और बलवर्माकी शिष्या, महनन्दि (महानन्दि) की श्राद्धचरी तथा दति (दत्ती) की शिष्या थी।

[EI, 1, n° XLIII, n° 1]

---

1 पढ़ो 'शिलाथंभो'।

४५

मथुरा—प्राकृत—भग्न

[हुविष्क वर्ष ४४]

अ. सू—नमशर [स] तममहरजस्य हुविक्षस्य सव [त्स] रे ४० ४ हनगृ [स्य] मस ३ दिविस २ ए [त]–

ब. [स्यां] पूर्वय [ां] ··· गणे अर्यचेटिये कुले हरीतमालकढिय [श] ाख ········ ाचक [स्य] हगिनंदिअ शिसो ग ··· नागसेणस्य नि ····

अनुवाद—स्वस्ति। नमः। प्रतापी (?) महाराज हुविष्कके ४४ वें वर्षकी ग्रीष्म ऋतुके तीसरे महीनेके द्वितीय दिवस, [वारण] गण, अर्य्य चेटिय (आर्य-चेटिक) कुल, हरीतमालकढि (हरीतमालगढ़ी) शाखाके वाचक हगिनंदि (भगनन्दि ?) के शिष्य आर्य्य नागसेनके आदेशसे—

[EI, 1, n° XLIII, n° 9]

४६

मथुरा—प्राकृत—भग्न

[हुविष्क वर्ष ४५]

१. सिद्धम् सं ४० ५ व [३] दि १० [७] एतस्य पूर्व्व[ा]य- ·········· ये बुद्धिस्य वधुये धर्म्मवृद्धिस्य—

अनुवाद—सिद्धि हो। ४५ वें वर्षकी वर्षाऋतुके तीसरे (?) (महीने) के १७ वें दिन, धर्म्मवृद्धिकी ······ बुद्धिकी बहूने ·····················

[EI, 1, n° XLIII, n° 10]

४७

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क वर्ष ४७]

१. स ४० ७ गृ २ दि २० एतस्य पुर्वयं वरणे गणे पेतिवमि-क्के कुले वाचकस्य ओहनदिस्य शिसस्य सेनस्य निवतना सवकस्य

२. पुपस्य वधुये गिह...[कुटिंबिनि]...[पुप] दिन [स्य] [मातु]....ये

अनुवाद—४७ वें वर्ष की ग्रीष्मऋतुके २ रे महीनेके २० वें दिन, वरण (वारण) गण, पेतिवमिक (प्रैतिवर्मिक) कुलके वाचक और ओहनंदि (ओघनन्दि) के शिष्य सेनकी प्रार्थनापर पुप (पुष्य) श्रावककी बहू, गिहकी गृहिणी, पुपदिन (पुष्यदत्त) की माँ,..... की तरफसे [यह समर्पित किया गया]।

[EI, I, n° XLIV, n° 30]

४८

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[काल लुप्त, संभवतः वर्ष ४७]

१. सिद्धम्। महाराजस्य राजातिराजस्य..........

२. ओहनन्दिस्य शिष्येण से...न.......ि–[1]

अनुवाद—सिद्धि हो। महाराज, राजातिराज......ओहनन्दि (ओघनन्दि) के शिष्य सेनने.........

[EI. II, n. XIV, n° 27]

४९

मथुरा—संस्कृत।

[हुविष्क वर्ष ४७]

दानं देविलस्य दधिकर्णदेविकुलकस्य सं ४० ७ गृ० ४ दिवसे २९

अनुवाद—४७ वें वर्षकी ग्रीष्मऋतुके चौथे महीनेके २९ वें दिन, दधिकर्ण मन्दिर (या चैत्यालय) के पुजारी (या माली) देविलका दान।

[IA.-XXXIII, p. 102–103, n° 13]

---

1 'सेनेन' पढ़ो।

५०

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[हुविष्क वर्ष ४८]

१. महाराजस्य हुविष्कस्य स ४० ८ हे ४ दि ५

२. वमदासिये कुल [`] उ [च] ो नागरिय शाखाया धर....

अनुवाद—महाराज हुविष्कके राज्यमें, ४८ वें वर्षकी शीतऋतुके चौथे महीनेके ५ वें दिन, ब्रह्मदासिक कुल, उच्चनागरी शाखाके धर ......

[IA, XXXIII, p. 103, n° 14]

५१

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्ककाल वर्ष ५०]

१. पण ५० हेमंतमासे प....

२. आर्य्यचेरस्य

३. ये युधदिनस्य

४. धित

५. पूपबुधिस्य....

[इस खण्ड-शिलालेखका पूरा अनुवाद संभव नहीं है। काल ५० वाँ वर्ष और शीतऋतुका पहला या पाँचवां महीना है।]

[EI, II, n° XIV, n° 17]

५२

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[हुविष्कका ५० वां वर्ष]

१. — — ५० (?) हे २ दि १ अस्य पुर्व्वय वरणतो गणतो अय्यभित्त कुलतो [स] —

२. खतो शिरिग्रहतो सभोगतो वहवो वचक च गणिनो च

३. [अ]....

३.····वस्य दिनरस्य शिशिनि अय्य जिनदसि पणति-धरित्य शिशिनि अ·······

४. वकरवपणतिहरमनोपवसिनि बुबुस्य धिन रज्यवसुस्यवर्न...[1]

५. [द] विलस्य मतु विष्णु[भ]वस्य पिउमहिक विजय-शिरिये दन वध·······[2]

६.·······························

अनुवाद—५० वां वर्ष, शीतऋतुका दूसरा महीना, पहला दिन, इस दिन, वरण (वारण) गण, अय्यमिन्त (?) कुल, सं [कासिया] शाखा, शिरिग्रह (श्रीगृह) संभोगके महावाचक तथा गणि सनदि···व दिनर की शिष्या अय्य-जिनदसि (आर्य जिनदासी) की आज्ञाको माननेवाली... अय्य वकरव (?) की आज्ञाको धारण करनेवाली विजयसिरि [विजयश्रीने] दानमें वध [मान] अर्थात् वर्धमान की प्रतिमा······। यह विजयश्री बुबुकी पुत्री, रज्यवसु (राज्यवसु) की धर्मपत्नी, देविलकी माँ (और) विष्णुभवकी नानी थी और इसने एक महीनेका उपवास किया था।

[EI, II, n° XIV, n° 36]

५३

रामनगर—प्राकृत।

[काल ? वर्ष ५०]

वर्ष	राजा	स्थान	कर्हाँ	विशेषता
५०	—	रामनगर (अहिच्छत्र)	A S N-W-P-O, Annual report 1891-1892, p. 3	दूसरा महीना, शीतऋतु, पहला दिन; ब्राह्मी लिपि

[JRAS, 1903, p. 7–14, n° 40]

१ 'धर्मपत्नी' पढ़ो। २ 'वधमान प्रतिमा' या शायद 'प्रतिमा'।

५४

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क वर्ष ५२]

१. सिद्ध संवत्सर द्वापना ५० २ हेमन्त [मा] स प्रथ—दिवस पंचवीश २० ५ अस्म क्षुणे क[ो]ट्टिया तो गणात[ो]

२. वेरातो शखतो स्थानिकियातो कुलात[ो:] श्रीगृहतो संभोगातो वाचकस्यार्य्यघस्तुहस्तिस्य

३. शिष्यो गणिस्यार्य्यमंगुहस्तिस्य पढचरो वाचको अर्य्यदिवितस्य निर्व्वर्तना शूरस्य श्रम-

४. णकपुत्रस्य गोट्टिकस्य लोहिकाकारकस्य दानं सर्व्वसत्वानं हितसुखायास्तु।

अनुवाद—सिद्धि हो। ५२ वें वर्षके शीतऋतुके पहले महीनेके २५ वें दिन, कोट्टिय गण, वेरा (वज्रा) शाखा, स्थानिकिय कुल (तथा) श्रीगृह संभोगके वाचक आर्य्य वस्तुहस्तिके शिष्य और गणी आर्य मङ्गुहस्तिके श्राद्धचर ऐसे वाचक अर्य्यदिवितके आदेशसे श्रमणकके पुत्र, शूर लुहार गोट्टिकने दान दिया।

[EI, II, n° XIV, n° 18]

५५

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क वर्ष ५४]

१.—धम्। सव ५० ४ हेमंतमासे चतुर्थे ४ दिवसे १० अ—

२. स्य पुर्व्वायां कोट्टियातो [ग] णातो स्थानि [य]तो कुलातो

३. वैरातो शाखातो श्रीगृह [ा] तो संभोगातो वाचकस्यार्य्य-

४. [ह] स्तहस्तिस्य शिष्यो गणिस्य अर्य्यमाघहस्तिस्य श्रद्धचरो

. ।९ अ-

५. र्य्यदेवस्य निर्व्वर्त्तने गोवस्य सीहपुत्रस्य लोहिककारुकस्य दानं

६. सर्व्वसत्वानां हितसुखा एकसरस्वती प्रतीष्ठाविता अवतले रङ्गान[र्त्तन]ो

७. मे [॥]

अनुवाद—सिद्धि हो। ५४ वें वर्षकी शीतऋतुके चौथे महीनेके (शुक्लपक्षके) १० वें दिन, वाचक आर्यदेवकी प्रेरणासे सीहके पुत्र गोव लुहारके दानरूपमें एक सरस्वतीकी (प्रतिमा) प्रतिष्ठापित की गई। आर्य्य देव कोट्टियगण, स्थानिय कुल, वैरा शाखा तथा श्रीगृहसंभोगके वाचक आर्य्य हस्तहस्तिके शिष्य गणि आर्य्य माघहस्तिके श्राद्धचर थे। अवतलमें मेरा रङ्गशालीय नृत्य (?)।

[EI, I, nº XLIII, nº 21]

५६

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क वर्ष ६०]

अ. सिद्धम्। म[हा]रा[ज]स्य र[ाजा]तिराजस्य देवपुत्रस्य हुवष्कस्य सं ४० (६०?) हेमन्तमासे ४ दि० १० एतस्यां पूर्व्वायां कोट्टिये गणे स्थानिकीये कुले अय्य[वेरि]याण शाखाया वाचकस्यार्य्यवृद्धहस्ति[स्य]

ब. शिष्यस्य गणिस्य आर्य्यख[र्ण्ण]स्य पुय्यम[न]……[स्य] …[व]तकस्य [क]-सकस्य कुटुम्बिनीये दताये—नवर्म्मो[1] महाभोगताय प्रीयतान्भगवान्ऋषभश्रीः।

अनुवाद—सिद्धि हो। महाराज, राजातिराज, देवपुत्र हुविष्कके ६० वें वर्षकी शीतऋतुके चौथे महीनेके १० वें दिन, कोट्टियगण, स्थानिकीय कुल (तथा) अर्य्य-वेरियों (आर्य-वज्रके अनुयायियों) की शाखाके वाचक आर्य वृद्धहस्तिके शिष्य, गणि आर्य्य खर्ण्णके आदेशसे…वतके निवासी

१ 'दानवर्मो' पढ़ो।

पसककी पत्नी दत्ताने महाभोगता (महासुख)के लिये यह दानधर्म किया। भगवान् ऋषभदेव प्रसन्न होवें।

[EI, I, n° XLIII, n° 8]

५७

मथुरा—प्राकृत।

[हु० संवत् ६२]

वाचकस्य अर्य-क्कसघस्तस्य शिष्या आतपिको ग्रहबलस्य निर्वर्तन........

अनुवाद—वाचक आर्य ककसघस्त (कर्कशघर्षित)के शिष्य आतपिक ग्रहबलके आदेशसे।

इस शिलालेखसे मालूम पड़ता है कि किसी मुनिके आदेशसे जैन श्राविका वैहिकाने एक प्रतिमाका दान किया।

[IA, XXXIII, p. 105-106, n° 19]

५८

मथुरा—प्राकृत।

[हु० वर्ष ६२]

१. सिद्ध। स ६० २ व २ दि ५ एतस्य पुवय .वाचकस्य आयकर्कुहस्थ [स]

२. वारणगणियस शिषो ग्रहबलो आतपिको तस निवर्तना।

अनुवाद—सिद्धि हो। वर्ष ६२, वर्षाऋतुका २ रा महीना, दिन ५, इस दिन, वारणगणके वाचक आय-कर्कुहस्थ (आर्य कर्कशघर्षित) के शिष्य आतपिक ग्रहबल थे। उनकी प्रेरणासे.........

[EI, II, n° XIV, n° 19]

५९

मथुरा—प्राकृत।

[ ] वर्ष ७९

अ. १. सं. ७० ९-र्व ४ दि २० एतस्यां पुर्व्वायं कोट्टिये गणे नइर [ ] ाां शाखायां.......

२. को अयंवृधहस्ति अरहतो णन्दि [आ] वर्तस प्रतिमं निर्वर्तयति।

३.………भार्य्यये श्राविकाये [दिनाये] दानं प्रतिमा वोद्दे थुपे देवनिर्मिते प्र………[1]

अनुवाद—वर्ष ७९, वर्षाऋतुका चौथा महीना, २० वां दिन, इस दिन, कोट्टियगण (तथा) वइरा (वज्रा) शाखा के वाचक अय-वृधहस्ति (आर्य वृद्धहस्ति) ने दीना [दत्ता] श्राविकाको, जो……की भार्या थी, एक अर्हत् णन्दिआवर्त्त (नन्द्यावर्त्त)[2] की प्रतिमाके निर्माणके लिए कहा। दीनाकी यह प्रतिमा देवनिर्मित वोद्व स्तूपपर प्रतिष्ठित हुई।

[EI, II, n° XIV, n° 20]

६०

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[हुविष्क वर्ष ८०]

१. [सिद्ध] महरजस्य सं ८० हण व १ दि १२ एतस पूर्व्वायां………

२. धितु संघनधि [स्य] वधुये वलस्य………

अनुवाद—[स्वस्ति।] महाराज वासुदेवके ८० वें वर्षमें, वर्षाऋतुके १ ले महीनेके १२ वें दिन,………की पुत्री, संवनधि (?) की वहू, वलकी……………(अपूर्ण).

[EI, n° XLIII, n° 24]

६१

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[ ] वर्ष ८१

१. स ८० १ व १ दि ६ एतस्य पुवाय [अ] यिकाजीवाये अंते-

२. वासिकिनिये दताये निवतना। [ग्र) हशिरिये····

---

१ 'प्रतिष्ठापिता'। २ नन्द्यावर्त्त जिसका चिह्न है ऐसे १८ वें तीर्थङ्कर अर्हनाथ भगवान्की प्रतिमा।

अनुवाद—वर्ष ८१, वर्षाऋतुका १ ला महीना, ६ ठा दिन, इस दिन, अयिका-जीवा (आर्यिकाजीवा) की शिष्या दत्ताकी प्रार्थनापर ग्रहशिरि (ग्रहश्री) ··· ।

[EI, II, n° XIV, n° 21]

६२

मथुरा—प्राकृत ।

[वासुदेव] वर्ष ८३

१. सिद्धं महाराजस्य वासुदेवस्य सं ८० ३ गृ २ दि १० ६ एतस्य पूर्व्वये सेनस्य

२. [धि] तु दत्तस्य वधुये व्य····च····स्य गन्धिकस्य कुटुम्बिनिये जिनदासिय प्रतिमा ध [र्मद]नं

अनुवाद—सिद्धि हो । महाराज वासुदेवके राज्यमें ८३ वें वर्षकी ग्रीष्मऋतुके दूसरे महीनेके १६ वें दिन, सेनकी पुत्री, दत्तकी बहू , गन्धिक (तेल, इत्र बेचनेवाले) व्य–च···की पत्नी जिनदासीके पवित्रदानमें एक प्रतिमा ··· ··· ।

[IA, XXXIII, p. 107, n° 21]

६३

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क वर्ष ८६]

१. सं ८० ६ हे १ दि १० २ दसस्य धितु पृयस्य कुटुंविनिये

२. ···· [क] तो कुलतो अयस [ङ्ग] मि [क] य शिशिनिय अयवसुल [ये] नि [व] तने [॥]

अनुवाद—८६ वें वर्षकी शीतऋतुके पहले महीनेके १२वें दिन, दस (दास) की पुत्री, पृय (प्रिय) की पत्नी ······ का दान अर्पित किया गया । यह दान [मेहि] क कुलकी अर्य सङ्गमिकाकी शिष्या अर्य वसुलाके कहनेसे हुआ ।

[EI, I, n° XLIII, n° 12]

६४

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क वर्ष ८७]

[सं ८० ७ ?] गृ १ दि [२० ?] अ [स्मि] क्षुणे उच्चेनागर-
स्यार्य्यकुमारनन्दिशिष्यस्य मित्रस्य............

अनुवाद—८७ (?) वें वर्षमें ग्रीष्मऋतुके १ ले महीनेके २० (?) वें दिन, उच्चनागरके, कुमारनन्दीके शिष्य, मित्रके......

[EI, 1, n° XLIII, n° 13]

६५

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[वासुदेव] वर्ष ८७

१. सिद्धं। महाराजस्य राजातिराजस्य शाहि=वासुदेवस्य

२. सं ८० ७ हे २ दि ३० एतस्या पुर्वाया........

अनुवाद—सिद्धि हो। महाराज राजातिराज शाहि वासुदेवके ८७ वें वर्षकी शीतऋतुके २ रे महीनेके तीसवें दिन, ..."

[IA, XXXIII, p. 108, n° 22]

६६

मथुरा—प्राकृत—भग्न

[सं० ९०]

१. सव [९० व] .... टुत्रनिए दिनस्य वधूय

२. को ... तो ग [णा] तो प—व [ह]—[क] तो कुलातो
मझमातो शाखा [तो]....सनिकय भतिवलाए मिनि

[यह लेख बहुत टूटा हुआ है। इसमें खास कामकी चीज मझमा शाखा और प-वह-क कुलका उल्लेख है। प-वहक कुल जैन परम्पराका प्रश्नवाहनक या पण्हवाहणय कुल है। वर्ष (सं) ९० है]

[EI, 11, n° XIV, n° 22]

६७

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[वर्ष ९३]

अ. नमो अर्हतो महाविरस्य सं० ९० ३ [व] ····

ब. १. शिष्यस्य ग [णि] स्य [न] न्दिये [नि] र्वर्त्तना देवस्य हैरण्यकस्य धितु········

२. ···· [ि - [भ] - वतो वर्द्धमानप्रतिमा प्रति ···· ··· पुजा [ये] [॥]

अनुवाद—अर्हत् महाविर (महावीर) को नमस्कार हो। वर्ष ९३, वर्षाऋतुका ··· (महीना), ··· के शिष्य गणी नन्दीके आदेशसे [अर्हत् की] पूजाके लिये, हैरण्यक (सुनार) देवकी पुत्री···ने भगवान् वर्द्धमानकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा कराई।

[EI, II, n° XIV, n° 23]

६८

मथुरा—प्राकृत।

[वर्ष ९५]

१. [ि] सद्धं सं. ९० ५ [?] ग्रि २ दि १० ८ कोट्टि [य] [ ] तो गणातो ठानियातो कुलातो वइर [ा तो शा] खातो अर्य्य अरहं····

२. शिशिनि धाम [था] ये निर्वर्तन [ा] ग्रहदतस्य धि [तु] धनहथि········

अनुवाद—सिद्धि हो। ९५ वें (?) वर्षके ग्रीष्मऋतुके दूसरे महीनेके १८ वें दिन, धामथाके आदेशसे ग्रहदत्तकी पुत्री, धनहथि (धनहस्ती) की पत्नी ··· का [दान किया गया]। धामथा कोट्टियगण, ठानिय कुल, वइरा शाखाके अर्य्य अरह [दिन्न] की शिष्या थी।

[EI, 1, n° XLIII, n° 22]

६९

मथुरा—प्राकृत।

[वासुदेव सं० ९८]

१. सिद्ध [म्] ॥ नमो अरहतो महावीरस्य दे········रस्य। राज वासुदेवस्य संवत्सरे ९० ८ वर्ष-मासे ४ दिवसे १०१ एतस्या

२. पुर्वाये अर्य्य-देहिकियातो ग [णातो] परिघा [ा] सिकातो कुलातो पेतपुत्रिकातो शाखातो गणिस्य अर्य्य-देवदत्तस्य न

३. र्य्य—क्षेमस्य

४. प्रकगिरिणं

५. किहदिये प्रज

६.····तस्य प्रवरकस्य धितु वरुणस्य गन्धिकस्य वधूये मित्रस····
············दत्त गा [?]

७. ये····भगवतो महा [वीर] स्य।

अनुवाद—सिद्धि हो। महावीर अर्हत्को नमस्कार हो। ··· राजा वासुदेवके ९८ वें वर्षकी वर्षाऋतुके चतुर्थ महीनेके ११ वें दिन, अर्य्य देहिकिय (देहिकीय) गण, परिधासिक कुल, प्रेतपुत्रिका (पैतापुत्रिका ?) शाखाके गणि आर्य देवदत्तके ··· [आदेशसे] प्रवरककी पुत्री, गन्धिक वरुणकी वहू, मित्रस ··· ···, आर्य-क्षेमाका ··· ··· [दान] ··· ··· भगवान् महावीरको नमस्कार हो।

[IA, XXXIII, p. 108–109, n° 23]

७०

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[सं.] वर्ष ९८

स. ९० ८ हे १ दि ५ अस्य क्षुणे को [ो]ट्टियात[ो] गणातो उचनग·······[1]

---

1 'उच्चनगरितो शाखातो'।

अनुवाद—वर्ष ९८ की शीतऋतुके १ ले महीनेके ५ वें दिन, कोट्टिय गण, उचनगरी (उच्चानागरी) [शाखा] ·········

[El, II, n° XIV, n° 24]

७१

मथुरा—प्राकृत।

[विना कालनिर्देशका]

१. नमो अरहंतानं सिहकस वानिकस पुत्रेण कोशिकिपुत्रेण

२. सिहनादिकेन आयागपटो प्रतिथापितो आरहंतपुजाये [।।]

अनुवाद—अर्हन्तोंको नमस्कार हो। वानिक सिहक (सिंहक) के पुत्र तथा किसी कोशिकी (कौशिकी माँ) के पुत्र सिहनादिक (सिंहनन्दिक ?) के द्वारा एक आयागपटकी प्रतिष्ठा अर्हन्तोंकी पूजाके लिये की गई।

[El, II, n° XIV, n° 30]

७२

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[विना कालनिर्देशका]

नमो अरहंताना शिवघो [षक]स भरि [या]····ना····ना····

अनुवाद—अर्हन्तोंको नमस्कार। शिवघोषककी भार्या············

[El, II, n° XIV, n° 31]

७३

मथुरा—प्राकृत।

[विना कालनिर्देशका]

पं. १. नमो अरहंतानं [मल]····णस धितु भद्रयशस वधुये भद्रनदिस भयाये

२. अ [चला]ये आ[या]गपटो प्रतिथापितो अरहतपुजाये।

अनुवाद—अर्हन्तोंको नमस्कार। मल—णकी बेटी, भद्रयश (भद्रयशस) की बहू, तथा भद्रनदि (भद्रनन्दिन्) की पत्नी अचलाने अर्हन्तोंकी पूजाके लिये एक आयागपट स्थापित किया।

[EI, II, n° XIV, n° 32]

७४

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[काल लुप्त]

—शे एत [स्यां] पूर्व्वायां कोट्टियातो गणातो········

अनुवाद—उक्त समय पर, कोट्टियगणके········

[EI, 1, n° XLIII, n° 15]

७५

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[काल लुप्त]

पं. १.·······अरहंतानं वधमानस्य [क]लस्य धितु सिनविपुस्य भ [गि] न [ि] य

२.···············[श] [ति] स्य नि [नच] नेनं [॥]

अनुवाद—शतिके आदेशसे सिनविपु (विष्णुपेण)की बहिन, कलकी पुत्रीका दान यह अर्हत् वर्धमानकी प्रतिमा है।

[EI, 1, n° XLIII, n° 16].

७६

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[बिना कालनिर्देशका]

चारणातो गणातो आर्यकनियसिकातो कुलानो ओद···········

अनुवाद—चारण गण, पूजनीय कनियसिक कुल, ओद···(शाखा) के

[EI, 1, n° XLIII, n° 23]

७७

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[काल लुप्त]

.........र्पमासे १ दीवसे ३० अस्मि क्षु.........[1]

अनुवाद—.........वर्षाऋतुके पहले महीनेके ३० वें दिन, उस अवसर (था, उत्सव) पर......

[EI, 1, n° XLIII, n° 25]

७८

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[विना कालनिर्देशका]

दासस्य पुत्रो चीरि तस्य दत्तिः [॥]

अनुवाद—दासके पुत्र चीरिका दान।

[EI, 1, n° XLIII, n° 26]

७९

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[विना कालनिर्देशका]

पं. १. [प्रतिमा] वधमान [स्य] प्रतियापिता

२. ....ठानियातो—ल.............त आर्यग].........

अनुवाद—ठानिय (स्थानीय) शाखाके.........वधमान (वर्धमान)-की प्रतिमा प्रतिष्ठापित की गई।...

[EI, I, n° XLIII, n° 27]

---

१ पढ़ो 'वर्षमासे' और 'क्षुणे'।

८०

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[बिना कालनिर्देशका]

पं. १. [सि] द्ध नमो अर्हंतान···द्धन[1] वारणे गणे अयहाटि [ये][2]

२. कुले वजनागरित शाखया अर्यसिरिकिये संभो·······[3]

अनुवाद—सिद्धि हो। अर्हन्तोंको नमस्कार। [सिद्धोंको नमस्कार]। वारण गण, अय हाटिय (आर्य हाटीय) कुल, वजनागरि (वज्रनागरी) शाखा, अर्यसिरिकिय संभोगके······

[EI, I. XLIV. n° 34]

८१

मथुरा—प्राकृत।

[बिना कालनिर्देशका]

पं. १. [नं]—दिसनंदिकस पुत्रेन नंदिघोषेन [ते] वणिकेन अ····
न···कृते·········

२. नाते मंदिरे [अ] यगान्ता प्रतिथापित [।]············

अनुवाद—नंदिसन (?) नंदिकके पुत्र, तेवणिक (त्रैवणिक) नंदिघोषके द्वारा आयागपट ······के मन्दिरमें स्थापित की गई।

[EI, I, XLIV, n° 35]

८२

मथुरा—प्राकृत।

[बिना कालनिर्देशका]

अ. ··· भगवतो उसभस वारणे गणे नाडिके कुले ···· ····
ना [दे] ····

---

१ पढ़ो नमो सिद्धान। २ संभवतः हाटिये। ३ पढ़ो संभोगे।

व. ढुकस वायकस सिसिनिए सादिताए नि ····

अनुवाद—भगवान् वृषभ (उसभ) को नमस्कार हो। वारण गण, नाडिक कुल तथा··········के वाचक·····ढुकको शिष्या सादिताके आदेशसे··········

[El, II, n° XIV, n° 28]

८३

मथुरा—प्राकृत।

[विना कालनिर्देशका]

स्थ [।]निकिये कुले गनिस्य उग्गहिनिय शिषो वाचको घोषको आर्हतो पर्श्वस्य प्रतिमा····

अनुवाद—"स्थानिकिय (कीय) कुलके गणि (गणिन्) उग्गहिनिके शिष्य वाचक घोषकने एक अर्हत् पार्श्वकी प्रतिमा···

[El, II, n° XIV, n° 29]

८४

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[विना कालनिर्देशका]

अ. वर्धमानपटिमा वजरनद्यस्य धिता वाधिशिव···

१.–[ि]– स्य– कुटीन्निनि दिनाये दाति बडिम [शि] ये····

२.···············

अनुवाद–"वजरनद्य (वज्रनन्दिन्) की पुत्री, वाधिशिव (वृद्धिशिव ?) की वहू, ि ··· की पत्नी दिना (दत्ता) के दानके रूपमें एक वर्धमानकी प्रतिमा ··· ··· बडिमशिके······

[El, II, n° XIV, n° 33]

८५

मथुरा—प्राकृत—भग्न।
[बिना कालनिर्देशका]

अ. तिये निर्वर्तना

ब. १. तो शखतो शिरिकतो संभोकतो अर्य्य

३. .... लनस्य मतु हि [स्त]........

२. ि—वराये निवतना शिवद [त]

[EI, II, n° XIV, n° 35]

[नोट-'निर्वर्तना' और 'निवतना' इन दो शब्दोंके एक ही शिलालेखमें आ जानेसे एक ही शिलालेखके दो खण्ड मालूम पड़ते हैं और वे सम्बद्ध अर्थको व्यक्त नहीं करते हैं।]

८६

मथुरा—प्राकृत।
(बिना कालनिर्देशका)

१. ....ये मोगलिपुतस पुफकस भयाये

२. असाये पसादो

अनुवाद-किसी मोगली (माँ मोद्गलीविशेष) के पुत्र, पुफक (पुष्पक) की पत्नी, असा (अश्वा ?) का दान।

[IA, XXXIII, p. 151, n° 28.]

८७

राजगिरि—संस्कृत।

[ ]

T. Bloch के आर्कीओलोजिकल सर्वे, बङ्गाल सर्किल, वार्षिक रिपोर्ट १९०२, पृ० १६, विश्लेषणमें इस शिलालेखका उल्लेख है। मूलका पता नहीं है।

[AS, Bengal circle, Annual report 1902, p. 16. a.]

८८

मथुरा—संस्कृत—भग्न ।

[सं० २९९]

१. नमस्-सर्वसिद्धाना अरहन्ताना । महाराजस्य राजातिराजस्य संवच्छरशते द [ु] [तिये नव (?) -नवत्यधिके ।]

२. २०० ९० ९ (?) हेमन्तमासे २ दिवसे १ आरहातो महावीरस्य प्रातिमा

३.····स्य ओखारिकाये धितु उझतिकाये च ओखाये श्राविका भगिनिय [ ]·········

४.·······शरिकस्य शिवदिनास्य च एनैः आराहातायताने स्थापित [I]··········

५.············देवकुलं च ।

अनुवाद—सब सिद्धों और अर्हन्तोंको नमस्कार हो। महाराज और राजातिराजके (९९ से अधिक) दूसरी शताब्दिमें, २९९ (?), शीतऋतुके दूसरे महीनेके पहले दिन—भगवान महावीरकी प्रतिमा अर्हन्मन्दिरमें ······ के द्वारा तथा······की पुत्री,···ओखरिकाकी···उज्झतिका द्वारा, ···श्राविका-भगिनी ओखाके द्वारा, तथा शिरिक और शिवदिन्ना इनके द्वारा स्थापित की गई···साथमें एक जिनमन्दिर भी ।

[G. Buhler, J R A S, 1896, p. 578–581.]

८९

मथुरा—संस्कृत—भग्न

[गुप्तकाल? वर्ष ५७]

संवत्सरे सप्तपञ्चाश ५० ७ हेमन्धत्रिती····[1]

—से [दि] वसे त्रयोदशे अ-पूर्व्वायां····

---

1 'हेमन्त' और 'तृतीय' या 'तृतीये' पढ़ो ।

अनुवाद—५७ वें वर्ष, शीतऋतुकी तीसरे महीनेके १२ वें दिन, इसदिन·········

[EI, II, n° XIV, n° 38]

९०

नोणमङ्गल—संस्कृत

गुप्तकालसे पहिले, संभवतः ३७० ई० का

[नोणमंगलसें ताम्र-पट्टिकाओंपर]

[१ ब] स्वस्ति नमस् सर्वज्ञाय ॥ जितं भगवता गत-घन-गगनाभेन पद्मनाभेन श्रीमज्-जाह्नवेय-कुलामल-व्योमावभासन-भास्करस्य स्व-भुज-जवज-जय-जनित-सुजन-जनपदस्य दारुणारिगण-विदारण-रणोपलब्ध-व्रण-विभूषण-भूषितस्य काण्वायनसगोत्रस्य श्रीमत्कोङ्गुणिवर्म-धर्म-महाधिराजस्य पुत्रस्य पितुरन्वागत-गुण-युक्तस्य विद्या-विनय-विहित-वृत्तस्य

[२ अ] सम्यक्-प्रजा-पालन-मात्राधिगत-राज्य-प्रयोजनस्य विद्वत्कवि-काञ्चन-निकषोपल-भूतस्य विशेषतोऽप्यनवशेषस्य नीति-शास्त्रस्य वक्तृ-प्रयोक्तृकुशलस्य सुविभक्त-भक्त-भृत्यजनस्य दत्तक-सूत्र-वृत्ति-प्रणेतुः श्रीमन्माधववर्म-धर्म-महाधिराजस्य पुत्रस्य पितृ-पैतामह-गुणयुक्तस्य अनेक-चतुर्दन्त-युद्धावाप्त-चतुरुदधि-सलिलास्वादित-यशसः समद-द्विर-दतुरगारोहणातिशयोत्पन्न-कर्म्मणः श्रीमद् हरिवर्म्म-महाधिराजस्य पुत्रस्य गुरु-गो-ब्राह्मण-पूजकस्य नारायण-चरणानुध्या

[२ ब] तस्य श्रीमद्विष्णुगोप-महाधिराजस्य पुत्रेण पितुरन्वागत-गुण-युक्तेन त्र्यम्बकचरणाम्भोरुहराजः(ज)पवित्रीकृतोत्तमाङ्गेन व्यायामो-द्वृत्त-पीन-कठिनभुजद्वयेन स्व-भुज-बल-पराक्रम-क्रय-क्रीत-राज्येन क्षुत्-

क्षामोष्ठ-पिसितादानप्रीतिकर-निसित-धारासिना श्रीमता **माधववर्म्म-महाधिराजेन** आत्मनःश्रेयसे प्रवर्द्धमानविपुलैश्वर्य्ये त्रयोदशे संवत्सरे फाल्गुने मासे शुक्ल-पक्षे तिथौ पञ्चम्यां श्रीमद्-वीर-देव-शासनाम्बरावभासन-सहस्रकरस्य आचार्य्य**वीर-देवस्य**

[२ अ] निज-कृतान्तपर-राद्धान्त-प्रवीणस्य उपदेशनात् **मुदुकोत्तूर**-विषये **पेब्बोलल्**-ग्रामे अर्हदायतनाय मूलसंघानुष्ठिताय महा-तटाकस्य अवस्तात् द्वादश-खण्डुकावापमात्र-क्षेत्रं च तोट्ट-क्षेत्रं च पट्ट-क्षेत्रं च **कुमारपुर**-ग्रामश्च एतत्सर्वं स-सर्व्व-परिहार-क्रमेणाद्भिर्द्दत्तः योऽस्य लोभात् प्रमादाद्वापि हर्त्ता स पञ्च-महा-पातक-संयुक्तो भवति अपि चात्र मनुगीता[:] श्लोका[:]

स्व-दत्तां पर-दत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम् ।
षष्टि-वर्ष-सहस्राणि घोरे तमसि वर्तते ॥

(अन्य हमेशाके अन्तिम श्लोक)

[इस लेखमें गंगकुलके राजाओंकी परम्परा—कोङ्गणिवर्मा, माधववर्मा, हरिवर्मा, विष्णुगोप और माधववर्मा—देकर यह बताया है कि अन्तिम राजाने अपने राज्यके १३ वें वर्षमें, फाल्गुनसुदी पंचमीको, आचार्य वीर-देवकी सम्मतिसे, मुदुकोत्तूर-देशके पेब्बोंवल् गांवमें मूलसंघद्वारा प्रतिष्ठापित जिनालयमें (उक्त) भूमि और कुमारपुर गांव दानमें दिये।]

[EC, X, Malur tl., n° 73.]

९१

उदयगिरि (सांची के निकट)—संस्कृत ।

[गुप्तकाल १०६= ई. सं० ४२६]

Corrected transcript of the facsimile.

[१] नमः सिद्धेभ्यः[॥]

श्रीसंयुतानां गुणतोयधीनाम्
गुप्तान्वयानां नृपसत्तमानाम् [।]

[२] राज्ये कुलस्याभिविवर्द्धमाने
षड्भिर्य्युते वर्षशतेऽथ मासे [।।] १.
सुकार्त्तिके बहुलदिनेऽथ पञ्चमे

[३] गुहामुखे स्फुटविकटोत्कटामिमां [।]
जितद्विषो जिनवरपार्श्वसंज्ञिकाम्
जिनाकृतीं शमदमवान

[४] चीकरत् [।।] २. आचार्य-भद्रान्वयभूषणस्य
शिष्यो ह्यसावार्य्यकुलोद्गतस्य [।]
आचार्य-गोश

[५]र्म्म मुनेस्सुतस्तु पद्मावत [स्या]श्वपतेर्भटस्य [।।] ३.
परैरजेयस्य रिपुघ्नमानिनम्
स सङ्घ

[६] लस्येत्यभिविश्रुतो भुवि [।] स्वसंज्ञया शंकरनामशब्दितो
विधानयुक्तं यतिमार्गमास्थितः [।।] ४.
स उत्तराणां सदृशे गुरूणां
उदग्दिशादेशवरे प्रसूतः [।]

[८] क्षयाय कर्म्मारिगणस्य धीमान्
यदत्र पुण्यं तदपाससर्ज्ज [।।] ५.

[इस शिलालेखमें शम-दमवाले किसी व्यक्तिकेद्वारा पार्श्वनाथ जिनेन्द्रकी प्रतिमाकी कार्त्तिक वदी पंचमीके दिन स्थापनाकी बात है। यह प्रतिमा किसी गुफाके द्वारपर खड़ी की गई थी। इस प्रतिमाकी स्थापना करने वाला या उसको खड़ा करनेवाला आचार्य गोशर्माका शिष्य था। ये गोशर्मा आचार्य भद्रके वंशमें हुए थे, इनकी परम्परा आर्यकुलकी थी और अश्वपति योद्धाके लड़के थे। ये अश्वपति सङ्घल (या सिंहल) के नामसे प्रसिद्ध थे और इन्होंने जिनदीक्षा लेनेके बाद अपना नाम शंकर रक्खा था।]

[इण्डियन एण्टीक्वेरी, जिल्द ११, पृ० ३१०]

९२

मथुरा—संस्कृत।

[गुप्तकाल, वर्ष ११३]

१. सिद्धम् । परमभट्टारकमाहाराजाधिराज **श्रीकुमारगुप्तस्य** विजयराज्यसं [१०० १०] ३ क.........न्तमा....[दि]—स २० अस्यां ५ [पूर्व्वायां] कोट्टिया गणा-

२. द्विधाधरी [तो] शाखातो **दतिलाचार्य्य**प्रज्ञपिताये **शामाढ्याये** भट्टिभवस्य धीतु ग्रहमित्रपालि [त] प्रा [ता] रिकस्य कुटुम्बिनीये प्रतिमा प्रतिष्ठापिता।

अनुवाद—सिद्धि हो। परमभट्टारक महाराजाधिराज श्रीकुमारगुप्तके विजयराज्यके ११३ वें वर्षमें, [शीतऋतु महीने] कार्त्तिकके २० वें दिन, कोट्टियगण (तथा) विद्याधरी शाखाके **दतिलाचार्य** (दत्तिलाचार्य) की आज्ञासे **शामाढ्य** (श्यामाढ्य) ने एक प्रतिमाकी प्रतिष्ठा करवाई। श्यामाढ्य भट्टिभवकी बेटी (और) ग्रहमित्रपालित प्रातारिक (घाटी या नाविक) की पत्नी थी।

[EI, II, n° XIV, n° 39]

९३

कहायूँ—संस्कृत

[गुप्तकाल १४१ वां वर्ष=४६१ ई. स.]

सिद्धम् ।

[१] यस्योपस्थानभूमिर्नृपतिशतशिरःपातवातावधूता
[२] गुप्तानां वंशजस्य प्रविसृतयशसस्तस्य सर्व्वोत्तमर्द्धेः
[३] राज्ये शक्रोपमस्य क्षितिपशतपतेः **स्कन्दगुप्तस्य** शान्ते
[४] वर्षे त्रिंशद्दशैकोत्तरकशततमे ज्येष्ठमासि प्रपन्ने ॥ १ ॥
[५] ख्यातेऽस्मिन् ग्रामरत्ने **ककुभ** इति जनैस्साधुसंसर्गपूते
[६] पुत्रो यस्**सोमिल**स्य प्रचुरगुणनिधे**र्भट्टिसोमो** महात्मा
[७] तत्सूनू**रुद्रसोम[ः]** प्रथुलमतियशा **व्याघ्र** इत्यन्यसंज्ञो
[८] **मद्र**स्तस्यात्मजोऽभूद् द्विजगुरुयतिषु प्रायशः प्रीतिमान् यः ॥
[९] पुण्यस्कन्धं स चक्रे जगदिदमखिलं संसरद्वीक्ष्य भीतो
[१०] श्रेयोऽर्थं भूतभूत्यै पथि नियमवतामर्हतामादिकर्तॄन्
[११] पञ्चेन्द्रांस्थापयित्वा धरणिधरमयान् सन्निखातस्ततोऽयम्
[१२] शैलस्तम्भः सुचारुर्गिरिवरशिखराग्रोपमः कीर्त्तिकर्त्ता ॥ ३ ॥

[इस शिलालेखमें, जो कि गुप्तकालके १४१ वें वर्षका है, बताया गया है कि किसी भद्र नामके व्यक्तिने, जिसकी कि वंशावली यहां उसके प्रपितामह सोमिल तक गिनाई है, अर्हन्तों (तीर्थंकरों)में मुख्य समझे जाने वाले, अर्थात् आदिनाथ, शान्तिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्व, और महावीर, इन पांचोंकी प्रतिमाओंकी स्थापना करके इस स्तम्भको खड़ा किया। लेखकी ११ वीं पंक्तिके 'पञ्चेन्द्रान्' से इन्हीं पांच तीर्थंङ्करोंसे मतलब है ।]

[इण्डियन एण्टिक्वेरी, जिल्द १०, पृ० १२५–१२६]

९४

नोणमंगल—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[गुप्तकालसे पहिले, संभवतः ४२५ (?) ई० का]

[नोणमंगल (लक्कूर परगना) में, ध्वस्त जैन वस्तिके ताम्र-पत्रों पर[1]]

(१ ब) स्वस्ति जितं भगवता गतघन-गगनाभेन पद्मनाभेन श्रीमज् **जाह्नवेय**-कुलामल-व्योमावभासन-भास्करस्य स्व-भुज-जव-ज-जय-जनित-सुजन-जनपदस्य दारुणारि-गण-विदारण-रणोपलब्ध-व्रण-विभूषण-भूषितस्य काण्वायनस-गोत्रस्य श्रीमत्**कोङ्गणिवर्म्म-धर्म्म-महाधिराजस्य** पुत्रस्य पितुरन्वागत-गुण-युक्तस्य विद्या-विनयविहित-वृत्तस्य सम्यक्-प्रजा-पालन-मात्राधिगत-राज्य-प्रयोजनस्य विद्वत्-कवि-काञ्चन-निकषो

[२ अ] पल-भूतस्य विशेष्यतोऽप्यनवशेषस्य नीति-शास्त्रस्य वक्तृ-प्रयोक्तृकुशलस्य सुविभक्त-भक्त-भृत्य-जनस्य दत्तक-सूत्र-वृत्ति-प्रणेतुः श्रीमन्**माधववर्म्म**-धर्म्म-महाधिराजस्य पुत्रस्य पितृ-पैतामह-गुण-युक्तस्य अनेक-चतुर्दन्त-युद्धावाप्त-चतुरुदधि-सलिलास्वादित-यशसः समद-द्विरद-तुरगारोहणातिशयोत्पन्न-कर्म्मणः धनुरभियोगस-म्पद्-विशेषस्य श्रीमद्-**हरिवर्म्म**-महाधिराजस्य पुत्रस्य गुरु-गो-ब्राह्मण-पूजकस्य नारायण-चरणानुध्यातस्य श्रीमद्**विष्णुगोप**-महाधिराजस्य पुत्रस्य पितुरन्वा

[२ ब] गत-गुण-युक्तस्य त्र्यम्बक-चरणाम्भोरुह-रजः-पवि-त्रीकृतोत्तमाङ्गस्य व्यायामोद्वृत्त-पीन-कठिन-भुज-द्वयस्य स्वभुजबल-परा-

---

१ ये ताम्रपत्र जमीनमें मिले हैं ।

क्रम-क्रयक्रीत-राज्यस्य चिर-प्रनष्ट-देव-भोग-ब्रह्मदेयानेक-सहस्र-विसर्गा-श्रयण-कारिणः श्रुत्-आमोष्ट-पिसिताशन-प्रीनिकर-निशित-धारासेः कलि-युग-बलावमग्न-धर्म्मोद्धरण-नित्य-सन्नद्धस्य श्रीमतो **माधववर्म्म**-धर्म्म-महा-धिराजस्य पुत्रेण जननी-देवताङ्क-पर्य्यङ्क-तले-समधिगत-राज्य-विभव-विलासेन निज-प्रभावांशु-चक्रवालाखण्डित-शत्रु-नृपति-मण्डलेनाखण्ड

[२ अ] ल-विडम्बि-शौर्य्य-वीर्य्य-यशो-धाम-भूतेन गज-धुरि-हय-पृष्ठ कार्म्मुके चाद्वितीयेन ललना-नयन-भ्रमरावली-नित्यकृतानुयात्रेण प्रजा-परिपालन-कृत-परिकर-बन्धेन किं बहुना इदङ्कलि-युधिष्टिरेण-श्रीमता **कोङ्गुणिवर्म्म**-धर्म्म-महाधिराजेन आत्मनः श्रेयसे प्रवर्द्धमान-विपुलैश्वर्य्ये प्रथमसंवत्सरे फाल्गुन-मासे शुक्ल-पक्षे तिथौ पञ्चम्यां नो(स्वो)पाध्यायस्य परमार्हतस्य **विजयकीर्तेः** सकलदिङ्मण्डलव्यापिकीर्त्तेरुपदेशात् **चन्द्रनन्द्याचार्य्य**-प्रमुखेन मूल-संघेनानुष्ठिताय **उरनूरार्हतायत**

[२ब] **नाय कोरिकुन्द**-विषये **वेन्नेल्करनिग्रामः पेरूरेयानि-अडि** **गलर्हदायतनाय** शुल्क-बहिश्कर्पापणेष्ठ पादश्च देव-भोगक्रमेणाद्भिर्दत्तः योऽस्य लोभाद् प्रमादाद्वापि हर्त्ता स पञ्च-महा-पातक-संयुक्तो भवति अपि चात्र मनुगीताः श्लोकाः

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम् ।
षष्टि-वर्ष-सहस्राणि घोरे तमसि वर्त्तते
भूमि-दानात् परं दानं न भूतं न भविष्यति ।
तस्यैव

[१ अ] हरणात् पापं न भूतं न भविष्यति ॥

(दो हमेशाके श्लोक)महाराज-मुखाज्ञाप्त्या **मारिषेण** त्वट्टकारेण लिखितेयं ताम्र-पट्टिका

[EC, X, Mālur tl., n° 72.]

अनुवाद—कोङ्गणिवर्म्म-धर्म्म-महाधिराज जाह्नवी (या गंग)-कुलके निर्मल आकाशमें चमकनेवाले सूर्य थे; वे काण्वायनसगोत्रके थे।

इनके पुत्र **माधववर्मधर्ममहाधिराज** थे, जो एक 'दत्तकसूत्र-वृत्ति' के प्रणेता थे।

इनके पुत्र **हरिवर्मा**-महाधिराज थे।

इनके पुत्र **विष्णुगोप**-महाधिराज थे।

इनके पुत्र **माधववर्म**-धर्म-महाधिराज थे, जो कलियुगकी कीचड़में फंसे हुए धर्मरूपी बैलको निकालनेमें हमेशा सन्नद्ध रहते थे।

इनके पुत्र कोङ्गणिवर्म-धर्म्म-महाधिराजने जो कि कलियुगी युधिष्ठिर कहलाते थे, अपने कल्याणकेलिये, अपने बढ़ते हुए राज्यके प्रथम वर्षकी फाल्गुन सुदी पञ्चमीको, अपने उपाध्याय परमार्हत (भक्तजैन) विजयकीर्तिकी सम्मतिसे, मूलसंघके चन्द्रनन्दि इत्यादिके द्वारा प्रतिष्ठापित उरनूर के जैन मन्दिरको कोरिकुन्द-देशमेंका वेन्नेल्करनि गाँव दिया था, और पेरूर एवानि-अडिगल्के जिनमन्दिरमें बाहरकी चुङ्गीके कार्षापण[1] (या धन) का चतुर्थ भाग दिया था।

हमेशाके शापात्मक (imprecatory) श्लोक। महाराज अपने मुँहसे जैसा बोलते जाते थे, मारिषेण त्वट्टकार वैसा ही इन ताम्र-पट्टिकाओं-पर खोदता जाता था।

---

१. ८० रत्तीके तौलके ताम्बेके सिक्के, जो प्राचीनतम देशी मुद्राके थे। डा० बूल्हरकी Grundriss, में रैपसनका 'Indian Coins' नामका लेख ...।)

९४

मर्करा—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक ३८८=४६६ ई.]

अविनीत कोङ्गणिका मर्करा-पत्र

(मर्कराके खजानेमेंसे प्राप्त ताम्रपत्रोंके ऊपर)

(१ ब) स्वस्ति जितं भगवता गतवनगगनाभेन पद्मा(द्म)नाभेन श्रीमद्जाह्नवीयकुलामलव्योमावभासनभास्करः स्वखड्गैकप्रहारखण्डित-महाशिलास्तम्भलब्धबलपराक्रमो दारुणो(णा)रिगणविदारणोपलब्धव्रन(व्र)-णविभूषणविभूषित काण्वायनसगोत्रस्य(?) श्रीमान् कोङ्गणिमहाधिराज ॥ तत्पुत्र पितुरन्वागतगुणयुक्तो विद्याविने(न)यविहितवृत्तः मन्या(म्य)क्प्र-जापालना(न)मात्राधिगतराज्यात्प्र(प्य)योजन विद्वत्कविकाञ्चननिक-षोपलभूतो नीतिशास्त्रस्यवक्तृप्रयोक्तृकुशलस्य(?) दत्तकसूत्रवृत्तिः(त्तेः) प्रणेतां(ता) श्रीमान्माधवमहाधिराज ॥ तत्पुत्र पितृपैतामहा(ह)गुणयुक्तो व(ऽ)नेकचातुर्दन्तयुद्ध(द्धा)वाप्तचतुरुदधिसलिलास्वादितयशा श्रीमद् हरि-वर्म्मनहाधिराज ॥ तत्पुत्र ॥ द्विजगुरुदेवताः(ता)पूजनपरो नारायण-चरणानुद्ध(ध्या)त श्रीमद्विष्णुगोपम

(२ अ) हाधिराज ॥ तस्य पुत्र ॥ त्रियम्भ(म्ब)कचरणाम्भोरुहरा-जाः(रजः)पवित्रीकृतोत्तमाङ्ग स्वभुजबलपराक्रमक्रियाकृतराज्य कलियुगबल-पङ्कावसन्नवृषोद्धरणनित्यसन्नद्ध श्रीमान्माधवमहाधिराज ॥ तस्य पुत्र ॥ श्रीमद्कदम्बकुलगगनगभस्तिमालिन कृष्णवर्म्ममहाधिराजस्य प्रिया(य) भागिनेयो विद्याविनय(या)तिस(श)यपरिपूरितान्तरात्न(त्मा) निरवग्रहप्रधा-(य)नसौर्य्य विद्वत्सु प्रथमगण्य श्रीमान् कोङ्गणिमहाधिराज अविनीतना-मधेय दत्तस्य देसिग-गणं कोण्डकुन्दान्वयगुणचन्द्रभटारशिष्यस्य अभ-

णन्दि(अभयनन्दि) भटार तस्य शिष्यस्य **शीलभद्र** भटारशिष्यस्य **जयणन्दि** भटारशिष्यस्य **गुणणन्दि** भटारशिष्यस्य **चन्दणंदि** भटारर्गे अष्टा-अ-सीति-उत्तरस्य त्रयो-स(श)तस्य संवत्सरस्य माघमासं सोमवारं स्वातिनक्षत्र सुद्ध पञ्चमी **अकालवर्ष**-पृथुवीवल्लभमन्त्री **तळवननगर** श्रीविजयजिनालयके, पूनाडुच्छ(च्छट्)सहस्रएडेनाडुसप्तरिमध्ये **बदणेगुप्पे**नाम **अविनीत**महाधिराजेन दत्तेन पडियें आरोळ्मूरू ।

(२ ब) रोळ् पन्निर्कण्डुगङ्गेय्दु**अम्बलिमण्णुं तलवनपुर**दोळ् **तळवित्तियमन्** **पोगरिगेल्ले**योल् पन्निक्कण्डुगं **पिरिकेरे**योळम् राज-मानमनुमोदन पन्निर्कण्डुगं मनोहरं दत्तं **बदणेगुप्पे**ग्रामस्य सीमान्तरं पूर्व्वस्यां दिसि केञ्जिगेमोरडिए गजसेलेये करिवल्लिय कोट्टगर**बदणेगुप्पे**यत्रिसन्धिय सत्ति-कोरडु आग्नेयदिनन्ते वन्दुकागणि-तटाकं पुन दक्षिणस्यां दिसि वहुष्णुहिये वल्कणिवृक्षमे पुन पश्चिम-मुखदे सन्द वहुमूलिकपन्तिये पुन **बदणेगुप्पे**य-कोट्टगरमुल्तगिय-त्रिसन्धिय कोळे चण्डिगाले पुन नैरत्यदे सन्दु कथक-वृक्षमे पुन पश्चिमस्यां दिसि पेल्डुल्दिल्-वृक्षमे सान्तेरेतिय वट-वृक्षमे पुन तोरेवल्लमे उत्तरा-मुखदे सन्द वहुमूलिक-पन्तिये जम्बूपडिय-तटाकमे पुन वायव्यदे गळे-चिञ्च-वृक्षमे पुन **बदणेगुप्पे**य-मुल्तगिय-कोळेयनूरदासनूर—त्रिसन्धिय-नेर्गिल-गुम्बे निडुवेळुङ्ग पुन गजसेलेयग्राम उत्तरदिसि काया-मोरडिए इल्लिदु केम्ब रेये पुन पूर्व्व-मुखदे सन्द वहुमूलिक-प ।

(३ अ)न्तिये पुन कडपल्तिगाल वट-वृक्षमे पुन ईसानदे **बदणेगुप्पे**य-दासनूर-पोल्मद-त्रिसन्धिय तटाकमे कोडिगट्टि चिञ्च-वृक्षमे केन्तरेम्बिन दिणेइं पूर्व्वदे कूडित्त सीमान्तरं ॥ तस्य साक्षिणा गङ्गराज

१ °जनाणन्दि°, इं ए०, १, पृ० ३६३ ।

कुलसकल्पास्थयिक-पुरुष पेर्व्वक्कवाण मर्क्करेय सेन्दिक गञ्जेनाड निर्गुण्ड मणियुगुरेय नन्वाल सिम्बालादय भृत्ययां देश-साक्षि नगडूर कुलुगो वरुगणिगनूर तगडरु आलगोडते नन्दकरं उम्मत्तूर वेल्लुररुमाळनेयरं वदणेगुप्पेय झंसन्द वेल्लुरु पेग्गिवियरं ॥

स्वदत्तपरदत्तां वा यो हरेय(त) वसुन्धरी(रां) षष्टिं वर्षसहस्राणि विष्टायां जायते क्रमि[:] [॥]

वसुभिर्[र्] वसुधा भुक्तां(क्ता)राजभिस्सकर-राजभिः[1] यस्य यस्य यदा भूमि तस्य तस्य तदा फलम् ॥

देवस्वं तु विषं घोरं न विषं विषमुच्यते । विषमेकाकिनं हन्ति देवस्व[-] पुत्रपौत्रिकं(कां) ॥

सामान्योयं धर्म्म हेतुं(सेतुं) नृपाणाम् काले काले पालनीयो भवद्भि[:] सर्व्वा(र्व्वा)नेतां भागिन(न् भाविनः) पार्थिवेन्द्रान् भूयो भूयो याचते रामभद्र[:] ॥ विश्वकर्म्म लिखितम्

चेर राजाओंकी वंशावली इस दानपत्रमें इस प्रकार दी हुई है:—

१. कोङ्गणि प्रथम । २. माधव प्रथम । ३. हरिवर्म्म । ४. विष्णुगोप । ५. माधव द्वितीय । ६. कोङ्गणि द्वितीय (अविनीत) ।

ये अविनीत महाधिराज कदम्बकुलसूर्य कृष्णवर्म्म-महाधिराजकी प्रिय बहिनके पुत्र थे। इनके लिये दानपत्रमें कहा गया है कि–'इनका अन्तरात्मा विद्या, विनयकी वृद्धिसे परिपूरित था, अजेय शौर्य इनमें था और विद्वानोंमें प्रथम गिने जाते थे।' इन्हींसे देसिग (देशीय) 'गण' कोण्डकुन्द 'अन्वय' के गुणचन्द्र-भटारके शिष्य अभयनन्दि-भटार, उनके शिष्य शीलभद्र-भटार, उनके शिष्य जयणन्दि- भटार, उनके शिष्य गुणणन्दि-भटार, उनके शिष्य चन्द्रणन्दि-भटारको तलवननगरके श्रीविजय जिनालयके मन्दिरके लिये

---

१ सामान्यतया 'सगरादिभिः' ।

बदणेगुप्पे नामका सुन्दर गाँव दानमें प्राप्तकर अकालवर्ष पृथवी-वल्लभके मन्त्रीने शकसंवत्सर ३८८ के माघ महीनेकी शुक्ल पञ्चमी, सोमवारको स्वातिनक्षत्रके समय इसे भेंट किया। यह गाँव पूलाडु छः हजारके एडेनाडु सत्तरके मध्यमें अवस्थित है। साथमें १२ 'कण्डुग' प्रत्येक छः आश्रित गांवोंमेंसे, तथा पोगरिगेल्ले और पिरिकेरेमें से भी दिया।]

९६

हल्सी (ज़िला बेलगाँव)—संस्कृत।

[ई० पाँचवीं शताब्दिका (फ्लीट)]

प्रथम पत्र।

[१] नमः ॥ जयति भगवाञ्जिनेन्द्रो गुणरुन्द्रः प्र[थि]त [परम] कारुणिकः

[२] त्रैलोक्याश्वासकरी दयापताकोच्छ्रिता यस्य ॥ परम—

[३] श्रीविजयपलाशिकायां प्रजासाधारणा [शा] नाम् ॥

दूसरा पत्र; पहली ओर।

[४] कदम्बानां युवराजः श्रीकाकुस्थवर्म्मा स्ववैजयिके अशीतितमे

[५] संवत्सरे भगवतामर्हताम् सर्व्वभूतशरण्यानाम् त्रैलोक्य-निस्तार-

[६] काणाम् खेटग्रामे वदोवरक्षेत्र [म्] श्रुतकीर्तिसेनापतये ॥

दूसरा पत्र; दूसरी ओर।

[७] आत्मनस्तारणार्थं दत्तवा [न्] [॥] तद्यो [हि] न (ना) स्ति स्ववंश्यः [प] रवंश्यो वा

[८] स पञ्चमहापातकसंयुक्तो भवती (ति) [।] यो भिरक्षती (ति) स्य सत्यर्व्वे (सर्व्वे, या सत्यं सर्व्वे) गु-

[९] णपुण्यावाप्तिः [।।] अपि चोक्तम् [।] बहुभिर्व्वसुधा दत्ता ।।[१]

[१०] [रा] जभिस्सगरादिभिः यस्य यस्य य[दा]भू[ ]मिः तस्य तस्य तदा फलम् [।।]

[११] स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां षष्टिवर्षसहस्र(स्रा)णी (णि)

[१२] नरके पच्यते तु सः ।। नमो नमः [।।] ऋषभाय नमः ।।

[इस लेखमें कदम्ब 'युवराज' काकुस्थ (काकुत्स्थ)वर्माके द्वारा श्रुतकीर्त्ति सेनापतिको दिये गये एक क्षेत्र-दानका उल्लेख है । यह दान खेटग्राम नामक गाँवमें किया गया था ।]

[इं० ए०, जिल्द ६, पृ० २२-२४, नं० २०]

९७

देवगिरि (जिला धारवाड़)—संस्कृत ।

—[?]—

सिद्धम् जयत्यर्हंस्त्रिलोकेशः सर्वभूतहिते रतः
रागाद्यरिहरोनन्तोनन्तज्ञानदृगीश्वरः

स्वस्ति विजयवैजयन्त्यां स्वामिमहासेनमातृगणानुद्ध्याताभिषिक्तानां मानव्यसगोत्राणां हारितीपुत्राणं(णां) अङ्गिरसां प्रतिकृतस्वाध्यायचर्चकानां सद्धर्म्मसदम्बानां कदम्बानां अनेकजन्मान्तरोपार्जितविपुलपुण्यस्कन्धः आहवार्जितपरमरुचिरदृढसत्त्वः[२] विशुद्धान्वयप्रकृत्यानेकपुरुषपरंपरागते जगत्प्रदीपभूते महत्यदितोदिते काकुस्थान्वये श्रीशान्तिवर्म्मतनयः

---

१ यह पूर्ण विरामका चिह्न फजूल है । २ इन पत्रोंमें यह खास बात है कि जहाँ द्वित्वाक्षरोंका इतना अधिक प्रयोग किया गया है वहाँ 'सत्व' और 'तत्व'में 'त' अक्षर द्वित्व नहीं किया गया ।

श्रीमृगेश्वरवर्मा आत्मनः राज्यस्य तृतीये वर्षे पौषसंवत्सरे कार्तिकमासे वहुले पक्षे दशम्यां तिथौ उत्तराभाद्रपदे नक्षत्रे **बृहत्परलूरे** (?) त्रिदशमुकुटपरिवृष्टचारचरणेभ्यः परमार्हद्देवेभ्यः संमार्जनोपलेपनाभ्यर्च्चनभग्नसंस्कारमहिमार्थं ग्रामापरदिग्विभागसीमाभ्यन्तरे राजमानेन चत्वारिंशन्निवर्त्तनं कृष्णभूमिक्षेत्रं चत्वारि क्षेत्रन्निवर्त्तनं च चैत्यालयस्य वहिः,[१] एकं निवत्तनं पुष्पार्थं देवकुलस्याङ्गनञ्च एकनिवर्त्तनमेव सर्वपरिहारयुक्तं दत्तवान् महाराजः। लोभादधर्माद्वा योस्याभिहर्त्ता स पंचमहापातकसंयुक्तो भवति योस्याभिरक्षिता स तत्पुण्यफलभाग्भवति। उक्तञ्च—

वहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः।
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥[२]
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां।
षष्टिं वर्षसहस्राणि नरके पच्यते तु सः ॥
अद्भिर्द्दत्तं त्रिभिर्मुक्तं सद्भिश्च परिपालितम्।
एतानि न निवर्तन्ते पूर्वराजकृतानि च ॥
स्वं दातुं सुमहच्छक्यं दुःखमन्यार्थपालनं।
दानं वा पालनं वेति दानाच्छ्रेयोनुपालनम् ॥

परमधार्मिकेण **दामकीर्ति**भोजकेन लिखितेयं पट्टिका इति सिद्धिरस्तु ॥

[इं० ए०, जिल्द ७, पृ० ३५-३७, नं. ३६]

[यह पत्र श्रीशान्तिवर्माके पुत्र महाराज श्री 'मृगेश्वरवर्मा' की तरफसे लिखा गया है, जिसे पत्रमें काकुस्था(त्स्था)न्वयी प्रकट किया है, और इससे ये कदम्बराजा, भारतके सुप्रसिद्ध वंशोंकी दृष्टिसे, सूर्यवंशी अथवा इक्ष्वाकु-

---

१ व्याकरणकी दृष्टिसे यह वाक्य विल्कुल शुद्ध नहीं मालूम होता। २ यह पद्य मिस्टर फ्लीटके शिलालेख नं० ५ में मनुका ठहराया गया है। आमतौर-पर यह व्यासका माना जाता है।

वंशी थे, ऐसा मालूम होता है। यह पत्र उक्त मृगेश्वरवर्माके राज्यके तीसरे वर्ष, पौषे (?) नामके संवत्सरमें, कार्त्तिक कृष्णा दशमीको, जबकि उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र था, लिखा गया है। इसके द्वारा अभिषेक, उपलेपन, पूजन, भग्नसंस्कार (मरम्मत) और महिमा (प्रभावना) इन कामोंके लिये कुछ भूमि, जिसका परिमाण दिया है, अरहन्तदेवके निमित्त दान की गयी है। भूमिकी तफसीलमें एक निवर्तनभूमि खालिस पुष्पोंके लिये निर्दिष्ट की गई है। ग्रामका नाम कुछ स्पष्ट नहीं हुआ, 'बृहत्परलूरे' ऐसा पाठ पढ़ा जाता है। अन्तमें लिखा है कि जो कोई लोभ या अधर्मसे इस दानका अपहरण करेगा वह पंचमहापापोंसे युक्त होगा और जो इसकी रक्षा करेगा वह इस दानके पुण्य-फलका भागी होगा। साथ ही इसके समर्थनमें चार श्लोक भी 'उक्तं' च रूपसे दिये हैं, जिनमेंसे एक श्लोकमें यह बतलाया है कि जो अपनी या दूसरेकी दान की हुई भूमिका अपहरण करता है वह साठ हजार वर्ष तक नरकमें पकाया जाता है, अर्थात् कष्ट भोगता है। और दूसरेमें यह सूचित किया है कि स्वयं दान देना आसान है परंतु अन्यके दानार्थका पालन करना कठिन है, अतः दानकी अपेक्षा दानका अनुपालन श्रेष्ठ है। इन 'उक्तं च' श्लोकोंके बाद इस पत्रके लेखकका नाम 'दामकीर्ति भोजक' दिया है और उसे परम धार्मिक प्रकट किया है। इस पत्रके शुरूमें अर्हन्तकी स्तुतिविषयक एक सुन्दर पद्य भी दिया हुआ है जो दूसरे पत्रोंके शुरूमें नहीं है, परंतु तीसरे पत्रके बिल्कुल अन्तमें जरासे परिवर्तनके साथ जरूर पाया जाता है।]

९८

देवगिरि (जिला–धारवाड़)—संस्कृत

—[?]—

सिद्धम् ॥ विजयवैजयन्त्याम् स्वामिमहासेनमातृगणानुद्ध्याताभिषि-

---

१ साठ संवत्सरोंमें इस नामका कोई संवत्सर नहीं है। सम्भव है कि यह किसी संवत्सरका पर्याय नाम हो या उस समय दूसरे नामोंके भी संवत्सर प्रचलित हों। २ यह और आगेके लेख नं० ९८ और १०५ जैनहितैषी, भाग १४, अङ्क ७–८, पृ० २२८–२२९ से उद्धृत किये हैं।

त्तस्य **मानव्य**सगोत्रस्य **हारिती**पुत्रस्य प्रतिकृतचर्च्चापारस्य विबुधप्रति-विम्बानां **कदम्बानां** धर्ममहाराजस्य **श्रीविजयशिवमृगेशवर्म्मणः** विजयायुरोग्यैश्वर्यप्रवर्द्धनकरः **संव्वत्सरः चतुर्थः** वर्षापक्षः अष्टमः तिथिः पौर्णमासी अनयानुपूर्व्या अनेकजन्मान्तरोपार्ज्जितविपुलपुण्यस्कंधः सुविशुद्धपितृमातृवंशः उभयलोकप्रियहितकरानेकशास्त्रार्थतत्वविज्ञानविवेच्च (?) ने विनिविष्टविशालोदारमतिः हस्त्यश्वारोहणप्रहरणादिषु व्यायामिकीषु भूमिषु यथावत्कृतश्रमः दक्षो दक्षिणः नयविनयकुशलः अनेकाहवार्ज्जितपरमदृढ़सत्वः उदात्तबुद्धिधैर्यवीर्य्यत्यागसम्पन्नः सुमहति समरसङ्कटे स्वभुजबलपराक्रमावाप्तविपुलैश्वर्यः सम्यक्प्रजापालनपरः स्वजनकुमुदवनप्रबोधनशशाङ्कः देवद्विजगुरुसाधुजनेभ्यः गोभूमिहिरण्यशयनाच्छादनान्नादिअनेकविधदाननित्यः विद्वत्सुहृत्स्वजनसामान्योपभुज्यमानमहाविभवः आदिकालराजवृत्तानुसारी धर्ममहाराजः कदम्बानां श्रीविजय-**शिवमृगेश**वर्म्मा **कालवङ्ग**ग्रामं त्रिधा विभज्य दत्तवान् । अत्र पूर्वमर्हच्छालापरमपुष्कलस्थाननिवासिभ्यः भगवदर्हन्महाजिनेन्द्रदेवताभ्य एको भागः, द्वितीयोर्हत्प्रोक्तसद्धर्म्मकरणपरस्य **श्वेतपटमहाश्रमणसंघो**पभोगाय, तृतीयो **निर्ग्रन्थमहाश्रमणसंघो**पभोगायेति । अत्र देवभाग धान्यदेवपूजाबलिचरुदेवकर्मकरभग्नक्रियाप्रवर्त्तनाद्यर्थोपभोगाय । एतदेवं न्यायलब्धं देवभोगसमयेन[2] योभिरक्षति स तत्फलभाग्भवति, यो विनाशयेत् स पंचमहापातकसंयुक्तो भवति । उक्तञ्च-बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं । **नरवरसेनापतिना** लिखितं ।

[इं० ए०, जिल्द ७, पृ० ३७-३८, नं० ३७]

---

१ इन प्रतिलिपियोंमें विसर्ग उस चिह्नके स्थानमें लिखा गया है जो कण्ठ्यवर्गों (Gutturals) से पहले विसर्गकी जगह प्रयुक्त हुआ है। २ 'देवभागं समयेन' शुद्ध पाठ मालूम पड़ता है।

[यह दानपत्र कदम्बोंके धर्ममहाराज 'श्रीविजयशिवमृगेश वर्मा' की तरफसे लिखा गया है और इसके लेखक हैं 'नरवर' नामके सेनापति। लिखे जानेका समय चतुर्थसंवत्सर, वर्षा (ऋतु) का आठवाँ पक्ष और पौर्णमासी तिथि है। इस पत्रके द्वारा 'कालवङ्ग' नामके ग्रामको तीन भागोंमें विभाजित करके इस तरहपर बाँट दिया है कि पहला एक भाग तो अर्हच्छाला परम-पुष्कल स्थाननिवासी भगवान् अर्हन्महाजिनेन्द्रदेवताके लिये, दूसरा भाग अर्हत्प्रोक्त सद्धर्माचरणमें तत्पर श्वेताम्बरमहाश्रमणसंघके उपभोगके लिये और तीसरा भाग निर्ग्रन्थमहाश्रमणसंघके उपभोगके लिये। साथ ही, देवभागके सम्बन्धमें यह विधान किया है कि वह धान्य, देवपूजा, बलि, चरु, देवकर्म, कर, भग्नक्रिया-प्रवर्तनादि अर्थोपभोगके लिये है, और यह सब न्यायलब्ध है। अन्तमें इस दानके अभिरक्षकको वही दानके फलका भागी और विनाशकको पंच महापापोंसे युक्त होना बतलाया है, जैसाकि नं० ९७ के दानपत्रमें उल्लेखित है। परंतु यहाँ उन चार 'उक्तं च' श्लोकोंमेंसे सिर्फ पहलेका एक श्लोक दिया है जिसका यह अर्थ होता है कि, इस पृथ्वीको सगरादि बहुतसे राजाओंने भोगा है, जिस समय जिस-जिसकी भूमि होती है उस समय उसी-उसीको फल लगता है।

इस पत्रमें 'चतुर्थ' संवत्सरके उल्लेखसे यद्यपि ऐसा भ्रम होता है कि यह दानपत्र भी उन्हीं मृगेश्वरवर्माका है जिनका उल्लेख पहले नम्बरके पत्र (शि० ले० नं. ९७) में है अर्थात् जिन्होंने पूर्वका (नं० ९७) दान-पत्र लिखाया था और जो उनके राज्यके तीसरे वर्षमें लिखा गया था, परंतु यह भ्रम ठीक नहीं है। कारण कि एक तो 'श्रीमृगेश्वरवर्मा' और 'श्रीवि-जयशिवमृगेशवर्मा' इन दोनों नामोंमें परस्पर बहुत बड़ा अन्तर है; दूसरे, पूर्वके पत्रमें 'आत्मनः राज्यस्य तृतीये वर्षे पौष संवत्सरे' इत्यादि पदोंके द्वारा जैसा स्पष्ट उल्लेख किया गया है वैसा इस पत्रमें नहीं है; इस पत्रके समय-निर्देशका ढंग बिलकुल उससे विलक्षण है। 'संवत्सरः चतुर्थः, वर्षा पक्षः अष्टमः, तिथिः पौर्णमासी,' इस कथनमें 'चतुर्थ' शब्द संभवतः ६० संवत्सरोंमेंसे चौथे नम्बरके 'प्रमोद' नामक संवत्सरका द्योतक मालूम होता है; तीसरे, पूर्वपत्रमें दातारने बड़े गौरवके साथ अनेक विशेषणोंसे युक्त जो अपने 'काकुत्स्थान्वय' का उल्लेख किया है और साथ ही अपने पिताका नाम

भी दिया है, वे दोनों बातें इस पत्रमें नहीं हैं जिनके, एक ही दाता होनेकी हालतमें, छोड़ दिये जानेकी कोई वजह मालूम नहीं होती; चौथे, इस पत्रमें अर्हन्तकी स्तुतिविषयक मंगलाचरण भी नहीं है, जैसाकि प्रथम पत्रमें पाया जाता है; इन सब बातोंसे ये दोनों पत्र एक ही राजाके मालूम नहीं होते।

इस पत्र नं. ९८ में श्रीविजयशिवमृगेशवर्माके जो विशेषण दिये हैं उनसे यह भी पता चलता है कि, यह राजा उभयलोककी दृष्टिसे प्रिय और हितकर ऐसे अनेक शास्त्रोंके अर्थ तथा तत्त्वविज्ञानके विवेचनमें बड़ा ही उदारमति था, नय-विनयमें कुशल था और ऊँचे दर्जेके बुद्धि, धैर्य, वीर्य, तथा त्यागसे युक्त था। इसने व्यायामकी भूमियोंमें यथावत् परिश्रम किया था और अपने भुजबल तथा पराक्रमसे किसी बड़े भारी संग्राममें विपुल ऐश्वर्यकी प्राप्ति की थी; यह देव, द्विज, गुरु और साधुजनोंको नित्य ही गौ, भूमि, हिरण्य, शयन (शय्या), आच्छादन (वस्त्र) और अन्नादि अनेक प्रकारका दान दिया करता था; इसका महाविभव विद्वानों, सुहृदों और स्वजनोंके द्वारा सामान्यरूपसे उपभुक्त होता था; और यह आदिकालके राजा (संभवतः भरतचक्रवर्ती) के वृत्तानुसारी धर्मका महाराज था। दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों ही सम्प्रदायोंके जैनसाधुओंको यह राजा समानदृष्टिसे देखता था, यह बात इस दानपत्रसे बहुत ही स्पष्ट है।]

९९

हल्सी—संस्कृत।

—[?]—

स्वस्ति ॥

जयति भगवाञ्जिनेन्द्रो गुणरुन्द्र×प्रथितपरमकारुणिकः
त्रैलोक्याश्वासकरी दयापताकोच्छ्रिता यस्य [।।]
कदम्बकुलसत्केतोः हेतो× पुण्यैकसम्पदाम्
श्रीकाकुस्थनरेन्द्रस्य सूनुर्भानुरिवापरः [।।]

श्रीशान्तिवरवर्म्मेति राजा राजीवलोचनः
खलेन वनिताकृष्टा येन लक्ष्मीर्द्विपद्गृहात् [॥]
तत्प्रियज्येष्ठतनयः श्रीमृगेशनराधिपः ।
लोकैकधर्मविजयी द्विजसामन्तपूजितः [॥]
मत्वा दानं दरिद्राणां महाफलमितीव यः
स्वयं भयदरिद्रोऽपि शत्रुभ्योऽदाद्महामयम्[1] [॥]
तुङ्गगङ्गकुलोत्सादी पल्लवप्रलयानलः
स्वार्यके नृपतौ भक्त्या कारयित्वा जिनालयम् [॥]

श्रीविजयपलाशिकायां यापनि(नी)यनिर्ग्रन्थकूर्चकानां स्ववैजयिके अष्टमे वैशाखे संवत्सरे कार्त्तिकपौर्ण्णमास्याम् । मातृसरित आरभ्य आ इङ्गिणीसङ्गमात् राजमानेन त्रयस्त्रिंशन्निवर्त्तनं । श्रीविजयवैजयन्तीनिवासी दत्तवान् भगवद्भ्योर्हद्भ्यः[।]तत्राज्ञप्तिः । दामकीर्त्तिभोजकः जियन्तश्चायुक्तकः सर्व्वस्यानुष्ठाता इति [॥]

अपि च—उक्तम् [।]

वहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरादिभिः
यस्य यस्य यदा भूमिः तस्य तस्य तदा फलम् [॥]
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम्
षष्टिवर्षसहस्राणि कुम्भीपाके स पच्यते [॥]

सिद्धिरस्तु ।

[यह दानपत्र शान्तिवर्माके ज्येष्ठ पुत्र राजा मृगेशवर्माका है । उन्होंने

---

१ हमारी रायमें यह पाठ 'ऽदान्महाभयम्' ऐसा होना चाहिये । २ यह और आगे का १०३ वाँ शिलालेख (ताम्रपत्र) 'अनेकान्त', वर्ष ७, किरण १-२, पृष्ठ ८-९ से लिया है ।

स्वर्गगत राजा (शान्तिवर्मा) की भक्तिसे पलाशिका नामक नगरमें जिनालय निर्माण कराके अपनी विजयके आठवें वर्षमें यापनीयों, निर्ग्रन्थों और कूर्चकोंके लिये भूमि-दान किया है । यहाँ कूर्चक सम्प्रदाय दिगम्बर सम्प्रदायका ही एक भेद मालूम पड़ता है[1] ।

[इं० ए०, जिल्द ६, पृ० २४-२५]

१००

हल्सी—संस्कृत ।

—[?]—

प्रथम पत्र

[१] जयति भगवाञ्जिनेन्द्रो गुणरुन्द्रः प्रथितपरमकारुणिकः त्रैलोक्या

[२] श्वासकरी दयापताकोच्छ्रिता यस्य ॥ स्वामिमहासेनमातृगणानु-

[३] ध्यातानां मानव्यसगोत्राणां हारितीपुत्राणां प्रतिकृतस्वाध्याय च [र्चा]-

दूसरा पत्र; पहिली ओर ।

[४] पारगाणाम् स्वकृतपुण्यफलोपभोक्तृणाम् स्ववाहुवीर्य्योपार्ज्जि-

[५] तैश्वर्यभोगभागिनान् सद्धर्म्मसदम्बानां कदम्बानाम् ॥ काकुस्थ-

[६] वर्म्मनृपलब्धमहाप्रसादः संभुक्तवाञ्छ्रुतनिधिश्श्रुतकीर्त्तिभोजः

दूसरा पत्र; दूसरी ओर ।

[७] ग्रामं पुरा नृपु वरः पुरुपुण्यभागी खेटाह्वकं यजनदानदयो-

[८] पपन्नः ॥ तस्मिन्स्वर्य्याते शान्तिवर्म्मावनीशः मात्रे धर्म्मार्त्थं दत्तवान् दा-

[९] मकीर्त्तिः भूमौ विख्यातस्तत्सुतश्श्रीमृगेशः पित्रानुज्ञातं धार्म्मिको दान-

---

१ देखो अनेकान्त, वर्ष ७, किरण १-२, पृष्ठ ७-८, में श्री पं. नाथूरामजी प्रेमीका 'कूर्चकोंका सम्प्रदाय' नामक लेख ।

तीसरा पत्र; पहली ओर ।

[१०] मेव ॥ श्रीदामकीर्त्तिरुरुपुण्यकीर्त्तिः सद्धर्म्ममार्गस्थितशुद्ध-बुद्धिः ज्याया-

[११] न्सुतो धर्म्मपरो यशस्वी विशुद्धबुद्ध्या (द्धय) न्नयुतो गुणाढ्यः आचार्य्यैर्वन्धु—

[१२] षेणाह्वैः निमित्तज्ञानपारगैः स्थापितो भुवि यद्वंशः श्रीकीर्त्ति-

[१३] कुलवृद्धये [॥] तत्प्रसादेन लब्धश्रीः दानपूजाक्रियोद्यतः गुरु-

तीसरा पत्र; दूसरी ओर ।

[१४] भक्तो विनीतात्मा परात्महितकाम्यया ॥ जयकीर्त्तिप्रतीहार×प्रसादान्नृप-

[१५] तेः रवेः पुण्यार्त्थं स्वपितुर्म्मात्रे दत्तवान् पुरुखेटकं ॥ जिने-न्द्रमहिमा

[१६] कार्य्या प्रतिसंवत्सरं क्रमात् अष्टाहकृतमर्य्यादा कार्त्तिक्या-न्तद्धना-

[१७] गमात् वार्षिकांश्चतुरो मासान् यापनीयास्तपस्विनः भु[ञ्जीरस्तु]

चतुर्थ पत्र; पहली ओर ।

[१८] यथान्याय्यं महिमाशेषवस्तुकम् [॥] कुमारदत्तप्रमुखा हि सूरयः

[१९] अनेकशास्त्रागमखिन्नबुद्धयः जगत्यतीतास्सुतपोधनान्विताः गणो

[२०] स्य तेषां भवति प्रमाणतः ॥ धर्मेप्सुभिर्ज्जानपदैस्सनागरैः

[२१] जिनेन्द्रपूजा सततं प्रणेया इति स्थितिं स्थापितवान् रवीशः पला [शिका]

चतुर्थ पत्र; दूसरी ओर ।

[२२] यां नगरे विशाले ॥ स्थित्यानया पूर्व्वनृपानुजुष्ट्या यत्ताम्र-पत्रेषु नि-

[२३] वद्धमादौ धर्म्माप्रमत्तेन नृपेण रक्ष्यं संसारदोषं प्रविचार्य्य

[२४] बुद्ध्या [॥] वहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः यस्य यस्य

[२५] यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत

पञ्चम पत्र

[२६] वसुन्धरां षष्टिं वर्षसहस्राणि नरके पच्यते भृशम् ॥ अद्भि-र्दत्तं त्रिभि-

[२७] र्भुक्तं सद्भिश्च[1] परिपालितम् एतानि न निवर्त्तन्ते पूर्व्वराज-कृतानि च [॥]

[२८] यस्मिञ्जिनेन्द्रपूजा प्रवर्त्तते तत्र तत्र देशपरिवृद्धिः

[२९] नगराणां निर्भयता तद्देशस्वामिनाञ्चोर्ज्जा ॥ नमो नमः [॥]

[ई० ए० जिल्द ६, पृ० २५–२७, नं. २२]

[यह लेख जैनधर्मका 'अष्टाह्निका' नामका उत्सव मनानेके लिये रवि-वर्म्मा और अन्य लोगों द्वारा दिये गये दानों और हुक्मोंका उल्लेख करता है। इसमें कदम्बोंके राजा काकुस्थ (काकुत्स्थ)वर्मा का, उसके बाद शान्तिवर्मा, तत्पश्चात् श्री मृगेश (वर्मा) का और अन्तमें रविवर्माके दान-का वर्णन है। जिस गांव का दान दिया गया उसका नाम है पुरुखेटक।

---

१ मि० राइस इसको 'षड्भिश्च प्रतिपालितम्' पढ़ते हैं और उसका अर्थ 'छः [illegible] जानेवाला' दान करते हैं।

१०१

हल्सी—संस्कृत।

—[?]—

प्रथम पत्र।

[१] जयति भगवाञ्जिनेन्द्रो गुणरुन्द्रः प्रथितपरमकारु-

[२] णिकः त्रैलोक्याश्वासकरी दयापताकोच्छ्रिता यस्य ॥

[३] श्रीविष्णुवर्म्मप्रभृतीन्नरेन्द्रान् निहत्य जित्वा पृथिवीं समस्तां

[४] उत्साद्य काञ्चीश्वरचण्डदण्डम् पलाशिकायां समवस्थितस्तः[।।]

द्वितीय पत्र; पहली ओर।

[५] रवि कदम्बोरु कुलाम्बरस्य गुणांशुभिर्व्याप्य जगत्समस्तं

[६] नानेन चत्वारि निवर्त्तनानि दत्तौ जिनेन्द्राय महीन् महेन्द्रः [।।]

[७] संप्राप्य मातुश्चरणप्रसादं धर्म्मैकलक्ष्येऽपि दामकीर्त्तिः

[८] तत्पुण्यवृद्ध्यर्थमभूमिलिप्तम् श्रीकीर्त्तिनाना तु च तत्कनिष्टः[।।]

दूसरा पत्र; दूसरी ओर।

[९] रागान्मदाद्यथवापि लोभात् यस्तानि हिंस्यादिह भूमि-

[१०] पालः आसप्तमं तस्य कुलं कदाचित् नापैति कुम्भाग्निरया-

लिस्मन् [।।]

[११] तान्येव यो रक्षति पुण्यकाङ्क्षः स्ववंशजो वा परवंशजो वा

[१२] स मोदमानस्सुरसुन्दरीभिः चिरं सदा क्रीडति नाकपृष्टे [।।]

तीसरा पत्र।

[१३] अपि चोक्तं मनुना [।] बहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरा-

दिभिः

[१४] यस्य यस्य यदा भूमिः तस्य तस्य तदा फलम् ॥

[१५] स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम्

[१६] षष्ठिवर्षसहस्राणि निरये स विपच्यते ॥

[इस लेखमें रविवर्माके द्वारा जिनेन्द्रदेवके लिये दिये गये एक भूमि-दानका उल्लेख है। दान की गई भूमि नापमें ४ निवर्तन थी, दामकीर्ति, जो कि धर्ममूर्ति थे, की माताके चरणोंका प्रसाद पाकरके ही यह राजा दानमें प्रवृत्त हुआ। दामकीर्ति के छोटे भाईका नाम श्रीकीर्त्ति था। रविवर्मा पलाशिकामें रहते थे। इन्होंने श्रीविष्णुवर्मा(संभवतः 'विष्णुगोप' या 'विष्णुगोपवर्मा' नामका पल्लव राजा) और दूसरे अन्य राजाओंका वध किया था, समस्त पृथ्वीको जीता था और काञ्चीश्वरके चण्डदण्डका उत्सादन (निर्मूलन) किया था।]

[इं० ए०, जिल्द ६, पृ० २९-३०, नं० २४]

१०२

हल्सी—संस्कृत ।

—[?]—

प्रथम पत्र ।

स्वस्ति ॥

जयति भगवाञ्जिनेन्द्रो गुणरुन्द्रः प्रथितपरमकारुणिकः

त्रैलोक्याश्वासकरी दयापताकोच्छ्रिता यस्य ॥

श्रीमत्काकुस्थराजप्रियहिततनयश्शान्तिवर्म्मावनीश

तस्यैव ज्येष्ठसूनुः प्रथितपृथुयशा श्रीमृगेशो नरेशः ॥ (।)

दूसरा पत्र; पहली ओर ।

तत्पुत्रो दीप्ततेजा रविनृपतिरभूत्सत्त्वधैर्य्यार्जितश्रीः

तद्भ्राता भानुवर्म्मा स्वपरहितकरो भाति भूप(:) कनीयान् ॥

तेनेयं वसुधा दत्ता जिनेभ्यो भूतिमिच्छता ।

पौर्ण्णमासीष्वनुच्छिद्य स्नपनार्त्थं हि सर्व्वदा ॥

पलाशिकायाम् कर्द्दमपट्यां राजमानेन

दूसरा पत्र; दूसरी ओर

पञ्चदशनिवर्त्तना तांम्रशासने भूमिर्निवद्धा उञ्छकरभरादिविवर्जिता श्रीमद्भानुवर्मराजलब्धपादप्रसादेन पण्डरभोजकेन परमार्हद्भक्तेन प्रवर्द्धमानराज्यश्रीरविवर्म्मधर्म्ममहाराजस्य एकादशे संवत्सरे हेमन्तषष्ठपक्षे

तीसरा पत्र।

दशम्यां तिथौ ॥ तां यो हिनस्ति स्ववंश्यः परवंश्यो वा स पञ्चमहापातकसंयुक्तो भवति ॥ उक्तञ्च ॥

वहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजभिः सगरादिभिः
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुंधरां
षष्टिवर्षसहस्राणि कुम्भीपाके स पच्यते

[इस लेखमें भानुवर्मा और उसके अधीनस्थ कर्मचारी पण्डर 'भोजक' के दानका उल्लेख है। यह दान भानुवर्माके बड़े भाई रविवर्माके राज्यके ११ वें वर्षमें, हेमन्तऋतुके छठे पक्षमें दसवीं तिथिको दिया गया था। इस भूमिका दान जिनभगवानकी हर पूर्णिमाके दिन पूजन करनेके लिये ही हुआ था। भूमिका नाप १५ निवर्तन था। यह भूमि पलाशिका गाँवके कर्दमपटी की थी। इस लेखसे कदम्बवंशके राजाओंकी रविवर्माके समयतककी वंशावलीका भी पता चलता है और वह यह है:—

१. काकुत्स्थवर्मा
|
२. शान्तिवर्मा
|
३. श्रीमृगेश
|
४. रविवर्मा (छोटा भाई भानुवर्मा)।

[ई० ए०, जिल्द ६, पृ० २७-२९]

१०३

हल्सी—संस्कृत।

—[?]—

सिद्धम् ॥ स्वस्ति स्वामिमहासेनमातृगणानुध्याताभिषिक्तानाम् 'मानव्य'-सगोत्राणाम् हारितीपुत्राणाम् प्रतिकृतस्वाध्यायचर्च्चिकानाम् कदम्बा(म्बा)नाम्महाराजः श्रीहरिवर्म्मा

बहुभवकृतैः पुण्यै राजश्रियं निरुपद्रवाम्
प्रकृतिषु हितः प्राप्तो व्याप्तो जगद्यशसाखिलम्
श्रुतजलनिधिः विद्यावृद्धप्रदिष्टपथि स्थितः
स्वबलकुलिशाघातोच्छिन्नद्विषद्वसुधाधरः [॥]

स्वराज्यसंवत्सरे चतुर्थे फाल्गुणशुक्लत्रयोदश्याम् उच्चशृङ्ग्याम् सर्व्वजनमनोह्लादवचनकर्म्मणा सपितृव्येण शिवरथनामधेयेनोपदिष्टः पलाशिकायाम् भारद्वाज-सगोत्रसिंहसेनापतिसुतेन मृगेशेन कारितस्यार्हदायतनस्य प्रतिवर्षमाष्टाह्निकमहामहसततच (?) रूपलेपन-क्रियार्त्थं तदवशिष्टं सर्व्वसंघभोजनायेति सुद्दि (?) छि कुन्दूरविषये वसुन्तवाटकं सर्व्वपरिहारसंयुतं कूर्च्चकानाम् वारिषेणाचार्यसङ्घ-हस्ते चन्द्रक्षान्तं प्रमुखं कृत्वा दत्तवान् [॥] य एवं न्यायतोभिरक्षति स तत्पुण्यफलभाग्भवति [।] यश्चैनं रागद्वेषलोभमोहैरपहरति स निकृष्टतमां गतिमवाप्नोति [॥] उक्तञ्च—

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम्
षष्टिं वर्षसहस्राणि नरके पच्यते तु सः [॥]
बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् [॥] इति

वर्द्धतां वर्द्धमानार्हच्छासनं संघनाशनम्

येनाद्यापि जगज्जीवपापपुंजप्रभंजनम् [॥] नमोऽर्हते वर्द्धमानाय [॥]

[यह दानपत्र कदम्ब-राजवंशके महाराजा हरिवर्माका है। इन्होंने अपने राज्यके चौथे वर्षमें शिवरथ नामके पितृव्यके उपदेशसे, सिंहसेनापतिके पुत्र मृगेशद्वारा निर्मापित जैनमन्दिरकी अष्टाह्निका-पूजाके लिये और सर्वसंघके भोजनके लिए 'वसुन्तवाटक' नामक गाँव कूर्चकोंके वारिषेणाचार्यसंघके हाथमें चन्द्रक्षान्तको प्रमुख बनाकर प्रदान किया। यह और ९९ वाँ दानपत्र दोनों, ताम्रपत्रोंपर हैं। नम्बर ९९ वें के दान-पत्रमें यापनीय, निर्ग्रन्थ और कूर्चक इन तीन सम्प्रदायोंके नाम हैं और इसमें सिर्फ कूर्चक सम्प्रदायका। इससे मालूम होता है कि इस सम्प्रदायमें 'वारिषेणाचार्यसंघ' नामका एक संघ था, जिसके प्रधान चन्द्रक्षान्त (मुनि) थे।]

[इं० ए०, जिल्द ६, पृ० ३०–३१]

१०४

हल्सी—संस्कृत।

—[?]—

प्रथमपत्र।

सिद्धम् ॥ स्वस्ति ॥ स्वामिमहासेनमातृगणानुध्याताभिषिक्तानाम् मानव्यसगोत्राणा[म्] हारितीपुत्राणाम् प्रतिकृतस्वाध्यायचर्चापाराणाम् कदम्बानाम् महाराजश्रीरविवर्म्मणः स्वभुजबलपराक्रमावाप्त(?) निरवद्यविपुलराज्यश्रियः विद्वत्सुहृत्स्वर्ण्णनिकषभूतस्य कामार्थधर्म्मगण-

दूसरा पत्र; पहली ओर।

स्यागामिन्यक्षितेन्द्रियजयस्य न्यायोपार्जितार्त्थ [सं] हितसाधुज [न]-स्य क्षितितलप्रततविमलयशसः प्रियतनयः पूर्व्वसुचरितोपचितविपुल-पुण्यसम्पादितशरीरबुद्धिसत्त्वः सर्व्वप्रजाहृदयकुमुदचन्द्रमाः महाराज-श्रीहरिवर्म्मा स्वराज्यसंवत्सरे पञ्चमे पलाशिकाधिष्ठाने अहरिष्टि-समाह्वय-

दूसरा पत्र; दूसरी ओर।

श्रमणसङ्घान्वयवस्तुनः धर्म्मनन्द्याचार्य्याधिष्ठितप्रामाण्यस्य चैत्यालयस्य पूजासंस्कारनिमित्तन् साधुजनोपयोगार्थञ्च सेन्द्रकाणां कुलललामभूतस्य भानुशक्तिराजस्य विज्ञापनया मरदे ग्रामं दत्तवान् [।।] य एतल्लोभाद्वै कदाचिदपहरेत् स पञ्चमहापातकसंयुक्तो भवति यश्चाभिरक्षति स तत्पुण्यफलम्

तीसरा पत्र।

अवाप्नोतीति [।।] उक्तञ्च ॥

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम्
षष्टिवर्षसहस्राणि नरके पच्यते तु सः ॥
बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादि [भिः]
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥
ये सेतूनभिरक्षन्ति भग्नान् संस्थापयन्ति च ।
द्विगुणं पूर्व्वकर्तृभ्यः तत्फलं समुदाहृतम् [।।]

[इस लेखमें अपने राज्यके पाँचवें वर्षमें सैन्द्रकके कुलके भानुशक्ति राजाकी प्रार्थनापर हरिवर्म्माने 'मरदे' नामका गाँव दानमें दिया था, इस बातका उल्लेख है। यह हरिवर्मा रविवर्माका प्रियपुत्र है। यह दान राजधानी पलाशिकामें किया गया। इस दानका निमित्त वह चैत्यालय था जो कि 'अहरिष्टि' नामके श्रमणसङ्घकी सम्पत्ति थी और जिसपर आचार्य धर्मनन्दिकी आज्ञा चलती थी; उस चैत्यालयके पूजा इत्यादिके प्रबंधके लिये तथा साधुजनोंके उपयोगके लिये ही यह दान किया गया।]

[इं० ए०, जिल्द ६, पृ० ३१-३२.]

१०८

देवगिरि—संस्कृत।

—[?]—

विजयत्रिपर्व्वते स्वामिमहासेनमातृगणानुध्याताभिषिक्तस्य **मानव्य-सगोत्रस्य** प्रतिकृतस्वाध्यायचर्चापारगस्य आदिकालराजर्षिविम्बानां आश्रि-तजनाम्बानां **कदम्बानां** धर्ममहाराजस्य अश्वमेधयाजिनः समरार्जितविपु-लैश्वर्यस्य सामन्तराजविशेषरत्नसुनागजिनाकम्पदायानुभूतस्य (?) शरद-मलनभस्युदितशशिसदृशैकातपत्रस्य धर्ममहाराजस्य **श्रीकृष्णवर्म्मणः** प्रियतनयो **देववर्म्मयुवराजः** स्वपुण्यफलाभिकांक्षया त्रिलोकभूतहितदे-शिनः धर्मप्रवर्त्तनस्य अर्हतः भगवतः चैत्यालयस्य भग्नसंस्कारार्चनमहि-मार्थं **यापनीय [स]ङ्घेभ्यः** सिद्धकेदारे राजमानेन (?) द्वादश निवर्त्तनानि क्षेत्रं दत्तवान् योस्य अपहर्त्ता स पंचमहापातकसंयुक्तो भवति योस्याभिर-क्षिता स पुण्यफलमश्नुते (।) उक्तं च—बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरा-दिभिः। यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तथा (?) फलं॥ अद्भिर्दत्तं त्रिभिर्युक्तं सद्भिश्च परिपालितं। एतानि न निवर्त्तन्ते पूर्व्वराजकृतानि च॥

स्वं दातुं सुमहच्छक्यं दु (?)ःख (म) न्यार्थपालनं।
दानं वा पालनं वेति दानाच्छ्रेयोनुपालनम्॥
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां।
षष्टिवर्षसहस्राणि नरके पच्यते तु सः॥
श्रीकृष्णनृपपुत्रेण कदम्बकुलकेतुना।
रणप्रियेण देवेन दत्ता भूमिस्त्रिपर्व्वते॥
दयामृतसुखास्वादपूतपुण्यगुणेप्सुना।
देववर्म्मैकवीरेण दत्ता जैनाय भूरियम्॥

जयत्यर्हंस्त्रिलोकेशः सर्व्वभूतहितंकरः ।
रागाद्यरिहरोनन्तोनन्तज्ञानदृगीश्वरः ॥

[इं० ए०, जिल्द ७, पृ० ३३-३५, नं. ३५]

[यह दानपत्र कदम्बोंके धर्ममहाराज श्रीकृष्णवर्माके प्रियपुत्र 'देववर्मा' नामके युवराजकी तरफसे लिखा गया है और इसके द्वारा 'त्रिपर्वत' के ऊपरका कुछ क्षेत्र अर्हन्त भगवानके चैत्यालयकी मरम्मत, पूजा और महिमाके लिये 'यापनीय' संघको दान किया गया है ।

पत्रके अन्तमें इस दानको अपहरण करनेवाले और रक्षा करनेवालेके वास्ते वही क़सम दिलाई है अथवा वही विधान किया है जैसा कि ९७ नम्बरके दानपत्रके सम्बन्धमें पहले बतलाया गया है। वही चारों 'उक्तं च' पद्य भी कुछ क्रमभंगके साथ दिये हुए हैं और उनके बाद दो पद्योंमें इस दानका फिरसे खुलासा दिया है, जिसमें देववर्माको रणप्रिय, दयामृतसुखास्वादनसे पवित्र, पुण्यगुणोंका इच्छुक और एकवीर प्रकट किया है । अन्तमें अर्हन्तकी स्तुतिविषयक प्रायः वही पद्य है जो ९७ नम्बरके दानपत्रके शुरूमें दिया है । इस पत्रमें श्रीकृष्णवर्माको 'अश्वमेध' यज्ञका कर्ता और शरद् ऋतुके निर्मल आकाशमें उदित हुए चंद्रमाके समान एक छत्रका धारक, अर्थात् एकछत्र पृथ्वीका राज्य करनेवाला लिखा है ।]

पूर्वके नं० ९७,९८ व इस दानपत्रपरसे निम्नलिखित ऐतिहासिक व्यक्तियोंका पता चलता है:—

१ स्वामिमहासेन—गुरु ।
२ हारिती—मुख्य और प्रसिद्ध पुरुष ।
३ शान्तिवर्मा—राजा ।
४ मृगेश्वरवर्मा—राजा ।
५ विजयशिवमृगेशवर्मा—महाराजा ।
६ कृष्णवर्मा—महाराजा ।
७ देववर्मा—युवराज ।
८ दामकीर्ति—भोजक ।
९ नरवर—सेनापति ।

१०६

अल्तेम (जिला कोल्हापुर)—संस्कृत ।

[शक ४११=४८८ ई०]

पहला पत्र ।

स्वस्ति ॥ जयत्यनन्तसंसारपारावारैकसेतवः
महावीरार्हतः पूताश्चरणाम्बुजरेणवः ॥

श्रीमतां विश्व-विश्वम्भराभिसंस्तूयमानमानव्यसगोत्राणां हारीति-पुत्राणां सप्तलोकमातृभिस्सप्तमातृभिरभिवर्द्धितानां कार्त्तिकेयपरिरक्षणप्राप्त-कल्याणपरम्पराणां भगवन्नारायणप्रसादसमासादितवराहलाञ्छनेक्षणक्षण-वशीकृताशेपमहीभृतानां (भृताम्) चालुक्यानां कुलमलंकरिष्णोः ॥ स्वभुजोपार्ज्जितवसुन्धरस्य निजयशश्श्रवणमात्रेणैवावनतराजकस्य कीर्त्तिप-ताकावभासितदिगन्तरालस्य जयसिंहस्य राजसिंहस्य (?) सूनुस्सूनृत-वागनवरतदानार्द्रीकृतकरस्सुरगज इव प्रशमनिधिस्तपोनिधिरिव दृप्तवैरिषु प्राप्तरणरागो रणरागोऽभवत् [॥] तस्य चात्मजे श्वमेवनाव (०मेधाव) भृत (थ)-स्नानपवित्रीकृतगात्रे प्रणतपरनृपतिमकुटतटघटितहटन्मणिगण-किरणवार्द्धाराधौतचारुचरणकमलयुगले चित्रकण्ठाभिधानतुरङ्गमकण्ठीरवे-णोत्सारितारातिस्तम्बेरममण्डले वर्ण्णाश्रमसर्व्वधर्म्मपरिपालनपरे गङ्गासेतु(?) मध्यवर्तिदेशाधीश्वरे शक्तित्रयप्रवर्द्धितप्राज्यसाम्राज्ये गङ्गायमुनापालि-

दूसरा पत्र; पहली ओर ।

ध्वजढक्कादिपञ्चमहाशब्दचिह्ने करदीकृतचोल-चेर-केरल-सिंहल-कलिंगभूपाले दण्डितपाण्ड्यादिमण्डि (ण्ड) लिके अप्रतिशासने 'सत्याश्रय'-श्री-पुलकेश्यभिधानपृथिवीवल्लभमहाराजाधिराजे पृथिवीमे-कातपत्रं शासति सति [॥] राजा रुन्द्रनीलसैन्द्रकवंशशशांकायमानः

प्रचण्डदोर्द्दण्डमण्डितमण्डलाग्रो **गोण्ड**नामासीत् [॥] अय-नय-विनयस-म्पन्नस्तनयोऽस्य समररसरसिक**स्सिवारा**ख्यया ख्यातः [॥] पुत्रोऽस्य भूता (तो) धात्रीतिलकायमानः पराक्रमाक्रान्तवैरिनिकुरुम्बः अवार्य्य-वीर्यसमन्वितः कार्य्याकार्य्यनिपुणः हनूमानिव रामस्याभिरामस्य तस्य भृत्यस्सत्यसन्धो धार्मिक**स्सामियार**स्समभूत् [॥] स तत्प्रसादसमा-सादित**कुहुण्डी**विषयस्तं परिपा[ल] यं (यन्) तदन्तर्भूता**लक्तक**ा-भिधाननगर्य्यांग्रामसप्तशतराजधान्यामशेपविषयविशेपकायमानायां शालि-व्रीहीक्षुवणचणकप्रियङ्गुवरकोदारकश्यामाकगोधूमाद्यनेकधान्यसमृद्धायां तद्देशविलासिनीमुखकमलमिव विराजमानायां धनधान्यपरिपूर्ण्णकृपीवल-प्रायायाम् ॥

ऐन्द्र्यां दिशि महेन्द्राभः प्रासादं प्रवरम्महत् जिनेन्द्रा–

दूसरा पत्र; दूसरी ओर ।

यतनं भक्त्याकारयत् सुमनोहरम् ॥

प्रोत्तुंग-प्रासादं त्रिभुवनतिलकं जिनालयं प्रवरं

नानास्तम्भसमुद्धृतविराजमानं चिरं जगति ॥

शकनृपाब्देष्वेकादशोत्तरेषु चतुष्षष्टेपु व्यतीतेषु **विभव**संवत्सरे प्रवर्त्तमाने ॥ कृते च जिनालये ।

वैशाखोदितपूर्ण्णपुण्यदिवसे राहो (हौ) विधौ (धोः) मण्डलं

श्लेष्टेन्दे[1]र्थिकमज्जनादुपगतं स्नेहाद् गृहं भूभुजम्

श्रीसत्याश्रयमाश्रयं गुणवतां विज्ञापयामास स

तज्जैनालयपूजनोचितनुतक्षेत्राय धर्म्मप्रियः ॥

आयुर्जन्मवतामिदं ननु तदि (डि) त् सन्ध्येन्द्रा(न्द्र)चापोपमं

ज्ञात्वा धर्म्मम (ध) नार्ज्जनं बुधजनैर्म्मर्त्य (र्त्यैः) फलं मन्यते

१ संभवतः शुद्ध पाठ 'श्लिष्टेऽन्वर्थिकमज्जनाद्' होना चाहिये ।

इत्येवं प्रविबोध्य सम्यजनतां सत्याश्रयो वल्लभो
भक्त्या तज्जिनमन्दिरोपमक्रिये क्षेत्रं ददौ शासनम् ॥
वैशाखपौर्णमास्यां राहौ विधुमण्डलं प्रविष्टवति
सत्याश्रयनृपतिस्त्रिभुवनतिलकाय दत्तवान् क्षेत्रम् ॥
कनकोपलसम्भूतवृक्षमूलगुण (णा) न्वये
भूतस्समग्रराद्धान्तस्सिद्धनन्दिमुनीश्वरः ॥
तस्यासीत् प्रथमश्शिष्यो देवताविनुतक्रमः
शिष्यैः पञ्चशतैर्युक्त—

तीसरा पत्र; पहिली ओर।

श्चितकचार्य्य-संज्ञिनः ॥
श्रीमत्कनकोपलाम्नाये ख्यातकीर्त्तिर्बहुश्रुतः
लक्ष्मीवान्नागदेव्याख्यश्चितकाचार्य्यदीक्षितः ॥
नागदेवगुरोश्शिष्यः प्रभूतगुणवारिधिः
समस्तशास्त्रसम्बोधि (धी) जिननन्दिः प्रकीर्त्तितः ॥
श्रीमद्विविधराजेन्द्रप्रस्फुरन्मकुटालिभिः
निघृष्टचरणाब्जाय प्रभवे जननन्दिने ॥

जिननन्द्याचार्य्यसूर्य्याय दुश्चरतपोविशेपनिकषोपलभूताय समधिसर्व्वशास्त्राय नगरांशतलभोगांश्च प्रददौ [॥] तत्र तलभोगसीमान्याह [।] चैत्यालयाद् वायव्यां दिशि तटाकं तटो ऋजुसूत्रक्रमेण पश्चिमाभिमुखं गत्वा पथं तस्य मध्ये निखातपाषाणं तस्माद् दक्षिणाभिमुखमनुपथं गत्वा प्रवाहं तस्यं (स्य) मध्ये निखातपाषाणं पूर्व्वाभिमुखं गत्वा तिन्त्रिणीकवृक्षं यावत् तस्मादुत्तराभिमुखं गत्वा पूर्व्वोक्त-तटाकं [1] यावत्

१ इस पूर्णविराम की यहाँ कोई जरूरत नहीं है। 'पूर्व्वोक्त-तटाकं यावत्' ऐसा सम्बन्ध है।

स्थितं एतन्नगरनिवेशक्षेत्रम् [॥] तत्र तलभोगक्षेत्रसीमान्याह [।] नगरस्य दक्षिणस्यां दिशि सेतुवन्धात् प्रभृत्यनुजलवाहलं पूर्व्वाभिमुखं गत्वा यावदौञ्छिकक्षेत्रं तत्पश्चिमसीम्नि निखातपाषाणं यावत्तस्मादनुसीमोत्तराभिमुखं गत्वा यावच्छमीवल्मीकं तस्मात्पुनः पूर्व्वाभिमुखं गत्वा यावत् स्थलगिरि तस्मात्पुनरनुगिर्य्युत्तराभिमुखं गत्वा यावद्गिरेरुच्चप्रदेशं तस्मात् पश्चिमाभिमुखं गत्वा यावद्गिरि तस्मात् पश्चिमाभिमुखं गत्वा यावत्स्थलगिरि तस्माद्दक्षिणाभिमुखं गत्वा यावत्सेतुवन्धन (नं) स्थितं राजमनेन पञ्चाषट् सदुत्तरनिवर्त्तनशतं तलभोगक्षेत्रं चतुस्सीमाविरुद्धम् ॥ **नरिन्दक**नामग्रामे नैर्ऋत्यां दिशि नरिन्दक-सामरिवाद (ड) ग्रामपथि मध्यवर्त्तिसिंगतेगतटाकाद् ऋजुसूत्रक्रमेण नरिन्दकग्रामपथं यावत्तावत्स्थितं चत्वारिंशत् नि (सन्नि) वर्त्तनं क्षेत्रं दक्षिणदिशि राजमानेन ॥ **किणयिगे**नामग्रामे पूर्व्वस्यां दिशि अशीतिनिवर्त्तनं क्षेत्रं राजमानेन पिशाचारामं नैर्ऋत्यां दिशि यावच्छमीझाटवल्मीकं तस्मात् पूर्व्वाभिमुखं गत्वा यावत्पथं तस्माद्दक्षिणाभिमुखं गत्वा यावत्स्थलगिरि तस्मात् पश्चिमाभिमुखमनुस्थलगिरि गत्वा यावच्छमीस्थलं तस्मादुत्तराभिमुखं गत्वा यावच्छमी-झाटवल्मीकं स्थितं चतुस्सीमाविरुद्धम् ॥ **पन्तिगणगे** नामग्रामे

चतुर्थ पत्र; पहिली ओर ।

नैर्ऋत्यां दिशि मान्यस्य क्षेत्रं उत्तरस्यां दिशि चत्वारिंशन्निवर्त्तनं क्षेत्रं राजमानेन पश्चिमस्यां दिशि स्थलगिरि तस्मादनुसीमं पूर्व्वाभिमुखं गत्वा यावच्छमीवल्मीकं तस्माद्दक्षिणाभिमुखं गत्वा **कोमरञ्चे**-ग्राम-सीम तस्मात्पूर्व्वाभिमुखमनुसीमं गत्वा यावज्जलवाहलं तस्मादुत्तराभिमुखमनुवाहलं गत्वा यावच्छमीझाटवल्मीकं तस्मात्पश्चिमाभिमुखं गत्वा यावत्तटाकोत्तरकोडि (टि) तस्माद्दक्षिणाभिमुखमनुस्थलगिरि गत्वा यावत्तावत्स्थितं (चतु)स्सी(मावि)रुद्ध(म्) ॥

मंगलीनामग्रामपश्चिमदिशि राजमानेन चत्वारिंशन्निवर्त्तनं क्षेत्रं तस्य सीमान्याह स्थलगिरेः पश्चिमाभिमुखमनुपथं गत्वा याव**द्रूविक**ग्रामसीम तस्मादुत्तराभिमुखमनुसीम गत्वा यावत्स्थलगिरि तस्मात्पूर्व्वाभिमुख-मनुस्थलगिरि गत्वा यावत्स्थलगिरि तस्माद्दक्षिणाभिमुखमनुस्थलगिरि गत्वा स्थितं चतुस्सीमाव (वि) रुद्धम् ॥ **करण्डिगे** नाम ग्रामे प–

चतुर्थ पत्र; दूसरी ओर।

श्चिमस्यां दिशि **चन्द्वुर-पन्दर्ङ्गवल्लि**नामग्राममार्गमध्ये अश्वत्थतटाकाद् वायव्यां दिशि राजमानेन पञ्चविंशतिनिवर्तनं क्षेत्रम् ॥ **दावनवल्लि**नामग्रामे पश्चिमस्यां दिशि **अलक्तकनगरकुम्बयिज**नामग्राम-मार्ग्गमध्ये विम्वालयपिशाचारामात्पश्चिमे राजमानेन चत्वारिंशन्निवर्तनं क्षेत्रम् ॥ पुनरपि तस्मिन्नेव ग्रामे दक्षिणस्यां दिशि हिङ्गुटीतटाकादुत्तरस-मीपस्थं राजमानेन शतं नि (शत-नि) वर्तनं क्षेत्रम् ॥ **नन्दिपिगे**नाम ग्रामे पूर्व्वस्यां दिशि **वरवुलिक**सीम **श्रीपुर**मार्ग्गमध्ये राजमानेन चत्वारिं-शन्निवर्तनं क्षेत्रम् ॥ **सिरिपत्ति**नामग्रामे पश्चिमस्यां दिशि **श्रीपुर**मार्ग्गतो दक्षिणतो राजमानेन चत्वारिंशन्निवर्तनं क्षेत्रम् ॥ **अर्जुनवाद** (ड) नामग्रामे पश्चिमस्यां दिशि श्रीपुरमार्ग्गतो उत्तरतो राजमानेन पञ्चाश-न्निवर्तनं क्षेत्रम् ॥ ग्रामनामान्याह ॥ **कुम्बयिज**-द्वादशस्यो (स्या) न्तः **रूविको** नाम

पाँचवाँ पत्र।

ग्रामः प्रथमः ॥ **सामरिवादो (डो)** नाम ग्रामः द्वितीयः ॥ बढमाले द्वादशस्यान्तः **लहिवादो (डो)** नाम ग्रामः तृतीयः ॥ श्रीपुरद्वाद-शस्य मध्ये **पेल्लिदको** नाम ग्रामः चतुर्थः ॥ इत्येते चत्वारो ग्रामाः चतु-स्सीमाव (वि) रुद्धक्षेत्रः (त्राः) सोदङ्गाः स (सो) परिकराः अचाटभटप्रवेश्याः

[॥] तदागामिभिरस्मद्वंश्यैरन्यैश्च राजभिरायुरैश्वर्य्यादीनां विलसितमच्चि-रांशुचञ्चलमवगच्छद्भिराचन्द्रार्कधराण्णर्वस्थितिसमकालं यशश्चिचीशुभिः स्वदत्तिनिर्व्विशेषं परिपालनीयमुक्तं च मन्वादिभिः ॥

बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभि-
र्यस्य यस्य यदा भूमिः तस्य तस्य तदा फलम् ।
स्वं दातुं सुमहच्छक्यं दुःखमन्यस्य पालनं
दानं वा पालनं श्रेयो श्रेयो दानस्य पालनम् ॥
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम् ।
षष्टिं वर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥

[इं. ए., ७, पृ० २०९–२१७, नं. ४४]

[इस दानपत्रमें पुलिकेशीकी वंशावलि उसके पितामह (बाबा) जयसिंह और उसके पिता रणराग से लेकर दी हुई है। ऊपर विरुदावलिमें यह वाक्यावली आती है, 'जयसिंहस्य राजसिंहस्य सूनुः···रणरागोऽभवत्°— जिससे सर वाल्टर इंलियटने सन्देहास्पदरूपसे यह फलितार्थ निकाला है कि 'राजसिंह' जयसिंहका दूसरा नाम था। पर यदि 'राजसिंह' यह व्यक्तिवाचक नाम हो भी, तो इससे जयसिंहकी उपाधिका ही पता लगेगा, जयसिंहके दूसरे नामका नहीं।

तत्पश्चात् दानपत्रमें उसके (जयसिंहके) एक सामन्त सामियारका उल्लेख है जो रुन्द्रनील–सैन्द्रक वंशका है। यह सामियार कुहुण्डी जिलेका शासक था। इसके बाद यह वर्णन है कि सामियारने अलक्तकनगरमें, जो कि उस जिलेके ७०० गावोंके समूहोंमें एक प्रधान नगर था, एक जैनमन्दिर बनवाया, और राजाज्ञा लेकर, विभव संवत्सरमें जब कि शकवर्ष ४११ व्यतीत हो चुका था वैशाख महीने की पूर्णिमाके दिन चन्द्रग्रहणके अवसर- कुछ जमीन और गाँव मन्दिरको दिये।]

१०७

आडूर [जिला धारवाड]; संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न ।

—[?]—

पूर्ववर्ती चालुक्य कीर्त्तिवर्म्मा प्रथमका शिलालेख

[१]............जयत्यनेकधा विश्वं विवृण्वन्नंशुमानिव
............श्री-वर्द्धमानदेवे....................

[२]..........न् (?) यप-द्रुःप्रदावनः [॥]
प्रभास (?) नि भुवं भूयो........................

[३]..........प्रताप-श्रन........ि........ि............दान
....

[४]..........कु (?) र (?)-तेजसा वैजय
.........र.............

[५]............त्पाशन्द्विपमो यमः त्रिदं वा मानसं सन्यं स्थितं
............[॥] तेनेप (?)..........

[६]....चामुण्ड-निर्म्मापितजिनालयदानशालादिसंवृद्धये विज्ञेन यशस्विना [।] पञ्चवि-

[७] शति-संख्यान-निवर्त्तन-कृत-प्रनं क्षेत्रं राजमानेन दत्तं त्वहितलक्षणं [।] [वि]-

[८] शत्य साक्षिणः कृत्वा दण्डोरेन्द्र-प्रधानकानन्यैरपि च राजन्यै रक्षणीयं स.........[॥]

[९] उक्तं च [।] स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरान् षष्टिं वर्षसहस्राणि विष्ठाय(ा)न् [जाय]-

[१०] ते कृमिः [।।] स्वं दातुं सुमहच्छक्यं दुःखमन्यस्य पालनं दानं वा पालनं वेति दानाच्छ्रे[योऽनु]-

[११] पालनम् [।।] वहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिसगरादिभि [:] यस्य यस्य यदा भूमिस् [तस्य त]-

[१२] स्य तदा फलम् [।।] आसीद् **विनयनन्दीति परलूरगणा**-ग्रणीरिन्द्रभूतिरिव धरात् चत्······[सं]-

[१३] घ-संहतेः [।।] तस्यान्ते वसन्नासीत् **वासुदेवो** गुर्ल्गुरुः तस्य शिष्य [:] **प्रभा**······················[।।]

[१४] शिष्य [:] **श्रीपाल**नामास्य धर्म्मगामुण्ड-पुत्रजः प्रातिष्ठिपच्छिलापट्टं स्थेयादाचन्द्र [तारकं] [।।]

दूसरा लेख।

[१५] स्वस्ति श्रीमत् प्रि (पृ) थु (थि) वीवल्लभ राजाधिराज परमेश्वर **कीर्त्तिवर्म्मरसर्** पृथु (थि) विर् [ाज्यं-गे]-

[१६] ये सिन्दरसरग्ग (? ग्गा; ? ग्गं)गि (? धि) **पाण्डीपुर**मा-नाले परमेश्वरं **माधवत्तियरस**रग्गे वि [ज्ञापनं-गे]-

[१७] य्दु **दोणगामुण्डरुं एळगामुण्डरुं** मल्लेयरुं उग्छराढा (? वा) सर्व्वेरैयरु ह················ ·······

[१८] करणसहितमागि हविरक्षतगन्धपुष्पादिगन्धे **कर्म्मगल्लूए** पडुवण म········`················

[१९] य केळगे एण्टु मत्तलगल्दे राजमानं जिनेन्द्र-भवनक्कित्तोरि-दानाराट् सलिप्पोर [व]-

[२०] तें धर्म्ममारारिदा[न्] किडिप्पोरवर्त्तेपाप[म्] [।।] परल्लूरा चेदियद वळि **प्रभाचन्द्र**-गुरावर्प्पडेदा[रु] [।।]

[इस लेखमें कुल २० पंक्तियाँ हैं। पंक्ति १ से १४ तकमें एक संस्कृत शिलालेख है जिसमें दानशालाके लिये तथा दूसरे और भी कार्योंके लिये एक खेत के, तथा गामुण्ड (गाँव के मुखियों) में से किसी के द्वारा निर्म्मापित जिनालय के दानकी प्रशस्ति है। वैजयन्ती या वनवासी का वर्णन चौथी पंक्तिमें हुआ-सा मालूम पड़ता है।

पंक्ति १५ से २० तक प्रायः पूर्ण हैं (खण्डित नहीं हैं) और उनमें एक पुरानी कर्णाटक-भाषाका लेख है जिसमें यह उल्लेख है कि, जिस समय कीर्त्तिवर्म्मा सार्वभौम-सत्ताके रूपमें शासन कर रहा था, और जब कि सिन्द नामका कोई एक राजा पाण्डीपुर नगरमें शासन कर रहा था द्रोण-गामुण्ड और एळगामुण्ड आदिने, राजा माधवत्तिकी सम्मतिसे, जिनेन्द्रके मन्दिरको पूजाके प्रबन्धके लिये अक्षत (अखण्ड चावल), सुगन्ध, पुष्प आदि, और चावलके खेतोंके आठ 'मत्तल' शाही मापसे नाप कर दिये। ये चावलके खेत कर्म्मगल्लूर गाँवकी पश्चिमदिशामें थे।

इस शिलालेखका काल नहीं दिया है। लेकिन कीर्त्तिवर्म्माको जो उपाधियाँ दी हुई हैं उनसे, तथा अक्षरोंकी लिखावटसे यह स्पष्ट मालूम पड़ता है कि इस लेखमें उल्लेखित कीर्त्तिवर्म्मा पूर्ववर्त्ती चालुक्य राजा कीर्त्तिवर्म्मा प्रथम है, जिसके राज्यका अन्त शक ४८९ में हुआ था। इस लेखसे यह भी मालूम पड़ता है कि कीर्त्तिवर्म्मा प्रथमने कदम्बोंको जीता था।]

[इं. ए०, ११, पृ० ६८-७१, नं० १२०]

१०८

पहोले (जिला-कलद्गी)-संस्कृत।

[शक सं० ५५६=६३४ ई०]

चालुक्यवंशोद्भवश्रीपुलकेशीका शिलालेख।

जयति भगवाञ्जिनेन्द्रो[वी]तज[रा-म]रणजन्मनो यस्य।
ज्ञानसमुद्रान्तर्गतमखिलं जगदन्तरीपमिव ॥ १ ॥
तदनु चिरमपरिमेयश्चालुक्यकुलविपुलजलनिधिर्जयति।
पृथिवीमौलिललामो यः प्रभवः पुरुषरत्नानाम् ॥ २ ॥

शूरे विदुपि च विभजन्दानं मानं च युगपदेकत्र ।
अविहितयाथातथ्यो जयति च **सत्याश्रयः**[1] सुचिरम् ॥ ३ ॥
पृथिवीवल्लभशब्दो येपामन्वर्थतां चिरं जातः ।
तद्वंशे (श्ये) षु जिगीषुपु तेषु बहुष्वप्यतीतेषु ॥ ४ ॥
नानाहेतिशताभिघातपतितभ्रान्ताश्वपत्तिद्विपे
नृत्यद्भीमकबन्धखड्गकिरणज्वालासहस्रे रणे ।
लक्ष्मीर्भावितचापलादिव कृता शौर्येण येनात्मसा-
द्राजासीज्जयसिंहवल्लभ इति ख्यातश्चुलुक्यान्वयः ॥ ५ ॥
तदात्मजोऽभूद्रणरागनामा दिव्यानुभावो जगदेकनाथः ।
अमानुपत्वं किल यस्य लोकः सुप्तस्य जानाति वपुःप्रकर्षात् ॥६॥
तस्याभवत्तनूजः **पुलकेशी** यः श्रितेन्दुकान्तिरपि ।
श्रीवल्लभोऽप्ययासीद्वातापिपुरीवधूवरताम् ॥ ७ ॥
यत्त्रिवर्गपदवीमलं क्षितौ नानुगन्तुमधुनापि राजकम् ।
भूश्च येन हयमेधयाजिना प्रापितावभृथमज्जना बभौ ॥ ८ ॥
नलमौर्यकदम्बकालरात्रिस्तनयस्तस्य बभूव **कीर्तिवर्मा** ।
परदारनिवृत्तचित्तवृत्तेरपि धीर्यस्य रिपुश्रियानुकृष्टा ॥ ९ ॥
रणपराक्रमलब्धजयश्रिया सपदि येन विरुग्णमशेषतः ।
नृपतिगन्धगजेन महौजसा पृथुकदम्बकदम्बकदम्बकम् ॥१०॥
तस्मिन्सुरेश्वरविभूतिगताभिलाषे
राजाभवत्तदनुजः किल **मङ्गलीशः** ।
यः पूर्वपश्चिमसमुद्रतटोषिताश्वः
सेनारजःपटविनिर्मितदिग्वितानः ॥ ११ ॥

१ 'सत्याश्रय' यह पुलकेशीका नामान्तर है ।

स्फुरन्मयूखैरसिदीपिका शतैर्व्युदस्य मातङ्गतमिस्त्रसंचयम् ।
अवाप्तवान् यो रणरङ्गमन्दिरे कलच्चुरिश्रीललनापरिग्रहम् ॥ १२ ॥

पुनरपि च जिघृक्षोः सैन्यमाक्रान्तसालं
रुचिरबहुपताकं रेवतीद्वीपमाशु ।
सपदि महदुदन्वत्तोयसंक्रान्तबिम्बं
वरुणबलमिवाभूदागतं यस्य वाचा ॥ १३ ॥

तस्याग्रजस्य तनये नहुषानुभावे
लक्ष्म्या किलाभिलषिते पुलकेशिनाम्नि ।
सासूयमात्मनि भवन्तमतः पितृव्यं
ज्ञात्वापरुद्धचरितव्यवसायबुद्धौ ॥ १४ ॥

स यदुपचितमन्त्रोत्साहशक्तिप्रयोग-
क्षपितबलविशेषो मङ्गलीशः समन्तात् ।
स्वतनयगतराज्यारम्भयत्नेन सार्धं
निजमतनु च राज्यं जीवितं चोज्झति स्म ॥ १५ ॥

तावत्तच्छत्रभंगे जगदखिलमरात्यन्धकारोपरुद्धं
यस्यासह्यप्रतापद्युतिततिभिरिवाक्रान्तमासीत्प्रभातम् ।
नृत्यद्विद्युत्पताकैः प्रजविनि मरुति क्षुण्णपर्यन्तभागै-
र्गर्जद्भिर्वारिवाहैरलिकुलमलिनं व्योम या(जा)तं कदा वा ॥ १६ ॥

लब्ध्वा कालं भुवमुपगते जेतुमाप्यायिकाख्ये
गोविन्दे च द्विरदनिकरैरुत्तराम्भोधिरथ्याः ।
यस्यानीकैर्युधि भयरसज्ञत्वमेकः प्रयात-
स्तत्रावाप्तं फलमुपकृतस्यापरेणापि सद्यः ॥ १७ ॥

वरदातुङ्गतरङ्गरङ्गविलसद्धंसानदीमेखलं
वनवासीमवमृद्गतः सुरपुरप्रस्पर्धिनी संपदा ।
महता यस्य बलार्णवेन परितः संछादितोर्वीतलं
स्थलदुर्गं जलदुर्गतामिव गतं तत्तत्क्षणे पश्यताम् ॥१८

गङ्गाम्बु पीत्वा व्यसनानि सप्त हित्वा पुरोपार्जितसंपदोऽपि ।
यस्यानुभावोपनताः सदासन्नासन्नसेवामृतपानशौण्डाः ॥ १९ ॥

कोङ्कणेषु यदादिष्टचण्डदण्डाम्बुवीचिभिः ।
उदस्तास्तरसा **मौर्य**पल्वलाम्बुसमृद्धयः ॥ २० ॥

अपरजलधेर्लक्ष्मीं यस्मिन्पुरीं पुरभित्प्रभे
मदगजघटाकारैर्नावां शतैरवमृद्गति ।
जलदपटलानीकाकीर्णं नवोत्पलमेचकं
जलनिधिरिव व्योम व्योम्नः समोऽभवदम्बुधिः ॥ २१ ॥

प्रतापोपनता यस्य **लाटमालवगूर्जराः** ।
दण्डोपनतसामन्तचर्या वर्या इवाभवन् ॥ २२ ॥

अपरिमितविभूतिस्फीतसामन्तसेना-
मुकुटमणिमयूखाक्रान्तपादारविन्दः ।
युधि पतितगजेन्द्रानीकबीभत्सभूतो
भयविगलितहर्षो येन चाकारि हर्षः ॥ २३ ॥

भुवमुरुभिरनीकैः शासतो यस्य रेवा
विविधपुलिनशोभावन्ध्यविन्ध्योपकण्ठा ।
अधिकतरमराजत्स्वेन तेजोमहिम्ना
शिखरिभिरिभवर्ज्या वर्ष्मणां स्पर्धयेव ॥ २४ ॥

विधिवदुपचिताभिः शक्तिभिः शक्रकल्प-
स्तिसृभिरपि गुणौघैः स्वैश्च माहाकुलाद्यैः ।
अनमदधिपतित्वं यो महाराष्ट्रकाणां
नवनवतिसहस्रग्रामभाजां त्रयाणाम् ॥ २५ ॥

गृहिणां स्वगुणैस्त्रिवर्गतुङ्गा विहितान्यक्षितिपालमानभङ्गाः ।
अभवन्नुपजातभीतिलिङ्गा यदनीकेन सकोसलाः कलिङ्गाः ॥२६॥

पिष्टं पिष्टपुरं येन जातं दुर्गमदुर्गमम् ।
चित्रं यस्य कलेर्वृत्तं जातं दुर्गमदुर्गमम् ॥ २७ ॥

संनद्धवारणघटास्थगितान्तरालं
नानायुधक्षतनरक्षतजाङ्गरागम् ।
आसीज्जलं यदवमर्दितमभ्रगर्भा-
कैणालमम्बरमिवोर्जितसांध्यरागम् ॥ २८ ॥

उद्धूतामलचामरध्वजशतच्छत्रान्धकारैर्बलैः
शौर्योत्साहरसोद्धितारिमथनैर्मौलादिभिः षड्विधैः ।
आक्रान्तात्मबलोन्नतिं बलरजःसंछन्नकाञ्चीपुरः
प्राकारान्तरितप्रतापमकरोद्यः पल्लवानां पतिम् ॥ २९ ॥

कावेरी द्रुतशफरीविलोलनेत्रा चोलानां सपदि जयोद्यतस्तस्य (?) ।
प्रश्च्योतन्मदगजसेतुरुद्धनीरा संस्पर्शं परिहरति स्म रत्नराशेः ॥ ३० ॥

चोलकेरलपाण्ड्यानां योऽभूत्तत्र महर्द्धये ।
पल्लवानीकनीहारतुहिनेतरदीधितिः ॥ ३१ ॥

उत्साहप्रभुमन्त्रशक्तिसहिते यस्मिन्समन्ताद्दिशो
जित्वा भूमिपतीन्विसृज्य महितानाराध्य देवद्विजान् ।

वातापीं नगरीं प्रविश्य नगरीमेकामिवोर्वीमिमां
चञ्चन्नीरधिनीरनीलपरिखां **सत्याश्रये** शासति ॥ ३२ ॥
त्रिंशत्सु त्रिसहस्रेषु भारतादाहवादितः ।
सप्ताब्दशतयुक्तेषु श (ग) तेष्वब्देषु पञ्चसु (३७३५) ॥३३ ॥
पञ्चाशत्सु कलौ काले **षट्सु पञ्चशतासु च** (६५६) ।
समासु समतीतासु **शकानामपि** भूभुजाम् ॥ ३४ ॥
तस्याम्बुधित्रयनिवारितशासनस्य
सत्याश्रयस्य परमाप्तवता प्रसादम् ।
शैलं जिनेन्द्रभवनं भवनं महिम्नां
निर्मापितं मतिमता **रविकीर्तिनेदम्** ॥ ३५ ॥
प्रशस्तेर्वसतेश्चास्या जिनस्य त्रिजगद्गुरोः ।
कर्ता कारयिता चापि **रविकीर्तिः** कृती स्वयम् ॥३६॥
येनायोजि नवेऽश्मस्थिरमर्थविधौ विवेकिना जिनवेश्म ।
स विजयतां **रविकीर्तिः** कविताश्रितकालिदासभारविकीर्तिः ३७

[प्राचीनलेखमाला, प्रथमभाग, ले० १६, पृ० ६८–७२, से उद्धृत]

[यह शिलालेख बीजापुर (पूर्वका कलाद्गी) जिलेके हुङ्गुण्ड तालुकाके ऐहोलेके मेगुटि नामके प्राचीन मन्दिरकी पूर्वकी तरफकी दीवालपर है। लेखमें कुल १९ पंक्तियाँ हैं, जिनमेंसे १८ वी पंक्ति पूर्ण और १९ वीं छोटी पंक्ति बादमें किसीकी जोड़ी हुई है और जिनमें महत्त्वपूर्ण कोई बात नहीं है।

समूचा शिलालेख किसी रविकीर्त्तिका बनाया हुआ है। वे (रविकीर्त्ति) चालुक्य पुलकेशी सत्याश्रय (अर्थात् पश्चिमी चालुक्य पुलकेशी द्वितीय) के राज्यमें थे । यह राजा उनका संरक्षक या पोषक था । इन्होंने शिलालेखवाले जिनालयमें जिनेन्द्रकी मूर्तिकी प्रतिष्ठा की । प्रतिष्ठाके समय यह लेख उत्कीर्ण करवाया गया था जिसमें सामान्यरूपसे चालुक्य वंशकी, और विशेषतः पुलकेशी- द्वितीय (रविकीर्तिके आश्रयदाता) के

पराक्रमोंकी प्रशस्ति है । इस लेखमें आये हुए ऐतिहासिक तथ्योंका पूरा विवरण प्रो० भाण्डारकर और डा० फ्लीटने दिया है[1] ।

इस लेख (या काव्य) का मुख्य भाग १७-३२ श्लोकोंका है। इनको रविकीर्त्ति के आशयानुसार, रघुवंशके (चौथे सर्गके) रघुदिग्विजयके समान, 'पुलकेशी-सत्याश्रय दिग्विजय' कहा जा सकता है । इस काव्य (कविता) की रचनामें रविकीर्त्तिका कालिदासके रघुवंशका तथा भारविके किरातार्जुनीयका गहरा अध्ययन स्पष्ट काम कर रहा है; इसलिए उन्हींके शब्दोंमें उनका यह कथन कि 'स विजयतां रविकीर्तिः कविताश्रित-कालिदासभारविकीर्तिः' सचमुचमें ठीक है ।

श्लोक २२ में बताया गया है कि पुलकेशीका प्रताप इतना तेज था कि लाट, मालव और गूर्जर लोग अपने-आप ही उनकी शरण आते थे, बलपूर्वक नहीं ।]

[इं० ए०, जिल्द ५, पृ० ६७–७१]

१०९

लक्ष्मेश्वर—संस्कृत ।

—[?]—

जयत्यतिशयजिनैर्भासुरस्सुरवन्दितः ।
श्रीमाञ्जिनपतिस्सृष्टेरादेः कर्त्ता दयोदयः ॥

देहहिसरि (इह हि सन्ति) ॥

चालुक्यपृथ्वीवल्लभकुलतिलकेषु बहुष्वतीतेषु रणपराक्रमाङ्कमहाराजो भवत्तद्राजतनयः राजितनयो विवर्द्धितैश्वर्यश्चतुस्समुद्रान्तस्तातुरङ्गमपदातिसेनासमूहः एरेय्यनामधेयः श्रीमान् ॥

---

1 देखो प्रो० भाण्डारकरकी Early History of the Dekkan, 2nd ed., especially p. 51; और डॉ० फ्लीटकी Dynasties of the Kanarese Districts, 2nd ed. especially p. 349 ff.

अपि च ॥

शासतीमां समुद्रान्तां वसुधां वसुधाधिपे ।
सत्याश्रयमहाराजे राजत्सत्यसमन्विते ॥

भुजगेन्द्रान्वयसेन्द्रावनीन्द्रसन्ततौ अनेकनृपसत्तमेश्वतीतेषु तत्कुल-गगनचन्द्रमाः वहुसमरविजयलब्धपताकावभासितदिगन्तरालवलयः **विजयशक्ति**र्न्नाम नृपतिर्व्वभूव [॥] तत्सूनुरुदिततरुणदिवाकरकरसम-प्रभः सौ (शौ)र्य्य-धैर्य्य-सत्त्व-गुणोपपन्नः सामन्तवृ(वृ)न्दमौलि-मालवलीढचरणः **कुन्दशक्ति**र्न्नाम राजाभूत् तस्य प्रियतनयः ॥ अद्वि-तीयपुरुषकारसम्पन्नः । धर्म्मार्थकामप्रधानः अनेकरणविजयवीरपताका-ग्रहणोद्धतकीर्त्तिः [॥] तेन **दुर्ग्गशक्ति**नामधेयेन **शङ्खजिनेन्द्र**चैत्यनित्य-पूजार्थं पुण्याभिवृद्धये च **पुलिगेरे**-नामनगरस्योत्तरपार्श्वे पञ्चाशन्नि-वर्त्तनपरिमाणक्षेत्रं दत्तम् ॥ तस्य सीमा समाख्यायते [।] पूर्व्वतः **किन्न-रीक्षेत्रम्** । पावकदिशि **ज्येष्ठलिङ्गभूमिः** । दक्षिणतः **घटिकाक्षेत्रम्** । नैर्ऋत्यां दिशि **दं (?पं)-डीस (श) श्रेष्ठि**भूमिः । पश्चिमतः **रामे-श्वर**क्षेत्रम् वायव्यां **होनेश्वर**क्षेत्रम् । उत्तरतः **सिन्देश्वर**क्षेत्रं ई(ऐ) शान्यां दिशि **भट्टारी**क्षेत्रम् । तद्दक्षिणतः पूर्व्वोक्त**किन्नरी**क्षेत्रम् ॥

देवस्वं विषं लोके न विषं नं (?) विपमुच्यते ।
विषमेकाकिनं हन्ति देवस्वं पुत्र-पौत्रिकम् ॥

[यह लेख, जिसमें उस बड़े शिलालेख (नं. १४९) का दूसरा भाग (पंक्तियाँ ५१-६१) निहित है, 'सेन्द्र' कुलका लेख है।

---

१ यहाँ 'क' की जगह 'म' भी हो सकता है और तब 'मन्दशक्ति' पढ़ा जायगा। २ यह 'न' अतिरिक्त है और भूलसे जुड़ गया है।

लक्ष्मेश्वरका लेख

इसका प्रारम्भ 'रणपराक्रमाङ्क' नामक एक चालुक्य राजा और इसके पुत्र एरेय्यके उल्लेखसे हुआ है। लेकिन ये दोनों नाम पश्चिमी या पूर्वी चालुक्योंमेंसे किसीकी भी वंशावलीमें अभीतक नहीं मिले हैं। रणपराक्रमाङ्क शायद 'रणराग'के लिये उल्लेखित हुआ है, जो जयसिंह प्रथमका पुत्र और पुलिकेशी प्रथमका पिता था। जयसिंह प्रथमका जो दक्षिणके इस वंशके प्रथम पुरुष हैं, वर्णन कभी-कभी आता है।

इसके अनन्तर 'सत्याश्रय' नामके एक राजाका उल्लेख आता है। परन्तु उससे यह पता नहीं चलता कि इस उपाधि (सत्याश्रय) को धारण करनेवाले किस पश्चिमी चालुक्य राजासे मतलब है।

इसके बाद, सत्याश्रयके समकालवर्तीके तौरपर, 'दुर्गशक्ति' राजाका उल्लेख आता है। यह राजा 'भुजगेन्द्र' अर्थात् नागवंशके अन्वयसे सम्बन्ध रखनेवाले सेन्द्र राजाओंके वंशका था। यह विजयशक्तिके पुत्र कुन्दशक्तिका पुत्र था।

इसमें दुर्गशक्तिके द्वारा शङ्खजिनेन्द्र नामके चैत्यके लिये दिये गये भूमिदानका कथन है। यह भूमिदान पुलिगेरे नगरमें किया गया था।

लेखका काल नहीं दिया गया है। यह संभवतः प्राचीनतर कालका मालूम पड़ता है, जो यहाँ सिर्फ पूर्वकालके लेखके निश्चय या सुरक्षाके लिये ही दुहराया गया है।]

[इं० ए०, जिल्द ७, पृ० १०१-१११, नं० ३८ (पंक्तियाँ ५१-६१)]

११०

[यह लेख श्रवण-बेलगोलाका संस्कृत और कन्नडमें है। इसे 'जैन शिलालेख-संग्रह प्रथम भाग' में देखना चाहिये।]

[L. Rice, EC, II, sr. Bel, ins. no. 24.]

१११

लक्ष्मेश्वर—संस्कृत।

[शक ६०८=ई० सन् ६८७]

[यह लेख (मूल) इलियटके हस्तलिखितसंग्रहकी पहली जिल्दमें पृष्ठ २२ पर दिये गये ८७ पंक्तिवाले एक लेखका चौथा भाग है और पंक्ति ६९

वींसे शुरू होता है। उस समस्त लेखका सिर्फ कुछ भाग ही उस पुस्तकमें पाषाण-लेखपरसे लिया गया है, पूरा लेख नहीं। इसलिये उस लेखका यहाँ देना मुश्किल होनेसे सिर्फ उसकी विगत यहाँ दी जाती है।

उस विशाल लेखकी ६९ वीं पंक्तिसे एक दूसरा पश्चिमी चालुक्य शिलालेख शुरू हो जाता है। इस लेखकी ६९ से ८२ तककी पंक्तियाँ यद्यपि अस्पष्ट हैं, फिर भी अति सुरक्षित हैं; उसके नीचेकी पाँच पंक्तियोंका भी कुछ निशानोंसे पता चल जाता है, यद्यपि अक्षर इतने घिसे हुए हैं कि पढ़नेमें नहीं आते। इसमें पो(पु)लिकेशीवल्लभसे लेकर विनयादित्य-सत्याश्रय तककी वंशावली है और मूलसङ्घ अन्वयकी देवगण शाखाके किसी आचार्यको, उसके द्वारा दिये गये, दानका उल्लेख है। यह दान ६०८ शक वर्षके बीतनेपर जब उसके राज्यका पाँचवाँ या सातवाँ वर्ष चालू था और जब उसकी विजयका कैम्प (विजयस्कन्धावार) रक्तपुर नगरमें लगा हुआ था, माघ महीनेकी पूर्णमासीको दिया गया था। यह काल ७७-७८ पंक्तियोंमें यों दिया हुआ है:—अष्टोत्तर-षट्छतेसु शकवर्षेष्वतीतेषु प्रवर्द्धमानविजयराज्यपञ्चम-(? सप्तम)-संवत्सरे श्री रक्तपुरमधिवसति विजयस्कन्धावारे माघमासे पौर्णमास्याम्। यहाँ वार (दिन) नहीं दिया हुआ है।]

[इं० ए० ७, पृ० ११२, नं० ३९, चतुर्थभाग]

११२

श्रवणबेलगोला (विना कालका)-कन्नड।

(देखो "जैन शिलालेख संग्रह प्रथम भाग"।)

११३

लक्ष्मेश्वर—संस्कृत।

[शक ६५१=ई० सन् ७२९]

[यह लेख (मूल) इलियटके हस्तलिखित संग्रह (Elliot's Ms. Collection) की पहली जिल्दमें पृष्ठ २२ पर ८७ पंक्तिके एक बड़े लेखमें दिया हुआ है। उसमेंसे पंक्ति २८ से शुरू होकर पंक्ति ५३ तक

पश्चिमी चालुक्योंका शिलालेख है। इसमें पो (पु) लिकेशीवल्लभ, अर्थात् पुलिकेशी प्रथमसे लेकर विनयादित्य सत्याश्रय तककी वंशावली दी हुई है तथा यह भी उल्लेखित है कि अपने राज्यके चौदहवें वर्षमें जब कि शक संवत्के ६०१ वर्ष व्यतीत हो चुके थे फाल्गुनकी पूर्णिमाके दिन, जब कि उसका विजय-स्कन्धावार रक्तपुर नगरमें था, पुलिकर नगरकी दक्षिण सीमापर बसे हुए कर्दम गाँवका दान अपने पिताके पुरोहित उदयदेव पण्डितको, जिन्हें 'निरवद्यपण्डित' भी कहते थे, दिया। ये श्रीपूज्यपादके शिष्य थे तथा मूलसंघ अन्वयकी देवगण शाखाके थे। यह दान पुलिकर नगरमें शङ्ख-जिनेन्द्रके मन्दिरके हितार्थ दिया गया था। कालनिर्देश पंक्ति ४२-४४ में यों दिया हुआ है:—शकनृपकालादुत्तरषट्छतेषु शकवर्षेष्वतीतेषु प्रवर्त्तमान-विजयराज्यसंवत्सरे चतुर्द्दशे वर्त्तमाने श्रीरक्तपुरमधिवसति विजयस्कन्धावारे फाल्गुनमासे पौर्ण्णमास्याम्। वार (दिन) इसमें नहीं दिया हुआ है।]

[इं० ए०, ७, पृ० ११२, नं० ३९ (द्वितीय भाग)]

११४

लक्ष्मेश्वर—संस्कृत।

[शक ६५६=७३४ ई०]

स्वस्ति [॥]

जयत्याविष्कृतं विष्णोर्व्वाराहं क्षोभितार्ण्णवं।

दक्षिणोन्नतदंष्ट्राग्रविश्रान्तभुवनं वपुः ॥

श्रीमतां सकलभुवनसंस्तूयमानमानव्यसगोत्राणां हारीति-पुत्राणां सप्तलोकमातृभिः सप्तमातृभिरभिवर्द्धितानां कार्त्तिकेयपरिरक्षणप्राप्त-कल्याणपरम्पराणां भगवन्नारायणप्रसादसमासादितवराहलाञ्छनेक्षणक्ष-णवशीकृताशेषमहीभृतां चालुक्यानां कुलमलंकरिष्णोरश्वमेधावभृथस्नानप-वित्रीकृतगात्रस्य श्रीपोलिकेशिवल्लभमहाराजस्य प्रियसूनुः श्रीकी-र्त्तिवर्म्मपृथ्वीवल्लभमहाराजस्तस्यात्मजस्य सत्याश्रयश्रीपृथ्वीवल्लभमहा-

राजाधिराजपरमेश्वरस्य प्रियतनयः (यस्य) प्रभावकुलिशदलितपाण्ड्य-चोल-केरल-कदम्बप्रभृतिभूभृदुदग्रविभ्रमस्य नित्यावनतकाञ्चीपतिमुकुटचुम्बितपादाम्बुजस्य **विक्रमादित्यसत्याश्रय**श्रीपृथ्वीवल्लभमहाराजाधिराजपरमेश्वरस्य प्रियसूनुः (नोः) सकलोत्तरापथनाथमथनोपार्जितपालिध्वजादिसमस्तपारमैश्वर्यचिह्नस्य **विनयादित्यसत्याश्रय**श्रीपृथ्वीवल्लभमहाराजाधिराजपरमेश्वरपरमभट्टारकस्य प्रियात्मजः साहसरसरसिकः पराङ्मुखीकृतशत्रमण्डलस्सकलपारमैश्वर्यव्यक्तिहेतुपालिध्वजाद्युज्व (ज्ज्व)लराज्यचिह्नो **विजयादित्यसत्याश्रय**श्रीपृथ्वीवल्लभमहाराजाधिराज(जः) [।।] [तत्-]प्रियसूनोः प्रतिदिनप्रवर्द्धमानया(यौ)वनो (नस्य) रिपुमण्डलाक्रान्तिराज्याभ्युदयः (यस्य) कस्तूरीकिशोरविक्रमैकरसो (सस्य) **विक्रमादित्यसत्याश्रय**श्रीपृथ्वीवल्लभमहाराजाधिराजपरमेश्वरभट्टारकस्य विजयस्कन्धावारे **रक्तपुर**मधिवसति **षट्पञ्चाशदुत्तरषट्च्छतेषु शकवर्षेष्वतीतेषु प्रवर्द्धमानविजयराज्यसंवत्सरे द्वितीये वर्त्तमाने माघपौर्णमास्यां मूलसंघान्वयदेवगणो**दितः (ताय) परमतप(पः)श्रुतमूर्त्तिविशे(शो)**करामदेवाचार्य्य**शिष्यो (ष्याय) विजितविपक्षवादि**जयदेवपण्डित**ान्तेवासी (सिने) समुपगतैकवादित्वादि**श्रीविजयदेवपण्डिताचार्य्याय** जिनपूजाभिवृद्ध्यर्त्थं वाहुवलिश्रेष्ठिविज्ञापनेन **पुलिकर**नगरस्य **शङ्खतीर्त्थवसते**र्म्मण्डनमण्डितं तस्य **धवलजिनालयस्य** जीर्ण्णोद्धारणं कृत्वा खण्डस्फुटितनवसंस्कारवलिनिमित्तं दानशीलादिप्रवर्त्तनार्त्थं नगरादुत्तरस्यां दिशि गव्यूतिप्रमाणव्यवस्थितं **कर्प्पटि**तटाकाद्दक्षिणस्यां दिशि राजमानेन शतार्द्धनिवर्त्तनप्रमाणक्षेत्रं सर्व्वबाधापरिहारं दत्तम् [।।] तस्य सीमा समाख्यायते ।

दि[२] तत्साधितकिन्नरपापाणाद्दक्षिणस्यामाशायां धवलपाषाणपार्श्व-

शम्यः । पश्चिमस्यां दिशि श्वेतपाषाणादेकशमी उत्तरस्यां दिशि आनीलपाषाणात् प्राक्प्रकाशिततटाकात् पूर्व्वस्यां दिशि अरुणपाषाणात् पूर्व्वोक्तव्यक्तकिन्नरपाषाणसंगता सीमा ॥

स्वं दातुं सुमहच्छक्यं दुःखमन्यस्य पालनम् ।
दानात्पालनाच्चेति (दानं वा पालनं चेति) दानाच्छ्रेयोऽनुपालनम् ॥
न विषं विषमित्याहुः देवस्वं विषमुच्यते ।
विषमेकाकिनं हन्ति देवस्वं पुत्र-पौत्रिकम् ॥
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम् ।
षष्टि-वर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥

प्रथ्यताम् जिनशासनम् [॥]

[इं० ए०, जिल्द ७, पृ० १०१–१११, नं० ३८ (पंक्तियाँ ६१–८२)]

[यह लेख उस बड़े लेख (नं. ११९) का तीसरा व अन्तिम भाग (पंक्तियाँ ६१-८२ तक) है। यह पश्चिमी चालुक्य विक्रमादित्य द्वितीयका लेख है। यह उसके राज्यके द्वितीय वर्षका है जब कि शक वर्ष ६५६ (७३४-५ ई०) व्यतीत हो चुका था, और फलतः पूर्व किसी लेख (शिलालेख या ताम्रपत्र) से यहाँ निश्चय या सुरक्षाके लिये दुहराया गया है। यह लेख उसकी छावनी 'रक्तपुर' से निकाला गया है। 'रक्तपुर' आजकलका कौन-सा स्थान है, यह नहीं कहा जा सकता।

इसमें 'पुलिकर'—पूर्वके दो शिलालेखोंका 'पुलिगेरे'—शहरकी 'शङ्खतीर्थवसति' तथा 'धवलजिनालय' नामके एक दूसरे मन्दिरकी सजावट तथा मरम्मतका उल्लेख है और कहा गया है कि 'जिन' की पूजाके प्रबन्धके लिये कुछ भूमिदान किया गया।

यह लेख अपने वंशावली-परिचायक भागमें पश्चिमी चालुक्योंके शिलालेखोंसे मिलता है। इसमें दो आगेकी पीढ़ियोंका—विजयादित्य और विक्रमादित्य द्वितीयका, जो विनयादित्यके क्रमशः पुत्र और पौत्र हैं,—भी उल्लेख है।]

११५

पञ्चपाण्डवमलै—(आर्कटके निकट)-तामिल

—[?]—

१. नन्दिप्पोत्तरश[ॅ] कु अय् [म्] वदावदु नाग[ण]न्दि-
गुर [वर्]
२. [इरु] क पोन्जिय [क्] किय[ा]र् पडिमं कोट्टुपिट्टा [ञ]
३. पु[ग]ळालैमंग[ल]त्तु मरुत्तुवर् मगञ् नारण-
४. ञ् [॥]

अनुवाद—नन्दिप्पोत्तरशर्के ५ वें (वर्ष) में,—पुगळालैमङ्गलंके मरुत्तुवरके पुत्र नारणञ् (नारायण) ने नागणन्दि (नागनन्दि) गुरुकी मूर्तिके साथ-साथ पोन्जियकियार्की मूर्त्ति खुदवाई।

[El, IV, no. 14, A.]

११६

अनहिलवाड-पाटन—संस्कृत।

(संवत् ८०२= ई० स० ७४५)

यह शिलालेख श्वेताम्बर सम्प्रदायका है।

[J. Burgess and H. Cousens, Antiquity of North Gujerat (A SI, XXXII).]

११७

श्रवणबेलगोला (विना कालका)—संस्कृत।

[देखो "जैन शिलालेख-संग्रह प्रथम भाग"।]

११८

नन्दी (गोपीनाथ पर्वत)—संस्कृत।

विना कालनिर्देशका [=संभवतः ७५० ई० (लु० राइस)

[नन्दीमें, गोपीनाथ पहाड़ीके ऊपर गोपालस्वामी मन्दिरके पासकी चट्टानपर]

स्वस्ति श्रीमत् जितं भगवता जिनवर-वृषभेण वृषभेण पुरा कलि-अवसर्पिण्यां द्वापरे युगे लोक-स्थितिरक्षार्थं काङ्क्षित-मनुष्य-जन्मना पुरुषोत्तमेन सूर्य्य-वंश-व्योम-सूर्य्येण महारथेन दाशरथिना राम-स्वामिना प्रतिष्ठापिताय भगवतोर्हतः परमेष्टिनः सर्व्वज्ञस्य चैत्य-भवनाय पश्चात् पाण्डवजनन्या को(कु)न्तिदेव्या पुनर्नवीकृत-संस्काराय भूमिदेव्या-स्तिलकायमानाय स्वर्गापवर्ग-पदयोस्सोपान-पदवीभूताय धराधर-धर-णेन्द्रस्य फणा-मणि-लीलानुकारिणे धराधरवराय जिनेन्द्र-चैत्य-सान्निध्यात् पावनाय परम-तीर्थ्याय तपश्चरण-परायण-महर्षि-गणाध्यासित-कन्दराय श्रीकुन्दाख्याय (यहाँ बन्द हो जाता है)

[वृषभ-देवको नमस्कार करनेके बाद,—

प्राचीन समयमें, कलि-अवसर्प्पिणीके द्वापर-युगमें, सूर्यवंशके गगनमें सूर्यके समान, दशरथके पुत्र महारथ राम-स्वामी (रामचन्द्रजी)के द्वारा अर्हन्त-परमेष्ठीका यह चैत्य-भवन प्रतिष्ठापित किया गया । बादमें, पाण्डवोंकी माता कुन्तीने इसे फिरसे नया बनवा दिया ।

भूमिदेवीको तिलकके समान, स्वर्ग और अपवर्ग दोनोंके लिये सीढ़ी, सब पर्वतोंमें उत्तम, जिनेन्द्र-चैत्य (बिम्ब)के सान्निध्यसे पवित्रीकृत, परमतीर्थ, जिसमें जगह-जगह तपश्चरण-परायण महर्षिगणोंके लिये कन्दराएँ (गुफायें) बनी हुई हैं, ऐसा 'श्रीकुन्द' नाम पर्वत (यहाँ लेख खतम हो जाता है ।[1])

[EC, X, Chik-ballapur tl., no. 29.]

११९

वेलवत्ते—कन्नड़ ।

बिना काल-निर्देशका (संभवतः लगभग ७५० ई०)

[वेलवत्ते-मैसूर तालुकेमें, बसवेश्वर मन्दिरके पश्चिमकी ओर]

नेरॆयर्दि एर्दनु मुनें·······ळ्लियु प्रमिल-वाग्वि विल्लोर गुर्रि····

1 प्रारम्भके शब्द 'स्वस्ति' को यहाँ अन्तमें लगा देनेसे यह लेख संभाव्य-रूपसे पूर्ण समझा जा सकता है, क्योंकि 'स्वस्ति'के योगमें चतुर्थी विभक्ति होती है, जो यहाँ है ।

दुं एल्दु दवे तम्म क्षेमकिरदह्लि-मेच्चिर ताव्वदु परत्रे यपुदेवदेरू महा-प्रभु-**गोवपय्यन्** इन्त् इळदपु समाधियोळे मुडिपि ताळ्दिदन्नितमरेन्द्र-भोगमं ॥ पदेदोम् **श्री-पुरुषय्यल्** आम्मु-मोदलोळ् कलूनाडन् अन्दों वळेक् एदेयोळ् अक्कुडु भूतिमूतुगानो दोत धाण धीक्षे सळे पडेदे···· पितृ-कळत्र-मित्र-जनमं काव्यान्य ताळ्द् अप्पोडी-नुडियल् वेल्कुमे पेम्पन् ओप्प गुणते तोळमिकिळ्द गोपय्यनम् ॥

[महाप्रभु गोवपय्यको श्रीपुरुषकी तरफसे भूमि-दान मिला था और वे (गो. प.) समाधिमरणपूर्वक मरे थे ।]

[EC, III, Mysore tl., no. 6]

१२०

देवलापुर—कन्नड़ ।

विना कालनिर्देशका (संभवतः लगभग ७५० ई०)

[देवलापुर (कृष्णहह्लि तालुका), मारीगुडीके पूर्वमें]

स्वस्ति **श्रीपुरुष**-महा········पृथुवी-राज्यकेये **अरट्टि**····रम्मगन्दिर् **सिंगं** दीक्षे वीळादु **अरट्टि-तीरर् कुडलूरद** गोट्टे **मडिओडे**-यम्बर् आळ्विकय

(पृष्ठभागपर)

नोक्कज-ओडे आगगदीकड········कोट्ट नेल तेनेन्धक काळेर्कु साक्षी कुडलूर पोङ्कुलरुं एळमडियरुं एळिरियरुं मदुगरुं कागब्वरुं साक्षि आग कोट्टदु आळ् आळ् किडिशिदोन वारणासिया शासिर-कविले शासिर-पार्वर् कोन्द कोले आक्का कोडिशिदोनु········कडुवेडिळोनुडि तेन्ने··· ळिद स्वचोनु····अरट्टिग तळर कुडलूर् आव्वत्ति.

[जिस समय इस पृथ्वीपर श्री-पुरुष महाराज राज्य कर रहे थे;—अरट्टि······के पुत्र सिंगम् के (जिन) दीक्षा लेनेके बाद, (उसकी मां) अरट्टितिने कुडलूर् किलेके मट्टि-ओडेके द्वारा शासित प्रदेशमें भूमिदान किया।]

[EC, III, Mysore tl., no. 25.]

१२१

देवरहल्लि—संस्कृत तथा कन्नड़।

शक सं० ६९८=७७६ ई०

[देवरहल्लि (देवलापुर प्रदेश)में, पटेल कृष्णय्यके ताम्रपत्रोंपर]

(Ib) स्वस्ति जितं भगवता गतघनगगनाभेन पद्मनाभेन श्रीमज्जाह्नवेयकुलामलव्योमावभासनभास्करः स्वखड्गैकप्रहारखण्डितमहाशिलास्तम्भलब्धबलपराक्रमो दारुणारिगणविदारणोपलब्धव्रणविभूषणभूषितः काण्वायन-सगोत्रः श्रीमत्कोङ्गणिवर्म्मधर्म्ममहाधिराजः तस्य पुत्रः पितुरन्वागतगुणयुक्तो विद्याविनयविहितवृत्तिः सम्यक्प्रजापालनमात्राधिगतराज्यप्रयोजनो विद्वत्कविकाञ्चननिकषोपलभूतो नीतिशास्त्रस्य वक्तृ-प्रयोक्तृकुशलो दत्तकसूत्रवृत्तेः प्रणेता श्रीमान् माधवमहाधिराजः तत्पुत्रः पितृपैतामहगुणयुक्तोऽनेकचातुर्दन्तयुद्धावाप्तचतुरुदधिसलिलास्वादितयशः श्रीमद्हरिवर्म्ममहाधिराजः तस्य पुत्रो द्विजगुरुदेवतापूजनपरो (IIa) नारायणचरणानुध्यातः श्रीमान् विष्णुगोपमहाधिराजः तत्पुत्रः त्र्यम्बकचरणाम्भोरुहरजःपवित्रीकृतोत्तमाङ्गः स्वभुजबलपराक्रमक्रयक्रीतराज्यः कलियुगबलपङ्कावसन्नधर्म्मवृषोद्धरणनित्यसन्नद्धः श्रीमान् माधवमहाधिराजः तत्पुत्रः श्रीमत्कदम्बकुलगगनगभस्तिमालिनः कृष्णवर्म्ममहाधिराजस्य प्रियभागिनेयो विद्याविनयातिशयपरिपूरितान्तरात्मा निरवग्रहप्रधानशौर्यो विद्वस्तु ? (विद्वत्सु) प्रथमगण्यः श्रीमान्

कोङ्गणिमहाधिराजः अविनीतनामा तत्पुत्रो विजृम्भमाणशक्तित्रयः **अन्दरि-आलत्तूर्-प्पोरुळरे-पेळ्ळनगरा**द्यनेकसमरमुखमखहुतप्रहतशूर-पुरुषपशूपहारविघसविहस्तीकृतकृतान्ताग्निमुखः किरातार्जुनीयपञ्चदश-सर्ग- (IIb) टीकाकारो **दुर्व्विनीत**नामधेयः तस्य पुत्रो दुर्द्दा-न्तविमर्द्दविमृदितविश्वम्भराधिपमौलिमालामकरन्दपुञ्जपिञ्जरीक्रियमाणचरण-युगलनलिनो **मुष्कर**नामधेयः तस्य पुत्रश्चतुर्द्दशविद्यास्थानाधिगत-विमलमतिः विशेषतोऽनवशेषस्य नीतिशास्त्रस्य वक्तृप्रयोक्तृकुशलो रिपुति-मिरनिकरनिराकरणोदयभास्करः **श्रीविक्रम**प्रथितनामधेयः तस्य पुत्रः अनेकसमरसम्पादितविजृम्भितद्विरदरदनकुलिशाघात-व्रणसंरूढभास्वद्वि-जयलक्षणलक्षीकृतविशालवक्षस्थलः समधिगतसकलशास्त्रार्थतत्त्वस्समा-राधितत्रिवर्गो निरवद्यचरितः प्रतिदिनमभिवर्द्धमानप्रभावो **भूविक्रम**-नामधेयः

अपि च—

नानाहेतिप्रहारप्रविघटितभटोरष्कत्राटोत्थितास्रग्-
धारास्वाद-प्र(IIIa) मत्तद्विपशतचरणक्षोदसम्मर्द्दभीमे ।
संग्रामे **पल्लवेन्द्रं** नरपतिमजयद्यो **विळन्दा**-भिधाने
राज-श्रीवल्लभाख्यस्समरशतजयावाप्तलक्ष्मीविलासः ॥
तस्यानुजो नतनरेन्द्रकिरीटकोटि-
रत्नार्कदीधितिविराजितपादपद्मः ।
लक्ष्म्या स्वयम्वृतपतिर्न्नव**काम**नामा
शिष्टप्रियोऽरिगणदारणगीतकीर्त्तिः ॥

तस्य **कोङ्गणिमहाराजस्य शिवमारा**परनामधेयस्य पौत्रः सम-
धिगतसम[illegible] स [illegible] कटतटघटितवहलरत्न [illegible] समरव [illegible] खण्डमण्डितच-

रणनखमण्डलो नारायण[चरण]निहितभक्तिः शूरपुरुषतुरगनरवारणघटासं-घट्टदारुणसमरशिरसि निहितात्मकोपो भीमकोपः प्रकटरतिसमयसमनु-वर्त्तनचतुरयुवतिजनलोकधूर्त्तोऽलोकधूर्त्तः सुदुर्द्धरानेकयुद्धमूर्धलब्धविजय-सम्पद हितगजव (IIIb) टाकेसरी राजकेसरी । अपि च ।

यो गङ्गान्वयनिर्म्मलाम्बरतलव्याभासनप्रोल्लसन-
मार्त्तण्डोऽरिभयङ्करः शुभकरस्सन्मार्गरक्षाकरः ।
सौराज्यं समुपेत्य राज्यसमितौ राजन् गुणैरुत्तम-
राज-श्रीपुरुषश्चिरं विजयते राजन्य-चूडामणिः ॥
कामो रामासु चापे दशरथतनयो विक्रमे जामदग्न्यः
प्राज्यैश्वर्ये बलारिर्व्विहुमहसि रविस्स्व-प्रभुत्वे धनेशः ।
भूयो विख्यातशक्तिस्स्फुटतरमखिलं प्राणभाजं विधाता
धात्रा सृष्टः प्रजानां पित(पति)रिति कवयो यं प्रशंसन्ति नित्यं ॥

तेन प्रतिदिनप्रवृत्तमहादानजनितपुण्याहघोषमुखरितमन्दिरोदरेण **श्रीपुरुषप्रथमनामधेयेन पृथुवीकोङ्गणिमहाराजेन अष्टानवत्युत्तरे-[षु] षट्छतेषु शकवर्षेष्वतीतेष्वात्मनः प्रवर्द्धमानविजयैश्वर्य्ये संवत्सरे पञ्चाशत्तमे प्रवर्त्तमाने मान्यपुरमधिव-(IVa)सति** विजयस्कन्धावारे श्रीमूल-मूलगणाभिनन्दितनन्दिसङ्घान्वये **एरेगित्तू-**र्न्नाम्नि गणे **पुलिकल्**गच्छे स्वच्छतरगुणकिर[ण]प्रततिप्रह्लादितसकललोकः चन्द्र इवापरः **चन्द्रनन्दी**नाम गुरुरासीत् तस्य शिष्यस्समस्तविबुधलो-कपरिरक्षणक्षमात्मशक्तिः परमेश्वरलालनीयमहिमा कुमारवद्द्वितीयः **कुमार-ण(न)न्दी** नाम मुनिपतिरभवत् तस्यान्तेवासी समधिगतसकलतत्त्वार्थ-समर्थितबुधसार्थसम्पत्सम्पादितकीर्त्तिः **कीर्त्त(र्त्ति)नन्द्याचार्यो** नाम महामुनिस्समजनि तस्य प्रियशिष्यः शिष्यजनकमलाकरप्रबोधनकः

मिथ्याज्ञानसन्ततसन्तमससन्तानान्तकसद्धर्मव्योमावभासनभास्करः **विमलचन्द्राचार्य्य**स्समुदपादि तस्य (IV b) महर्षेर्द्धर्म्मोपदेशनया श्रीमद्बाणकुलकलः सर्व्वतपमहानन्दीप्रवाहः महादण्डमण्डलाग्रखण्डितारिमण्डलद्रुमषण्डो दुण्डुप्रथमनामधेयो **नीर्गुन्द**युवराजो जज्ञे तस्य प्रियात्मजः आत्मजनितनयविशेषनिःशेषीकृतरिपुलोकः लोकहितमधुरमनोहरचरितः चरितार्त्थत्रिकरणप्रवृत्तिः **परमगूळ**प्रथमनामधेयश्री**पृथुवीनीर्गुन्दराजो**ऽजायत पल्लवाधिराजप्रियात्मजायां सगरकुलतिलकात् **मरुवर्म्मणो** जाता **कुन्दाच्चि**नामधेया भर्तृभवन आवभूव भार्य्या तया सततप्रवर्त्तितधर्म्मकार्य्यया निर्म्मिताय **श्रीपुरो**त्तरदिशमलङ्कुर्व्वते **लोकतिलक**नाम्ने **जिनभवनाय** खण्डस्फुटितनवसंस्कारदेवपूजादानधर्म्मप्रवर्त्तनार्त्थं तस्यैव **पृ(Va)थिवीनीर्गुन्दराज**स्य विज्ञापनया महाराजाधिराजपरमेश्वरश्री**जसहितदेवेन** नीर्गुन्दविषयान्तर्पाति **पोन्नळ्ळि**नामग्रामस्सर्व्वपरिहारोपेतो दत्तः तस्य सीमान्तराणि पूर्व्वस्यां दिशि नोलिवेळदा वेळ्गल्-मोरींदि पूर्व्वदक्षिणस्यां दिशि पण्यङ्गेरी दक्षिणस्यां दिशि वेळ्गल्लिगेरेंया ओळ्गेरेंया पल्लदा कूडल् दक्षिणपश्चिमायान्दिशि जैदरा केय्या वेळ्गल्-मोरेंड्ड पश्चिमायान्दिशि पोङ्केचि तात्तुवायराकेरी पश्चिमोत्तरस्यां दिशि पुणुसेया गोट्टगाला कल्कुप्पे उत्तरस्यां दिशि सामगेरेया पोल्लदा पेर्म्मुरिक्कु उत्तरपूर्व्वस्यां दिशि कळम्बेत्ति-गट्टु इमान्यन्यानि क्षेत्रान्तराणि दत्तानि दुण्डुंससुद्रदा वयलुळ् किरुंदारमेगे **पदिर्कण्डुगं** मण्णं **पळेया एरेनल्लूरा** ऊर्प्पाळु ओर्कण्डुगं **श्रीवुरदा दु (Vb) ण्डुगामुण्डरा** तोण्टदा पडुवायोन्दुतोण्ट श्रीवुरदा वयलुळ् कर्म्मगेट्टिनल्लि इर्कण्डुगं कळनि पेर्ग्गेरेंया केळगे आरुंगण्डुगमेरे पुलिगेरेंया कोयिलगोडा एडे इर्प्पत्तुगण्डुगं व्वेडे आदुवु श्रीवुरदा वडगण पडुवण कोणुळळण् **देवङ्गेरि** मदमने ओन्दं

मूवत्ता-ओन्दु मनेय मनेताणमस्य दानसाक्षिणः अष्टादश प्रकृतयः ॥
(VIa) अस्य दानस्य साक्षिणः षण्णवतिसहस्रविषयप्रकृतयः योऽस्यापहर्त्ता लोभात् मोहात् प्रमादेन वा स पञ्चभिर्म्महद्भिः पातकैस्संयुक्तो भवति यो रक्षति स पुण्यभाग्भवति अपि चात्र मनु-गीताः श्लोकाः

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम् ।
षष्टिं वर्षसहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥
स्वं दातुं सुमहच्छक्यं दुःखमन्यस्य पालनम् ।
दानं वा पालन वेति दानाच्छ्रेयोनुपालनम् ॥
बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः ।
यस्य यस्य यदा भूमिः तस्य तस्य तदा फलम् ॥
देवस्वं तु विषं घोरं न विषं विषमुच्यते ।
विषमेकाकिनं हन्ति देवस्वं पुत्र-पौत्रकम् ॥

सर्व्वकलाधारभूतचित्रकलाभिज्ञेन विश्वकर्म्माचार्य्येणेदं शासनं लिखितं चतुष्कण्डुकव्रीहिवीजावापमात्रं द्विकण्डुककङ्गुक्षेत्रं तदपि ब्रह्मदेयमिव रक्षणीयम् ॥

[इस लेखमें सर्वप्रथम गङ्गनरेशोंकी राजपरम्परा बताई गई है। वह निम्न भाँति थीः—

१ काण्वायनसगोत्रीय कोङ्गणिवर्म्म-धर्म्म-महाराजाधिराज ।
इनके पुत्र—
२ माधव-महाधिराज; ये दत्तकसूत्र-वृत्ति (टीका)के प्रणेता थे ।
इनके पुत्र—
३ हरिवर्म्म-महाधिराज ।
इनके पुत्र—
४ विष्णुगोप-महाधिराज ।
इनके पुत्र—

५ माधव-महाधिराज । इनके पुत्र—

६ कदम्बकुलके सूर्य कृष्णवर्म्म महाधिराजकी वहिनके पुत्र अविनीत नामके कोङ्गणि-महाधिराज थे । इनके पुत्र—

७ दुर्व्विनीत थे । इन्होंने अन्दरि, आलत्तूर्, पोरुळरें, पेल्लनगर तथा और भी अन्य जगहोंके युद्धोंको जीता था । ये किरातार्जुनीय संस्कृत काव्यके १५ सर्गों तकके टीकाकार भी थे । इनके पुत्र—

८ मुष्कर थे । इनके पुत्र—

९ श्रीविक्रम । इनके पुत्र—

१० भूविक्रम हुए, जिन्होंने विळन्द नामक स्थानमें पल्लवेन्द्र नरपतिको जीता था । सौ युद्धोंमें जीतनेसे प्राप्त लक्ष्मीका विलास (भोग) करनेसे इनको 'राज-श्रीवल्लभ' भी कहते थे । इनके अनुजका नाम नवकाम था ।

इसके पश्चात्— उन कोङ्गणिमहाराजका जिनका दूसरा नाम 'शिवमार' था पौत्र

११ राज–श्रीपुरुष हुआ । इन्हींका द्वितीय नाम 'पृथिवीकोङ्गणिमहाराज' था । ये जब, शक सं० के ६९८ वर्ष वीत जाने पर और अपने राज्यका जब ५० वाँ वर्ष चालू था, अपने विजयस्कन्धावार मान्यपुरमें निवास कर रहे थे, तबः—

मूल मूलसंघमेंसे निकले हुए नन्दिसंघके एरेगित्तूर्-गणके पुलिकल्-गच्छमें चन्द्रनन्दि गुरु हुए । उनके शिष्य कुमारनन्दि मुनिपति, उनके शिष्य कीर्त्तिनन्द्याचार्य, उनके शिष्य विमलचन्द्राचार्य हुए ।

१२ इन महर्षिके धर्मोपदेशसे निर्गुन्द युवराज, जिनका पहला नाम 'दुण्डु' था और जो 'बाणकुल' के नाशक प्रतिबुद्ध हुए थे । इनके पुत्र–

१३ पृथिवी-निर्गुन्द-राज हुए । इनका पहला नाम परमगूळ था । इनकी पत्नीका नाम कुन्दाच्चि था । यह सगरकुल-तिलक मरुवर्म्माकी पुत्री थीं १४ इनकी माता पल्लवाधिराजकी प्रियपुत्री थीं जो मरुवर्म्माकी पत्नी । इसने (कुन्दाच्चिने) श्रीपुरकी उत्तर दिशामें 'लोकतिलक' नामका

जिनमन्दिर बनवाया था। उसकी मरम्मत, नई वृद्धि, देवपूजा, दानधर्म आदिकी प्रवृत्तिके लिये पृथिवी-निर्गुन्द-राजके कहनेसे महाराजाधिराज परमेश्वर श्री-जसहित-देवने निर्गुन्द देशमें आनेवाले 'पोन्नल्लि' ग्रामका दान, सर्व करों और बाधाओंसे मुक्त करके दिया।

इसके बाद इस लेखमें इस गाँवकी आठ दिशाओंकी सीमा दी हुई है। तथा अन्य क्या-क्या क्षेत्र दानमें दिये गये थे उनकी सूची है। दानके साक्षी कौन-कौन थे, इसका उल्लेख है। तत्पश्चात् मनुके वे प्रसिद्ध चार श्लोक हैं जो बहुत-से शिलालेखोंके अन्तमें पाये जाते हैं। सबसे अन्तमें, इस लेख (शासन) को उत्कीर्ण करनेवाले शिल्पीने अपना नाम 'विश्वकर्माचार्य' दिया है तथा उसी समय उसको भी कुछ भूमिदान किया गया था उसका भी इसमें उल्लेख है।]

[EC, IV, Nagamangala tl. n° 85]

१२२

मण्णे—संस्कृत।

शकवर्ष ७१९=७९७ ई०

[मण्णेमें, शीलवन्त रुद्रय्यके अधिकारके ताम्रपत्रों पर]

(१ ब) स्वस्ति जितं भगवता गत-घन-गगनाभेन पद्मनाभेन श्रीमज्जाह्नवेय-कुलामल-व्योमावभासन-भास्करः स्वखड्गैकप्रहार-खण्डित-महा-शिला-स्तम्भ-लब्ध-बल-पराक्रमो दारुणारि-गणविदारणोपलब्ध-व्रण-विभूषण-भूषितः काण्वायन-सगोत्रः श्रीमत्-कोङ्गणि-वर्म्म-धर्म्म-महाधिराजः, तस्य पुत्रः पितुरन्वागत-गुण-युक्तो विद्या-विनय-विहित-वृत्तः(त्तिः) सम्यक्-प्रजा-पालन-मात्राधिगत-राज्य-प्रयोजनो विद्वत्कवि-काञ्चन-निकषोपल-भूतो नीतिशास्त्रस्य वक्तृ-प्रयोक्तृ-कुशलो दत्तक-सूत्र-वृत्तेः प्रणेता श्रीमान् माधव-महाधिराजः, तत्पुत्रः पितृ-पितामह-गुण-युक्तोऽनेकचातुर्-दन्त-युद्धावाप्त-चतुरुदधि-सलिलास्वादितयशश्श्रीमद्धरिवर्म्म-महाधिराजः, तत्पुत्रो द्विज-गुरु-देवता-पूजन-परो नारायण-चरणानुध्यातः

श्रीमान् **विष्णुगोपमहाधिराजः**, तत्पुत्रस् त्र्यम्बक-चरणाम्भोरुह-रजः-पवित्रीकृतोत्तमाङ्गः स्व-भुज-बल-पराक्रम-क्रय-(२ अ)क्र(क्री)तराज्यः कलि-युग-बल-पङ्कावसन्न-धर्म्म-वृषोद्धरण-नित्य-सन्नद्धः श्रीमान् **माधव-महाधिराजः**, तत्पुत्र [श्र] श्रीमत्-कदम्ब-कुल-गगन-गभस्तिमालिनः **कृष्णवर्म्म-महाधिराजस्य** प्रिय-भागिनेयो विद्या-विनयातिशय-परिपूरितान्तरात्मा निरवग्रह-प्रधान-शौर्य्यो विद्वत्सु प्रथम-गण्यः श्रीमान् **कोङ्गणि-महाधिराजः अविनीत**-नामा, तत्पुत्रो विजृम्भमाणशक्ति-त्रयः अन्दरि-आलत्तूर्-प्पोरुळरे-पेळ्नगराद्यनेकसमर-मुख-मख-हुत-प्रहत-शूर-पुरुष-पशूपहार-विघस-विहस्तीकृत-कृतान्ताग्नि-मुखः किरातार्जुनीय-पञ्च-दश-सर्ग-टीकाकारो **दुर्व्विनीत**-नामधेयः, तस्य पुत्रो दुर्द्दान्त-विमर्द्द-विमृदित-विश्वम्भराधिप-मौळि-माला-मकरन्द-पुञ्ज-पिञ्जरीक्रियमाण-चरण-युगलनलिनो **मुष्कर**-नामधेयः, तस्य पुत्रश्चतुर्द्दश-विद्या-स्थानाधिगत-विमल-मतिर्व्विशेषतोऽनवशेषस्य नीति-शास्त्रस्य वक्त (क्तृ)-प्रयोक्तृ-कुशलो रिपु-तिमिर-निकर-निराक[र]णोदय-भास्करः **श्रीविक्रम**-प्रथित-ना[म]धेयः, तस्य पुत्रः अनेक-समर-सम्पादित-विजृ (२ ब) म्भित-द्विरद-रदन-कुलिशाभिघात-व्रर्ण्ण(व्रण)संरूढ-भास्वद्विजय-लक्षण-लक्षीकृत-विशाल-वक्षस्थलः समधिगत-सकल-शास्त्रार्थ-तत्त्वस्समाराधित-त्रिवर्गो निरवद्य-चरित[ः]प्रतिदिनमभिवर्द्धमान-प्रभावो **भूविक्रम**नामधेयः

अपि च

नाना-हेति-प्रहार-प्रविघटित-भटोरःकवाटोत्थितासृग्-
धारास्वाद-प्रमत्त-द्विप-शतचरण-क्षोद-सम्मर्द्द-भीमे ।
सङ्ग्रामे **पल्लवेन्द्रं** नरपतिमजयद् यो **विळन्दा**भिधाने
राजा **श्रीवल्लभाख्य**स्समर-शत-जयावाप्त-लक्ष्मी-विलासः ॥

तस्यानुजो नत-नरेन्द्र-किरीट-कोटि-
रत्नार्क-दीधिति-विराजित-पाद-पद्मः ।
लक्ष्म्या स्वयम्वृत-पतिर्नव-काम-नामा
शिष्ट-प्रियोऽरि-गण-दारण-गीत-कीर्त्तिः ॥

तस्य कोङ्गुणि-महाराजस्य शिवमारापर-नामधेयस्य पौत्रः समवनत-समस्त-सामन्त-मुकुट-तट-घटित-वहल-रत्न-विलसदमर-धनुष्-खण्ड-मण्डितचरण-नख-मण्डलो नारायण-चरण-निहित-भक्ति[:]शूर-पुरुष-तुरग-नरवारण-घटा-संघट्ट-दारुण-समर-शिरसि नी(निहि)तात्म-कोपो भीम-कोपः प्रकटरति-समय-समनुवर्त्तन-चतुर-युवति-जन-लोक-धूर्त्तोऽलोक-धूर्त्तः दुर्द्धरानेक-युद्ध-मूर्द्ध-लब्ध-विजय-सम्पदहित-गज-घटा-केसरी राज-केसरी ।

अपि च

यो गङ्गान्वय-निर्म्मलाम्बर-तल-व्यामासन-प्रोल्लसन्-
मार्त्तण्डोऽरि-भयंकरश्शुभकरस्सन्मार्ग्ग(२ अ) रक्षा-करः ।
सौराज्यं समुपेत्य राजसमितौ राजद्(न्)-गुणैरुत्तमै
राजा श्रीपुरुषश्चिरं विजयते राजन्य-चूडामणिः ॥
कामो रामासु चापे दशरथ-तनयो विक्रमे जामदग्न्यः
प्राज्यैश्वर्य्ये बलारिर्वा(ब)हु-महसि रविः स्व-प्र[भुत्]वे धनेशः ।
भूयो विख्यात-शक्तिस्स्फुटतरमखिलप्राण-भाजं विधाता
धात्रा सृष्टः प्रजानां पतिरिति कवयो यं प्रशंसन्ति नित्यम् ॥

स तु प्रतिदिन-प्रवृत्त-महादान-जनित-पुण्याह-घोष-मुखरित-मन्दिरोदरः श्रीपु[रु]ष-प्रथम-नामधेयः पृथिवी-कोङ्गणि-[म]हाधिराजः, तत्पुत्रः प्रताप-विनमित-सकल-महीपाल-मौलि-माला-ललित-चरणारविन्द-युगलो निज-भुज-विराजि-निशित-खड्ग-पट्ट-समाकृष्टानिष्ट धरावल्लभ-

जय-श्री-समालिङ्गितस्समर-मुख-सम्मुखागत-रिपु-नृपति-गज-घटा-कुम्भ-निर्भ्भेदनोच्चलित-रक्त-च्छटा-पात-पाटलित-निज-भुज-स्तम्भः आ-कर्ण्ण-समाकृष्ट-चाप-चक्र-विनिर्मुक्त-नाराच-परम्परा-पात-पातिताराति-मण्डलो बहु-समर-समार्ज्जित-जय-पताका-शत-[श]बलित-नभस्-तलः

यस्मिन् प्रयातवति कोप-वशं महीशे
यान्ति क्षणादहित-भूमिभुजो रणाग्रे ।
अन्त्रावली-वलय-भीषणमन्तक (३ ब) स्य
वक्त्रान्तरं क्षतज-कर्द्दम-दुर्न्निरीक्ष्यम् ॥

स तु शिशिरकर-निर्म्मल-निज-यशो-राशि-विशदीकृत-दशाशा-चक्र[ः] समस्त-चक्रवर्त्ति-लक्षणोपलक्षितो निरपेक्षा-परोपकार-सम्पादनैक-व्यसनः प्रवर्त्तित-न्याय-बल-समुन्मूलित-कलि-काल-विलसितो निपुण-नीति-प्रयोगापहसित-बृहस्पतिः कु-नृपति-कदम्बक-कपाट-कोटि-विघट्टित-धर्म्मार्गलं ....न....शिलास्तम्भायमान-चरितः सतत-प्रवृत्त-दान-सन्तर्प्पित-द्विजाति-लोकः ।

प्रोन्मूलित-विकारेण सर्व्व-लोकोपकारिणा ।
यस्य दानेन दिङ्-नाग-दान-धाराप्यधःकृता ॥

अपि च

जटानां संघातैरिह भुवि कृतोऽनून-विपदाम्
कलानामाधारो बुध-जन-हितः पालन-परः ।
गुणानां शुद्धानामपि नियतमुत्पत्ति-भवनम्
नृपाणां नेता....कविरिति मतः काव्य-कुशलः ॥

दुर्व्व(दुरव)गाह-फणिसुत-मत-पारावार-पारदृश्वा प्रमाण-शास्त्र-शाण-[शा]तीकृत-धीर-धिषणः सामज-तन्त्र-तत्त्वावबोध-विमदीकृत-मु(बु)धो

हस्तिनी-(व)वक्त्रोद्भव-यति-प्रवर-मतावबोधन-गम्भीर-मतिर्विद्वान्-मति-वितति-विकल्प··········विचार-विचक्षणोऽर्ज्जित[न]-तुरङ्गमागम-प्रयोग-परिणतो धनुर्व्विद्याम्भोरुह-वन-गहन-विकासिन-विदग्ध-म(४ अ)रीचि-माली निज-निर्म्मित-गज-मत-कल्पनानल्प-चेता विराजित-सेतु-बन्धनो नन्दित-विपश्चिन्मण्डलस्सकल-नाटक-विषय-सन्धि-सन्ध्यङ्गादि-योजना-चतुरो निरुपम-निज-रूप-निर्ज्जित-मकरध्वजो मकरध्वज-गुरु-चरण-सरोज-विनमन-पवित्री-कृतोत्तमाङ्गो मुदुकुन्दूरु-नाम-ग्रामोपविष्ट-राष्ट्रकूट-चालुक्य-हैहय-प्रमुख-प्रवीर-सनाथ-वल्लभ-सैन्य-विजय-विख्यापित-प्रभावः ।

अपि च ।

श्रीराश्रीयं समन्तात् प्रवलमुपगत-व्याप्त-दिक्-चक्रवालम्
निर्ज्जित्यानेक-संख्यैर्न्निशित-निज-भुजोन्मुक्त-नाराच-जालैः ।
देवो यः प्राज्य-तेजस् तिमिरमिव महत्-तीव्रभानुर्म्मयूखैर्
दुर्व्वारोदार-पातिरुद्यमभिलपन् स्वन्निवेशं विवेश ॥

स तु हरिरिव सतत-सम्भावित-द्विज-पतिः सहस्रकिरण इव प्रति-दिवसोचितोदयः भुजङ्गलोक इव विगत-भयो (?) आत्माकर इवास्पृष्ट-कलङ्को दुर्य्योधनोऽप्यभिनन्दितार्ज्जुन-गुणो वाहिनी-पतिरप्यजडाशयः शीतकरोऽप्यनालिङ्गित-मलिन-भावो राष्ट्रकूट-पल्लवान्वय-तिलकाभ्यां मूर्द्धा-भिषिक्त-गोविन्द-राज-नन्दि-वर्म्माभिधेयाभ्यां समनुष्ठित-राज्याभिषेका-भ्यां निज-कर-घट्टित-पट्ट-विभूषित-ललाट-पट्टो विख्या[त]-विमल-गङ्गान्वय-नभस्-तल-गभस्तिमाली कोङ्गुणि-महाराजाधिराज-परमेश्वर-श्री-शिव-मार-देवः (४ ब) ॥ तत्पुत्रो निज-भुज-निहित-निशात-हेति-पात-पातितारति-वर्गो वर्ग-द्वयोपार्ज्जनार्ज्जितोर्ज्जित-यशस्सन्तान-सन्तर्पित-स-

मस्त-जन-हृदयः प्रभवत्कलि-काल····विवर्द्धित-कलङ्कि····लाय····कल्प-कल्याण-चरितः स्ववंश-विशद-वियदंशुमाली समस्त-नीति-शास्त्र-प्रयोग-प्रवीणाग्रगण्यस्तुरङ्गमारोहण-नैपुण्य-प्रीणित-क्षोणीपति-सुत-सहस्र-लब्ध-साम-ध्वनिरनेक-सङ्गर-रङ्ग-सङ्गमाङ्गीकृत-जय-श्री-समालिङ्गित-भुजङ्ग-भोगाभ-भीम-भुज-दण्डः

यस्मिन् शासति सत्य-धाम्नि विमले राजन्वती मेदिनी
यस्मि····र्य्यमुपेत्य बृंहित-बलो धर्म्मोऽधिकं जृम्भते ।
यस्यैवाभय-दायिनोऽतिदयिता दोश्शालिनश्शाश्वती
लक्ष्मीर्यत्र यशो-निधौ पतिमती जाता जगद्वल्लभा ॥

स तु पितामह इवानेक-राजहंस-संसेवितः पद्मावासश्च मधुमथन इव त्रिलोकाधिक-विक्रमाक्षिप्त-बलि-रिपुरहीन-स्थितिरविश्व धूर्ज्जटिरिवाविनश्वरेश्वर-भावो वीर-भद्रश्च कार्त्तिकेय इव सकल-जगदुदीरित-स्वामि-शब्दश्शक्ति-सम्पन्नश्च महा-मेरुरिव स्व-महिमाधःकृत-महीभृन्मण्डलो महासत्त्वश्च ।

अपि च ।

मन्वादि-(षोड) (५ अ) षोडश-महीश-गुणानुरागो
यं प्राप्य विस्मृति-पदं ज [ग] तो जगाम ।
यस्य प्रतापदहनोऽहित-बुद्धि-वार्द्धाव्
और्व्वायते नरपतेरतिदूरतोऽपि ॥

यश्च समर-शिरसि····कलत्रे च निज-जने मित्रायते रिपु-तिमिर-निचये च अनेक-प्रकारण-रणकार्दितान्तःकरणानां शरणायते सम्पदां च अतिप्रभूत-मति-निकेत-तमस्-तति-तिरस्कृतौ प्रद्योतायते····खिल-जगद-वलंबिताज्ञा-सम्पत्तौ च सकल-कुवलय-लोचनानन्दकरतायां द्विजेशायते रि-वाहन-निहित-चित्तत्वे च ।

अपि च ।

यस्यैकस्यापि सर्व्वं जगदपि स-रुपो नाग्रतम् स्थातुमीष्टे
दित्सा-सम्भूत-बुद्धेरपि नव निश्चयो यस्य नालं नृपस्य ।
जिह्मं तीव्राभिमानात् कपट-विजयिनां यद्-धृतेर्नाकधाम्नाम्
[रा] ज्ञां विज्ञातकीर्त्ति [स्स] सकल-जगतां नन्दनो **मारसिंहः** ॥

यश्च सतत-सम्पादित-कमलानन्दोऽप्यप्रचण्डकरः पुण्य-जन-सत्त्व-समेतोऽप्यनृशंस-मानसः मत्त-मातङ्ग-स्कन्ध-लालितोऽप्यति-शुचि-स्वभावः प्रिय-धनुरप्यमार्ग्गणः समनुष्ठित-दण्ड-नीतिरप्यदण्डक्रम-गतिः ॥

अपि च ।

धूसरीकुरुते यस्य चरणाम्भोज-जं रजः ।
प्रणतानन्त-सामन्त-चूडामणि-मधुव्रजम् ॥

तेन **लो (५ व) क-त्रिनेत्रा**पर-नामधेयेन समधिगत-यौवराज्य-पदेन भगवत्सहस्र-किरण-चरण-नलिन-षट्चरणायमान-मानसेन ॥ तस्मिंश्च प्रसाविताशेष-सामन्त·······अखण्डं **गङ्ग-मण्डल**मनुशासति श्री**मारसिंहा**भिधाने आसीत् समस्त-सामन्त-सेनाधिपतिः परमार्हतः परम-धार्म्मिकः मन्त्र-प्रभूत्साह-शक्ति-सम्पन्नः **श्रीविजयो** नाम यश्च सहस्रदीधितिरिव तिरोहिताखिल-पर-तेजः पर-तेजः-प्रसरोऽपि असन्तापित-भूतलः सुनाशीर इवाखण्डित-सकल-जनाज्ञोऽपि अगोत्र-भेदन-करः गुह इव शक्ति-समुत्सारिता-वर्ग्गोऽपि अकृत-बल-भावःशिशिरगभस्तिरिव प्रह्लादनोद्योतनसमर्थ्थोऽपि अदोषाश्रित-विग्रहः वारिराशिरिव अपरिमित-सत्व-समाश्रयोऽपि अपङ्क-मल-गृहीतः विनतानंद [न] इव अतिदूर-द [र्श] नोऽपि अपिशिताशनः शतक्रतुरिव बुध-गुरु-मित्र-परिवृतोऽपि न [प] र-दार-रति-शस्तः झषकेतन इव स्ववशीकृत-सकल-जनोऽपि अप्र (प)

हृत-बलावलो-तप....यश्च अमृतमयो भृत्यानां सुखमयो मित्राणां सुधामयो रामाणामुत्साहमयः प्रजानां विनयमयो गुरूणां नयसूत्र (६ अ) लद्-वृत्तीनां अग्रणी रसिकानां स्रष्टा काव्य-रचनानां उपदेष्टा नयानां द्रष्टा स्वामि-कार्य्याणां विद्वेष्टा कृत-दोषाणां यष्टा महा-मखानां परिमार्ष्टा पापानां प्रष्टा निर्म्माण-हेतूनां परिक्रुष्टा श्रितागसाम् ।

अपि च ।

उदन्वानिव गाम्भीर्य्ये विवस्वानिव तेजसि ।
शशलक्ष्मेव लावण्ये नभस्वानिव यो बले ॥
मनोभूरिव सौरूप्ये मघवानिव सम्पदि ।
सुरमन्त्रीव शास्त्रार्थे उशनेव च यो नये ॥
ग्रामे पुरे नदी-तीरे गिरौ द्वीपे सरोऽन्तिके ।
प्रावर्त्तयत् स्व-कीर्त्याभां योऽनेकं वसतिं प्रभुः ॥
स **मान्यनगरे** श्रीमान् **श्रीविजयो**ऽकार [य], च्छुभम् ।
जिनेन्द्र-भवनं तुङ्गं निर्म्मलं स्व-महस्-समम् ॥

तस्य च प्रसाधिताशेष-सामन्त-चन्द्रस्य श्री-**मारसिंह**स्यानुज्ञया **श्रीविजयो** महानुभावः **किषु-वेक्कूर**-ग्राममादाय **मान्यपुर**-विनिर्म्मिताय भगवदर्हदायतनाय अदादिति तस्य च ग्रामस्य (यहाँ सीमाओंकी विस्तृत चर्चा आती है) ।

अपि च ।

आसीद(त्)-**तोरणाचार्य्यः** कोण्डकुन्दान्वयोद्भवः
स तै [द] द्विषये धीमान् **शाल्मली**ग्राममाश्रितः
निराकृततमोऽरातिः स्थापयन् सत्पथे जनान् ।
स्वतेजोद्द्योतित-क्षोणिः चण्डार्च्चिरिव यो बभौ ॥

तस्याभूत् पुष्पनन्दीति शिष्यो विद्वान् गणाग्रणीः।
तच्छिष्यश्च **प्रभाचन्द्रः** तस्येयं वसतिः कृता ॥
(३ पंक्तियोंमें दानकी चर्चा है)

इदप **शक-वर्षं एळनूर पत्तोम्भत्तु वर्षमुं मूप्पु तिङ्गळ्माषाढ-शुक्ल-पक्षद पञ्चमियुमुत्तराभाद्रपतेमुं सोमवारमुं** शासनं निर्मितं। अस्य दानस्य साक्षिणः **षण्णवति-सहस्र**-विषय-प्रकृतयः योऽस्यापहर्त्ता लोभान्मोहात् प्रमादेन वा स पञ्चमिर्महद्भिः पातकैस्संयुक्तो भवति यो रक्षति स पुण्यवान् भवति

अपि चात्र मनु-गीताः श्लोकाः

स्वदत्तां पर-दत्तां वा यो हरेत वसुंधरान्।
(७ अ) षष्टि-वर्ष-सहस्राणि विष्ठा [यां जा] यते कृमिः।
स्वं दातुं सुमहच्छक्यं दुःखमन्यस्य पालनम्।
दानं वा पालनं वेति दानाच्छ्रेयोऽनुपालनम् ॥
बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः।
यस्य यस्य यदा भूमिः तस्य तस्य तदा फलम् ॥
ब्रह्मस्वं तु विषं घोरं न विषं विषमुच्यते।
विषमेकाकिनं हन्ति देव-स्वं पुत्र-पौत्रकम् ॥

सर्व्व-कलाधारभूत-चित्र-कलाभिज्ञेय-विश्वकर्म्माचार्य्येणेदं शासनं लिखितं चतुष्कण्डुक-व्रीहि-बीजावाप-क्षेत्रं द्वि-कण्डुक-कङ्गु-क्षेत्रं तदपि देव-भोगमिति रक्षणीयम् ॥

[जाह्नवी (गङ्ग)-कुलके स्वच्छ आकाशमें चमकते हुए सूर्य; काण्वायन-सगोत्रके

(१) श्रीमत्-कोङ्गणिवर्म-धर्म-महाधिराज थे।
(२) उनके पुत्र श्रीमान् माधव-महाधिराज थे।

ज्येष्ठोल्लंघन-जातयाप्यमलया लक्ष्म्या समेतोऽपि सन्
योऽभून्निर्म्मल-मण्डल-स्थिति-युतो दोषाकरो न क्वचित् ।
कर्ण्णाधः-कृत-दान-सन्तति- (२ अ) भृतो यस्यान्य-दानाधिकम्
दानं वीक्ष्य सु-लज्जिता इव दिशां प्रान्ते स्थिता दिग्-गजाः ॥
अन्यैर्न्न जातु विजितं गुरु-शक्ति-सारं
आक्रान्त-भूतलमनन्य-समान-मानम् ।
येनेह वद्धमवलोक्य चिराय **गङ्गान्**
दूरे स्व-निग्रह-भियेव कलिः प्रयातः ॥
एकत्रात्म-वलेन वारिनिधिनाप्यन्यत्र रुध्वा घनान्
निष्कृष्टासि-भटोद्धतेन विहरद्-ग्राहातिभीमेन च ।
मातङ्गान् मद-वारिनिर्झर-मुचः प्राप्यानतात् **पल्लवात्**
तच्चित्रं मद-लेशमप्यनुदिनं यस्स्पृष्टवान् न क्वचित् ॥
हेला-स्वीकृत-**गौड**-राज्य-कमलान् चान्तःप्रविश्याचिराद्
उन्मार्गे मरु-मध्यम-प्रतिवलैर्यो **वत्सराजं** वलैः ।
गौडीयं शरदिन्दु-पाद-धवल-च्छत्र-द्वयं केवलम्
तस्मादाहृत-तद्-यशोऽपि ककुभां प्रान्ते स्थितं तत्-क्षणात् ॥
लव्ध-प्रतिष्ठमचिराय कलिं सुदूरम्
उत्सार्य्य शुद्ध-चरितैर्धरणी-तलस्य ।
कृत्वा पुनः कृत-युग-श्रियमप्यशेषम्
चित्रं कथ **निरुपमः** कलि-वल्लभोऽभूत् ॥
प्राभू-(२ ब)द् धर्म-परात् ततो निरुपमादिन्दुर्य्यथा वारिधेः
शुद्धात्मा परमेश्वरोन्नत-शिरस्-संसक्त-पादस्तथा ।
पद्मानन्दकरः प्रताप-सहितो नित्योदयस्सोन्नतेः
पूर्व्वाद्रेरिव भानुमानभिमतो **गोविन्दराजः** सताम् ॥

यस्मिन् सर्व्व-गुणाश्रये क्षितिपतौ श्री-राष्ट्रकूटान्वयो
जाते यादव-वंशवन्मधुरिपावासीद् अलङ्घ्यः परैः ।
दृष्टा सावधयः कृतास्तु-सदृशाः दानेन येनोद्धताः
युक्ताहार-विभूषिताः स्फुटमिति प्रत्यर्थिनोऽप्यर्थिनः ॥
यस्याकारमनानुपं त्रिभुवन-व्यापत्ति-रक्षोचितम्
कृष्णस्येव निरीक्ष्य यच्छति पदं यथाधिपत्य भुवः ।
आस्तां तात तवेयमप्रतिहता दत्ता त्वया कण्ठिका
किन्त्वाज्ञैव मया धृतेति पितरं युक्तं स तत्राभ्यधात् ॥
तस्मिन् स्वर्ग-विभूषणाय जनने याते यशश्शोपताम्
एकीभूय समुद्यतान् वसुमती-संहारमाधित्सया ।
वि-च्छायान् सहसा व्यधत्त नृपतीनेकोऽपि यो द्वादश
ख्यातानप्यधिक-प्रताप-विसरैस्संवर्त्त (३ अ) कोल्कानिव ॥
येनात्यन्त-दयालुनोग्र-निगल-क्लेशादपास्याननम्
स्वं देशं गमितोऽपि दर्प्प-विसरद् यः प्रा [····]कूल्ये स्थितः ।
लीला-भ्रू-कुटिले ललाट-फलके यावच्च नालक्ष्यते
विक्षेपेण विजित्य तावदचिरादाबद्ध-गङ्गः पुनः ॥
सन्धायासि शिलीमुखान् स्व-समयात् वाणासनस्योपरि
प्राप्तं वर्द्धित-बन्धु-जीव-विभवं पद्मामिवृद्ध्यान्वितम् ।
सर्व्वं क्षेत्रमुदीक्ष्य यं शरद्-ऋतुं पर्ज्जन्यवद् गूर्ज्जरो
नष्टः क्वापि भयात् तथापि समयं स्वप्नेऽप्यपश्यन्····॥
यत्पादानति-मात्र····क-शरणानालोक्य लक्ष्मी-थिया
दूरान् मालव-नायको नय-परो यत्रातिबद्धाञ्जलिः ।
यो विद्वान् बलिना सहाल्प-बलवान् स्पर्द्धां न धत्ते पराम्
नीतेस्सूतिरसौ यदात्म-परयोराधिक्य-सम्वेदनम् ॥

विन्ध्याद्रेः कटके निविष्ट-कटकः श्रुत्वा चरैर्य्यन्निजैः
स्वं देशं समुपागतः ध्रुवमिव ज्ञात्वा धिया प्रेरितः ।
माराशर्व्व-महीपतिर्भृतमगादप्राप्त-पूर्व्वां (३ ब) परैर्
य्यस्येच्छामनुकूल[..........]धनैः पाद-प्रणामैरपि ॥
नीत्वा श्रीभवने घनाघन-घन-व्याप्तां परं प्रावृषम्
तस्मादागतवान् समं निज-बलैरा-तुङ्गभद्रा-तटम् ।
तत्रस्थः स्व-करागतं प्रकृतिभिर्न्निश्शेषमाकृष्टवान्
विक्षेपैरपि चित्रमानत-रिपुर् जग्राह तं पल्लवात् ॥
लेखाहार-मुखोदितार्द्ध-वचसा यत्रा....वेङ्गीश्वरो
नित्यं किङ्करवद् व्यधादविरतं....र्म्म स्वमात्मेच्छया ।
बाह्यालि-वृत्तिरस्य येन रचिता व्योमावलग्ना रुचम्
चित्र मौक्तिक-मालिकामिव धृताम्मूर्द्ध [न्] इ स्व-तारा-गणैः ॥
सन्त्रासात् पर-चक्र-राजकमगात् तच्छुद्ध-सेवा-विधि-
व्यावद्धाञ्जलि-शोभितेन शरणं मूर्ध्ना यदङ्घ्रि-द्वयम् ।
यद्यादत्त परार्द्ध्य-भूषण-गणैर्न्नालङ्कृतं तत् तथा
मा भैश्विरिति सत्य-पालित-यशस्-स्थित्या यथा तद्गिरा ॥
तेनेदमनिल-विद्युच्चञ्चलमवलोक्य जीवितमसारम् ।
क्षिति-दानमपरपुण्यं प्रवर्त्तितं देव-भोगाय ॥

स (४ अ) च परम-भट्टारक-महाराजाधिराज-परमेश्वर-श्रीमद्-धारा-वर्षदेव-पादानुध्यात-परम-भट्टारक-महाराजाधिराज-परमेश्वर-पृथिवी-वल्लभ प्रभूतवर्ष-श्रीमत्-गोविन्दराजदेवः ।

भ्राताभूत् तस्य शक्ति-त्रय-नमित-भुवः शौचकम्भाभिधानो
ज्येष्ठस्त्यागाभिमान-प्रभृति-गुण-गणाधः-कृतादि-क्षितीशः ।
राजा राजारि-लोकास्थिर-तिमिर-घटा-पाटने शुद्ध-वृत्तः
स श्रीमान् दिक्षु कीर्त्तिश्शशिविशद-रुचिस्स्थापिता येन भूयः ॥

तेन शौच-कम्भ-देवेन **रणावलोका**पर-नाम्ना राजाधिराज-परमेश्वर-श्रीप्रभूतवर्षानुज्ञानुमतेन

कोण्डकुन्दान्वयोदारो गणोऽभूत् भुवन-स्तुतः ।
तदैतद्-विषय-विख्यातं **शाल्मली**-ग्राममावसन् ॥
आसीत् [....]ता(तो)रणाचार्य्यस्तपः-फल-परिग्रहः ।
तत्रोपशम-सम्भूत-भावनापास्तकल्मषः ॥
पण्डितः **पुष्पणन्दी**ति बभूव भुवि विश्रुतः ।
अन्तेवासी मुनेस्तस्य स-कलश्चन्द्रमा इव ॥
प्रतिदिवस-भवद्-वृद्धि-निरस्त-दोषो व्यपेत-हृदय-मलः ।
परिभूत-चन्द्र-बिम्बस् तच्छिष्योऽभूत् **प्रभाचन्द्रः** ॥

(४ ब) तस्य धर्म्मोपदेश-परितुष्ट-हृदयतया च सत्येन धर्म्म-तनयः स्फुरत्प्रतापेन पद्मिनी-बन्धुं दानेन सुर-द्विरदं जयतितरां यश्श्रियो भर्त्ता

विविशुरग्गुणा रिपूणाम् ।
हृदयान्यपि यस्य सत्य-शौर्य्याद्याः ॥
तेयानुरत्स्थल-स्थित-
कमलामात्मभूमि [व] रम्यम् ॥

तस्य विष्णोरिव बलि-प्रताप-निर्व्वापणोद्यत-पराक्रमस्य पराक्रम-बलोकस्य प्रताप-निरन्तरतयाक्रान्त (:) समस्त-सुभट-लोकस्य केसरिण इव विक्रमैकर [स] स्य श्री-**चप्पय्य**-इति-सु-गृहीत-नाम्नः कुमारस्य वीर-श्री-लतारोहण-कल्पवृक्षायमानभुजदण्ड-दण्डितारातेःप्रियात्मजस्य विज्ञापना कर्ण्णोपजात-कुतूहलतया च । राजाधिराज-परमेश्वर-श्री-**निरुपमदेव प्रभूतवर्ष**-प्रसादोपलब्ध-महा-सामन्ताधिपत्यालङ्कृत-महानुभावेन भगवदर्ह[द्]-भटारक-चरण-परिचरण-प्रणत-पवित्रितोत्तमाङ्गेन महा-विजय-विक्षे-

धापति-श्री-श्रीविजयराजेन निर्म्मापिता-(५ अ) य जिन-भवनाय मान्यपुरीपश्चिम-दिगङ्गना-ललाम-भूताय चतुर्व्विशत्युत्तरेषु सप्त-शतेषु शक-वर्षेषु समतीतेष्वात्मनः प्रवर्द्धमान-विज [य] संवत्सरे मान्यपुरमधिवसति विजयस्कन्धावारे सोम-ग्रहणे पुष्य-नक्षत्रे शु [भ] लग्ने वार-विलासिनी-विरचित-नृत्त-गीत-वा(वा)द्य-बलि-विलेपन-देव-पूजा-नव-कर्म्म-प्रवर्त्तनार्थं एदेदिण्डे-विषय-मध्य-वर्त्ति-पेर्व्वडियूर्-नाम ग्रामं सर्व्व-बाध-परिहारं उदक-पूर्व्वं दत्तः तस्य सीमान्तरं (यहाँ सीमायें आती हैं) पादरि-ऊरुळ् पत्तु-भागदोळोन्दु-भागं देवर्गे कोट्टत्तु

(हमेशाके वे ही अन्तिम श्लोक)।

[विष्णुसे रक्षाकी कामना।

पृथ्वीपर कृष्ण-राज विद्यमान थे। उनके धोर नामका एक पुत्र था। उसीके दूसरे नाम कलि-वल्लभ, वत्सराज, निरुपम थे।

गुणी निरुपमसे गोविन्दराज उत्पन्न हुआ। जब यह राजा हुआ तो राष्ट्र-कूट-वंश दूसरे लोगों (वंशों) की प्रतियोगितासे ऊपर उठ गया। उसने गंगको बन्धनसे छुड़ाया था, लेकिन अपने घमण्डी स्वभावके कारण शीघ्र ही पुनः बाँध लिया गया। उसकी बहुत-सी प्रशंसा। उसके पराक्रमोंका वर्णन। उसने देव-भोग (मन्दिरके लिये दान) रूपसे भूमिदान किया। उसके बड़े भाईका नाम शौच-कम्भ था। इसी शौच-कम्भका दूसरा नाम रणावलोक था।

इस-विषय (देश) में प्रसिद्ध शाल्मली नामक गाँवमें कोण्डकुन्दा-न्वयके उदारगणमें तोरणाचार्य्य हुए। पुष्पनन्दि-पण्डित उनके शिष्य थे। उनके शिष्य प्रभाचन्द्र थे। उनके एक वप्परय नामके भक्त श्रावक थे। उनका पुत्र शत्रुओंका दण्ड देनेवाला था। अपने प्रिय पुत्रकी प्रार्थना सुनकर उन्होंने, मान्यपुरके पश्चिममें जो जिनमन्दिर खड़ा हुआ था उसके ...ये, उसके शासक श्रीविजय-राजकी कृपासे शक सं० ७२४ के बीतने पर, ...ने ही विजय-वर्षमें, मान्यपुरमें पड़े हुए अपने विजयी कैम्प (स्कन्धा-

वार) में एदेदिण्डे-विषयका पेर्व्वेडियूर नामका गाँव, सर्व करोंसे मुक्त करके, जलधारापूर्वक दानमें दिया। इस गाँवकी सीमायें । पदरियूरमें १२ भाग दानमें दिया गया। वे ही शापात्मक श्लोक।]

[NC, IX, Nelamangala tl. n° 61]

१२४

कडव—संस्कृत तथा कन्नड़।

(सन्देहास्पद)

[शक ७३५=८१२ ई०]

राष्ट्रकूट-वंशोद्भव द्वितीय प्रभूतवर्ष महीपतिका दानपत्र।

१ ॐ स्वस्ति [॥] विस्तृत-विशद-यशो-वितान-विशदीकृताशाचक्र-वालः करवाल-प्रवालावतंस-विराजित-जयलक्ष्मी-समालि-

२ गित-दक्ष-दक्षिणा-भूरि-भुजार्गलः गलित-सार-शौर्य्य-रस-विसर-विसखलीकृतोग्रा-

३ रि-वर्ग्गः वर्ग्ग-त्रय-वर्ग्गणैक-निपुणोऽचलाभार-चार्व्वी-विशेष-निर्ज्जितोर्व्वी-मण्डलोत्सवोत्पादनपरः

४ पर-भूपाल-मौलि-माला-लीढाङ्घ्रि-द्वन्द्वारविन्दो **गोविंदराजः** ॥ तस्य-सू-

५ नुः सुतरुण-भावोदय-दया-दान-दीनेतर-गुण-गण-समर्ण्पित-बन्धु-जनः सक-

६ ल-कलागम-जलधि-कलशयोनिः **मनुदर्शितमार्ग्गानुगामी राष्ट्र-कूट-कुला-**

७ मल-गगन-मृगलाञ्छनः बुधजन-मुख-कमलांशुमाली मनोह-

८ र-गुण-गणालंकार-भारः **कक्कराज**-नामधेयः [॥] तस्य पुत्रः स्व-वंशानेक-नृ-

९ प-संघात-परम्पराभ्युदय-कारणः परम-ऋषि-ब्राह्मण-भक्ति-

तात्पर्य–

१० कुशलः समस्त-गुण-गणाधिव्वोनो[1] विख्यात-सर्व्व-लोक-निरुपम-स्थिर-भाव-नि(वि)जिता–

११ रि-मण्डलः यस्यैममासीत् ॥ जित्वा भूपारि-वर्गान्नय-कुशल-तया येन रा–

१२ ज्यं कृतं यः कष्टे मन्वादिमार्ग्गे स्तुत-धवल-यशा न क्वचिद् यागपूर्व्वः[2] [।] संग्रामे यस्य शेषा

१३ स्व-भुज-कर-बल-प्रापिता या जयश्रीर्यस्मिञ्जाते स्ववंशोभ्युदय-धवलतां यातवान्नर्क्कतेजः [॥ १] अ–

१४ सा**विन्दराज**-नामधेयः [॥] तस्य पुत्रः स्व-कुल-ललामायमानो मानधनो दीनाना–

दूसरा पत्र; पहली बाजू.

१५ थ-जनाह्लादनकर-दान-निरत-मनोवृत्तिः हिमकर इव सुखकर-करः कुलाचल-समु–

१६ दाय इव सुधाधार-गुण-निपुणः हिमशैल-कूट-तट-स्थापित यशस्तम्भलिखिता–

१७ नेक-विक्रम-गुणः [।] अघ-संघात-विनाशक-सुरापगा यस्य सघशो विशदं [।] गायन्तीव तरङ्ग-प्रभव–

१८ रवैर्व्वहति जन-महिता ॥ [२] असौ **वैरमेघ**-नामधेयः [॥] तस्य पितृव्यः हृदय-पद्मा–

---

१ 'गणाधिध्वानो' इति राङ्समहोदयः। २ 'यातपूर्व्वे' पाठ ठीक मालूम पड़ता है।

१९. स्तनस्थ-परमेश्वर-शिरश्शिशिरकर- [कर-]निकर-निराकृत-तमो-
वृत्तिः सविशेषस्य जगत्रय-

२० सारोच्चयेनेव विरचितस्य चतुर्थ-लोकोदय-समानस्य कृतयुग-
शतैरिव निर्म्मि-

२१ तस्य यस्य यशसः पुञ्जमिव विराजमानः[1] ॥ प्रदग्ध-कालागरु-

२२ धूप-धूमैः प्रवर्द्धमानोपचयाः पयोदाः [।] यस्याजिरं स्वच्छ-
सुगन्ध-तोयैः

२३ सिञ्चन्ति सिद्धोदित-कूट-भागाः ॥ [२] न चेदृशं प्राप्यमिति
प्रलोभात् भवोद्भवो भावि-[यु]गा-

२४ वतारे [।] अवैमि यस्य स्थितये स्वयं तत् कल्पान्तरं नैव च
मात्यतीति ॥ [४] तारा-ग-

२५ णेष्वून्नत-कूट-कोटि-तटार्पितासूज्वल-दीपिकासु [।] मोमुह्यते
रात्रि-विभेदभा-

२६ वः निशात्ययः पौरजनैर्न्निशायां ॥ [५] आधारभूताहमिदं
व्यतीत्य मां वर्द्धते

२७ नायमतिप्रसङ्गः [।] यस्यावकाशार्त्थमितीव पृथ्वी पृथ्वीव
भूतेति च मे वि-

२८ तर्कः ॥ [६] विचित्र-पताका-सहस्र-सञ्छादितं उपरि परिच-
रण-भयात् लोकै-

२९ क-चूडामणिना मणि-कुट्टिम-संक्रान्त-प्रतिविम्ब-व्याजेन स्वयमव-
तीर्य्य

---

१ 'पुञ्ज इव विराजमानं' ऐसा पढ़ना चाहिये ।

दूसरा पत्र; दूसरी बाजू

३० परमेश्वर-भक्ति-युक्तेन नमस्क्रियमाणमिव विराजमानं प्रहत-पुष्कर-मन्द्र-निनादा—

३१ कर्ण्णनोदितानुरागैः प्रावृडारम्भ-काल-जनितोत्सवारम्भैः मयूरैः प्रारब्ध-वृत्त-नृ—

३२ त्तान्तं धूम-वेला-लीला-गत-विलासिनी-जनानां कर-तल-किसलय-रस-भाव-सद्भाव-प्रक—

३३ टन-कुशल-शशिवदनाङ्गना-नर्त्तनाहृत-पौर-युवति-जन-चिन्ता-न्तरं समस्त-सिद्धान्त-साग—

३४ र-पारग-मुनि-शत-सङ्कुलं देवकुलमासीत् **कृष्णेश्वर**न्नाम स्व-नामधेयाङ्कितं असा—

३५ **वकालवर्ष** इति विख्यातः [।।] तस्य सूनुः आनत-नृप-मकुट-मणि-गण-किरण-जाल-रञ्जित—

३६ पद-युगल-नख-मयूख-प्रभा-भासित-सिंहासनोपान्तः कान्ताजन-कटक-खचि—

३७ त-पद्मराग-दीधिति-विसर-शुम्भत्-कुसुम्भ-रस-रञ्जित-निज-धवल-वीज्यमान-चारु-चा—

३८ मर-निचय-विख्यात-प्राज्य-राज्याभिषेकान्तैरकैश्वर्य्य-सुख-समनुभ-वस्थि—

३९ तिः निज-तुरङ्गमैक-विजयानीत-राजलक्ष्मी-सनाथो महीनाथो यः कल्पाङ्घ्रिपः ससेव[1]

---

1 'सत्यमेव' ऐसा शुद्ध पाठ मालूम पड़ता है।

४० चिन्तामणिरिति ध्रुवं यं वदन्त्यर्थिनः । नित्यं प्रीत्या प्राप्तार्थ-सम्पदसौ **प्रभूतवर्ष** इति वि-

४१ ख्यातो भूपचक्रचूडामणिः [॥] तस्यानुजः **धारावर्ष-श्री-पृथ्वी-वल्लभ-महाराजाधि-**

४२ **राजपरमेश्वरः** खण्डितारि-मण्डलासि-भासित-दोर्दण्डः पुण्डरीक[1] इव बलिरिपु-मर्दना-

४३ क्रान्त-सकल-भुवनतलः सुकृतानेक-राज्य-भार-भारोद्वहन-समर्थः हिमशैल-वि-

४४ शालोरःस्थलेन राजलक्ष्मी-विहरण-मणि-कुट्टिमेन चतुराङ्गनालिं-गन-तुङ्ग-कुच-

तीसरा पत्र; पहली बाजू

४५ संग-सुखोद्रेकोदित-रोमाञ्च-योजितेन स्व-भुजासि-धारा-दलित-समस्त-[2] गलित-मुक्ताफल-वि-

४६ सर-विराजितारि-बल-हस्ति-हस्तास्फालन-दन्त-कोटि-घट्टित-घनी-कृतेन विराजमानः त्रिपुर-

४७ हर-वृषभ-ककुदाकारोन्नत-विकटांस-तट-निकट-दोधूयमान-चारु-चामर-चयः फेन-पिण्ड-

४८ पाण्डुर-प्रभावोदितच्छविना वृत्तेनापि चतुराकारेण सितातपत्रे-णाच्छादित-समस्त-दिग्-विव-

४९ [3]रो रिपुजनहृदयविदारणदारुणेन सकलभूतलाधिपत्यलक्ष्मीली-

---

१ 'पुण्डरीकाक्ष' पढ़ो। २ 'दलितमस्त' पढ़ो। ३ आगे ४९ वीं पंक्तिसे प्राचीन लेखमाला, प्रथम भाग, लेख ११ परसे लिया है।

लामुत्पादयता प्रहतपटहढक्कागम्भीरध्वानेन घनाघनगर्जनानुकारिणा अस्याचितो त्रिनोदनिर्गमः (?) स्वकीयां साञ्चलतां (?) परनृपचेतोवृत्तिषु दातुमिवोच्चैराविलोलप्रकटितराज्यचिह्नः (?) तुरङ्गमखरखुरोत्थितपांशुपटलमसृणितजलदसंचयानेकमत्तद्विपकरटतटगलितदानधाराप्रतानप्रशमितमहीपरागः।

यस्य श्री चपलोदया खुरतरङ्गालीसमास्फालना-
न्निर्भिन्नद्विपयानपात्रगतयो ये संचलच्चेतसः। (?)
तस्मिन्नेव समेत्य सारविभवं संत्यज्य राज्यं रणे
भग्ना मोहवशात् स्वयं खलु दिशामन्तं भजन्तेऽरयः॥
इदं कियद्भूतलमत्र सम्यक् स्थातुं महत्संकटमित्युदग्रम्।
स्वस्यावकाशं न करोति यस्य यशो दिशां भित्तिविभेदनानि॥

अनवरतदानधारावर्षागमेन तृप्तजनतायाः **धारावर्ष** इति जगति विख्यातः सर्वलोकवल्लभतया **वल्लभ** इति। तस्यात्मजो निजभुजबलसमानीतपरनृपलक्ष्मीकरधृतधवलातपत्रनालप्रतिकूलरिपुकुलचरणनिबद्धखलखलायमानधवलशृङ्खलारवबधिरीकृतपर्यन्तजनो निरुपमगुणगणाकर्णनसमाह्लादितमनसा साधुजनेन सदा संगीयमानशशिविशदयशोराशिराशांवष्टब्ध-जनमनःपरिकल्पनत्रिगुणीकृतस्वकीयानुष्ठानो निष्ठितकर्तव्यः **प्रभूतवर्ष-श्रीपृथ्वीवल्लभराजाधिराजपरमेश्वरस्य** प्रवर्धमानश्रीराज्यविजयसंवत्सरेषु वदत्सु[1]। चारु**चालुक्या**न्वयगगनतलहरिणलाञ्छनायमान**श्रीबलवर्म**नरेन्द्रस्य सूनुः स्वविक्रमावजितसकलरिपुनृपशिरःशेखरार्चितचरणयुगलो **यशोवर्म**नामधेयो राजा व्यराजत। तस्य पुत्रः 'सुपुत्रः कुलदीपक' इति पुराणवचनमवितथमिह कुर्वन्नतितरां धीराजमानो

१ 'वहत्सु' पाठ मालूम पड़ता है।

मनोजात इव मानिनीजनमनस्थलीय: (?) रणचतुरश्चतुरजनाश्रय: श्रीसमालिङ्गितविशालवक्षस्थलो नितरामशोभत । असौ महात्मा

कमलोचितसद्भुजान्तरश्रीविमलादित्य इति प्रतीतनामा ।
कमनीयवपुर्विलासिनीनां भ्रमदक्षिभ्रमरालिवक्रपद्म: ॥

य: प्रचण्डतरकरवालदलितरिपुनृपकरिघटाकुम्भमुक्तमुक्ताफलविकीर्णितरुचिररक्ताब्धिकान्तिरुचिरपरीतनिजकलत्रकण्ठ: शितिकण्ठ इव महितमहिमामोघमानरुचिरकीर्तिरशेषगङ्गमण्डलाधिराज **श्रीचाकिराजस्य** भागिनेय: भुवि प्रकाशत[1] यस्मिन् कुनुन्गिलनामदेशमयश:पराङ्मुखो[2] मनुमार्गेण पालयति सति **श्रीयापनीयनन्दिसंघपुंनागवृक्षमूलगणे** [3]**श्रीकित्याचार्यान्वये** वहुष्वाचार्येष्वतिक्रान्तेषु व्रतसमितिगुप्तिगुप्तमुनिवृन्दवन्दितचरण**कूविलाचार्य्याणा**मासीत् (?) तस्यान्तेवासी समुपनतजनपरिश्रमाहार: स्वदानसंतर्पितसमस्तविद्वज्जनो जनितमहोदय: **विजयकीर्ति**नाममुनिप्रभुरभूत् ।

अर्ककीर्तिरिति ख्यातिमातन्वन्मुनिसत्तम: ।
तस्य शिष्यत्वमायातो नायातो वशमेनसाम् ॥

तस्मै मुनिवराय तस्य **विमलादित्यस्य** शणेश्वर (?)पीडापनोदाय **मयूरखण्डि**मधिवसति विजयस्कन्धावारे **चाकिराजेन** विज्ञापितो वल्लमेन्द्र:[4] **इडिगूर्**विषयमध्यवर्तिनं **जालमङ्गल**नामधेयग्रामं **शकनृपसंवत्सरेषु शरशिखिमुनिषु (७३५)** व्यतीतेषु **ज्येष्ठमासशुक्लपक्षदशम्यां पुष्यनक्षत्रे चन्द्रवारे मान्यपुर**वरापरदिग्विभागालंकारभूत**शिलाग्रामा**जनेन्द्रभवनाय दत्तवान् तस्य पूर्वदक्षिणापरोत्तरदिग्विभागेषु स्वस्तिमङ्गल-

---

१ 'प्रकाशते यस्मिन्' यह पाठ मालूम पड़ता है। २ 'पराङ्मुखे' यह अपेक्षित है। ३ 'श्रीकीर्त्याचार्य' जान पड़ता है। ४ 'जिनेन्द्र' ऐसा पाठ मालूम पड़ता है।

वेल्लिन्द-गुड्डुनूरत्तरिपाल इति प्रसिद्धा ग्रामाः एवं चतुर्णां ग्रामाणां मध्ये व्यवस्थितस्य जालमङ्गलस्यायं चतुरावधिक्रम[1]ः पुनस्तस्य सीमांविभागः ईशानतः मुकूडल्दक्षिणदिग्विभागमवलोक्य एल्तगकोडल-मूडगंकेल-वन्दु इर्प्पेय-कोषदे-पल्लद्-ओलगण उलिअलरियें कोदेयालि-वेलने सयकने-वन्दु पोल पुणसे एव कीले अन्ते पोयिए विदिरूर्गेरे मुकूडल् ततः पश्चिमतः पुलिपदिय तेङ्कण पेर् ओल्वेये पेर्विलिक्के एलगल-करण्डलो मुकूडल् अन्ते सय्कने पोगि नाय्मणिगेरेय ताय्गण्डि मुकूडल् ततः उत्तरतः वल्लगेरेय पडुव गजगोड पळम्वे पुणुसेये आनेदलो गेरेए पुल्पडिये एलगल्ले पुलिगारद गेरे मुकूडल् ततः पूर्वतः निड्डुविळिड्क्के····दविन पुल्पडिये कञ्चगार गल्ले पोल एल्ले पुणुसये वट्टपुणुसये वेळ्ने वन्दु ईशानद मुकूडलोल् कूडि निन्दत्तू। राचमल्लगामण्डनुं शीरनुं गङ्गगामुण्डनुं मारेयनुं वेल्गेरेय् ओडेयोरुं मोदवागे-एल्पदिन्वरुं कुनुन्गिल्-अयसार्वरुं साक्षियागे कोट्टत्तू। नमः।

अद्भिर्दत्तं त्रिभिर्भुक्तं षड्भिश्च परिपालितम्।
एतानि न निवर्तन्ते पूर्वराजकृतानि च ॥
स्वं दातुं सुमहच्छक्यं दुःखमन्यस्य पालनम्।
दानं वा पालनं वेति दानाच्छ्रेयोऽनुपालनम् ॥
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुंधराम्।
षष्टिं वर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥
देवस्वं[हि] विषं घोरं कालकूटसमप्रभम्।
विषमेकाकिनं हन्ति देवस्वं पुत्रपौत्रकम् ॥

(इण्डियन् एण्टिक्वेरी १२।१३-१६)
[एपिग्राफिका इण्डिका, ४।२४०-२४५.]

---

१ 'चतुरवधिक्रमः' यह पाठ मालूम पड़ता है।

[इस शिलालेखमें बताया है कि राजा प्रभूतवर्ष (गोविन्द तृतीय) ने जब कि वे मयूरखण्डीके अपने विजयी विश्रामस्थलपर ठहरे हुए थे, चाकिराजकी प्रार्थनापर शक सं० ७३५ में जालमङ्गल नामका गाँव जैन मुनि अर्ककीर्तिको भेंट दिया। यह भेंट शिलाग्राममें स्थित जिनेन्द्रभवनके लिये दी गई थी। कारण यह था कि कुनुन्गिल जिलेके शासक विमलादित्यको उन्होंने (अर्ककीर्ति मुनिने) शनैश्चर (?)की पीड़ासे उन्मुक्त किया था।

इस लेखमें पं० १–६४ तकमें राष्ट्रकूट राजाओंकी प्रशंसामात्र है। इसमें उनकी वंशावली इस प्रकार दी हुई है:—

लेखप्रस्तुत नाम	ऐतिहासिक नाम
(१) गोविन्द	=गोविन्द प्रथम
(२) कक्क	=कर्क प्रथम
(३) इन्द्र	=इन्द्र द्वितीय
(४) वैरमेघ	=दन्तिदुर्ग या दन्तिवर्म्मन् द्वि०
(५) अकालवर्ष [वैरमेघका चाचा (पितृव्य)]	=कृष्ण प्रथम
(६) प्रभूतवर्ष	=गोविन्द द्वितीय
(७) धारावर्ष श्री पृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर, द्वितीय नाम—वल्लभ=ध्रुव (प्रभूत वर्षका छोटा भाई)	
(८) प्रभूतवर्ष श्रीपृथ्वीवल्लभ [महा]-राजाधिराज परमेश्वर, द्वितीय नाम वल्लभेन्द्र	=गोविन्द तृतीय

२४ वीं पंक्तिमें कहा गया है कि अकालवर्षने अपने ही नामसे 'कण्णेश्वर' नामक मन्दिर बनवाया था। पंक्ति २९–३० से ऐसा मालूम पड़ता है कि यह मन्दिर शिवके लिये अर्पण किया गया था। पं० ८१ में बताया

गया है कि दानके समय गोविन्द-तृतीय मयूरखण्डीके अपने विजय-स्कन्धावार (पड़ाव) में ठहरे हुए थे।

पंक्ति ६५-७५ में विमलादित्यकी वंशावलीका उल्लेख हुआ है। उनके पिता राजा यशोवर्मा थे और उनके बाबा नरेन्द्र बलवर्मा थे। चालुक्योंसे इस कुलका संबंध था; लेकिन वर्तमानमें चालुक्यवंशी राजाओंमें इन नामोंके राजा नहीं मिलते हैं, इसलिए प्रो० भाण्डारकरने उन्हें एक स्वतन्त्र शाखाका माना है। विमलादित्य कुनुन्गिल् देश (ज़िले) का राजा था। विमलादित्यको चाकिराजकी बहिनका पुत्र बताया गया है। चाकिराजको गङ्गों (अशेष-गङ्गमण्डलाधिराज) के समूचे प्रान्तका शासक कहा गया है। इसीकी प्रार्थनापर दान किया गया था।

पंक्ति ७५-८० में दानपात्रका विशेष वर्णन है। उनका नाम अर्ककीर्ति था, ये कूविल आचार्यके शिष्य विजयकीर्तिके शिष्य थे। यह मुनि श्री यापनीय नन्दिसंघके पुंनागवृक्षमूलगणके श्रीकीर्त्याचार्यके अन्वय (परम्परा) के थे। इनका एक विशेषण 'व्रतसमितिगुप्तिगुप्तमुनिवृन्दवन्दितचरणः' है।

लेखके अन्तिम भागका सार ऊपर दे दिया गया है। लेखके अन्तिम भागमें कुछ साक्षियोंके नाम भी दिये गये हैं जिनके सामने यह दान किया गया था। अन्तके चार वे ही साधारण शापात्मक श्लोक हैं।]

१२५

नौसारी—संस्कृत।

[शक ७४३=८२१ ईस्वी]

यह शिलालेख सम्भवतः श्वेताम्बर सम्प्रदायका है।

[H. H. Dhruva, Zeitschr. d. deut. morg. Gesell., XL, p. 321, n° VII, a.]

१२६

कांगड़ा—संस्कृत।

[लौकिक वर्ष ?]=८५४ ई० ?(बूल्हर)

श्वेताम्बर सम्प्रदायका।

[EI, I, n° XVIII (p. 120), t. & tr.]

१२७

कोन्नूर (जिला धारवाड़)—संस्कृत।

[शक सं० ७८२=८६० ई०]

श्रियः प्रियस्संगतविश्वरूपस्सुदर्शनच्छिन्नपरावलेपः।
दिश्यादनन्तः प्रणतामरेन्द्रः श्रियं ममाद्यः परमां जिनेन्द्रः॥ १॥
अनन्तभोगस्थितिरत्र पातु वः प्रतापशीलप्रभवोदयाचलः।
सु-राष्ट्रकूटोर्जितवंशपूर्व्वजस्स वीर-नारायण एव यो विभुः॥ २॥
तदीयभूपायतयादवान्वये क्रमेण वार्द्धाविव रत्नसञ्चयः।
बभूव गोविन्दमहीपतिर्भुवः प्रसाधनो पृच्छकराज-नन्दनः॥ ३॥
इन्द्रावनीपालसुतेन धारिणी प्रसारिता येन पृथु-प्रभाविना।
महौजसा वैरितमो निराकृतं प्रतापशीलेन स कर्क्कर-प्रभुः॥ ४॥
ततोऽभवद्दन्तिघटाभिमर्द्दनो हिमाचलादुर्जित-सेतु-सीमतः।
खलीकृतोद्वृत्तमहीपमण्डलः कुलाग्रणीः यो भुवि दन्तिदुर्ग्ग-राट्॥ ५॥
स्वयम्वरीभूतरणाङ्गणे ततस्स निर्व्यपेक्षं शुभतुङ्गवल्लभः।
चकर्ष चालुक्यकुलश्रियं बलाद्विलोल-पालिध्वज-माल-धारिणीं॥ ६॥
जयोच्चसिंहासनचामरोर्जितस्सितातपत्रो प्रतिपक्ष राज्य(ज्ञ)हा।
अकालवर्षोर्जितभूपनामको बभूव राजर्षिरशेषपुण्यतः॥ ७॥
ततः प्रभूतवर्षोऽभूद्धारावर्षसुतश्शरैः।
धारावर्षायितं येन संग्रामभुवि भूभुजा॥ ८॥ तस्य सुतः—

यज्जन्मकाले देवेन्द्रैरादिष्टं वृषभो मुनः।
भोक्तेति हिमवत्सेतु-पर्य्यन्ताम्बुधिमेखलाम्॥ ९॥
ततः प्रभूतवर्षस्सन् स्वयम्पूर्णमनोरथः।
जगत्तुङ्गस्सुमेरुर्वा भूभृतामुपरि स्थितः॥ १०॥

वन्धूनां वन्धुराणामुचितनिजकुले पूर्वजानां प्रजानां
जातानां **वल्लभानां** भुवनभरितसत्कीर्त्तिमूर्त्ति-स्थितानां ।
त्रातुं कीर्त्तिं स-लोकं कलिकलुषमथो हर्न्तमन्तो रिपूणां
श्रीमान् सिंहासनस्थो भवनवनिमतो[२]ऽ**मोघवर्षः** प्रशास्ति ॥ ११
यस्याज्ञां परचक्रिणः स्रजमिवाजस्रं शिरोभिर्व्वह-
न्त्यादिग्दन्तिघटावलीमुखपटैः कीर्त्तिप्रतानस्स तैः ।
यत्रस्थः स्वकरप्रतापमहिमा कस्याप्यदूरस्थितः
तेजःक्रान्तसमस्तभूभृदिव एवासौ न कस्योपरि ॥ १२ ॥
चतुस्समुद्रपर्य्यन्तं (?) स्वमुद्रं यत्प्रसाधितं ।
भग्ना समस्तभूपालमुद्रा गरुड़मुद्रया ॥ १३ ॥
राजेन्द्रास्ते वन्दनीयास्तु पूर्व्वे, येषां धर्म्मः पालनीयोऽस्मदीयैः ।
ध्वस्ता दुष्टा वर्त्तमानास्सधर्म्माः प्रार्थ्या ये ते भाविनः पार्थिवेन्द्राः ॥१४
भुक्तं कश्चिद्विक्रमेणापरेभ्यो
दत्त चान्यैस्त्यक्तमेवापरैर्य्यत् ।
कास्थानित्ये तत्र राज्ये महद्भिः
कीर्त्या (र्त्यै ?) धर्म्मः केवलं पालनीयः ॥ १५ ॥
तेनेदमनिलविद्युच्चञ्चलमवलोक्य जीवितमसारं ।
क्षितिदानपरमपुण्यः प्रवर्त्तितो देवदायोऽयम् ॥ १६ ॥

स एव परमभट्टारक-महाराजाधिराज-परमेश्वर-श्री-**जगत्तुङ्गदेव**-पाद
नुध्यान(त)परमभट्टारक-महाराजाधिराज-परमेश्वर-श्री-पृथ्वीवल्लभ-श्रीमद
मोघवर्ष-श्रीवल्लभनरेन्द्रदेवः सर्व्वानिव यथासम्बध्यमानकान्-राष्ट्रविषय

२ 'भवनमिदमतो' या 'भवनमनमितो' ।

पति-ग्रामकूटायुक्तक-नियुक्ताधिकारिकमहत्तरादीन् समादिशत्यस्तु वस्संवि-दितं यथा ॥

विक्रमविलासनिलयो मुकुल-कुले पूर्व्वबन्धुभिर्म्मान्यैः
एरकोटिनामधेयः प्रविकसितोऽभूत्प्रसूनसमः ॥ १७ ॥
आविरासीत्प्रभुस्तस्मात् प्रसूनात्फलसन्निभः ।
नाम्ना घोरः कुलाधारः कोलनूराधिपस्स्वयम् ॥ १८ ॥
सुतोऽस्य विजयाङ्कायानमूद्भुवनमानिनः ।
प्रचण्डमण्डलातङ्को वङ्केशः से(चे)ल्लकेतनः ॥ १९ ॥
मदीयो विततज्योतिर्ण्णिग(नि)शिनोऽसितापरैः ॥
उन्मूलिताद्दियद्दलमूलो मौलबलप्रभुः ॥ २० ॥
मध्यदेशेन संक्रम्य-बनवासी-पुरस्सरान् ।
ग्रामान् त्रिंशत्सहस्राणि भुनक्त्यविरलोदयः ॥ २१ ॥
महाप्रतापादुच्छेदमुदयच्छन् मदिच्छया ।
मूलादुच्छेत्तुमुत्तुङ्गं गङ्गवाडी-वटाटवीन् ॥ २२ ॥
तन्त्रातरेऽस्मत्सावनन्तैर्म्मात्स्याहितमानसै- ।
रुपेक्षितोऽपि कोपोद्यत्साहसैकसखः स्वयन् ॥ २३ ॥
चक्तारिपुर्नीतिमार्ग्गो रणविक्रममेकबुद्धिमभिनीय ।
स मदीयहृदयसंगतमनन्यकोपत्वमावहति ॥ २४ ॥ येन—
तत् केदलामिवानं दुर्गं वप्रार्ग्गलादिदुर्ल्लङ्घ्यं ।
मौल-बलाधिष्टितमपि सद्यः प्रोल्लङ्घ्य हेलयाग्राहि ॥ २५ ॥
जनपदमदः कृत्वा हस्ते विधूय विरोधिनं
बलवनपुराधीशं कृत्वा श्रुतं रणविक्रमम् ।
मदरिविजयी भर्तुः श्लाघ्यस्समन्वितसंगरः
समरसमये विद्विट्-चक्रैरविकृतविक्रमः ॥ २६ ॥

कावेरीं गुरुपूरदुर्गमतमामुल्लङ्घ्य सिंहक्रमात्
प्रत्यग्र-स्फुरित-प्रताप-दहन-प्रोद्यच्छिखाश्रेणिभिः ।
निर्दह्यैकपदेन सप्तपदकान्विद्विट्टनोच्छेदिना
येनाकम्पि जगत्प्रकम्पनपटोर्वैराज्यमप्यूर्जितम् ॥ २७ ॥
तत्रान्तरे मदन्तिकमन्तर्भेदेन जातसंक्षोभे ।
प्रत्यागन्तव्यमिति त्वयेति मद्वचनमात्रेण ॥ २८ ॥
अप्राप्ते **वल्लभेन्द्रो** मयि जयति यदा विद्विषः स्यान्तदाहं
सन्यस्ताशेषसङ्गो मुनिरथ विधिना विद्विषं स्याज्जयश्रीः ।
तत्राप्युद्दामधूमध्वजविततशिखासूत्पतामि प्रतापा-
दित्यारूढप्रतिज्ञः कतिपयदिवसैः प्रापदस्मत्समीपम् ॥ २९ ॥
मासत्रयस्य मध्ये यदि भोजयितुं न शक्यते स्वामी ।
क्षीरं विजित्य शत्रुं तथापि वह्निं विशाम्येव ॥ ३० ॥
इत्युक्त्वा क्रमविक्रमोच्छिखशिखीज्ज्वालावलीड (ढ)व्र(व्र) जे
धूमश्याम [लि] ते तिरोहिततनौ प्रायः परप्रेषिते ।
ये ते मत्तनये स्थितान्यनृपतीन्निर्जित्य यो जित्वरो
वन्दीकृत्य रिपून्निहित्य च तदा तीर्ण्णप्रतिज्ञोऽभवत् ॥ ३१ ॥
आविष्कृतकोपशिखानिर्दग्धारीन्धनो विनाप्यनिलात् ।
अज्वालितोऽपि यस्य प्रतापवह्निर्मुहुर्ज्वलति ॥ ३२ ॥
यस्य च कृपाण-[वारिणि]रुधिराकुलिता द्विषां महालक्ष्मीः ।
मज्जत्युन्मज्जति तु स्वाधिपतेः कुङ्कुमा(? भा)क्त्वेव ॥ ३३ ॥
हुत्वा येन रिपुं विरोधिरुधिरप्राज्याज्यधाराहुति-
व्रात-प्रस्फुरित-प्रताप-दहने त्रिद्विष्टशान्तेश्श्रितं ।
विप्रेणेव रणाध्वरे सुविहित-श्री-मन्त्रशक्त्यार्जितं
कल्पान्तस्थिरवीरशासनमिदं **मद्वीरनारायणात्** ॥ ३४ ॥

तेनैवम्भूतेन बङ्केयाभिधानेन मदिष्टभृत्येन प्रार्थितः सन् तत्प्रार्थनया **मान्यखेट**राजधान्यामवस्थितेन मया [मा]तापित्रोरात्मनश्चैहिकामुत्रिकपुण्ययशोभिवृद्धये **कोलनूरे** तद्बङ्केयनिर्म्मापित-जिनायतन-परिपालननियुक्ताय

श्रीमूलसङ्घ-देशीयगण-पुस्तकगच्छतः ।
जातस्त्रैकाल्ययोगीशः क्षीराब्धेरिव कौस्तुभः ॥ ३५ ॥

तच्चारित्रवधूप(पु)त्रः **श्रीदेवेन्द्रमुनीश्वरः** ।
सैद्धान्तिकाग्रणीस्तस्मै **बङ्केयो**[यामदान्मु]दा ॥ ३६ ॥

तद्वसतिसम्बन्धिनवकर्म्मोत्तरभाविखण्डस्फुटित-सम्मार्जनोपलेपनपरिपालनादिकर्म्मोपयोगिकर्म्मकरणनिमित्तं **मञ्जन्तिय**-सप्ततिग्राम-भुक्त्यन्तर्गतः **तलेयूर**नामग्रामः तस्य चाघातः (टः) तत्कोलनूरात् पूर्व्वतः **चेन्दनूरु** दक्षिणतः **सासवेवाडु** तत्पश्चिमतः **पडिलगेरी** उत्तरतः **कील-वाडः** एवमयं चतुराघाटनोपलक्षितः सोद्रंगस्स-परिकरः सदण्डदशाप-राधस्सम्भृतोपात्तप्रत्यय[1]: सोत्पद्यमानविष्टिति (क): सधान्यहिरण्यादेयः द्वादशपुष्पवाटः पञ्चाशदुत्तरशतहस्तविस्तारः पञ्चशतहस्तप्रमाणायामः गृहाणामाघाटस्समुदितः प्रवेश्यस्सर्व्वराजकीयानामहस्तप्रक्षेपणीयः आचन्द्रार्क्कार्णव-क्षिति-सरित्-पर्व्वत-समकालीनः पुत्रपौत्रान्वयक्रमेण प्रतिपाल्यः पूर्व्वप्रदत्त-देवब्रह्मदायरहितोऽत्य(भ्य)न्तरसि [द्] द्धया भूमिच्छिद्रन्यायेन **शकनृपकालातीतसंवत्सरशतेषु सप्तसु द्वा(त्र्य)-शीत्यधिकेषु तदभ्यधिक-समनन्तर-प्रवर्त्तमान-त्रयो[2]शीतितम-विक्रमसंवत्सरान्तर्गताश्वयुजपौर्णमास्यां सर्व्वग्रासि-सोमग्रहणे**

---

१ 'सम्भृतोपात्तप्रत्यायस्' शब्द है । २ 'त्र्यशीतितम' पढ़ना चाहिये ।

महापर्व्वणि बलिपक्षवैश्वदेवाग्निहोत्रातिथिसन्तर्पणाद्यारोदकातिसर्गेण प्रतिपादितः ॥ तथात्रैव **तत्कोलनूर**तद्भुक्तिमध्यवृत्त्यवरवाडि **वेण्डनूरु मुद्गुण्डि कित्तैवोले सुल्ल मुस दथरे माविनूरु मत्तिकट्टे नीलगुन्दगे तालिखेड वेल्लेरु संगम पिरिसिङ्गि मुत्तलगेरी काकेयनूरु वेहेरु आलूगु [पार्व्व] नगेरी होसंजललु इन्दुगलु नेरिलगे हगनूरु उनलगरु इन्दगेरी मुनिवल्ली कोट्टसे ओड्डिट्टगे सि [किमब्रि ?] गिरि [पि] डलु** नामधेयेष्वेतेषु **कोलनूरा**तै तद्भुक्तिवर्त्तिषु त्रिंशत्स्वपि ग्रामेष्वेकैकग्रामे द्वादश निवर्त्तनानि भूमेः प्रतिपादितानि [॥] अतोऽस्योचितया देवदायदायस्थित्या भुञ्जतो भोजयतः कृषतः कर्षयतः प्रतिदिशतो वा न कैश्चिदल्पापि परिपन्थना कार्या तथागामिभद्रनृपतिभिरस्मद्वंश्यैरन्यैर्व्वा सामान्यं भूमिदानफलमवेत्य विद्युल्लोलान्यैश्वर्याणि तृणाग्रलग्नजलबिन्दुचञ्चलं च जीवितमाकलय्य स्वदायनिर्व्विशेषोऽस्मद्दायोऽनुमन्तव्यः प्रतिपालयितव्यश्च ।

यस्त्वज्ञानतिमिरपटलावृतमतिराच्छिद्यमानकं वानुमोदेत स पञ्चभिर्म्महापातकैस्समोपपातकैश्च संयुक्तः स्यादित्युक्तं भगवता **वेदव्यासेन** ॥

षष्टिर्व्वर्षसहस्राणि स्वर्गे तिष्ठति भूमिदः ।
आच्छेत्ता चानुमन्ता च तामेव नरके वसेत् ॥ ३७ ॥

विन्ध्याटवीष्वतोयासु शुष्ककोटरवासिनः ।
कृष्णसर्प्पा हि जायन्ते भूमिदानं हरन्ति ये ॥ ३८ ॥

अग्नेरपत्यं प्रथमं सुवर्ण्णं भूर्व्वैष्णवी सूर्य्यसुतश्च गावः ।
लोकत्रयन्तेन भवेद्धि दत्तं यः काञ्चनं गां च महीं च दद्यात् ३९॥

---

१ 'आघाटे' ऐसा पढ़ो ।

बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः ।
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥ ४० ॥

स्वदत्तां परदत्तां वा यत्नाद्रक्ष्ये[1] नराधिपः ।
महीं महीमतां श्रेष्ठ दानाच्छ्रेयोऽनुपालनम् ॥ ४१ ॥

इति कमलदलाम्बुविन्दुलोलं
श्रियमनुचिन्त्य मनुष्यजीवितं च ।
अतिविमलमनोभिरामकै-
र्न्नहि पुरुषैः परकीर्त्तयो विलोप्याः ॥ ४२ ॥

लिखितञ्चैतद् वालभकायस्थवंशजातेन धर्म्माधिकरणस्थेन भोगिकवत्सराजेन श्रीहर्षसूनुना ग्रामपट्टलाधिकृतलेखकरणहस्ति-नाग-वर्म्म-पृथ्वीराम-भृत्येन ॥

चङ्कयराजमुख्यो गणपतिनामा महत्तरः प्राज्ञः ।
राज्ञः समीपवर्त्ती तेनेदमनुष्ठितं सर्व्वम् ॥ ४३ ॥

मिथ्याभावभवातिदर्प्पपरतद्दुःशासनोच्छेदकं
प्राज्ञाज्ञावशवर्त्तमानजनतासत्सौख्यसम्पादकम् ।
नानारूपविशिष्टवस्तुपरमस्याद्वादलक्ष्मीपदं
जेजीयाज्जिनराजशासनमिदं स्वाचारसारप्रदम् ॥ ४४ ॥

सिद्धान्तामृतवार्द्धितारकपतिस्तर्क्काम्बुजाहर्प्पतिः
शब्दोद्यानवनामृतैकसरणिर्य्योगीन्द्रचूडामणिः ।
त्रैविद्यापरसार्त्थनामविभवः प्रोद्भूतचेतोभवः
जीयादन्यमतावनीभृदशनिः श्रीमेघचन्द्रो मुनिः ॥ ४५ ॥

---

१ 'रक्ष नराधिप' पढ़ो ।

इदे हंसीवृन्दमीटल्बगेदपुडुचकोरीचयं
चञ्चुविन्दं कर्दुकल् सार्द्दप्पुडीशं जडेयोळ् इरिसलेन्दिर्द्दपं
सेज्जेगीरल् पदेदप्पं कृष्णनेम्बन्तेसेदु विसलसत्कन्दलीकन्दकान्तं
पुदिदत्ती **मेघचन्द्र**व्रतितिलकजगद्वर्त्तिकीर्त्तिप्रकाशं ॥ ४६ ॥

वैदग्ध्यश्रीवधूटीपतिरखिलगुणालंकृतिर्**मेघचन्द्र**-
त्रैविद्यस्यात्मजातो मदनमहिभृतो भेदने वज्रपातः
सिद्धान्तव्यूहचूडामणिरनुपमचिन्तामणिर्भूजनानां
योऽभूत्सौजन्यरुन्द्रश्रियमवति महौ **वीरनन्दी**मुनीन्द्रः ॥४७॥

यःशब्दत्त(?)-नभस्थली-दिनमणिः काव्यज्ञचूडामणि-
र्यस्तर्कस्थितिकौमुदीहिमकरस्तूर्यत्रयाब्जाकरः ।
यस्सिद्धान्तविचारसारधिषणो रत्नत्रयीभूषणः
स्थेयादुद्धतवादिभूभृदशनिः श्री**वीरनन्दी**मुनिः ॥ ४८ ॥

यन्मूर्त्तिर्ज्जगतां जनस्य नयने कर्पूरपूरायते
यद्वृत्तिर्व्विदुषां ततेश्श्रवणयोर्म्माणिक्यभूषायते ।
यत्कीर्त्तिः ककुभां श्रियः कचभरे मल्लीलतान्तायते
जेजीयाद्भुवि **वीरनन्दि**मुनिपः सैद्धान्तचक्राधिपः ॥ ४९ ॥

श्री**कोन्दकुन्दा**न्वयाम्बरद्युमणि विद्वज्जनशिरोमणि समस्तानवद्यविद्या-विलासिनीविलासमूर्त्ति श्री**वीरनन्दि**सै[द्धा]न्तिक-चक्रवर्तिगळु श्रीमन्महा-स्थानं कोळनूर महाप्रभु **हुलियमरसनुं** मूरुपुरपञ्चमठस्थानङ्गलुं ताम्र-शासनमं नोदि बरेयिसिमेनल्का शासनदोळन्तिर्द्दुदन्ती शीलशासनमं वरे-सिद० [॥] मङ्गलमहाश्री श्री श्री नमो………[॥]

जिस पाषाणपर यह लेख है वह कोन्नूरके परमेश्वरके मन्दिरको लगा हुआ है।

इस लेखके दो भाग हो जाते हैं। श्लोक १ से लेकर ४३ तक दानकी प्रशस्ति है। यह दान ८६० ई० में राष्ट्रकूट राजा अमोघवर्ष प्रथमने दिया था। श्लोक ४४ से लेकर लेखके अन्तिम गद्य तकका भाग जैनधर्म और दो मुनियों–मेघचन्द्र त्रैविद्य और उनके शिष्य वीरनन्दीकी प्रशंसा करनेके बाद, हमें यह सूचित करता है कि वीरनन्दिके पास एक ताम्रशासन (तांबे के ऊपरका लेख) था, जिसको बादमें कोळनूर (कोन्नूर जहांका यह शिलालेख है) के महाप्रभु हुलियमरस तथा औरोंकी प्रार्थनापर प्रस्तुत शिलालेखके रूपमें उत्कीर्ण किया गया। इस कथनके अनुसार शिला-लेखका आदिसे लेकर ४३ श्लोक तकका भाग, जिसमें दान-प्रशस्ति है, ताम्र-शासनके लेखपरसे लिया गया है। वीरनन्दी और उनके गुरु मेघचन्द्र त्रैविद्यके कालसे इस पाषाण-लेखके कालका निर्णय एफ् कील-हॉर्नने स्थूल रूपसे ईसवीकी १२ वीं सदीका मध्य निश्चित कियां है। यह काल शिलालेख-निर्दिष्टकाल ८६० ई० (शक सं० ७८२) से भिन्न पड़ता है।

शिलालेखके मुख्य भागमें (श्लोक १–४३ तक) यह उल्लेख है कि आश्विन महीनेकी पूर्णिमाको सर्वग्राही चन्द्रग्रहणके अवसरपर, जब कि शक सं० ७८२ बीत चुका था, और जगत्तुंगके उत्तराधिकारी राजा अमोघ-वर्ष (प्रथम) राज्य कर रहे थे, उन्होंने अपने अधीनस्थ राज्यकर्मचारी बंकेयकी महत्त्वपूर्ण सेवाके उपलक्ष्यमें कोळनूरमें बंकेयद्वारा स्थापित जिनमन्दिरके लिये देवेन्द्रमुनिको तलेयूर गाँव पूरा तथा और दूसरे गाँवोंकी कुछ जमीन दानमें दी। ये देवेन्द्र पुस्तक गच्छ, देशीय गण, मूलसंघके त्रैकाल्योगीशके शिष्य थे। शिलालेखके प्रारम्भिक भाग (श्लोक ३ से ११) में अमोघवर्षकी वंशावली दी हुई है। १७–३४ तकके श्लोकोंमें बंकेय की सेवाओंकी प्रशंसा वर्णित है। इस भागके अन्तिम अंशमें (४२ वें श्लोकके बादके गद्य अंश और ४३ वें श्लोकमें) लेखकका नाम वत्सराज तथा बंकेयराजके मुख्य सलाहकारका नाम महत्तर गणपति दिया हुआ है।

इस शिलालेखपरसे अमोघवर्षकी जो वंशावली निकलती है तथा दूसरे ताम्र–पत्रोंपर जो उत्कीर्ण है उसमें कुछ अन्तर पड़ता है। पाठकोंके जाननेके लिये हम यहाँ दोनों वंशावलियाँ दे देते हैं।

इस शिलालेखपरसे	दूसरे ताम्रपत्रोंपरसे
१ यादव वंशमें, पृच्छकराजका पुत्र गोविन्द	गोविन्दराज प्रथम
२ राजा इन्द्रका पुत्र कर्कर	उसका पुत्र कक्कराज या कर्कराज
	उसका पुत्र इन्द्रराज
३ उसका पुत्र दन्तिदुर्ग	उसका पुत्र दन्तिदुर्ग
४ शुभतुंगवल्लभ—अकालवर्ष	शुभतुंग—अकालवर्ष (कृष्णराज, प्रथम, जो कि कर्कराजका पुत्र है)
५ धारावर्षका पुत्र प्रभूतवर्ष	उसका पुत्र प्रभूतवर्ष (गोविन्दराज द्वि०)
६ उसका पुत्र प्रभूतवर्ष जगत्तुंग	उसका पुत्र प्रभूतवर्ष जगत्तुंग (गोविन्द)
७ अमोघवर्ष	उसका पुत्र अमोघवर्ष]

[EI, VI, n° 4 (1st part)]

१२८

देवगढ (मध्यप्रान्त)—संस्कृत ।

[विक्रम सं० ९१९ तथा शक सं० ७८४=८६२ ई०]

१ [ओं ?] [||] परमभट्टार [क]-मह [ा] राजाधिराज-परमेश्वरश्री-**भो-**

२ **जदेव**-महीप्रवर्द्धमान-कल्याणविजयराज्ये

३ तत्प्रदत्त-पञ्चमहाशब्द-महासामन्त-श्री-[वि] ष्ण [ु]-

४ [र] म-परिभुज्यमा [क][1] **लुअच्छगिरे** श्री-शान्त्यायत [न]-

५ [सं] निधे श्री-**कमलदेवाचार्य**-शिष्येण **श्री-देवेन** कारा-

६ [पि] तं इदं स्तम्भं[2] ॥ **संवत् ९१९ अस्व (श्व) युज-शुक्ल-**

७ **पक्ष-चतुर्दश्यां वृ (बृ) हस्पति-दिनेन उत्तरभाद्रप-**

---

१ 'माने' या 'मानके'। २ 'कारितोऽयं स्तम्भः' यह शुद्ध रूप पढ़ना चाहिये।

८ दा-नक्षत्रे[1] इदं स्तम्भं सनाहनिति ॥०॥ बाजुआ–
९ गगाकेन गोष्ठिक-भूतेन[2] इदं स्तम्भं घटितमिति ॥०॥
१० [श]कद्काल-[ब्द]-सप्तशतानि चतुराशीत्यधिकानि
७८४ [॥]

[इस लेखमें उल्लेख यह है कि परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर श्रीभोजदेवके राज्यमें जब लुअच्छगिरिपर (देवगढ़का ही एक नाम मालूम पड़ता है—[एफ० कीलहॉर्न]) महासामन्त विष्णुरमका शासन था, तब जिस स्तम्भपर यह लेख खुदा हुआ है वह आचार्य कमलदेवके शिष्य श्रीदेवके द्वारा श्री शान्तिनाथ मन्दिरके पास बनवाया गया था और यह विक्रम सं० ९१९ के आश्विन सुदी १४, बृहस्पतिवारके दिन उत्तर भाद्रपदा नक्षत्रके योगमें बनकर तैयार हुआ था। बनानेवालेका नाम गोष्ठिक[3] बाजुआगगाक था। इसके अतिरिक्त, अन्तिम पंक्ति शक संवत्, अक्षरों और अङ्क दोनोंमें, ७८४ का निर्देश करती है।]

[EI, IV, n° 44, A]

१२९

बड्नगर—संस्कृत।

[सं० ९३२=८७५ ई०]

१ नर प्रसिद्धन् श्री * * * क राज्ये यदु-कुल म्ल कु * ।
२ क्लत्रयिविधनो ततक्षेत्र मिर्म्मिमाविर्त अद्धोद: श्री *
३ दिव्हागो धनपतेः ककुभि निर्प मार्गाः अत्य मुदद्धन् *
४ मिमन्य शशाङ्क तपनस्थितेः उमनेयं नवहट्टक ।

---

१ '०त्रेऽयं स्तम्भः सनाम इति' ऐसा पढ़ो। २ '-भूतनायं स्तम्भो घटित इति' पढ़ो। ३ प्रो० बूल्हरकी रायमें 'गोष्ठिक' लोग धर्मदानोंका प्रबंध करनेवाली समितिके सदस्य थे, जिनको आजकलकी भाषामें 'ट्रस्टी' कह सकते हैं।

५ स्यम् सं ९३३ वैशाखो सुदि १४ ।†

[पथारिसे दक्षिणकी ओर करीब ३ मीलपर ज्ञाननाथ पर्वतकी तलहटीमें एक झीलके किनारे बारो या बड़नगरके ध्वंसावशेष सुन्दर रीतिसे अवस्थित हैं। वहाँपर एक 'गडर-मर' नामका मन्दिर है, जो कि किसी गड़रियेका बनवाया हुआ था।

इस गडरमर मन्दिरकी पश्चिम दिशामें छोटे-छोटे जैन मन्दिरोंका एक समूह है। उसके चतुष्कोण प्राङ्गणके बाहर एक चतुष्कोण छोटे पत्थरपर उक्त शिलालेख मिला था।]

[A. Cunningham, Reports, X, p. 74]

१३०

सौंदत्ति—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक ७९७=८७५ ई०]

लेख

द्वादशग्रामाधिष्ठानस्य **सुगन्धवर्त्ति**सम(सम्त्र)न्धिनि ॥ ग्रामे **मूळगुन्दा**ख्ये । **सीवटे** पड् निवर्त्तनं । देवस्य (खं) चि(गु)रवे दत्तं । नमश्यं (स्यं) **कन्न**भूभुजा ॥ तस्य दक्षिणे भागे । तिन्तिणीवृक्षयोर्द्वयोः । मध्ये या स्थिता भूमिद्व (दे) त्ता श्री**कन्न**भूभुजा । **सुगन्धवर्त्तिय** सीमेयिन्द पदु (डु) वल् पिरियकोलल् मत्तर् ६ ॥

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलांछनं [।] जीयात्त्रै(त्त्रै)लोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ श्रीमन्म्**मैळाप**तीर्थस्य गणे **कारेय**नामनि [।] वभूवोग्रतपोयुक्तः मूलभट्टारको गणी ॥ तच्छिष्यो गुणवान्सूरिः

---

† दुर्भाग्यसे यह लेख दोनों ओर (प्रारम्भ और अन्तमें) अधूरा ही है, इसलिये कनिंघम साहब इधर-उधर कुछ शब्दोंकी पूर्त्तिके वजाय इसके पूर्णरूपसे पढ़नेमें असफल रहे हैं। अतएव इसका विशेष सारांश भी नहीं दिया जा सका।

गुणकीर्त्तिमुनीश्वरः [।] तस्यायासीं (सीदि) **इन्द्रकीर्त्ति**स्वामी काममदापहः ॥ तच्छात्रः **पृथ्वीरामः** लक्ष्मीरामविराजितः [।] सत्यरत्नप्ररोहाद्रिः (मे)चडस्याग्रनन्दनः ॥ श्रीकृष्णराजदेवस्य लक्ष्मीलक्षितवक्षसः [।] नम्रभूपालवृन्दस्य पादाम्बुर्ह(रुह)सेवकः ॥ यस्य बालप्रतापाग्निज्वालानिकरशोषितस्समुद्री (द्र) त्पासुहृद्दर्पसो निश्शेषको यथा । यस्य राजन्वती भूमिर्ज्जितानन्दकरैः करैः [।] राज्ञो यो वीमनो नीतिमार्गो दुर्गमयंकरः ॥ यस्य संक्रीडते कीर्त्तिहंसी लोकसरोवरे [।] यद्वाक्यं प्रश्र(स्र)नं जातं प्रणतारातिभूपतेः ॥ **सप्तस(श)त्या नवत्या च समायुक्त (क्ते) स (षु) सप्तषु** [।] स(श)ककालेश्व(ष्व)तीतेषु **मन्मथाह्वयवत्सरे** ॥ ग्रामे **सुगन्धवर्त्ताख्ये** तेन भूपेन कारितं [।] जिनेन्द्रभवनं दत्तं तस्याष्टदशनिवर्त्तनं ॥ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रयं श्रीपृथ्वीवल्लभ (भं) महाराजाधिराज (जं) परमेश्वरं (र) परमभट्टारकं **राष्ट्रकूटकुलतिलकं** श्रीमत्कृष्णराजदेवविजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारं वरं सलुत्तमिरे [।] तत्पादपद्मोपजीवि ॥ स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्दमहासामन्तं वीरलक्ष्मीकान्तं विरोधिसामन्तनगवज्रदण्डं विद्वज्जनकमलमार्त्तण्डं सुभटचूडामणि भृत्यच्चिन्तामणि श्रीमन्महासामन्तेन **पृथ्वीरामेण** (न) स्वकारितजिनेन्द्रभवनाय चतुर्षु स्थलेषु स्थितमष्टादशनिवर्तनं सर्व्वनमस्यं (स्यं) दत्तं ॥ पृथ्वीरामेण (न) यद्दत्तं निवर्त्तनं कार्त्तवीर्येण भूयः स्वगुरवे दत्तं सर्वबाधा (धा) विवर्जितं ॥ सूर्योपरागसंक्रान्तौ (तौ) **कार्तवीर्य**प्रकान्तया । श्रीभागला(लां)म्बिकादेव्या नमस्यं (स्यं) कृतमंजसा ॥

[सौंदत्तिमें जिसका पुराना नाम सुगन्धवर्ती है, एक छोटे जिनमन्दिरकी बाईं ओर दीवालमें जड़े हुए पाषाण-शिलापरसे यह लेख लिया गया है। लेखमें अनेक विशेष दान हैं। यह बहुत-कुछ राजाओंकी वंशावलीका

हाल भी बताता है। हम देखते हैं कि रट्टोंमें प्रथम जिसने कि प्रमुख अधिकारी होनेका पद पाया था मेरडका पुत्र पृथ्वीराम था। उसको यह प्रमुख अधिपति होनेका पद राष्ट्रकूट राजा कृष्णकी अधीनतामें मिला था। इससे पहिले वह पूज्य ऋषि मैलापतीर्थके कारेय गणमें सिर्फ एक धार्मिक विद्यार्थी था। इस शिलालेखमें कृष्णराजदेवकी उपाधियाँ चालुक्य राजाओंके समान ही हैं तथा चक्रवर्तीकी उपाधियाँ हैं, और हम यह भी देखते हैं कि शक ७९८ में[1], जो मन्मथ संवत्सर था सुगन्धवर्त्तिमें उसने एक जिनमन्दिर बनवाया, और इसके लिये १८ 'निवर्तन' भूमि दी। किन्तु यह लेख किसी उत्तरवर्ती समयमें खोदा गया होगा, क्योंकि प्रथम चार पंक्तियोंमें राजा कन्नके जो कि पृथ्वीरामके ५ या ६ पीढ़ी आगे हुआ है, एक दानका उल्लेख आता है। यह दान सुगन्धवर्तिके मुलुगुन्दके 'सीवट' में किया गया था।

लेखका वंशावलीका भाग लेख नं० २३७ की 'रट्टवंशोद्भवः ख्यातो' पंक्तिसे शुरू होता है। प्रथम नाम नन्नका आया है। उसका पुत्र कार्त्तवीर्य था जो चालुक्य राजा आहवमल्ल या सोमेश्वरदेव प्रथमके अधीन था। सोमेश्वरदेव प्रथमका काल सर डब्ल्यू. इलियट (Sir W. Elliot) ने शक ९६२ (ई० १०४०–१) से लेकर शक ९९१ (ई० १०६९–७०) दिया है और इसी लेखसे यह पता चलता है कि कार्त्तवीर्यने ही कुहुण्डी (जो कि उत्तरवर्ती लेखोंका 'कुण्डी तीन हजार' है) की सीमायें निर्धारित की थीं। इसके बाद तीन पीढ़ी बीतनेपर चौथी पीढ़ीमें कार्त्तवीर्य द्वितीयका नाम आता है। यह चालुक्यराजा त्रिभुवनमल्लदेव, पेर्माडिदेव या विक्रमादित्य द्वितीय था।]

[JB, X, p. 194–198, ins. n° 2, 1st part]

१३१

बिलियूर—कन्नड़।

[शक ८०९=८८७ ई०]

भद्रमस्तु जिनशासनाय (।) शक-नृपातीता (त) काल-संवत्सरंगळे-

---

१ मूल लेखमें, "शक कालके ७९७ वर्ष व्यतीत होने पर" है।

-त्तुनूरोन्ददनेय वर्ष 'प्रवर्त्तिसुत्तिरे स्वस्ति सत्यवाक्यकोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्म-महाराजाधिराज कुवलाल-पुरवरेश्वर नन्दगिरि-नाथ श्रीमत्-पेर्म्मनडिय राज्याभिषेकं गेय्द पडि नेण्टनेय वर्षदन्दु पा (फा) ल्गुण-मासद श्री-पञ्चमे यन्दु शिवणन्दि-सिद्धान्त-भटार शिष्यरु स्सर्व्व (र्वे) णन्दि-देवर्गे पेण्णे-गडङ्गद सत्यवाक्य-जिनालयक्के पेर्कोरे-गरेय बिळियूर्-पन्निर्च्छिळ्ळुमं सर्व्व-बाद-परिहार पेर्म्मनडि कोट्टो नोन् मट्ट-सासिर्व्वरुं अय्-सासिर्व्वरुं वेट्टोरेगरेय पन्नदिम्बरुं एल्लोक्कं इदक्के साक्षी मले-सासिर्व्वरुं अय्नुर्व्वरुं (अय्नूर्व्वरुं) अय्-दानरिगरुं इदक्के काप्पु इदनळिदों वारणासियुमं सासिर्व्वर्पार्व्वरुमं सासिरं कविलेयुमन-नळिदोन् पञ्चमहापातकनक्कुं सेंद्रोजन लिखित (तं) बेळियूर पन्नेर्डु-गद्याण पोन्नु एण्डु-नूर्-कर्सुं तेन्नेनोन् ।

[यह दान शकवर्ष ८०९ के चालू रहते हुए फाल्गुन महीनेके पाँचवें दिन, जिस वर्ष पेर्म्मनडिके राज्याभिषेकका १८ वाँ वर्ष चालू था, उन्होंने शिवनन्दि-सिद्धान्त- भट्टारके शिष्य सर्व्वनन्दि-देवको पेर्कोरेगेरेके अन्तर्गत बिलियूरके १२ छोटे गाँव, हमेशाके लिये लगान वगैरः से मुक्त करके, दिये। यह दान पेन्ने-कडङ्गके सत्यवाक्य जिनचैत्यालयके लिये दिया गया था। ऐसा दीखता है कि 'सत्यवाक्य-कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्म-महाराजाधिराज' पेर्म्मनडि-की ही उपाधि या विरुद है। ये दोनों एक ही व्यक्ति हैं, अलग-अलग नहीं। ये कुवलाल-पुरके प्रभु तथा नन्दगिरिके नाथ थे।

आगे लेखमें साक्षियों तथा संरक्षकोंका परिचय है। इस दानको भङ्ग करनेवालेको अमुक-अमुक पापका भागी बताया है। यह लेख सेंद्रोजका लिखा हुआ है।

बिलियूर की आमदनी ८० गद्याण सोना और ८०० (माप) तन्दुल (चावल) की है।]

[EC, I, coorg. ins., n° 2]

१३२

हुम्मच—कन्नड़।

शक ८१९=८९७ ई०

[हुम्मचमें गुड्डद बस्तिकी बाहरी दीवालपर]

स्वस्त्यनवद्य-दर्शन महोग्र-कुल-तिलक नय-प्रताप-सम्पन्नं पर-चक्र-गण्डं गोण्डं बल्लातं कार्म्मुक-राम श्रीमत्-तोलापुरुष-विक्रमादित्यशान्तरं शक-वर्षं येण्टनूर यिप्पत्तनेय वर्षं प्रवर्त्तिसुत्तिरे श्रीमत्-कोण्डकुन्दान्वयद मोनि-सिद्धान्तद-च (भ) टारर्ग्गे कल्ल बसदिय माडिसियदक्के पोम्बुळ्चद (यहाँ दानकी विशेष चर्चा तथा वे ही अन्तिम वाक्यावयव आते हैं)।

इष्टनोर्व्वनधिदेवतेगेन्दोसेदित्तुदम्।
दुष्टनोर्व्वनदर फलवं तवे तिम्बवम्।
सिष्टिमेले परमात्मने वन्द्................।
कष्टव्....विदिरन्ते कुल-क्षय मागुगुम्॥

[स्वस्ति। जिनका दर्शन (मत) अनवद्य (निर्दोष) है, महोग्र-कुल-तिलक, न्याय करनेमें प्रसिद्ध, विदेशी राज्योंके शूरवीरोंको पकड़नेमें चतुर, धनुषको पकड़नेवाले रामकी तरह दिखनेवाले, तोलापुरुष विक्रमादित्य-शान्तरने, (उक्त मितिको), कोण्डकुन्दान्वयके मोनि-सिद्धान्त-भट्टारके लिये एक पाषाणकी बसदि बनवाई, और इसके लिये (उक्त) दान किये। शापात्मक श्लोक।]

[EC, VIII, Nagar tl., n° 60]

१३३

वल्लीमलै (जिला नार्थ आर्कट)—कन्नड़।

[बिना काल-निर्देशका]

१ स्वस्ति श्री [:] [॥] शिवमार-आत्मजा (ज)-वरना प्रवर-श्रीपुरुषनाम—

२ नातन तनयं । भुवनीशं रणविक्रमनवन मक (ग) न् रा-

३ जमल्लन् अमलिनचरितन् [॥ १] कण्डु गिर [ि] वरमना भूमं-

४ डलपति राजमल्लन् अभयनुदारन् [।] पण्डितजन-

५ प्रियं कैय्-कोण्डान् कोण्डन्ते वसतियन्माडि-

६ सिदान ॥ [२]

अनुवाद—(श्लोक १) शिवमारके पुत्रोंमें सबसे अच्छा पुत्र श्रीपुरुष नामका (राजपुत्र) था । उसका पुत्र लोकप्रभु रणविक्रम हुआ । उसका पुत्र अमलचरित राजमल्ल हुआ ।

(श्लोक २) इसको सबसे अच्छा पर्वत समझकर, भूमण्डलपति, अभय एवं उदार तथा पण्डितजनप्रिय राजमल्लने इसे अपने अधिकारमें कर लिया, और तत्पश्चात् इसपर एक वसति (मन्दिर) बनवाइ ।

[El, IV, n° 15, A.]

१२४

वल्लीमलै—कन्नड़ ।

[विना काल-निर्देशका]

(यह लेख दाहिनी तरफसे पहली प्रतिमाके नीचेका है)

१ स्वस्तिश्री [॥] वालचन्द्र-भटारर्

२ शिष्यर् अज्जनन्दि-भटारर्

३ माडिसिद प्रतिने गोवर्धन्

४ भटाररेन्दोडमवरे [॥]

अनुवाद—यह प्रतिमा भट्टारक वालचन्द्रके शिष्य भट्टारक अज्जनन्दि (आर्यनन्दि) के द्वारा बनवाई गई; और प्रतिमा 'गोवर्धन भट्टारक' की है ।

[El, IV, n° 15, D.]

१३५

वल्लीमलै—कन्नड़।

[विना काल-निर्देशका]

च—यह लेख बाईं तरफसे दूसरी प्रतिमाके नीचेका है।

श्री [॥] अज्जनन्दि-भटारर् प्र [ति] म [ ] म [ा] ड [ि] दा [र्] [॥]

अनुवाद—स्वस्ति। भट्टारक या भटार अज्जनन्दि (आर्यनन्दि)ने (इस) प्रतिमाको बनाया।

[EI, IV, n° 15, B.]

१३६

वल्लीमलै—कन्नड़।

[विना काल-निर्देशका]

१ स्वस्ति श्री [॥] बाणरायर
२ गुरुगळप्प भवणन्दि-भ-
३ टारर शिष्यरप्प देवसेन-
४ भटारर प्रतिमा [॥]

अनुवाद—स्वस्ति श्री। यह प्रतिमा भट्टारक देवसेनकी है। ये देवसेन बाणरायके गुरु भट्टारक भवणन्दि (भवनन्दि)के शिष्य हैं।

[EI. IV. n° 15 C.]

१३७

मूलगुण्ड (जिला धारवाड़); संस्कृत।

शक ८२४=९०२ ई०

लेख

श्रीमते महते शान्त्ये श्रेयसे विश्ववेदिने [।] नमश्चन्द्रप्रभाख्याय जैनशासनवृद्धये [॥] शकनृपकालेष्टशते चतुरुत्तरविंशदु (त्यु)

त्तरे संप्रगते दुन्दुभिनामनि वर्षे प्रवर्त्तमाने [।] जनानुरागोत्कर्षे श्रीकृष्णवल्लभनृपे पाति महीं विततयशसि सकलां तस्मात् पालयति महाश्रीमति विनयाम्बुधिनाम्नी धवळविषयं सर्वं [।] तस्मिन् मुळ्गुन्दाख्ये नगरे वरवैश्यजातिजात (तः) ख्यातः चन्द्रार्य्यस्तत्पुत्रश्चिकार्य्यो चीकरं (रत) जिनोन्नतभवनं तत्तनयो नागार्य्यो नाम्ना [॥] तस्यानुजो नयागमकुशलः अरसार्य्यो दानादिप्रोद्युक्तसम्यक्त्वसक्तचित्तव्यक्तः [॥] तेन दर्शनाभरणभूषितेन पितृकारितजिनालयाय चन्दिकवाटे शेनान्वयानुगाय नरनरपतियतिपतिपूज्यपादकुमारशे(से)नाचार्यमी (मे) खवीरशे (से)नमुनिपतिशिष्यकनकशे (से)नसूरिमुख्याय कन्दवर्ममाळक्षेत्रे ए (ऐ) (छे) कमणित्रकन्कुळार्य्ये (? य्ये) (र्य्ये) क***वम्मानाहस्तात्सहस्रवल्लीमात्रक्षेत्रं द्रव्यसिन्दु (धु) ना गृहीत्वा नगरमहाजनविदेशे दत्तं [॥] तज्जिनालयाय त्रिशतषष्टिनगरैः चतुर्भिः श्रेष्ठिभिः पिळ्ळग (छे) क्षेत्रे सहस्रावल्लीमात्रक्षेत्रं दत्तं [॥] तज्जिनभवनाय विंशतिमहाजनानुमताद्वेळ्ळचिकुलब्राह्मणैश्च तन्कन्दवर्म्ममालक्षेत्रे सहस्रवल्लीमात्रक्षेत्रं दत्तं [॥] एवं त्रीण्यपि नागवल्लिक्षेत्राणि सर्वावाधा

[यह शिलालेख जिस पत्थरके टुकड़ेपर है वह धारवाड़ जिलेके डम्बळतालुकाके मूलगुण्डकी दीवालमें लगा हुआ है। इस टुकड़ेका शेष अंश अभीतक नहीं मिला है। मगर सौभाग्यसे इसी बचे हुए टुकड़ेमें लेखका महत्त्वपूर्ण भाग आ जाता है। लुप्त भागमें सिर्फ थोड़े-से अन्तिम वे ही श्लोक हैं जिनमें लेखके रक्षण और मिटानेपर क्रमशः अनुग्रह (पुण्य) और शापका वर्णन मिलता है । लेख पुराने टाइपके प्राचीन कनड़ीके अक्षरोंमें खुदा हुआ है। ये प्राचीन कनड़ीके अक्षर गुफा-वर्णमाला (Cave-alphabets) से बहुत-कुछ मिलते-जुलते हैं।

यह लेख धारवाड़ जिलेके मूलगुण्डमें वैश्य जातिके चन्द्रायके पुत्र चीकार्यके द्वारा एक जैनमन्दिरके निर्माणका तथा उस मन्दिरकी तरफसे कुछ भूमिदानका उल्लेख करता है। यह निर्माण और दान दुन्दुभि संवत्सर शक ८२५ में† किया गया था। उस समय राजा कृष्णवल्लभ राज्य कर रहे थे। लेखगत 'धवल' जिलेसे देशके किस भागसे मतलब है, यह स्पष्ट नहीं है। यद्यपि यह लेख लघु है, पर महत्त्वपूर्ण है। इसमें सन्देह नहीं है कि इस लेखका 'राजा कृष्णवल्लभ' वही है जो राष्ट्रकूट या रट्ट कुलके राजा कृष्णराजदेव हैं और जो इसी पुस्तकके शिलालेख नं० १३० के अनुसार शक ७९८में राज्य कर रहे थे। बादके अन्य शिलालेखोंमें इन्हें ही रट्टवंशका प्रथम राजा कहा गया है।

पूर्ववर्ती चालुक्य राजाओंके उत्तराधिकार और कालके विषयमें बहुतसे सन्देह उत्पन्न होते हैं, लेकिन हम जानते हैं कि उनमेंसे तीन चालुक्य राजा राष्ट्रकूट युवराजोंके साथ बहुत ही सीधे और घातक संघर्षमें आये हैं। वे तीन राजा जयसिंह प्रथम, तैलप प्रथम और तैलप द्वितीय थे। राष्ट्रकूटवंश और चालुक्यवंशके पूर्ववर्ती राजाओंकी वंशावली यदि काल-सहित संग्रह की जाय तो वह इस विषयमें बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगी।]

[JB, X, p. 190-191, ins. n° 1]

१३८

क्यातनहल्लि—कन्नड़।

[बिना काल-निर्देशका (संभवतः लगभग ९०० ई०)]

भद्रमस्तु जिनशासनायानवरत·········दखिलसुरासुरनरपतिमौलि-माला············णारविन्द-युगल शरवळ-श्रीराज्य-युवराज [रप्प भद्र] बाहु-चन्द्रगुप्त-मुनिपति-चरण-मुद्राङ्कित-विशाळशि····मान-जगल्ल-ता(ला)मायितश्रीकल्बप्पु-तीर्त्थ-सनाथ-बेल्गोळ-निवासि-·········श्रवण-सङ्घ-स्याद्वादाधारभूतरप्प श्रीमत्स्वस्ति सत्यवाक्यकोङ्गणि-[व]-र्म्म-

---

† मूलमें "शक राजाके कालमें ८२४ वर्ष व्यतीत होनेपर" ऐसा पाठ है

धर्म्म-महाराजाधिराज कळालपुर-वरेश्वर नंदगिरिनाथ स्वस्ति समस्तभुवनविनूत-गङ्ग-कुल-गगननिर्म्मलतारापति जलधिजलविपुलवल-यमेखलाकलापालङ्कृतेलाधिपत्य-लक्ष्मी-स्वयं-वृत-पतित्वाद्यगणित-गुण-गण-भूषण-भूषित-विभूति श्रीमत्पेर्म्मानडिगळुं एरेयप्प-रसरुं इल्दु चागि पेर्म्मानडिगळ कल्लवसद अय्यर्प्परपिङ्ग कोमारसेन-भटारर् पडेद स्तिति विळियक्किुं सोल्गेयु विट्टियुन् तुप्पसुमन् एल्ला-कालक्कं सर्व्व-बाधा-परिहारमागे त्रिडिसि दरिदन् अल्लिदुण्डोनुं कोण्डोनुं पसुवुं पार्व्वरुं केरेयुं आरसेयुं वारणासियुमनल्लिदों पञ्चमहापातकं

देवस्वं तु विषं घोरं, न विषं विषमुच्यते ।

विषमेकाकिनं हन्ति, देवस्वं पुत्र-पौत्रिकम् ॥

[इस लेखमें बताया गया है कि सत्यवाक्य कोङ्गणिवर्म्म धर्म्म-महाराजाधिराजने, जो कि कुवलाल नगरके अधिपति थे, और श्रीमत्पेर्म्मनडि एरेयप्परसने निम्नलिखित दान कुमारसेन भटारको पेर्म्मनडि पाषाण-बसदिके लिये दियाः—सफेद चावल, मुफ्त श्रम, घी। और हमेशाके लिये किसी भी चुङ्गीसे मुक्त कर दिया।]

[EC, III, Servingapatam tl., n° 147]

१३९

कूलगेरी—कन्नड़।

[शकसं० ८३१=९०९ ई०]

[कूलगेरी (कूलगेरी प्रदेश) में तालावके किनारेके पाषाणपर]

भद्रं भद्रेश्वरस्य स्यात् क्षुद्रवादिमदच्छिदः ।

····श्रीमज्जिनेन्द्रस्य शासनाय भवद्विषे ॥

---

१ इस लेखमें जो 'कल्वपु-तीर्त्त(र्थ)' शब्द है, उसका अर्थ चन्द्रगिरि है। इस शिलालेखसे यह पता चलता है कि कल्वप्पुशिखर (चन्द्रगिरि) पर महामुनि भद्रबाहु और चन्द्रगुप्तके चरणचिह्न हैं। यह शिलालेख लगभग शक सं० ८२२ का है।

शक-नृप-कालातीत-संवत्सर-शतंगळ् एन्टु-नूरे मुवत्तोन्दनेय वरिष प्रवर्त्तिसुत्तिरे स्वस्ति कोङ्गुणि-वर्म्म धर्म्म-महाराजाधिराज कुवळालपुर-परमेश्वर नन्दिगिरि-नाथ श्री-नीतिमार्ग्ग-पेर्म्मनडिगळ् राज्यं उत्तरोत्तरं सलुत्तं इरे सान्तरर····मेच्चे मणलेयारं कनकगिरिय-तीर्त्थद मीगे बसिदिय् इम्मडिसि अरसरध्यक्षदोळ् कनकसेन-भट्टारर्गे तिप्पेयूरोळाद अट्टदेरेयुं कुरुं-देरेयुं उट्ट-सामन्त-देरेयेल्लवं विट्टन् इदन् आलिदों केरेयुं आरवेयुमन् आलिद्दु-कोण्डोम् महापातकमक्कुं

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां ।
षष्टिवर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥

[जिनशासनकी प्रशंसा । शक-नृपके सैकड़ों वर्ष बीतनेके बाद वर्त्तमान ८३१ वें वर्षमें; जब कि नीतिमार्ग्ग-पेर्म्मनडि, नन्दगिरिनाथ, कुवलालपुर-परमेश्वर कोङ्गुणिवर्म्म धर्ममहाराजाधिराजका राज्य चारों दिशाओंमें बढ़ रहा था—सान्तरर [सु] की सम्मतिसे, मनलेयारने, कनकगिरि-तीर्थकी बसदिको दुगुना करके, राजाके ही सामने, तिप्पेयूरमें कनकसेन-भट्टारको ऊपरके कमरोंका कर, भेड़ोंका कर, तथा पूर्ण पोशाक पहिने सरदारोंका(?)कर दिया । जो कोई इस दिये हुए दानको नष्ट करेगा, उसे तालाब या कुञ्जके नष्ट करनेका तथा और भी बड़ा पाप लगेगा, इत्यादि ।]

[EC, III, Malavalli tl., n° 30]

१४०

बन्दलिके—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक ८४०=९१८ ई०]

[बन्दलिकेमें, बस्तिके प्रवेश-द्वारके पाषाणपर]

स्वस्त्यकालवरिष श्री-पृथुवी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परमभ-··· श्री-कन्नर-देवरराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिगे सलुत्तिरे शकनृप-काला-

तीत-संवत्सर-सतङ्गल् एण्डुनूर्-मूवत्त-नाल्कनेय प्रजापति-संवत्सरं प्रवर्त्तिसे स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-सामन्तं काल्क-देवय्सरन्वयदोळ् कलिविट्टरसर् वनवासिपन्निच्छासिरमनाळुत्तिरे नागरखण्ड-मेल्पत्तर्क सत्तरर् नागार्ज्जुन नाळ्-गावुण्ड गय्युत्तु श्री-कलिविट्टरसर् वेसदोळतीतनादोडातन गावुण्डगरसर् नाळ्-गावुण्ड-पत्तमनित्तोडे जक्कियव्वे नाळ्-गावुण्डु गेय्युत्तिरे नण्डुवर कलिगं पेर्ग्गडेतनं गेय्ये सन्दिगर कुडिवुल्दं कोडङ्गेयूर्गे पेर्ग्गडेतनं गेय्युत्तिरे एळपदिम्वरं मूणूर्व्वरुं जक्कियव्वेयोळ् नुडिदवुतवूरं विडिसिदोर् जक्कियव्वे नागरखण्डमेळ्पतर्कं अवुतवूरोळाद नाळ्-गावुण्डवागमं विसुतोळ् देवारक्के जक्किलियोळ् नाल्कु मत्तल् केय्यं कोट्टळ् ॥

वृत्तं ॥ उत्तम-प्रभु-शक्ति-युक्ते जिनेन्द्र-शासन-भक्ते कान्- ।
त्तात्त-विभ्रमे जक्कियव्वे समत्तु नागरखण्डमेळ् ।
पत्तुमं वधुवागियुं निज-वीर-विक्रम-गर्व्वदिम् ।
पेत्तवं प्रतिपालिसुत्तोसदिळ्दळिदवसानदोळ् ॥
तनु रुजेयं पुदुङ्कुल्सि संसृति-भोगमसारमेन्दु निच् ।
चिनिसि निज-प्रियात्मजेगे सन्ततियं करेदित्तु मोह-वन् ।
धनद तोडर्प्पिनोळ् तोडल्दु मोहिसि नि···र वल्ले वन्दु वन्- ।
दनिकेय तीर्त्थदोळ् तोरदुदत्त्चारियं····जक्कियव्वेया ॥
वसु-जलरासि-चारिदपथं शक-भू····ताब्द-संक्ये वर् ।
त्तिसे बहुधान्यमेम्ब वरिपं त्रिक-मासद काळ-पक्षदोळ् ।
दसमियोळार्क्य-वारदुदितोदित-वेळेयोळण्मि भक्तियिम् ।
वसदिगे वन्दु नोन्त मपूर्व्वतरं गड जक्कियव्वेया ॥

वरेदोम् नागवर्म्म देवारके कोट्ट केय् ग अवुतवूर्गं काळान्तरदोळ् मोह-सन्दोम् पञ्च-महा-पातकनकु

यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ।

(बाजूमें) ई-कल्ल सन्दिगर कुळि····मुद्दन् निरिसिदोम्····वेळेयम्मन मगम्

[जब प्रजापति संवत्सर शक वर्ष ८३४ में, महाराजाधिराज परमेश्वर परमभट्टारक कन्नर-देवका राज्य प्रवर्धमान था,—जिस समय कालिक देव-रसर्-अन्वयके महासामन्त कलिविट्टरस बनवासि १२००० का शासन कर रहे थे,—नागरखण्ड सत्तरके 'नाळ-गावुण्ड' के पदको धारण करने-वाले सत्तरस नागार्जुनके मर जानेपर राजाने जक्कियब्बेको आवुतवूर और नागरखण्ड-सत्तर दे दिया। जक्कियब्बेने भी जकलिमें मन्दिरके लिये ४ मत्तल चावलकी भूमि दी। एक बीमारीके समय उसने शक सं० ८४० में, बहु-धान्य वर्षमें, पूर्ण श्रद्धासे बसदिमें आकर समाधिमरण ले लिया।]

१४१

गिरनार—संस्कृत—भग्न।

(काल लुप्त)

[यह लेख नेमिनाथ मन्दिरके दक्षिण तरफके प्रवेशद्वारके पासके प्राङ्गणके पश्चिम दिशाकी तरफके एक छोटे मन्दिरकी दीवालपर है। पाषाण टूटा हुआ है।]

॥ स्वस्ति श्रीधृति

॥ नमः श्रीनेमिनाथाय ज

॥ वर्षे फाल्गुन शुदि ५ गुरौ श्री

॥ तिलकमहाराज श्रीमहीपाल

॥ वयरसिंहभार्या फाउलुतसा

॥ सुतसा० साईआ सा० मेलामेला

॥ जसुतारूडीगांगीप्रभृती
॥ नाथप्रासादा कारिता प्रतांष्ट
॥ ····द्रसूरि तत्पट्टे श्रीमुनिसिंह
॥ ············कल्याणत्रय

अनुवादः—स्वस्ति श्री धति···········श्री नेमिनाथको नमस्कार... ...वर्ष......फाल्गुन सुदी ५, बृहस्पतिवार, श्री············श्रीमहीपाल, महाराज और············के तिलक......फाऊ नामकी वयरसिंहकी भार्या; उसका पुत्र माननीय············उसके पुत्र माननीय साईआ और मेलामेला············उसकी पुत्रियाँ रूडी, गांगी इत्यादि। इन सबने एक नेमिनाथका मन्दिर बनवाया —जिसकी प्रतिष्ठा........द्रसूरिके पट्टपर विराजमान श्रीमुनिसिंहने की···············कल्याणत्रय···।

[ASI, XVI, p. 353-354, n° 11

१४२

सूदी (जिला-धारवाड़)-संस्कृत और कन्नड़।

शक सं. ८६०=९३८ ई०

लेख

पहला ताम्रपत्र

१ श्रीर्व्विभाति सुवि (धी)र्य्यस्य निरवद्य [।] निरत् (य्) अया तस्मै नमोऽर्हते

२ लोक-हित-धर्म्मोपदेशिने ॥ जित [-] भगवता [गत]-घनग-[ग]नाभे-

३ न पद्मनाभेन [॥] श्रीमज्जाह्नवीय-कुला[म]ल-व्योमावभासन-भास्करः ॥

४ स्व-खड्गैक-प्रहार-खण्डित-महा-शीलास्तम्भ-लब्ध-बळ-पराक्रमो दारुणा—

५ रि-गण-विदारणोपलब्ध-व्र (व्र)ण-विभूषण-भूषितः क[ा]ण्वा-

६ यन-सगोत्र [:] श्रीमत्-**कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्म**महाराजाधिराजः [।।]

७ तत्पुत्रः । पितुरन्वागत-गुण-युक्तो । विद्या-विनय-विहित-वृत्तिः

८ सम्यक्-प्रजा-पालन-मात्रा-वि(धि)गत-राज्य-प्रयोजनो विद्वत्-क-वि-का—

९ ञ्चन-निकषोपळ-भूतो नीति-शास्त्रस्य वक्तृ-प्रयोक्तृ-कुशलो दत्तक-

१० सूत्र-वृत्ते(:)-प्रणेता श्रीमन्**माधव**महाधिराजः ।(।) ओं तत्पुत्र[:] पितृ-पैता-

११ महगुणयुक्तोऽनेक-चा(च)तु[ं] दन्[त]अ-युद्ध[ा]वाप्त-चतु-

द्वितीय ताम्रपत्र; दूसरी बाजू

१२ रुदधि-सळीळास्वादित्यशाह श्रीम[ा]न् **हरिवर्म्म**-महाधिराजः [।।]

१३ तत्पुत्रः श्रीमान् **विष्णुगोप** मह[ा]धिराजः [।।] ॐ तत्पुत्रः

१४ स्व-भुज-बळ-पराक्रम-क्रय-क्र[ी]तराज्यः कलियुग-बळ-पङ्काव-

१५ सन्न-धर्म्म-वृषोद्धरण-निते(त्य)सन्नद्धः श्रीमान् **माधव**-महाधिराजः ।(।) ओं

१६ तत्पुत्र[:] श्रीमत्-कदम्ब-कुल-गगन-गभस्तिमालिनः । **कृप(ष्ण)वर्म्म**-स(म)-

१७ हाधिराजस्य प्रिय-भागिनेयो विद्या-विनय-पूरिता-

१८ न्तरात्मा निरवग्रह-प्रधान-शौर्य्यो विद्वत्पुं[1] प्रथम-गण्य[:]श्रीमान्

---

१ 'विद्वत्सु' पढ़ो ।

१९ कोङ्गुणिवर्म्म-त्र (ध)र्म्ममहाराजाधिराज-पु(प)रमेश्वरः श्रीमद्-अविनीत-प्रथम–

२० नामज (धे) यः [॥] तत्पुत्रो विजृम्भमाण-शक्ति-त्रयः अन्द्-रि-आलत्तूर-पुरुळरे-पेर्ण्णे–

२१ गराद्यनेक-समर-मुख-मख-ह(हु)त-प्रहत-शूरपुरुष-पशूप-हार-विध–

२२ स-विहस्ति(स्ती)कृत-कृतान्ताग्निमुखः किरातार्ज्जुनीयस्य पञ्चदश-सर्ग-टीकाकार[ः]

दूसरा ताम्रपत्र; दूसरी बाजू

२३ श्रीमद्-[द]ुर्व्विनीत-प्रथम-नामधेयः [॥] ओं तत्पुत्रो दुर्द्दान्त-ग(वि)मर्द्द-मृदिते(त)-विश्व[ं]भरा–

२४ रि(धि)प-मो(मौ)लि-माल(ा)-मकरन्द-पु[ं]ज-पि[ं]जरीक्ष (क्रि)-यमाण- चरणयुगल-नलिनः श्री [मुष्क]र–

२५ प्रथम-नामधेयः । [॥] ओं तत्पुत्रश्चतुर्द्दशविद्यास्थानाधिगतेरमल-मतिर्व्विशेषतो [नि] र–

२६ वशेषस्य नीति-शास्त्रस्य वक्तृ [तृ]-प्रया (यो) क्तृ-कुशलो रिपु-तिमिर-निकर-सरकरुणोदय-भा–

२७ स्करः श्री-विक्रम-[प्र]थम-नामधेयः [॥] ओं तत्पुत्रा(त्रो)ऽनेक-समर-संप्राप्त-विजय–

२८ लक्ष्मी-लक्षित-वक्षस्थलः समधिगत-सकल-शास्त्रार्थ[ः]श्री-भूवि-क्रम-प्रथम–

२९ प्रथम[1] -नामधेयः [॥] ओं तत्पुत्रः स्वकीय-रूपातिशय-विजी-(जि) त-नल-भूपा–

१ इस शब्दकी अनावश्यकरूपसे पुनरावृत्ति हुई है ।

३० काराश्शिवमा[र-प्रथम-ना]मध[ ]यः [।।] ओं तत्पुत्रः प्रतिदिन-प्रवर्द्धमान-महादान-जनित-पुण्यो

३१ हसुळ-मुखरित-मन्दरोदराः श्री कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्ममहाराजाधि-राज-परमेश्वरः

३२ श्रीसु(पु)रुष-प्रथम-नामधेयः।(।।) तत्पुत्रो विमल-ग[ ]गान्वय-नभ[:]स्थलः र(ग)भस्तिमाली श्रीकों—

३३ गुणिवर्म्म-दा(ध)र्म्ममहाराजाधिराज-परमेश्वरः श्री श[ि]व—मारदेव-प्रथम-नामधेयः ।

३४ शैगोत्तापरनामा [।।] तस्य कनीयान् श्री-विजयादित्यः। (।।) र (त)त्पुत्रस्समधिगत-राज्य-

३५ लक्ष्मी-प(स)मालिङ्गित-वक्षः सत्यवाक्य-कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्मम-हाराजाधिरा-

तृतीय ताम्रपत्र; पहली बाजू.

३६ ज-परमेश्वर[:]श्री-राजमल्ग(ल्ल)-प्र[थ]म-नामधेयस्तत्पुत्रः रामति-(? दि)-समर-संहा-

३७ लिप(रि)तोदार-वैरि-वि(वी)रपुरुषो नीतिमार्ग्ग-कोङ्गुणि-वर्म्म-धर्मराजाधिराज-परमेश्वर[:]

३८ श्रीमद्-एळे(रे)गङ्गदेव-प्रथम-नामधेयः[।।]ओं तत्पुत्रः सामिय-समर-सञ्जनित-विज-

३९ [य]श्रीः श्री-सत्यवाक्य-कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्ममहाराजाधिराज-परमे-श्वर[:] श्री-राजमल्ल-

४० प्रथम-नामधेयः । (॥)ओं तद्दु(स्य)कनीयान् निर्लोरि(ठि)तं-पल्लवा-
धिपः श्रीम[द्]मोघवर्षदेव

४१ पृथ्वीवल्लभ-सुतया[2] श्रीमद्व्वलब्बायाव्ह(याः) प्राणेश्वर[:]
श्रीबूट्टुग-प्रथम-ना-

४२ मधेयः गुणदुत्तरङ्गः । (॥) ओं तत्पुत्रः । एळे(रे)यप्प-पट्टबन्ध-
परिष्कृत-लला[मो]ज(? वं)-

४३ टप्पेरुपेर्ळ्ळेरु-प्रभृति-युद्ध-प्रबन्ध-प्रकाशि (टि) त-पल्लर(व)पराजय[:]
श्री-[नी]त[ि म्]ार्ग-

४४ रंगिणिवर्म्म-र(ध)र्म्ममहाराजाधि(धि)राज-परमेश्वर[:] श्रीमदेळे
(रे)गङ्गदेव-प्रथम-नामधेयः

४५ कोमर-वेडेङ्गः ।(॥)ओं तत्पुत्र[:]श्री-मलवाक्य-कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्म-
महाराजाधिराज-परमेश्वर[:]

४६ श्रीमन्नरसि[ं]वदेव-प्रथम-नामध[े]यः वी(वी)रवेडङ्गः ॥ ओं
तत्पुत्रः कोङ्गमरद....................

४७ तोण्णिरग-श्री-नीतिमार्ग-कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्ममहाराजाधिराज-परमे-
श्वर[:] श्री-र[ाजम]ल्ल-

४८ प्रथम-नामधेयः । कच्चेय-गङ्गः । (॥) ॐ त्रि(त्रि) [॥]
तस्यानुजो निजभुजार्जित-सम्पदार्थो

तृतीय ताम्रपत्र; दूसरी बाजू

४९ भूवल्लभ [-] समुपगम्य ल(ड)हाड़देशे श्री-बद्देगं तदनु त-
५० स्य सुतां सहैव वाक्कन्यया व्यवहद्दुत्तवि (म)-धीस्त्रिपु-

---

१ 'निर्ल्लुण्ठित' और भी शुद्धरूप होगा । २ 'सुतायाः' पढ़ो ।

५१ ण्यां [।।] अपि च ।। लक्ष्मीमिन्द्रस्य हर्त्तुं गतवति दिवि यद्
वोद्देगाङ्कि (के)

५२ महीशे ह [ं]त्वा ल [ल् ?] एय-हस्तांत्कारि-तुरग-सितच्छात्रं[1]नि (सिं)-

५३ हासनानि । प्रा[दा]त् कृष्णाय राज्ञे क्षित [ि]-पति-गणनाथ-

५४ ग्रणीर्य्य(:)प्रतापात् राजा श्री-बूटुगाख्यस्समजनि विजि-

५५ तारांति-चक्रः प्रचण्डः ।। कब्बातः किन्ने[2] नागादळचपुर-पतिः

५६ कक्कराजोऽन्तकस्य विज्ञाख्यो दन्तिवर्म्मा युनि (धि) निज-
वनवासी त्व-

५७ म राजवर्म्मा शान्तत्वं शान्तदेशो नुळुवु-गिरि-पतिर्दाम-रिर्द्दर्प्प-
भङ्ग [ं]

चतुर्थ ताम्रपत्र; पहिली बाजू

५८ मव्येऽन्तं नागवर्म्मा भयमतिरभसाद् गङ्ग-गाङ्गेय-भू-

५९ पात् ।। राजादित्य-नरेश्वरं गज-घटाटोपेन संदर्प्पित (म्)

६० जित्वा देशत एव गण्डुगमहा निद्धोट्य[3] तञ्जापुरीं नाल्कोटे-

६१ प्रमुखाद्रि-दुर्ग-निवहान् दग्ध्वा गजेन्द्रान् हयान् कृष्णा-

६२ य प्रथितन्वनं स्वयमदात् श्री-ग[ं]ग-नारायणः [।।]

६३ आर्य्या ।। एकान्तमत-मदोद्धत-कुवादि-कुम्भीन्द्र-कुम्भ-सम्भेदं ।। (।)

६४ नैगम-नयादि-कुलिशैरकरोज्जयदुत्तरङ्ग-नृपः ।। गद्यम् ।।

६५ सत्यनीतिवाक्य-कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्ममहाराधिराज-परमेश्वर [:]

---

१ 'सितच्छत्र' पढ़ो। २ संभवतः यह पाठ 'किब्बातः किन्तु' रहा होगा। ३ 'निर्द्धाट्य' पढ़ो।

चतुर्थ ताम्रपत्र; दूसरी बाजू

६६ श्री-नृतुग-प्रथन-नामधेयो नन्निय-गङ्गः षण्णवति-

६७ सहस्रमपि गङ्ग-मण्डल [म्] प्रतिपाल्या(य)न् पुरिकर-पुरे कृ-

६८ तावस्थानं (:) स (श) कनृपि [श] र्षु पञ्चुत्तराष्ट[श] तेषु अतिक्रान्तेषु विक्र-

६९ नि(रि)-संवत्सर-का[ ] त[ ] क-नन्दीस्व (श्व)र-सु(शु) क्ल-पक्षः अष्टम्यां आदित्यवारे

७० [लिक] यि-प्रियायाः सम्यग्द[ ]शन-विशुद्धतया प्रत्यक्ष-वे-(दे)

७१ वत्याः श्रीमद्देवलाम्बिकायाः चैत्यालयाय सुलवाटवी-स-

७२ प्तति-ग्राम-मुख्य-भूतायाल्लगर्ष्यां सूद्व्यां विनिर्मापिता-

७३ य खण्ड-स्फु(स्फु)टित-नवकर्म्मार्त्थं पूजाकरणार्त्थमाहारार्त्थं

७४ च पट् श्रा(श्र)मण्यो जनान् दानसन्मानादिना सन्तर्प्योत्तर-दिशायां

पाँचवाँ ताम्रपत्र

७५ राजमानेन दण्डेन पष्टि-निवर्त्तनं श्रीमद्वाडि(? टि)युर्ग्गण-मुख्य-

७६ स्य नागदेव-पण्डितायै स्व[यं]मेव पादो (दौ) प्रक्षाल्य(ल्य) सूद्व्यां दत्तवान् [॥]

७७ तस्यावट[3] पूर्व्वतः मानसिंग-केय्-दक्षिणतः पन्नसिनभूमिः प-

७८ श्चिमतः के (क्को)-गरपोल्मुत्तरतः वाल्टगेरेय वन्द पल्लं[॥] अक्षरणं गद्या-

७९ ण-त्रयं ग्रामो दीयते[4]ऽशेष-कर्मं ग्रामो रक्षति ॥

---

१ 'वर्षेषु' इति शुद्धपाठः। २ 'पण्डितस्य' पढ़ो। ३ 'आघाटाः' पढ़ो। ४ 'ददात्यशेष' पढ़ो।

८० सामान्योऽयं धर्म्म-सेतु[र्]न्नृपानां काले-काले पालनीयो भवद्भि-
रस्सर्वानि-

८१ तान् भाविनः पार्थिवेन्द्रो (न्द्रान्) भूयो-भूयो याचते रामभद्रः ॥
वहुभिर्व्वसु-

८२ धा भुक्ता राजभिस्सगरादिभि [:] यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य
तस्य तदा फलम् ॥

८३ सुल्वाटवी-सप्तति-मुख्य-सून्द्यामचीकर[1]जैन-गृहं प्रसिद्धं पद्-ग्रामणी-

८४ ष्टि-विधान-पूर्व्वं श्री दीवळ(1)म्बा जगदेकरम्भा । (॥)

ॐ । ॐ । ॐ

[J. F. Fleet, EI, III, n° 25, f., S, t. et tr].

भावार्थ

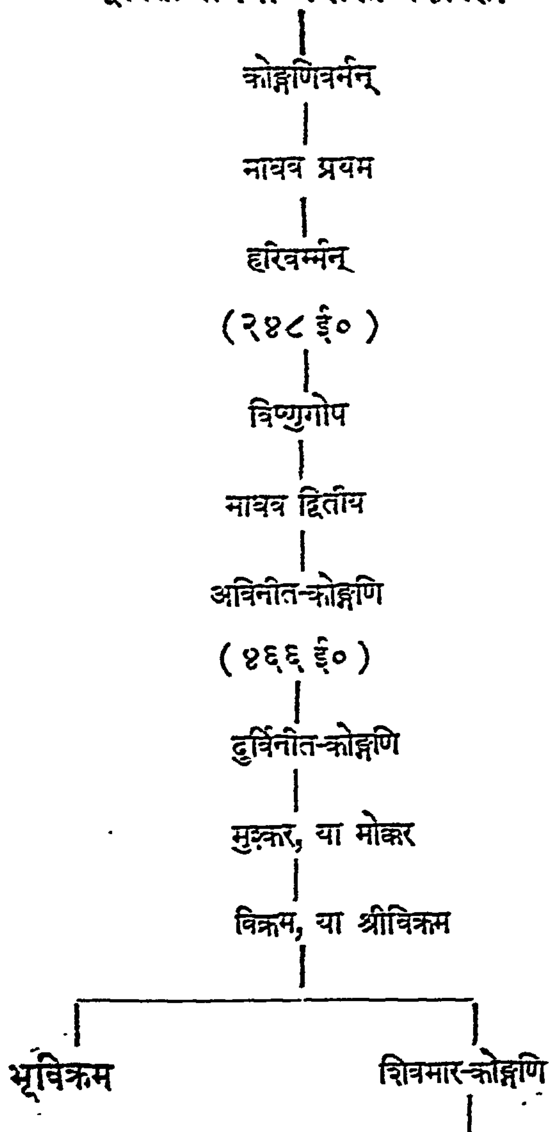
[यह शिलालेख अप्रेल, १९९२ ई० में जे. एफ् फ्लीटके देखनेमें आया। उन्होंने ही इसे, सबसे पहले, एपिग्राफिआ इण्डिका, जिल्द ३, में (पृ० १५८-१८४) छपाया। यह उन्हें सूदीके एक निवासीसे ताम्रपत्रों (Plates) पर मिला।

इस शिलालेखमें उस पच्छिमी गंग युवराज वृतुगका उल्लेख है जिसने चोलराजा राजादित्य और राष्ट्रकूट राजा कृष्ण तृतीयके बीचमें ९४९-५० ई० में या इससे पहले हुए युद्धमें चोल राजा राजादित्यको मार डाला था। इस अभिलेखका उद्देश्य उस जमीनके दानका लेखन है जो उसने अपनी पत्नीद्वारा सून्दी, यानी सूदीमें निर्माण कराये गये जैनमन्दिरको दी थी। उसकी पत्नी का नाम दीवळाम्वा था। यह लेखन (Record) बनावटी है।]

इस लेखपरसे फलित पूर्ववर्ती और उत्तरवर्ती पच्छिमी गंगोंकी वंशावली इस प्रकार है:—

१ 'अचीकरज्जैन' पढ़ो।

पूर्ववर्ती पश्चिमी गंगोंकी वंशावली



(पुत्र)
|
श्रीपुरुष-पृथिवी-कोङ्गणि
(७६२ तथा ७६६-६७ ई०)

उत्तरवर्त्ती पच्छिमी गंगोंकी वंशावली

भूविक्रम
|
शिमवार
|
श्रीपुरुष—कोङ्गुणिवर्मन्
|
शिवमार सैगोत्त-कोङ्गुणिवर्मन् | विजयादित्य
विजयादित्य
|
राजमल्ल-सत्यवाक्य-कोङ्गुणिवर्मन्
|
एरेगङ्ग-नीतिमार्ग-कोङ्गुणिवर्मन्
(रामटि या रामदिके युद्धमें विजयी था)
|
राजमल्ल-सत्यवाक्य-कोङ्गुणिवर्मन् (सामियके युद्धमें विजयी हुआ था) | गुणदुत्तरङ्ग-बूतुग (पल्लवराजाको लूटकर

अमोघवर्षकी कन्या अब्बलब्बासे विवाह किया)

|

कोमरवेडङ्ग-एरेगङ्ग-नीतिमार्ग-कोङ्गुणिवर्मन्

(एरेयप्पके, या द्वारा, पट्टबन्धसे उसका ललाट शोभित था; और उसने जन्तेप्यरुपेङ्गेरुमें पल्लवोंको हराया था)

|

वीरवेडङ्ग-नरसिंघ-सत्यवाक्य-कोङ्गुणिवर्मन्

|

कच्छेयगङ्ग-राजमल्ल-नीतिमार्ग-कोङ्गुणिवर्मन्

जयदुत्तरंग-गंगगांगेय-गंगनारायण-नन्नियगंग-बूतुग-सत्यनीतिवाक्य-कोङ्गणिवर्मन्

(९३८ ई०)

(इसने डहाळ देशके त्रिपुरीमें, वद्देगकी पुत्रीसे विवाह किया था, वद्देग-की मृत्युपर कृष्णके लिये राज्य प्राप्त किया,—लल्लेय (?) के पञ्जेसे इसको निकाला; अळचपुरके ककराजको, वनवासीके विज-दन्तिवर्मन्को, राज-वर्माको, तुळुवुगिरिके दामरिको, तथा नागवर्माको भय उत्पन्न किया; राजादित्यको जीता, तञ्जापुरीको घेरा, और नाळकोटेके पहाड़ी किलेको जला डाला। इसकी पत्नी दीवळाम्बा थी।)

१४३

मदनूर—(जिला—नेल्लोर) संस्कृत।

शक ८६७=९४५ ई० सन्

प्रथम पत्र।

१ भद्रं स्यात्रिजगन्नुताय सततं श्रीमज्जिनेन्द्रप्रभोरुद्दामाततशासन[ा]-

२ य विलसद्धर्म्मावलंवाय च । सामर्थ्यात् खलु यस्य दुष्कलिकृता दोपाश्च मिथ्योद्भवा (।) दु-

३ र्वृत्तानि च भूतलेन वितता शान्तिश्च नित्यं क्षिते[:] ॥१॥ स्वस्ति श्रीमतां सकलभुवनसं-

४ स्तूयमानमानव्यसगोत्राणां हारितिपुत्राणां कौशिकिवरप्रसाद-लब्धरा-

५ ज्यानाम्मातृग[ण]परिपालितानां स्वामिमहासेनपादानुध्यायिनाम् भगव-

६ न्नारायणप्रसादसमासादितवरवराहलाञ्छनेक्षणक्षणवशीकृताराति[1] मण्ड[ला]-

७ नामश्वमेधावभृथस्नानपवित्रीकृतवपुषाम् चालुक्यानां कुलमलं-करिष्णोस्सत्या[श्र]-

८ यवल्लभेन्द्रस्य भ्राता कुब्जविष्णुवर्द्धनोष्ट[ा]दशवर्षाणि वेंगि-मण्डलमपालयत् । तदात्म-

प्रथम पत्र; दूसरी ओर ।

९ जो जयसिंहस्त्रयस्त्रिंशतम् । तदनुजेन्द्रराजनन्दनो विष्णुवर्द्धनो नव । तत्सूनुर्म्मंगियुवराज-

१० ४ पंचविंशतिन्तत्पुत्रो जयसिंहस्त्रयोदश । तदवरज[:]कोक्कि-लिष्षण्मासान् । तस्य ज्येष्ठो भ्राता

११ विष्णुवर्द्धन[स्त]मुच्चाट्य[स]प्तत्रिंशतम् वर्षाणि[।]तत्पुत्रो विज-यादित्यभट्ट[ा]रकोष्टादश । तत्सुतो

---

१ °वशीकृता° पढ़ो ।

१२ विष्णुवर्द्धनष्षट्त्रिंशतन् । नरेन्द्रमृगराजाख्यो मृगराजपरा-
क्रमः[।]विजयादित्य-भूपालश्चत्वारिंशत्समाष्टमिः

१३ [।।२]तत्पुत्रः कलिविष्णुवर्द्धनोप्यर्द्धवर्षं । त-

१४ त्पुत्रः परचक्ररामापरनामधेयः[।]हत्वा भूरिनोहंवराष्ट्रनृपति-
संगिम्महासंग-

१५ रे गंगानाश्रितगंगकूटशिखरान्निर्ज्जित्य सङ्ग[ह]लावींरं संकि-
लमुग्रवल्लभयुतं यो म [।]-

१६ यित्वा चतुश्चत्वारिंशतमब्दकांश्च विजयादित्यो ररक्ष क्षितिं ।
[३] तदनुजस्य लब्ध-

दूसरा पत्र; दूसरी ओर।

१७ यौवराज्यस्य विक्रमादित्यस्य सुतश्चालुक्यभीमस्त्रिंशतं[।]
तस्याग्रजो विजयादित्यः

१८ षण्मासान् [।] तदग्रसूनुरम्मराजस्सप्तवर्षाणि । तत्सूनुमाक्रम्य
बालं चालुक्यभीममपि-

१९ वृन्धयुद्धमल्लस्य नन्दनस्तालनृपो मासमेकं । नाना-सामन्तव-
र्गैरविकलच्युतैर्म्म-

२० त्तमातंगसेनैर्हत्वा तं तालराजं विषमरणमुखे सार्द्धमत्युग्रते-

२१ जाः [।] एकाब्दं सम्यगम्भोनिधिवलयवृतामन्वरक्षद्धरित्रीं श्रीमां-
श्चालुक्य-

२२ भीमक्षितिपतितनयो विक्रमादित्यभूपः । [४] पश्चादहमह-
मिकया विक्रमादित्यात्त-

२३ म [यि]ने राक्षसा इव प्रजावावनपरा दायादराजपुत्रा राज्याभिला-
षिणो युद्धमल्लरा-

२४ जमार्त्तण्डकण्ठिकाविजयादित्यप्रभृतयो विग्रहीभूता आसन् [।] विग्र–

तीसरा पत्र, पहली ओर ।

२५ हेणैव पंचवर्षाणि गतानि [।] ततः [।] योऽवधीद् [।] जमा-र्त्तण्डन्तेष[ां] येन रणे कृतौ [।] क–

२६ ण्ठिकाविजयादित्ययुद्धमल्लौ विदेशगौ । [५] अन्ये मान्यमही-भृतोपि वहवो दु–

२७ ष्प्रवृत्तोद्धता (:) देशोपद्रवकारिणः प्रकटिनाः कालालयं प्रापिताः [।] दोर्द्दण्डेरि–

२८ तमण्डलाग्रलतया यस्योग्रसंग्रामकात्राज्ञा[1] तत्परभूनृपैश्च

२९ शिरसो मालेव सन्धार्य्यते । [६] नादग्ध्वा विनिवर्त्तते रिपुकुलं कोपाग्निरामूल—

३० तः शुभ्रं य [स्य] यशो न लोकमखिलं सन्तिष्ठते न भ्रमत् [।] द्रव्यांभोधरराशिरप्यनुदिनं

३१ सन्तप्यमाने भृशं दारिद्र्योग्रखरातपेन जनतासस्ये न नो वर्षति । [७] स चालुक्यभीमनप्ता वि–

३२ जयादित्यनन्दन[ः ।] द्वादशाब्दसमास्सम्यग् राजभीमो धरा-तलं । [८] तस्य महेश्वरमू—

तीसरा पत्र; दूसरी ओर ।

३३ र्त्तेरुमासमानाकृतेः कुमारामः[।] लोकमहादेव्याः खलु यस्सम-भवदम्म[रा]–

३४ जाख्यः ॥ [९] जलजातपत्रचामरकलशांकुशलक्षणां[क]करचर-

1 शायद °सांग्रामिकस्याज्ञा° पढ़ो ।

णतलः [।] लसद्राजा–

३५ न्ववलंवितभुजयुगपरिघो गिरीन्द्रसानूरस्कः ॥ [१०] विदितधराधिपविद्यो विविधायु–

३६ धकोविदो विलीनारिकुलः [।] करितुरगागमकुशलो हरचरणांभोजयुग–

३७ लमधुपश्श्रीमान् ॥ [११] कविगायककल्पतरुर्द्द्विजमुनिदीनान्धवन्धुजन-

३८ सुरभिः [।] याचकगणचिन्तामणिरवनीशमणिर्म्महोग्रमहसा द्युमणिः ॥ [१२] गिंरिरिंसर्वसु–

३९ संख्याव्दे शकसमये मार्ग्गशीर्षमासेस्मिन् [।] कृष्णत्रयोदशादिने भृगुवारे मैत्रनक्षत्रे [॥ १३]

४० धनुषि रवौ घटलग्ने द्वादशवर्षे तु जन्मनः पट्टं [।] योधादुदयगिरीन्द्रो रविमिव लोका–

चतुर्थ पत्र; पहली ओर।

४१ नुरागाय ॥ [१४] स समस्तभुवनाश्रयश्रीविजयादित्यमहाराजाधिराजपरमेश्वर✕परम[भ्रा]–

४२ न्मिकोम्मराजकम्मनाण्डुविषयनिवासिनो राष्ट्रकूटप्रमुखान् कुटुम्बिनस्सर्व्वा[न्] नित्यमाज्ञापयति [।]

४३ आर्य्या[:]। किरणपुरमवाक्षीत्कृष्णराजास्थितं यस्त्रिपुरमिव महेश✕ पा(ण्डु ?)रंग[:]प्रतापी [।] तदिह [मु]–

४४ खसहस्रैरन्वितस्याप्यशक्यं गणनममलकीर्तेस्तस्य सत्साहसानाम् ॥ [१५] तस्य[ा]त्म-

४५ जो निरवद्यधवल[:] कटकराजपट्टशोभितललाटः [।] तत्तनयो विजयादित्यकट-

४६ काधिपति[:] । वृत्तं । तत्पुत्रो दुर्गराजःप्रवरगुणनिधिर्द्धार्मिक-स्सत्यवादी त्यागी भो[गी]

४७ महात्मा समितिषु विजयी वीरलक्ष्मीनिवासः [।] चालुक्यानां च लक्ष्म्या यदसिरपि सदा रक्षणा[यै]-

४८ व वंश[:] ख्यातो यस्यापि वेंगीगदितवरमहामण्डलालंवनाय । [१६] तेन कृतो धर्म्मपु[रीद]-

४९ क्षिणदिशि सज्जिनालयश्चारुतरः [।] कटकाभरणशुभांकितनाम-चे[1] पुण्यालयो वसति [॥ १७]

चतुर्थ पत्र; द्वितीय ओर ।

५० [श्री] यापनीयसंघप्रपूज्यकोटिमडुवगणेशमुख्यो यः [।] पुण्या-र्हनन्दिगच्छो जिननन्दिमुनीश्वरो [थ] ग-

५१ [ण] धरसदृशः । [१८] तस्याग्रशिष्यःप्रथितो धरायाम् (।) दिव[ा]कराख्यो मुनिपुंगवोभूत् [।] यत्केवलज्ञाननिधि-

५२ र्म्महात्मा स्वयं जिनानां सदृशो गुणौघैः ॥ [१९] श्रीमान्दि-रदेवमुनिस्सुतपोनिधिरभवदस्य शिष्यो धीम[ा]न् [।] य-

५३ त्प्रातिहार्य्यमहिम्ना संप्पन्नमिवाभिमन्यते लोकः [॥ २०] तद-धिष्ठितकटक[ा]भरणजिनालय[ा]-

५४ य कटकराजविज्ञप्ते खण्डस्फुटनवकृत्याबलिप्रपूजादिसत्रसिद्ध्यर्थंमु-

---

[1] इस सम्पूर्ण समाससे 'कटकाभरणशुभनामाङ्कित' अपेक्षित है, जिसके रखनेसे छन्दोभङ्ग हो जाता ।

५५ त्तरायणनिमित्ते मलियपूण्डिनामग्रामटिका सर्वकरपरिहार(म्) मुदक-

५६ पूर्व्वं कृत्वा दत्ता । अस्य ग्रामस्यावधयः पूर्व्वतः मुंजुन्यरु[1] ॥ दक्षिणतः चिनिमिलि ॥ पश्चि[म]-

५७ तः कल्वकुरु ॥ उत्तरत[:] धर्म्मवुरमु ॥ एतद्ग्रामस्य क्षेत्रावधयः पूर्व्वतः गोल्लनि-

५८ गुण्ठ ॥ आग्नेयत[:] रावियपेरिय ꠸ वु । दक्षिणतः स्थापितशिला ॥ नैर्ऋत्यां स्थ[ा] पितशिलैव [।]

पञ्चम पत्र ।

५९ पश्चिमतः मल्कप ꠸ को ꠸ वोयुनट[ा] कश्च ॥ वायव्यतः ꠸

स्थापितशिलैव । उत्तरतः दुव[चे] ꠸ वु [।]

६० ऐशान्याम् (।) कल्वकुरि ऐव्वोकचेनि सीमैव सीमा ॥

[चूंकि लेखमें एक जैनमन्दिरके दानका उल्लेख है, अतः इसका प्रारम्भ जैनधर्मके मंगलाचरणसे किया गया है। पंक्ति ३ से लेकर ४१ में पूर्वी चालुक्य वंशकी 'समस्तभुवनाश्रय' विजयादित्य (छठे) या अम्मराज (द्वितीय) तक की वंशावली है। वंशावलीके भागमें ऐतिहासिक महत्त्वके दो स्थल हैं, पहिला (पं० १३-१६) विजयादित्य तृतीयके राज्यका वर्णन करता है और दूसरे (पं. २२-३२) में चालुक्यभीम द्वितीयका अभिषेक अर्थात् राजतिलक है।

शिलालेखमें वर्णित मङ्कि नोलम्बवाडिका एक पल्लव राजा और सङ्किल दाहल (या चेदि) का प्राचीन सरदार मालूम पड़ता है। अन्तमें इस शासन (लेख) में विजयादित्य तृतीयका एक नया उपनाम परचक्रराम (पं० १४) आता है। विक्रमादित्य द्वितीयकी मृत्युके बाद बराबर पाँच वर्षतक युद्धमल्ल, राजमार्त्तण्ड और कण्ठिका-विजयादित्यमें लड़ाई होती रही । अन्तमें राजभीम (या चालुक्यभीम द्वितीय) राजमार्तण्डका वधकर, कण्ठिका-

1 या सम्भवतः 'मुंजुन्युरु'।

विजयादित्य और युद्धमल्लको हराकर या देशनिकाला देकर व्यवस्था एवं शान्तिके स्थापनमें सफल हुआ।

उल्लिखित दान उत्तरायणमें (पं० ५४) किया गया था। दानपात्र एक जिनमन्दिर था, जो धर्मपुरी (श्लोक १७) के दक्षिणमें तथा यापनीयसंघके एक मुनिके अधिकारमें था। इसकी स्थापनां 'कटकराज' (पं० ५४) दुर्गराज (श्लो० १६) ने की थी और उन्हींके उपनामसे वह कटकाभरण-जिनालय (श्लो० १७ तथा पं० ५३) कहलाया। उसकी प्रार्थना पर (पं० ५४) ही दान किया गया था, और दानके वर्णनका भाग उसके कुटुम्बकी वंशावलीके वर्णनसे शुरू होता है। कहा गया है कि उसके पूर्वज पाण्डुरंगने कृष्णराज (श्लो० १५) के निवासस्थान किरणपुरको जला दिया था, और तदनुसार वह विजयादित्य तृतीयका कोई सैनिक अधिकारी होना चाहिये। उसके पुत्र निरवद्यधवलको 'कटकराज' का पट्ट दिया गया था (पं० ४४)। उसका पुत्र 'कटकाधिपति' विजयादित्य (पं० ४५) था, और उसका पुत्र दुर्गराज (श्लो० १६) था।

दान की गई चीज मलियपूण्डि (पं० ५५) नामका एक छोटा गाँव था; यह कम्मनाण्डु (पं० ४२) जिलेमें था। इसकी सीमाएँ पंक्ति ५६ में दी गई हैं। उत्तरकी सीमा धर्म्मवुरमु (धर्म्मपुरी) के दक्षिणमें यह जिनालय था।]

[EI, IX, n° 6]

१४४

कलुचुम्बरू (जिला अत्तीली)— संस्कृत तथा तेलुगू।

[विना कालनिर्देशका (ई० सन् ९४५ से ९७० के लगभग)]

ओं स्वस्ति श्रीमतां सकलभुवनसंस्तूयमानमानव्य-सगोत्राणां हारिति-पुत्राणां कौशिकीवरप्रसादलब्धराज्यानाम्मातृगणपरिपालितानां स्वामिमहासेनपदानुध्यातानां भगवन्नारायणप्रसादसमासादित-वर-वराह-लाञ्छनेक्षणक्षणवशीकृतारातिमण्डलानामश्वमेधावभृतस्नानपवित्रीकृतवपुषं कुलमलंकरिष्णोस् सत्याश्रयवल्लभेन्द्रस्य भ्राता [।]

श्रीपतिर्विक्रमेणाद्यो दुर्जयादुदितो हतां
अष्टादशसमाः कुब्ज-विष्णुर्जिष्णुर्महीमपालयत् ॥(॥)
तदात्मजो जयसिंहस्त्रयस्त्रिंशतं [।] तद—

दूसरा पत्र; प्रथम ओर

इन्द्रराज-नन्दनो विष्णुवर्द्धनो नव । तत्सूनुर्मङ्गी-युवराजः पञ्चविंशति । तत्पुत्रो जयसिंहस्त्रयोदश ॥ तस्य द्वैमातुरानुजः कोकिलिः षण्मासान् [।] तस्य ज्येष्ठो भ्राता विष्णुवर्द्धनस्तमुच्चाट्य सप्तत्रिंशतम् । तत्सुतो विजयादित्यभट्टारकोऽष्टादश । तत्सुतो विष्णुवर्द्धनः षट्त्रिंशतं । तत्सुतो नरेन्द्रमृगराजस्तावच्चत्वारिंशतं । तत्पुत्रः कलि-विष्णुवर्द्धनोऽध्यर्द्ध-वर्षं [॥] तत्सुतो गुणग-विजयादित्यश्चतुश्चत्वारिंशतं । अथवा ।

सुतस्तस्य ज्येष्ठो गुणग-विजयादित्य-पतिरं—
कारस्साक्षाद्वल्लभनृप-समभ्यर्चितभुजः
प्रधानः शूराणामपि सुभट—

दूसरा पत्र; दूसरी तरफ

चूडामणिरसौ
चतस्रश्चत्वारिंशतिमपि समा भूमिमभुनक् ॥
तद्भ्रातुर्युवराजस्य विक्रमादित्यभूपतेः ।
शत्रुवित्रासकृत्पुत्रो दानी कानीनसन्निभः ॥
जित्वा संयति कृष्णवल्लभमहादण्डं सदायादकम् (?)-
दत्वा देव-मुनि-द्विजातितनयो धर्म्मार्थमर्थम्मुहुः ।
कृत्वा राज्यम[कं]ण्टकान्निरुपमं संवृद्धमृद्धप्रजं
भीमो भूपतिरन्वभुंक्त भुवनं न्यायात् समात्रिंशतं ॥

तदनु **विजयादित्य**स्तस्य प्रियतनयो महा-
नधिकधनदस्सत्य-त्याग-प्रताप-समन्वितः ।
परहृदयनि[र्]भेदी नाम्नैव **कोल्लविगण्ड**-भू-
पतिरकृत षण्मासान् राज्यन्नयस्थितिसंयुतः ॥

तस्याग्रसूनुरपराजितशक्ति**रम्म-**
राजः पराजितपरावनिराजराजिः ।
राजाभवद्विदित**राजमहेन्द्र**नामा
वर्षाणि सप्त सरणिः करुणारसस्य ॥

तस्यात्मज**विजयादित्य**वाल्मुच्चाट्य श्री**युद्धमल्ला**त्मज-**स्तालप**राजो माससेकमरक्षीत् ॥ तमाहवे विनिर्जित्य **चालुक्य-भीम**तनयो **विक्रमादित्यो** विक्रमेणाक्रमे निक्षिप्य नव मासान-पालयत् ॥ ततो **युद्धमल्लस्तालप**-राजाग्रजन्मा सप्त वर्षाणि गृही-त्वाऽतिष्ठत् ॥

तत्रान्तरे विदित**कोल्लविगण्ड**-सूतो
द्वैमातुरो विनुत-**राजमहेन्द्र**-नाम्नः
भीमाधिपो विजितभीमबलप्रतापः
प्राचीं दिशं विमलयन्नुदितो विजेतुम् ॥

श्रीमन्तं राजमय्यन्-धळग-मुरुत्त(त)रन् **तातविक्किं** प्रचण्डं
बिज्जं स[ज्जं च] युद्धे बलिनमतितरा**मय्यपं** भीममुग्रं
दण्डं **गोविन्द**-राज-प्रणिहितमधिकं **चोळपं लोवविक्किं**
विक्रान्तं **युद्धमल्लं** घटितगजघटान् सन्निहत्यैक एव ॥
भीतानाश्वासयन् सच्छरणमुपगतान् पालयन् कण्टकानुत्-
सन्नान् कुर्व्वन् सुगृह्णन् करमपरभुवो रञ्जयन् स्वं जनौघं ।

तस्मिन् कीर्ति नरेन्द्रोद्धर्षनवनमयमानेवन् चलुराशी-
नेवं श्रीराजभीमो जगदखिलमसौ द्वादशाब्दान्यरक्षत् ॥
तस्य महेश्वरमूर्त्तेरनामनानाकृते: कुलारमवान:
लोकमहादेव्या: खलु यत्सनमवदम्मराज इति विख्यात: ॥
यो रूपेण मनोजं विभवेन महेन्द्रमहिमकरं
उग्रमहसा हरमरि-पुरदहनेन न्यक्कुर्वन् भाति विदितनिर्मलकीर्ति: [॥]

यद्बाहुदण्डकरवालविदारितारि-
मत्तेभकुम्भगलितानि विभान्ति युद्धे
मुक्ताफलानि सुभट-क्षतजोक्षितानि
बीजानि कीर्ति-वनितेरिव रोपितानि । (॥)

स समस्तभुवनाश्रयश्रीविजयादित्यमहाराजाधिराजपरमेश्वरपरमभट्टा-
रक: परमकल्याणोऽचितिलिनाण्डुविषयनिवासिनो राष्ट्रकूटप्रमुखान् कुटुम्बि-
नस्समाहूयेत्यमाज्ञापयति ॥ अड्डकलि-गच्छ-नामा । वल-

चतुर्थपत्र; दूसरी बाजू

हारिगणप्रतीतविख्यातयशा[:] । चातुर्वर्ण्य-श्रमण-विशेषानशाणना-
मिलयित-मनस्क: ॥ श्रीराजचालुक्यान्वयपरिवारित पट्टवर्द्धिकान्व-
यतिलका । गणिकाजनमुखकमलद्युमणिद्युतिरिह हि चामेकाम्बाभूत्
सा । (॥) जिनधर्मजलधिवर्धनशशिरुचिरसमानकीर्त्तिकामविलोला ।
दानदयाशीलयुता चारुश्री: श्रावकी सुधश्रुतनिरता ॥

यस्या: गुरुपंक्तिरुच्यते—

सिद्धान्तपारदृश्वा प्रकटितगुणसकलचन्द्रसिद्धान्तमुनि: ।
तच्छिष्यो गुणवान् प्रभुरमितयशास्सुमतिरय्यपोटिमुनीन्द्र: ॥

तच्छिष्याऽर्हनन्यङ्कितवरमुनये चामेकाम्बा सुभक्त्या ।
श्रीमच्छ्रीसर्व्वलोकाश्रयजिनभवनख्यातसत्रार्थमुच्चै ॥
र्व्वेङ्गिनाथाम्मराजे क्षितिभृति कलुचुम्बर्रुसुग्राममिष्टं ।
सन्तुष्टा दापयित्वा बुधजनविनुतां यत्र जग्राह कीर्त्तिं ॥

उत्तरायणनिमित्तेन खण्डस्फुटितनवकर्म्मार्थं सर्व्वकरपरिहारं शासनी-कृत्य दत्तमस्यावधयः [।]

पूर्व्वतः **आरुविल्लि** । दक्षिणतः **कोरुकोलनु** । पश्चिमतः **यिडि-यूरु** । उत्तरतः **युल्लिकोडमण्डु** । तस्य क्षेत्रावधयः । पूर्व्वतः **शर्करा-कर्रु** । दक्षिणतः **इर्रुलकोळु** । पश्चिमतः **इडियूरि** पोलगरुसु । उत्तरतः **कश्वरिगुण्डु** ॥ अस्योपरि न केनचिद्बाधा कर्त्तव्या यः करोति स पञ्चमहापातकसंयुक्तो भवति । (॥)

वहुभिर्व्वसुधा दत्तां (त्ता) वहुभिश्चानुपालिता ।
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम् ।
षष्टिवर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥

अस्य ग्रामस्य ग्रामकूटत्वं कट्टलाम्बात्मज-कुसुमायुधाय दत्तं शाश्वतं ॥ अस्य ग्रामस्य [क?] प्याभिधानं करवर्जितं ॥

आज्ञप्तिः कटकाधीशो भट्टदेवश्च लेखकः ।
कविः कविचक्रवर्त्ती शासनस्साश्युकृत्[1] ॥

पेड्ड-कलुचुवुवरिति शासनम्बुशेसिन भट्टदेवनिकार्ह**नन्दि**भटारुल्लु **गुम्सिमिय** रेट्टेड्लुगाम्वुलुनुण्डिपनु(पने) ण्डु तूमुन नि वुट्लु विट्टु-पड्डु न्रसादञ्चेसिरि [॥]

---

1 शासनस्यास्य काव्यकृत् ।

[यह लेख प्राच्य चालुक्यराजा अम्म द्वितीय अपरनाम विजयादित्य षष्ठकी प्रशस्ति है। इसका काल नहीं दिया है। लेकिन दूसरे प्रमाणोंसे पता चलता है कि उसका राज्याभिषेक शुक्रवार, ५ दिसम्बर, ९४५ ई० को हुआ था और उसने २५ वर्षतक राज्य किया था।

अत्तिलिनाण्डु प्रान्त (विषय) के कलुचुम्बर्रु नामके गांवके दानका इसमें उल्लेख है। यह दान वलहारि गण और अड्डकलि गच्छके अर्हनन्दि जैन गुरुको किया गया था। दानका प्रयोजन सर्व्वलोकाश्रय-जिनभवन नामके जैनमन्दिरके धर्मादेकी भोजनशाला (या भोजनभवन) की मरम्मत वगैरः कराना था। यह दान स्वयं अम्म द्वितीयने किया था, लेकिन पट्टवर्धिक वंशकी और अर्हनन्दिकी एक शिष्या चामेकाम्बाकी ओर-से दिलवाया गया था। प्रशस्तिके अन्तका तेलुगू भाग स्वयं अर्हनन्दिके द्वारा प्रशस्तिके लेखकको दिये गये एक इनामका जिक्र करता है।]

[EI, VII, n° 25, f. 5.]

१४९

हुम्मच—संस्कृत।

[काल लुप्त, संभवतः लगभग ९५० ई० (लु० राइस)।]

[पार्श्वनाथबस्तिके दरवाजेकी पश्चिम ओरकी दीवालपर]

श्रीमत् स्वस्त्यनवद्य-दर्शन-महोग्ररुं प्रताप-सम्पन्नं पर-चक्रगण्ड····
········य्युत्तिरे शक-वर्षमेण्टु-नू···············नाड नाळ्गामुण्डं मळ्ते-यर म····सर्ग्गतन्··············नाळ्गामुण्ड वी···ळ्ळिडोळ् कि.षुकवे सर्ग्गतन वाणसिगेयाकेय पिरिय-मगं···ळियक्कं तोलापुरुष-सान्तरन वळेयाके तम्मव्वेय सन्या····ळुत्तमी-कळ्ळ वसदियुमोन्दु-देवारसुमं माडिसिदळ्····श्रीसामियव्वे सेदेगोट्टडे सान्तरन विन्ननप्प मोगमं नोडेनेन्द-रसि····पषिंदु प्रभावति-कन्तियरेन्दु पेसरं कोण्डु सन्यासनं गेय्दोडे····कुकस-नाड किषिय-साळेयुरं वसदिगित्तं वलक-नाड सुळ्ळिगोडं देवा-रक्के····भटारग्गें बळियं नदि वसदिगं देवारकं कोट्टळ् पाळियक्कं वोलि-

यकं पुत्तु····णक्केय्यं····इर्कण्डुग-वित्तवुदं कोट्टन्ऱ् कुन्दय्यं कोन्दरोऴ्····
···येम्बुदु मण्णिर्कण्डुग·····ईं पोरवक्कनुं सेम्ब्रक्कनुं पाळियक्कन केळ-
दियें पुळियण्णवी-धर्म्मं नडयिसु·······री-नाडरसं रणविक्रमं **पाळियक्कन**
बसदिगे बदरीनाडानन्दु प्पन्नेरड बण्ण तम्म बाणसिगेय बयलं कोट्ट
ईधर्म्ममं श्रीसामियब्बे गेल्लुगनं मुन्नमे सालिय्····र ने डि पाळियक्कन
बसदिगित्तन्ऱ् गेल्लुगन धर्म्मं कावोनुं नडयिसुवोनु·······गळ महा श्री ॥
श्री-माधवचन्द्रत्रैविद्य-देवर शिष्यरप्प **नागचन्द्र-देवर पुत्र मादेय-**
सेनबोव····स····पुन-प्रतिष्ठेयं माडिदनु मङ्गळ महा श्री श्री-वीतरा[ग] ॥

[स्वस्ति । जिस समय अनवद्यदर्शन, महोग्र, प्रतापसम्पन्न, परचक्रगण्ड, ············शासन कर रहा था,—(उक्त मितिको), प्रत्यक्षरूपसे तोलापुरुष-शान्तरकी पत्नी पालियक्कने, अपनी माताकी मृत्युपर, पालियक्क बसदि नामकी एक पाषाण-बसदि खड़ी की और बहुतसे दान इसके लिये किये गये ।]

[EC, VIII, Nagar tl., n° 45]

१४६

कुम्सी—संस्कृत तथा कन्नड़—भग्न ।

[वर्ष साधारण ९५० ई० (लु० राइस)]

[कुम्सीमें, किलेके भण्डार-गृहके पासके पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
तनगेन्दु····व················नन्-- ।
द···पुत्रङ्गति-भीतिय······मतावष्टम्भदिं माडि कों- ।
डनो जाम····सोम्युवेत्त **पोळलोळ् कुम्बशिकेयोळ** माडिदम् ।
जिन-गेहङ्गळनाशेयिं पलवु·································॥

........यिगेन्द्र......................तुङ्गाद्रिय ।
दोरेय...................भक्ति-भवादिं पुम्बुच्चुनिपङ्कजान् ।
.............लोकियब्बेयं जिन-गेहमं माडिदन् ।
बरेयेठ्टं योगब्बेकेनं वि.........अवनीपालकन् ॥

जिनदत्त-रायं श्रीमन्महा..........विदित-बोम्मरस-गौडर मक्कलु.......ति-दत्त तन्न अनुज नागिमद्-गौडर मक्कलु रायविभाड राज....रेवन्त नडे-गौड मुरितण्ण हिरिय-तम्म-गौडरु मुल्लवाद आतन अनुज पद्मयनु आतन तम्म चिक्क-तम्म-गौडरु आतन अनुज होन्नण-गौडरु बर्न-शासनवं साधारण-संवत्सरद कार्तिक-सुद्ध-पुन्नमि-लो....
..........सेट्टि सोकि-सेट्टि पदुम-सेट्टि.........................वाद आ-दित्य-स्थानके..........सन्दादवेन्दु.........तेरिगे येन्दु बिट्टि येन्दु केळ-स्लदु ईवर्न्दव नडसिदवरिगे स्वर्गपदव पडेवरु ईवर्नके तप्पिदवरु एळनेय नरक्के होहरु जिन-रभिषेकनिमित्तं । घन-पूर्ग कुम्बसेन्दु कुम्बसे-पुरमन् । जिनदत्त-रायनित्तं । कनक-कुलोद्भवरु कलस-राजान्वयकन् ॥ मत्तकोम्पद बलियिन्द बडगलु बेद्दल कोम्पद केरे....
कल्लु सहल्लु सह बित्तु....................बाजवरि....कोट्टरु प्रतिपालिसुवदु.

[जिनशासनकी प्रशंसा । .... पोल्लु और कुम्बसिकेमें, पोम्बुच जबतक जिन्दा रहे तबतक इन्होंने जिनमन्दिर बनवाये; जिनमन्दिरमें लोकियब्बेकी स्थापना की । और जिनदत्त-राय [की स्वीकृतिसे], शासक बोम्मरस और अनेक गौड़ोंने (जिनके नाम दिये हैं),— तथा कुछ सेट्टि लोगोंने उक्त मन्दिरको इसके लिये वार्षिक दान दिया । शापात्मक श्लोक ।

जिनदत्तराय, जिसने जिनके अभिषेकके लिये कुम्बसे-पुरका दान किया था, कलस राजाओंके खानदानके कनककुलमें उत्पन्न हुआ था । उसने कुछ जमीन भी दी थी ।]

[E.C. VII, Shimoga t, n° 114.]

१४७

खजुराहो—संस्कृत

(विक्रम संवत् १०११=९५५ ई०)

१ ॐ [॥] संवत् १०११ समये ॥ निजकुलधवलोयं दि-
२ व्यमूर्त्ति स्वसी (शी) ल स (श) मदमगुणयुक्त सर्व्व-
३ सत्वा (त्त्वा) नुकंपी [।] स्वजनजनिततोषो धांगराजेन
४ मान्य प्रणमति जिननाथोयं भव्यपाहिल (छ) —
५ नामा । (॥) १ ॥ पाहिलवाटिका १ चन्द्रवाटिका २
६ लघुचंद्रवाटिका ३ सं (शं) करवाटिका ४ पंचाइ-
७ तलवाटिका ५ आम्रवाटिका ६ ध (धं?) गवाडी ७ [॥]
८ पाहिलवंसे (शे) तु क्षये क्षीगे अपरवंसो (शो) यः कोपि
९ तिष्टति [।] तस्य दासस्य दासोयं मम दत्तिस्तु पाल-
१० येत् ॥ महाराजगुरुस्री (श्री) वासवचंद्र [:॥] वैसा (श) ष (ख)
११ सुदि ७ सोमदिने ॥

[एपिग्राफिआ इण्डिका, जि० १, पृ० १३६]

[EI. 1, p. 135-136]

[यह शिलालेख खजुराहोमें जिननाथके मन्दिरके बायें दरवाजेपर उत्कीर्ण है। इसमें ११ पंक्तियाँ हैं। इसमें बताया गया है कि राजा धङ्ग या धाङ्गके राज्यकालमें विक्रम सं० १०११ या ९५४ ई० में भव्य पाहिल या पाहिल्लने जिननाथके मन्दिरको बहुत तरहकी वाटिकाओं (छोटे उद्यानों या बगीचों) का दान किया। दानोंके निम्नलिखित नाम हैं:—

१. पाहिल-वाटिका, या पाहिल बगीचा
२. चन्द्र-वाटिका, या चन्द्र बगीचा
३. लघु-चन्द्रवाटिका, या छोटा चन्द्र बगीचा
४. शंकर-वाटिका, या शंकर बगीचा

५. पञ्चाइतल-वाटिका ?

६. आम्र-वाटिका, या आमके पेड़ोंका बगीचा

७. धङ्ग-वाड़ी, या धङ्ग उद्यान-भवन ।

ए० कनिंघमने सम्वत् १०११ को सुधारकर और युक्तिपूर्वक सिद्ध कर इसको सं० ११११ पढ़ा है। शिलालेखका पूरा श्लोक प्रो० एफ् कीलहोर्नने इस तरह शुद्ध किया है:—

निजकुलधवलोयं दिव्यमूर्त्तिः सुशीलः
शमदमगुणयुक्तः सर्वसत्त्वानुकम्पी ।
सुजनजनितवोपो धङ्गराजेन मान्यः
प्रणमति जिननाथं भव्यपाहिल्लनामा ॥ १ ॥]

१४८

सुहानिया [ग्वालियर]—संस्कृत ।

[सं० १०१३=९५६ ई०]

संवत् १०१३ माधवसुतेन महिन्द्रचन्द्रकेनकमा (खो ?) दिता[1]

[सुहानियामें माधवके पुत्र महेन्द्रचन्द्रने एक जैन मूर्ति प्रतिष्ठापित की । संवत् १०१३ ।]

[JASB, XXXI, p. 399, a; p. 410, t.]

[इं० ए० जिल्द ७, पृ० १०१-१११ नं० ३८ १-५१ की पंक्तियाँ]

१४९

लक्ष्मेश्वर—संस्कृत ।

[शक ८९०=९६८ ई०]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

---

१ यह 'प्रतिष्ठिता' का अपभ्रंश मालूम पड़ता है ।

स्वस्ति जितं भगवता गतघनगगनाभेन **पद्मनाभेन** [।।] श्रीमज्जाह्न-**वीय**कुलामलव्योमावभासनभास्करः स्वखड्गैकप्रहारखण्डितमहाशिलास्त-म्भलब्धबलपराक्रमो दारुणारिगणविदारणोपलब्धव्रणविभूषणविभूषितः **कण्वायन**सगोत्रः श्रीमान् **कोङ्गणिवर्म्म**धर्म्ममहाराजाधिराजपरमेश्वर-**श्रीमाधव**प्रथमनामधेयः ।। तत्पुत्रः पितुरन्वागतगुणयुक्तो विद्याविनय-विहितवृत्तः सम्यक्प्रजापालनमात्राधिगतराज्यप्रयोजनो विद्वत्कविकाञ्चन-निकषोपलभूतो नीतिशास्त्रस्य वक्तृप्रयोक्तृकुशलो दत्तकसूत्रवृत्तेः प्रणेता श्रीमन्**माधव**महाराजाधिराजः ।। तत्पुत्रः पितृपितामहगुणयुक्तो(ऽ)नेक-चतुर्द्दन्तयुद्धावाप्तचतुरुदधिसलिलास्वादितयशः श्रीमद्**हरिवर्म्म**महाराजा-धिराजः ।।

अपिच ।। वृत्त ।।

आसीज्जगद्गहनरक्षणराजसिंहः
क्ष्मामण्डलाब्जवनमण्डनराजहंसः ।
श्रीमारसिंह इति बृंहितबाहुकीर्त्ति-
स्तस्यानुजः कृतयुगक्षितिपालकीर्तिः ।।

आदेशाद्देवचोलान्तकधरणिपतेर्गंगचूडामणिस्त्वां
वेगादभ्येति योद्धुं त्यज गजतुरगव्यूहसन्नाहदर्प्पम् ।
गङ्गामुत्तीर्य गन्तुं परबलमतुलं कल्पयेत्पाप दूतै-
र्व्विज्ञप्तं गूर्ज्जराणां पतिरकृति तथा यत्र जैत्रप्रयाणे ।।

पद्माम्भोरुहभृङ्गभृत्यभरणव्यापारचिन्तामणिः
संत्रासग्रहविह्वलीकृतरिपुक्ष्मापालरक्षामणिः
विद्वत्कण्ठविभूषणीकृतगुणप्रोद्भासिमुक्तामणि-
र्द्देवस्सज्जनवर्ण्णनीयचरितश्रीगङ्गचूडामणिः ।।

मन्दाकिन्या जिनेन्द्रस्नपनविधिपयस्स्यन्दसम्पादितायाः
कालिन्द्याश्चण्डवैरिप्रहतगजमदश्वेतनिर्व्वर्त्तितायाः ।
सम्भेदे श्रीनिकेताङ्गणभुवि भवतो गङ्गकन्दर्पभूप[1]-
व्यातन्यो दिग्वधूनां विधुविजयी (यि) यशो हारमाचन्द्रतारम् ॥
अपि च ॥ वृत्त ॥
निर्व्वादोज्ज्वलबोधपोतबलतस्सिद्धान्तरत्नाकरम्
चारित्रोत्प्लुतयानपात्रबलतस्संसारमीनाकरम् ।
उत्तीर्ण्णस्समुदीर्ण्णभक्तिविनतैर्बन्धाभिधानो बुधै-
रासीद् देवगणाग्रणीर्ग्गुणनिधिर्द्देवेन्द्रभट्टारकः ॥
उद्दामकामकलिनिर्द्दलनैकवीर-
स्तस्यैकदेव इति योगिषु देव एकः ।
शिष्यो वभूव हृदि यस्य दधाति भव्यो
रत्नत्रयं शिरसि यच्चरणद्वयं च ॥
महितस्य तस्य महितैर्म्महतां, प्रथमस्य च प्रथमशिष्यतया ।
जयदेवपण्डित इति प्रथितः, प्रथमानशास्त्रमहिमद्रविणः ॥
अपि च ॥ गद्य ॥

तस्मै स भुवनैकमङ्गलजिनेन्द्रनित्याभिषेकरत्नकलशः स तु सत्य-वाक्य-कोङ्गणिवर्म्म-धर्म्ममहाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीमारसिंहदेवप्रथम-नामधेयः गङ्गकन्दर्प्पः ॥ शकनृपकालातीतसंवत्सरशतेष्वष्टेसु-नवत्युत्तरेषु प्रवर्त्तमाने विभवसंवत्सरे शङ्खवसति-तीर्थव-सतिमण्डलमण्डनस्य गङ्गकन्दर्प्पजिनेन्द्रमन्दिरस्य दानपूजादेवभोग-निमित्तं पुलिगेरे-नगरात्पूर्व्वस्यां दिशि तल-वृत्ति दत्ते स्म [।।] तस्या-स्सीमा समाख्यायते तद्यथा ।

---

१ शुद्धपाठ संभवतः 'भूपस्यातेने' होना चाहिये ।

कुमारीसरसः पूर्व्वस्यामाशायामेकनिवर्त्तनान्तरादुपलयुगलाद्दक्षिणस्यां दिशि **वेल्कनूर्**ग्रामपश्चिमसीम्नः पावकदिशि **कोशितटाक**पुरोवर्त्तिन-शिलासरसस्समीरणदिक्कोणे हस्ति-प्रस्तरात् पश्चिमस्यां दिशि **वट-तटाक**-पुरोनिकटनिम्नोत्तरदिग्वर्त्तिनः कृष्णपाषाणादुत्तरस्यां दिशि **नागपुर**ग्राम-मार्ग्गाद्दक्षिणस्यां दिशायां **मळिगमार्त्तण्ड**गृहक्षेत्रादैशान्यां दिशायामानी-लशिलायाः पुनः पश्चिमस्यां दिशि **कृष्णसरस** उत्तरजलप्रवाहनिर्ग्गमा-दुत्तरस्यां दिशि **नीलिक्कार**-तटाकागतप्रवाहादुत्तरस्यामाशायामेकनिव-र्त्तनान्तरे वायव्यदिक्कोणवर्त्तिरक्तपाषाणपार्श्ववर्त्तिन्याश्शम्याः । पूर्व्वदि-ग्मुखेनागत्योत्कीर्ण्णादरुणपाषाणान्नागपुरग्राममार्गस्योत्तरपार्श्वे पूर्व्वदि-ग्मुखेन गत्वोत्तरदिशं प्रति निवृत्तात्पश्चिमदिशायामेकनिवर्त्तनान्तरे पूर्व्वोत्तरदिशि कृष्णपाषाणाद्दक्षिणस्यामाशायां शमी-**कन्थारी**गुल्मान्त-र्ग्गतानीलशिलायाः पश्चिमतः पुरोक्तव्यक्तपाषाणयुगले सङ्गता सीमा [॥] प्राक्प्रकाशितकृष्णसरःपुरोभागवर्त्तीनि षण्निवर्त्तनान्यभ्यन्तरी-कृत्य सुष्ठि(स्थी)कृतानि षष्टि-शतं निवर्त्तनानि ॥ तस्मादेव नगरा-द्वरुणदिग्भागवर्त्तिन्यास्तलवृत्तेस्सीमा समाम्नायते तद्यथा । **देशग्रामकूट-क्षेत्रा**द्वायव्यां ककुभि त्रिशमीरक्तोपलाद् वायव्यामाशायामेकशम्या आख-ण्डलदिशायामेकदण्डान्तरादरुणपाषाणादाग्नेयकोणवर्त्तिनो विशालशमी-कन्थारीजालात्पश्चिमस्यां दिशि श्रेष्ठितटाकदक्षिणजलप्रवाहनिर्ग्गमाद् **वल्ल-भराज**मार्ग्गात् पूर्व्वस्यामाशायां कन्थारीगुल्मात् **सवसी**-ग्राममार्ग्गाद्दक्षि-णतश्शमीकन्थारीकुञ्जात् कुबेरककुभो वायव्यायामाशायां **ज्येष्ठलिङ्ग**-भूमेर्निर्ऋत्या हरितकृष्णपाषाणात् पूर्व्वस्यां दिशि वल्लभराजमा-र्ग्गात् पश्चिमस्यामाशायामुत्तरदिग्मुखप्रवृत्तमहाप्रवाहान्तर्ग्गत**किन्नर**-
५१' ॥८ दक्षिणस्यां दिशायाम**न्धकार**क्षेत्रात् पश्चिमसीम्नि प्राक्प्र-

कटीकृताद्देशग्रामकूटक्षेत्राद् वायव्यां दिशि त्रिशमीशोणपाषाणे सीमा समागता । एवं पश्चिमदिग्वर्त्तीनि चत्वारिंशच्छतं निवर्त्तनानि ॥ शङ्ख-वसतेर्व्वासवदिशि निवर्त्तनमात्रः पुᳲप(पुष्प)वाटः पश्चिमदिशि च निवर्त्तनद्वय-द्वयदो (?) पुᳲप(पुष्प)वाटः ॥ तस्य चैत्यालयस्य पुरप्रमा-णमाख्यायते [।] पूर्व्वतः **बाळनेश्वर**पश्चिमप्राकारः पावकदिशि **चर्म्म-कार**देवगृहसीमान्तम् [।] तत्पश्चिमतः वारिवारणसीमां कृत्वा दक्षिणस्यां दिशि पुᳲप(ष्प)वाटाङ्ग(?)जचैत्यपुरपुरः **श्रीमुकरवसतेः** पश्चिमस्यां दिशि गोपुरपर्य्यन्तात् पश्चिमदिग्वर्त्तिदेवगृहद्वयमभ्यन्तरीकृत्य **मरुदेवी**देवगृहस्य पश्चाद्भागादुत्तरस्यां दिशि **चन्द्रिकाम्बिका**देवगृहात् पूर्व्वतः मुकरव-सतिं प्रविष्टीकृत्य **रायराचमल्लवसतिं**(ति)दक्षिणप्राकारः ततः पूर्व्वतः **श्रीविजयवसति**दक्षिणप्राकारः ई (ऐ)शान्यां दिशि **कर्म्म-टेश्वर**देवगृहं तद्दक्षिणतः पूर्व्वोक्त**वाळनेश्वर**पश्चिमसीमा [।।] देवनगरा-त्पश्चिमदिशि पुᳲप(ष्प)वाटद्वयनिवर्त्तनक्षेत्रं दत्तम्।। तस्य सीमा पृथक्क्रि-यते [।] **परवसरसः** पूर्व्वदिशि **तपसी**ग्रामपथादुत्तरतो पुᳲप(ष्प)वाटनिव-र्त्तनमेकं । **गङ्ग-पेर्म्माडि**चैत्यालयपुᳲप(ष्प)वाटादुत्तरतो निवर्त्तनमेकं नागवल्लीवनम् । एवं **गङ्गकन्दर्प्पभूपाळजिनेन्द्रमन्दिर**देवभोगनिमित्तं निवर्त्तनशतत्रयमात्रक्षेत्रं पुᳲप(ष्प)वाटत्रयमुर्व्वीशदेशग्रामकूटाकारविष्टिप्र-भृतिबाधापरिहारं मनोहरमिदम् ।। श्लोक ।।

बहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजाभिस्सगरादिभिः ।
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ।।
मद्वंशजाः परमहीपतिवंशजा वा
पापादपेतमनसो भुवि भाविभूपाः ।

ये पालयन्ति मम धर्म्ममिमं समस्तं
तेषां मया विरचितोऽञ्जलिरेष मूर्ध्नि ॥

[यह शिलालेख धारवाड़ जिलेके दक्षिण-पूर्व कोनेकी ओर मिरज रियासतके लक्ष्मेश्वर तालुकेके प्रसिद्ध शहर लक्ष्मेश्वरके शङ्खवसति नामके मन्दिरमें पत्थरकी एक लम्बी शिलापर है। इसमें ८२ पंक्तियाँ हैं। अक्षर दशवीं शताब्दिकी पुरानी कर्णाटक (कन्नड़) लिपिके हैं। इसमें तीन विभिन्न शिलालेख समाविष्ट हैं।

पहला भाग—१ से लेकर ५१ वी पंक्तितक गङ्ग या कोङ्गु वंशका शिलालेख है। इसमें उल्लिखित दान, ८९० शक वर्षके व्यतीत होनेपर और जब विभव संवत्सर प्रवर्त्तमान था, मारसिंहदेव-सत्यवाक्य-कोङ्गणिवर्मा, के द्वारा जिन्हें गङ्ग-कन्दर्प भी कहते थे, जयदेव नामके एक जैन पुरोहित (पण्डित) को किया गया था। विभव संवत्सर शक ८९० ही था और शक ८९१ शुक्ल संवत्सर था, इसलिये शिलालेखका समय ठीक दिया हुआ है। यह दान पुलिगेरे (जिसका अर्थ होता है चीतेके तालाबका नगर) नगरकी कुछ भूमियोंका था। इस 'पुलिगेरे' नगरको मिस्टर फ्लीटने लक्ष्मेश्वरका ही पुराना नाम माना है। यह दान एक जैनमन्दिरके लिये, जिसे इसमें 'गङ्गकन्दर्प जिनेन्द्रमन्दिर' कहा गया है, किया गया था। इस मन्दिरको स्वयं मारसिंहदेवने बनवाया या उसका जीर्णोद्धार किया था।]

वंशावली इस तरह दी गई है:—

माधव-कोङ्गणिवर्मा
(या माधव प्रथम)
|
माधव द्वितीय
|
हरिवर्मा — मारसिंह

मारसिंहदेव-सत्यवाक्य-कोङ्गणिवर्मा,
या
गङ्ग-कन्दर्प्प

[इं० ए०, जिल्द ७, पृ० १०३-१११, नं० ३८ (१-५१ की पंक्तियाँ)]

१५०

कहूर—कन्नड़

[शक ८९३=९७१ ई०]

[कहूरमें, किलेके दरवाजेके एक स्तम्भपर]

(पश्चिममुख) स्वस्ति श्री-कोण्डकुन्दान्वय देशिय-गण-मुख्यर् देवेन्द्रसिद्धान्त-भटार-रवर पिरियशिष्यर् चान्द्रायणद्भटाररवर-शिष्य-गुणचंद्र-भटाररवर-शिष्यर् श्रीनद्भयणन्दि-पण्डित-देवर नाणब्बे-कन्तियर शिश्शिन्तियर्पडियर-दोरपय्यन पिरियरसि पाम्बब्बे तले-वरिदु मूवत्त-वरिसं तपं गेय्द्दं' नोन्तुञ्छम-ठाणमेरिदर्वरेदोनवर मगं निडि................

(उत्तरमुख) परसे महा-प्रसाददोळोरेवकनिम्मडि-घोरनोल्दु-तन्न्- ।

अरसुनमौल्य-वस्तुगळुनं कुडे वृत्तुगनकनेन्दु निस्- ।

तरिसे वरित्रि जीय वेसनेनेने सन्दिशु सन्दवळेविन्दु ।

अरसु दलेन्तु पाम्बवेगळन्तु तपो-नियमस्तरादोर् (आदोर्) आर् ॥

स्वस्ति यम-नियम-स्वाध्याय-ध्यान-मौनानुष्ठान-परायगे(यगे)यरप्प श्री-पाम्बब्बे-कान्तियर्यूदं नोन्तुञ्छम-ठाण-मेरिदर् । वरेदोनवर नगनर्हद्-भक्तम् ।

(दक्षिण मुख) [ऊपरका श्लोक, जो 'परसे' इत्यादिसे शुरू होता है, यहाँ दुहराया गया है ।]

शक-काल ८९३ य प्रजापति-संवत्सरदन्तर्गत मार्ग्गशिर-मासद शुद्ध-त्रयोदशियुं गुरुवार[द]न्दु अय्दं नोन्तुच्छम-ट्ठाण मेरिदर बरेदोनवर मगं वि............

[पडियर-दोरपय्यकी ज्येष्ठ रानी पाम्बव्वेने,—जो कोण्डकुन्दान्वयके देशिय-गणके मुख्य देवेन्द्र-सिद्धान्त-भटारके ज्येष्ठ शिष्य चान्द्रायणदभटारके शिष्य गुणचन्द्र-भटारके शिष्य अभयनन्दि-पण्डित-देवकी (शिष्या) नाणव्वे-कन्तिकी शिष्या थी,—केशलोंच करनेके बाद, तपके पूरे ३० साल पूर्ण किये, और पाँच अणुव्रतोंको धारण करके उच्च अवस्थाको पहुँची। उसके पुत्र विडि..............से लिखा हुआ।

आगेके श्लोकमें उसके त्याग और तपकी प्रशंसा है। दक्षिण और पूर्व मुखकी तरफ भी ये ही लेख कुछ भेदके साथ, उसके अन्य दो पुत्रों, अर्हद्भक्ति और वि......के द्वारा लिखाये गये हैं।]

[EC. VI, Kadur tl., n° 1]

१९१

श्रवण-बेल्गोला—कन्नड

[विना काल-निर्देशका]

[देखो, जैन शिलालेखसंग्रह, प्रथम भाग]

१९२

श्रवण बेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड

[विना काल-निर्देशका, लगभग ९७५ ई० (फ्लीट)]

[देखो, जैन शि० ले० सं० प्रथम भाग]

१९३

[सुहानिया (ग्वालियर]-संस्कृत

[सं० १०३४=९७७ ई०]

सम्वतः । १०३४ श्री वज्रदाममहाराजाधिराज वइसाखवदि पाचमि * * *

संवत् १०३४ की वैशाख वदी ५ को महाराजाधिराज वज्रदाम (शेष-लेख स्पष्ट नहीं है।) ।

[JASB, XXXI, p. 399, a; p. 411, t.]

१५४

पेग्गूर—कन्नड़

[शक ८९९=९७७ ई०]

[पेग्गूर (किग्गट्ट-नाड्में)में एक पाषाणपर]

स्वस्ति शक-नृप-कालातीत-संवत्सर-सतङ्ग ८९९ नेय ईश्वर-[सं] वत्सरं प्रवर्त्तिसे सत्या(त्य)वाक्य-कोङ्गिणिवर्म्म-धर्म्म-महाराजाधिराज कोळाल-पुरवरेश्वर नन्दगिरिनाथ श्रीमत् राचमल्ल-पर्म्मनडिगळ् तद्वर्ष[ा]भ्यन्तर पा(फा)ल्गुण(न)-शुक्ल-पक्षद नन्दीश्वरं तल्प-देवसमागे स्वस्ति समस्तवैरिगजघटाटोपकुम्भिकुम्भ-स्तळ-स्फुटितानर्घ्य-मुक्ताफल-ग्रहण-मीकर-करासि-निवासित-दक्षिण-दोर्द्दण्ड-मण्डित-प्रचण्डं अण्णन-वण्ट वडवर-नण्टं श्रीमत् रकस वेद्दोरेगरेयनाळुत्तिरे भद्रमस्तु जिनशासनाय श्री-वेळ्गोळ-निवासिगळप्प श्री-वीरसेनसिद्धान्त-देवर वर-शिष्यर् श्री-गोणसेन-पण्डित-भट्टारकर वर-शिष्यर्[1] श्रीमत् अनन्तवीर्य्यय्यङ्गळ् पे[र्]ग्गदूरुं पोस-वादगमुमन् अभ्यन्तर-सिद्धियागे पडेदरदक्के साक्षी तोम्भत्तरुसासिर्व्वरुमय्-सामन्तरुं वेद्दोरेगरे-येळ्पदिम्बरुमेण्टोक्लुमिदं कावर्न्नाल्वर् म्मलेपरुमयूनूर्व्वरुमय्-दामरिगरुं श्रीपुरुष-महाराजरदत्तियनावोनोर्व्वनळिदोम् वाणरासियुं सासिर्व्व-ब्राह्मणरुं सासिर-कविलेयुमनळिद पञ्चमहापातकनक्कुं इदनारोर्व्वर् कादरवर्गे पिरिदु पुण्यं चन्दणन्दियय्यन लिखितम् ॥ पेर्ग्गदूर वसदिय शासनम् ।

[शक नृपके सैकड़ों वर्ष बीतने पर जब ईश्वर नामका संवत्सर ८९९ वाँ चालू था:—

---

१ ये दोनों शब्दसमूह 'देवरवर शिष्यर्' तथा 'भट्टारकरवर शिष्यर्' भी पढ़े जा सकते हैं।

और जिस समय सत्यवाक्य–कोङ्गुणिवर्म्म–धर्म्म–महाराजाधिराज राचमल्ल पेर्म्मनडिका, जो कोळाळपुरके ईश्वर तथा नन्दगिरिके नाथ थे, राज्य था, उस समय श्रीमत्–रक्कस बेद्दोरेगरेपर राज्य कर रहा था। उससे श्री–बेल्गोलके निवासी श्रीमत् अनन्तवीर्य्यय्यने पे[र्]ग्गदूर तथा नयी खाई प्राप्त की। अनन्तवीर्य्यय्य गोणसेन–पण्डित भट्टारकके शिष्य थे और ये वीरसेन–सिद्धान्त–देवके शिष्य थे। यह लेख चन्दणन्दियय्यका लिखा हुआ है।]

[EC, I, Coorg. ins., n° 4.]

१५५

श्रवण-बेल्गोला—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका]

१५६

श्रवण-बेल्गोला—कन्नड़ तथा तामिल।

[विना काल-निर्देशका]

१५७

श्रवण-बेल्गोला—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका]

[देखो जैनशिलालेखसंग्रह, भाग १]

१५८

विद्रे—कन्नड़

[शक ९०१=९७९ ई०]

[विद्रे (चेळूर परगना) में, तालावके व्यर्थ पड़े हुए बाँध-परके एक पाषाणपर]

स्वस्ति स(श)क–व्रर्ष ९०१ नेय प्रमातिक–संवत्सरद कार्त्तिक-मासदोळ् त्रिलोकचन्द्र-भटारर शिष्य रविचन्द्र- भटारर् संन्यसनं गेय्दु मुडिपिदर् कोण्डकुन्दान्वयद देसिग- गणद भानुकीर्त्ति-भटारर् परोक्षविनयं माडिसिदर्

[स्वस्ति । (उक्त मितिको), त्रिलोकचन्द्र-भटारके शिष्य रविचन्द्रभट्टार ने 'सन्यसन' धारण किया और मृत्युको प्राप्त हुए । कोण्डकुन्दान्वय तथा देसिग-गणके भानुकीर्त्ति-भटारने इनकी स्वर्गयात्राका यह स्मारक बनवाया ।]

[EC, XII, Gubbi tl. n° 57.]

१५९

वरुण—कन्नड़-भग्न

...९९...(काल लुप्त)=संभवतः लगभग ९८० ई०

[वरुण गाँवमें, बसवगुडीके सामनेके स्तम्भपर]

..................९९....स्य सकळ-समसेन्दु दर्म्म गेय्दु सन्यसद....

....निज-स्तिति..................

[मुनिव्रत धारण करके दिवंगत होनेवाले एक जैन यतिका स्मारक ।]

[EC, III, Mysore tl, n° 40.].

१६०

सौंदत्ति—कन्नड़

[शक ९०२=९८० ई०]

रट्टकुळान्वयनृपरुं पट्टद पतवर्म्म नेगळेनिप गावुण्डुगळुं विट्टर्जि-नेन्द्रपूजेगे नेट्टने वान्यंगळोळगे पों(दिद) कुळमं ॥ रट(ट्ट)र पट्टजिनालय किट्टळवादथ्वतोक्कलनुमतदिन्दं कोट्टर्जिनेन्द्रपूजेगे नेट्टने ....व्र(पं) ॥ दीपावळिय (प)र्वक्के देवर सोडरिंगे गाणद लेम्मा-नेण्णे ॥ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥

स्वस्ति समस्तभुवनाश्रयं श्रीप्रि(पृ)थ्वीवल्लभं महाराजाधि-राज-परमेश्वर-परमभट्टारकं सत्याश्रयकुळतिळकं चाळुक्य(क्या) भरणं श्रीमत्तैलपदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धियिं सलुत्तमिरे ।

तत्पादपद्मोपजीवि । समधिगतपंचमहाशब्दमहासामन्तं समरविजय-लक्ष्मीकान्तं वै(चै ?)सान्वयसरोजवनमार्तण्डं नुडिदंतेगण्डं हयवत्स-राजं रूपमनोजं परबळ-सूरेकारं वैरिवंगारं नरसं(शं)कमीमं चलदंकरामं गण्डरगण्डं वैरिभेरुण्डं प्रतिपन्नमन्दरं शरणागतव्रजपंजरं श्रीमत् शान्तिवर्म्मरसर वंशावतरमेन्तेन्दोडे [॥] श्रीमदमरेन्द्रविभवो-द्दामं संग्रामरामनूर्ज्जिततेजं भीमपराक्रमनेनिसिदनी महियोळ् पृथ्वीराम-ननुपरूपं ॥ तत्सुत ॥ आरूड(ढ)वत्सराजनुदारगुणं विनुतकन्दुका-दित्यं श्रीनारीकान्तं निर्ज्जितवैरिप्रजनेनसि पिट्टगं सले नेगर्द ॥ वृ ॥ अन्त-कनन्ते वन्दिदिरोळान्तजम(व)र्म्मन नोडिसुत्ते मारान्तोरनेकरं तविसि वस्तुगळं मदवारणंगळं कान्तेयरं तुरंगचयमं पिडिदित्तोडे मेच्चिराभयं दन्तियनित्तनन्तदुवे पेळ्दे पिट्टग निन्न गेल (ल्लु)मं ॥ तदग्रपत्नि ॥ वृ ॥ पोगळ्ललुम्बमप्प चरितं मिगे वण्णिसलब्जसंभवंगगणितमप्प रूपविभवं पतिभक्तियोळोन्दि सज्जनीकेगे नेलेयाद मान्तनद पेंपु समन्तळवट्ट नीजिकब्बरसिगे सन्दरुन्धति पेळ्ळ द्दोरेयेन्ददे दोस(ष) वल्लदे ॥ तत्तनूज । कं ॥ श्रीमदुदयाद्रिशिखरोद्दामोदयतपनविभवरूपं कीर्ति-श्रीमहिमातिशयं जयरामारमणं जितारि शान्तनृपाळं ॥ दयेयिन्दोळिपन तेळ्पिनिं गुणगणाळंकारदिं मार्ग्गनिर्ण्णयदिं तत्व(त्त्व)विचारदिं गमक-दिंदाहारभैषज्यसाभयशास्त्रामळदानदिन्दधिकनेन्दन्दोळिपनिं शान्ति-वर्म्मन विख्यातियनोन्दे नाळ्गियोळिल्ले वण्णिपं वण्णिपं ॥ तदग्रपत्नि ॥ श्रीवनिते ताने वन्दु महीवनितेगे तिळकमेनिसि शान्तन ललितश्रीवनि-तेयाद विभवमने बोगळवुदो चन्दिकब्बेयरसिय पेंप ।

यतितारकापरीतः कण्डूरगणोरुकन्धिवृद्धिकरः । वाहुवलिदेवचन्द्रो जिनसमयनभस्तले भाति ॥ व्याकरणतीक्ष्णदंष्ट्रस्सिद्धान्तनख(खः) प्रमाणकेसरभारः । वाहुवलिदेवसिंहं (हः) प्रवादिगजतीव्रमदहरस्सं-

जयते ॥ वृ ॥ अवनीपाळाननतश्रीपदकनळ्युगं तत्व(त्त्व)निर्ण्णि (र्णि)जराद्धान्तविदं चारित्ररत्नाकरनमळवच(चः)श्रीवधूकान्तनं-गोद्भवदर्प्पारण्यदावानळनुदितलसद्बोधसंशुद्धनेत्रं रविचन्द्रस्वामी भव्याम्बुजदिनपनवो (वों)त्राद्रिसद्वज्रपात ॥ कं ॥ कंडूर्गणाब्धिचन्द्रनखण्डितदुतपोविभासि खण्डितमदनं दिण्डीरपिण्डसुरवेदण्डयशः पिण्डनर्हणन्दिमुनीन्द्र ॥ वृ ॥ कन्तुराजगजेन्द्रकेसरि भव्यलोकसुखाकरं कान्तवाग्वनिताननोरमनुग्रवीरतपोनयं शान्तमूर्ति दिगंतकीर्तिविराजितं शुभचन्द्रसिद्धान्तदेवनिळेश्वरवंदितपादपंकरुहद्वयं ॥ क ॥ नुतयापनीयसंघप्रतीतकण्डूर्गणाब्धिचन्द्रमरेन्दीं क्षितिवळे(ळ)यं पोगळ्पिन मुन्नतिवेत्तम्मौनिदेवदिव्यनुनींद्र ॥ जितकर्म्मारातिभूपाळकुळतिळकाळंकृतांघ्रिद्वयं राजितभव्यव्रातपंकेरुहवनदिनपं चारि(रु)चारित्रमार्गां-चितसूक्त (क्तं) शब्दविद्यागमकमळभवं श्रीप्रभाचन्द्रधे (दे) वव्र (व्र) ति पट्टतर्काकळंकोंगेयेने नेगर्दं । जैनमार्ग्गाब्धिचन्द्र [॥]

स्वस्ति स (श)कनृपकाळातीतसंवत्सरशतंगळ् ९०२ नेय विक्रम-संवत्सरद पौषशुद्ध दशमी बृहस्पतिवारदन्दिनुत्तरायण शं(सं)क्रमणदोळ् बाहुबलिभट्टारककालं कच्चि शान्तिवर्म्मरसं सुगन्धवर्त्तियल् तन्न माडिसिद वसदिगा बूर तन्न सीवटद पोलदोळगे सर्व्वबाधापरिहार-मागि बिट्ट मत्तर्न्नूरय्वत्तदर चतुराघाटद सीमेयावुदेन्दडे [।] तद्दर पोलद बदगिवोलद सन्दिनलीशान्यद गुड्ड । अल्लिं तेंकलेळेयकेरेय बिळिय कल्लु अल्लि पडुवल् सीवट्टद सन्दिनोळ् नैरि (ऋ) तिय गुड्ड । अल्लि वडगल् सीवट्टद तद्दरपोलद संदिनल् वायव्यद गुड्डे [॥] मत्तं नीजियब्बरसि तन्न मगं शान्तिवर्म्मरसं माडिसिद पिरिय वसदिगे तन्न सीवटं पिरियपस(सु)ण्डिगे पोद बट्टेयिं तेंक काडियूर पोलद····नू

रय्वत्तुं म(त्त)र्क्केय्यं नमस्यमागि बिट्टला भूमिय चतुस्सी····र कुकुम्बा[ळ] पोलद सन्दिनलीशान्यद गुड्डे । अल्लि तेंक··· कुकुंबाळ सुगन्ध[व]र्त्तिय पोलद सन्दिनलाग्नेयद [गुड्डे ।]····गिनकूद···· गिनोळ[गे नै]रि[ऋ]तिय गु [ड्डे ।]········ वायव्य [द गु] ड्डे । इन्ति [नि] तु भूमियि····[हं]वीर्व्वरुं प्र[तिपाळि]सुवर [।।] मा····[य] मुना साग[र] दवर्गं ष्डन् भु········वन्धरान्ध···········

[यह लेख भी उसी जैनमन्दिरसे लिया गया है जिसमेंसे लेख नं० १३० । यह पृथ्वीरामके पुत्र, प्रपौत्र तथा उनकी पत्नियोंके नाम बताता है । पृथ्वीरामके पुत्र पिट्टगके सम्बन्धमें एक ऐतिहासिक तथ्य वर्णित है, पर मि० जे. एफ. फ्लीट इस बातका निश्चय नहीं कर सके कि यह अजवर्मा कौन था जिसे पिट्टगने जीता था । लेखमें पिट्टगके प्रपौत्र शान्त या शान्तिवर्माके १५० 'मत्तर' भूमिके दानका उल्लेख है, जिसे उसने ९०२ शकमें किया था[1] । इतना ही दान शान्तिवर्माकी माता नीजिकब्बे या नीजियब्बेने सुगन्धवर्त्तिमें बनवाये हुए जैनमन्दिरको किया ।]

[JB, X, p. 171–172, a; p. 204–207, t.; p. 208–212, tr. (ins. n° 3.)]

१६१

मथुरा,—संस्कृत

[सं० १०३८=९८१ ई०]

[तीर्थंकरोंकी विशाल पद्मासनस्थ मूर्तियाँ]

इसका लेख साफ-साफ पढ़नेमें नहीं आता है । कुछ भाग पढ़ा जाता है, कुछ नहीं । परंतु लेख सिर्फ दो पंक्तियोंका है । यह मूर्ति या लेख सिर्फ कालकी दृष्टिसे ध्यानगम्य है । डा० फूहररके मतसे यह लेख बताता है कि इस मूर्तिका निर्माण मथुराके श्वेताम्बर संप्रदायकी तरफसे हुआ था[2] ।

---

१ मूलमें "शक राजा कालके ९०२ वर्ष बीतने पर" है । 2 "Progress eport" for 1890-91, p. 16.

ये दोनों सम्भवत् (विशाल) मूर्त्तियाँ (विक्रम सं० १०३८ और ११३४ [शि० ले० नं. २११]) दिसम्बर १८८९ में, श्वेताम्बर संप्रदायके मालूम पड़नेवाले मध्यवर्ती मन्दिरके पास मिली थीं।

महमूद गजनवी (गजनीका रहनेवाला) के द्वारा मथुराका विनाश ई० सन् १०१८ में हुआ। उक्त प्रतिमा (सं० १०३८=९८१ ई० की) इस विनाशसे पहिलेकी स्थापित हुई हैं और शि. ले. नं. २११ की इस घटनाके करीब ६० साल बाद। आक्रामकने चाहे-जितना विनाश किया हो, लेकिन यह स्पष्ट है कि जैन लोगोंके पास उनके पवित्र स्थान विना किसी ज्यादा बाधाके बने रहे।]

[Antiquities of Mathura (ASI, XX), p. 53, t.]

१६२

श्रवणबेल्गोला—कन्नड़-भग्न।

[वर्ष चित्रभानु=९४२ ई० (ल. राइस)]

[जैन शि० ले० सं०, भाग १]

१६३

श्रवणबेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक ९०४=९८२ ई०]

[जैन शि० ले० सं०, भा० १]

१६४

हेमावती—कन्नड़

[शक ९०४=९८२ ई०]

[हेमावतीमें, पूर्वकी तरफके खेतमें पाषाणपर]

उद्-वळमेळेत्ररेम्बुदे ।
विद्दं मुन्नल्लि कडुपिनोळ् बहु-विधदिन्द् ।
उद्-वळमेळ्दु मुरिगुम् ।
विद्दमेनल् वलव्द पोरगनेळेव-चेडङ्गम् ॥

एरकमल्लदे पोल्लदागेरगि दोरेकाण्मे कोळ्व तेरनह्लदे ।
नेरेये वरल् तक्कडियल्लि विसुवल्लिये बिस अरिदयिल्ल ।
परियना दिट्टि मुरिवल्लि कडुपिनोऴ् मुरिदयिल्लिल्लिय विन्नणवन् ।
नेरेये कल्पदे वीरर वीरनं गिडेगळाभरणनं नेडिकल्ल ॥
आसुवनुं कूसुवनुम् ।
वीसुवनुं गडेय नेगळ्द तक्कडियोळ्ेनुत्त् ।
आसदेयुं कुक्कदेयुम् ।
बीसन्देयु विद मेळ्ेगुमेळेव-बेडङ्गम् ॥
एरगळरियदे मेण्टुकम्मगुळ्दुं वरलणमरियदे तप्पा पिन्दम् ।
तेरेननरियदे भागमनिक्कियुं मूरेडेगल्लदे कट्टाडियुं मुरिये पायिसिद ।
तुरुय कोन्दु धरेगेडेतेगे गेडेयिवनेनिसदं ।
नेरेये कडु-जाणनेनिसल्के बर्कुमे गडेगळाभरणन कल्लदन्नम् ॥
कालगळ कय्गळ तुरगद ।
कोलगळ तिणिवुगळोळल्लि वञ्चिसुतेळेगुम् ।
गेल्गुमेने नेगळ्द मार्ग्गदे ।
गेल्गुमे वणेदल्लि **कीर्त्ति-नारायणनम्** ॥

वनधि-नभो-निधि-प्रमित-संख्य-स(श)कावनिपाळ-काळमं ।
नेनेयिसे चित्रभानु परिवर्त्तिसे चैत्र-सितेतराष्टमी-
दिन-युत-भौमवारदोळनाकुळ-चित्तदे नोन्तु ताळ्दिदम् ।
जन-नुत**निन्द्र-राज**नखिळामर-राज-महा-विभूतियम् ॥

[एरेव-बेडङ्गम्, कीर्ति-नारायणके युद्धमें शौर्य्यके कार्योंका
। (उक्त मितिको) अनाकुल चित्तसे व्रतोंको पालते हुए, प्रसिद्ध

इन्द्रराजने स्वर्गकी विभूति पाई-(अर्थात् मर गये)[1] ।]

[EC, XII, Sira tl., n° 27.]

१६५

श्रवण-बेलगोला—संस्कृत

[विना काल-निर्देशका]

[जै. शि. ले. सं., भा. १.]

१६६

अङ्गडि—संस्कृत तथा कन्नड्-भग्न

[काल लुप्त, पर लगभग ९९० ई० का]

[अङ्गडि (गोणीबीडु परगना) में, बसदिके पासके पाषाणपर]

(सामने)····················सुद पञ्चमी-बृहस्पति वारदन्दु स्वस्ति····यम-स्वाध्याय-ध्यान-मौनानुष्ठान-परायणरप्प द्रविळ-संघद···· अद श्री-कोण्डकुन्दान्वयद त्रिकालमौनि-भट्टारक शिष्यर् श्रीमदिरिव-बेडेङ्ग····ल्न गुरुगळ् विमलचन्द्र-पण्डित-देवर् सन्यासन-विधियिं मुडिपि मुक्तियनेय्दिदर् ॥ (पीछे) श्रुत-विमळादिचन्द्र················ श्रीमनु················पण्डिताह्वयस्तु-विमळचन्द्र-मुनिः ॥

नमो विमळचन्द्राय कळाकळित-मूर्त्तये ।

सत्त्वात् सद्-बुधसेव्याय शान्तामृतमयात्मने ॥

श्री-विमळचन्द्र-पण्डित-देवर गुड्डी हवुम्व्वेया तङ्ग शान्तियव्वे तम्म गुरुगळ्गे परोक्ष-विनयं गेय्दर् ॥

[(साधु-गुणोंसहित), द्रविल-संघ, कोण्डकुन्दान्वय तथा पुस्तक-गच्छके त्रिकालमौनि-भट्टारकके शिष्य,—श्रीमद् ईरिव-बेडेङ्ग···के गुरु,–

---

१ इसका काल और अंतिमावस्थाका कथन वही है जो श्रवणबेलगोला नं० ५७ के शिलालेखमें है। इन्द्रराज अन्तिम राष्ट्रकूट राजा था।

विमलचन्द्र-पण्डितदेवने, संन्यास-विधिसे मरण कर, मुक्ति प्राप्त की। पण्डित पदके साथ विमलचन्द्रमुनिकी प्रशंसा।

विमलचन्द्र-पण्डित-देवकी गृहस्थ शिष्या हवुम्बेकी छोटी बहिन शान्तियक्कने अपने गुरुके स्वर्गवासके उपलक्ष्यमें स्मारक खड़ा किया।]

[EC, VI, Mudgere tl., n° 11]

१६७

पञ्चपाण्डवमलै—तामिल

[काल लगभग ९९२ ई०]

श्री

१ स्वस्ति [।।]

२ [को] विराजराज [क] ` [सर] 'व [न्] मर्कु याण्डु ८ आ [व]दुपड्डुवूर्क[ो]ट्टत्तुप्पेरुन्-तिमिरिनाट्टुत्तिरुप्प[ा]न्मलैप्पो-

३ गमागिय कूरग[न्प्]ाडि [इ] रैयिलि प[ऴ्]ळ्ळिच्चन्दत्ते की [ऴ्]-प्-[प]ग[ला]ड[इ]लाडर[ा]जर्गळ् कर्पूर-विलै को [ण्डु इ] द्द[मे्]मङ्क

४ डुप्पोगि[न्]रडेन् [रु उ]डैयार् इला[ड]राजर् पु[ग]ळ्वि-प्पत्र्-[ग] ण्डर् मग[ना]र् [वी]रशोळर् तिरु[प्पान्]मलैदेवरै-त्तिरुव-

५ [डित्तो]ळु [देळुन्]द[रु]ळि इ [रु]ळक इ[न्]इ देवियार् इलाडमह[ा]देवि[य]ार् कर्पूर-विलैयुमन्नियाा[य]त्रात्तद[ण्ड]व्विरै [यु] म [ो]-

६ ळ्न्द[रुळ वे]ण्डुमेन्रु विण्णप्पञ्जेय् [य उ]डै[या]र् [वी] र-शोळर् कर्पूर-विलैयुमन्नियाा[य] वात्रदण्[ड]विरै-

७ युमो [ळ्] ि ञ्जोमेन्ररुळ्ळेय्य अरि[य्]ऊर् किळ [वन्]। वी] र-शोळवि-लाड-प्पेर [र्] ` य[नु]डैयार् [क] न्मियेया]-

८ णत्तियागविट्ठु[1] कर्पूर-विलैयुमन्नियाय-[वा] वदण्ड[व्]-इरैयुमोळि ञ्जु शासनांञ्चेय्द-पडि [।] इद्दु [व]-

९ ल [द्] उ कर्पूर-विलैयुमन्नियाय-वावदण्डव्-इरैयुमिप्पळ्ळिच्चन्द-त्तैकोळ्[व्]न् गङ्गैयि-

१० डै [कुमरियु] इडैच्चेय्दार् शे[यु] द पा [व]ङ्कोळ्वारिदुवल्लदिप्प-ळ्ळिच्चन्दत्तै केडुप्पार वल्लव[रै]

११ ····[न]रु[व] [।] [इ]-द्द [र्मंद] तै [र]क्षिप्पान् पादधूळियू एन्-[रलै] मे[ल]न [।] अर[म]रवर्क अरमल्ल तु[ण] यिछै ॥

[यह शिलालेख तमिल गद्यकी ११ पंक्तियोंका है। लेखकी दूसरी पंक्तिमें राजराज-केशरीवर्मन्के राज्यका ८ वां साल इसका काल बताया गया है। प्रस्तुत लेख महाराजा राजराज चोलके राज्य-कालका है। यह '९८४-८५ ई० में गद्दीपर बैठे थे। इस लेखमें किसी विजयका वर्णन नहीं है। इस शिलालेखके नीचे एक पशु बनाया गया है, वह चीता होना चाहिये, क्योंकि चोल राजाओंका वह चिह्न रहा है।

लेखमें (पंक्ति ३) लाटराज वीरचोलका एक शासन है। वह चोल राजा राजराजका कोई अधीनस्थ राजा होना चाहिये, क्योंकि राज्यकाल उसीका (राजराजका) दिया हुआ है। लाटराज वीर-चोल पुगळिवप्पवर गण्डका पुत्र था। वीर-चोल और उनके पूर्वजोंके नामके पहले लाटराज ऐसा विरुद लगा रहनेसे मालूम पड़ता है कि ये लोग पहले किसी समय लाट (गुजरात) से आये थे।

यह अभिलेख इस बातका उल्लेख करता है कि अपनी रानीकी प्रार्थना पर वीर-चोलने तिरुप्पानमलैके देवताके लिये (पं० ४) कूरगन्पाडि गाँवसे कुछ आमदनी बाँध दी थी।

यद्यपि चैत्यालयका नाम सिर्फ 'तिरुप्पानमलैका देवता' दिया गया है, परंतु 'पळ्ळिचन्दम्' इस शब्दसे मालूम पड़ता है कि यह कोई जैन

---

१ 'इन्द' पढ़ो।

चैत्यालय होना चाहिये। शिलालेख नं० ११५ से भी यह निर्णीत होता है। उसमें यक्षिणी और नागनन्दि गुरुकी प्रतिमा है। यद्यपि यक्षिणियोंको बौद्ध और जैन दोनों ही मानते हैं, परन्तु नागनन्दि यह जैन नाम है।]

लेखमें कूरगम्पाडिके 'पल्लिचन्दं' की आमदनी दो तरहकी बताई गई है:- एक तो कर्पूरविलै (कपूरके खर्च) की, दूसरी 'अन्नियाय वावदण्डविरै' की। कपूरखर्चकी बात तो ठीक समझमें आ जाती है, लेकिन उत्तरकी आमदनी 'अन्नियाय-वावदण्डविरै' का क्या अर्थ है, सो स्पष्ट नहीं है। इसके भी दो अर्थ किये जाते हैं: एक तो अन्याय वावदण्ड (जुलाहोंका करघा) इरै (कर)। इसका अर्थ होगा 'अनधिकृत करघोंपरका कर' (The tax on unauthorised looms)। दूसरा अर्थ इसका यह हो सकता है अन्याय+आव+दण्ड+इरै। 'आव'का अर्थ होता है वाणोंका तूणीर। इसका तात्पर्य यह है कि विना अधिकारपत्र पाये जो धनुपवाणका प्रयोग करते थे उनपर जुर्माना (दण्ड) किया जाता था।

[EI, IV. n° 14, B.]

१६८

श्रवण-वेल्गोला—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका]

[जै. शि. ले. सं., भा. १.]

१६९

कुम्बरहल्लि—कन्नड़—भग्न

[विना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग १००० ई०]

[कुम्बरहल्लि (कृष्णहल्लि परगना) में, वसवगुडिकी दक्षिणी दीवालपर]

स्वस्ति श्रीमदजितसेनपण्डितदेवर शिष्यण ना···क पुणि-समय

[इसमें अजितसेन-पण्डितके शिष्यका वर्णन है।]

[EC, III, Mysore tL, n° 31.]

१७०

मुत्सन्द्र—कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग सन् १००० ई० का]

[मुत्सन्द्र (हुलवलापुर परगना) में, गाँवके पूर्वमें एक गोल बटिया (Boulder) पर]

श्रीमतु कलुकर्रे-नाड् आळ्वरु चोक-जिनालयके मत्तिकेरॅय नट्ट कळ चतुस्सीमान्तरेषु विट्ट दत्ति इदं किडिसिदवं कविले ब्राह्मणुव कोन्द ब्रह्म······एय्दुगु

[कलुकर्रे-नाड्के शासकने चोक जिनालयके लिये मत्तिकेरॅका दान दिया ।]

[EC, IV, Nagamangala tl, n° 92.]

१७१

तिरुमलै—(नार्थ अर्काट)—तामिल

[१००५ ई०]

१ स्वस्ति श्री [।।] तिरुमगळ् पोलप्पेरु निलच्चे-

२ ल्वियुन् तनक्के युरिमै पूण्डमै मनक्कोळ क्कान्दळूर् चालै कलम-रुत्तरुळि वेङ्गैनाडुङ् गङ्गपाडियु

३ नुळम्बपाडियु न्तडिगै पाडियुङ् कुडमलैनाडुङ् कोल्लमुङ् कलिङ्गमुं एण्डिशै पुगळ्तर विळमण्डलमुं तिण्डिरल् वेन्रि त-

४ ण्डाऱ्कोण्ड[चे]त्तिल् वळरुळि एल्लायाण्डुं तोळुतेळ विळङ्गुयाण्डे चेळिआरैच्चेचु कोळ् श्रीकोवि-

५ राज इराजकेशरिपन्मरान श्रीइराजइराजदेवर्कु याण्डु २१ आवदु अलैपुरियुं पुनद पोन्नि आरुडैय चोळन्

६ अरुमोळिक्कु याण्डु इरुपत्तोन्रावदेन्रक्कले पुरियुमतिनिपुणन् वेण् किळान्

७ गणिशेखरमरुपोर्च्चुरियन्रन् नामत्ताल् वामनिलै निरूरकुड्-

८ कलिङ्चिट्टु नीमिर् वैग्गैमलैक्कु नीडुलि इरुमरुङ्गुं नेल् विळैय-

९ कण्डोन् कुलै पुरियुं पडै अरचर कोण्डाडुं पादन गुणवीरमा-
मुनिवन्

१० कुलिर् वैग्गैक्कोवेय् [॥]

[यह अभिलेख कोविराजाराजकेसरिवर्मन्, उर्फ राजराज-देवके २१ वें वर्षमें अभिलिखित है, तथा पोन्नि, अर्थात्, कावेरी नदीके स्वामी 'शोरन् अरुमोरी' के इक्कीसवें वर्ष में (शब्दोंमें)।

लेख बताता है कि किसी गुणवीरमामुनिवन्ने एक नहर या मोरी (Sluice) गणिशेखर-मरु-पोर्चुरियन् नामके उपाध्यायके नामसे बनवाई थी। तिरुमलै चट्टानका उल्लेख "वैग्गैमलै" नामसे है।]

[South Indian Ins., I, n° 66 (p. 94–95), t. & tr.]

१७२

बेलूरु—कन्नड़-भग्न

[शक ९४४=१०२२ ई०]

[बेलूरु (कोत्तचि परगने)में, तालाबपर दुर्गा-देवीके पीछेके पाषाणपर]

" स्वस्ति समस्त-रिपु-नृप-कुम्भि-कुम्भ-दळन-पञ्चास्य समुदित-श्रीम····
ळ-विमुक्त-चोळ-भूपाळ····लित····जित-वीर-लक्ष्मी आश्रित-भक्त-मला-
पकर्षण भूमिसञ्चरण जय-मूल-स्तम्भ श्रीमद् अ····गङ्गमण्डलेश्वर प्रभु-
पद्म-युग्माशोक-भोगिकाश्रित-भ्रमद्-भ्रमर जित-रिपु संसित-समर-प्रताप
राज्य-भार-धुरन्धरं अमात्य-समिति-विराजमानम् सत्यत्व-नाभि-कानीनम्
समर-जित-भूप-जीव-प्रदनुं अतिपूताचरणम् रिपु-खरकिरणम्·····
····· सौच-गाङ्गेयं शरणागत-वज्र-पञ्जरम् रिपु-कञ्ज-कुञ्जरम्
तन्त्र-रक्षामणि मन्त्री-चिन्तामणि विनेय-विळासम् श्रीमत्-पेग्गडे-हासम्

विष्व-विस-हासद् ष्पतिहिताभरणम् ॥ शक-नृप-कालातीतसंवत्सर-शतङ्गल् ९४४ नेय दुर्म्मुखि (दुर्म्मति) संवत्सरद फाल्गुण-मास-सुद्ध-पञ्चमी-सोमवार पुनर्व्वसु-नक्षत्रदन्दु गङ्ग-पेर्म्मनडिगलु कर्न्नाटनालुत्त-मिरे तम्म ख-दोरक्ळ्दन्दुं……नव जिनालयक्के पेर्म्मनडि जीवितम् ……द् वलोर-कट्टल्लाळ्वाद केरेय मेट्टुकं वोय्सि कट्टेय कट्टिसि तूवनिरसि मुन्नं तव….कोळग मण्णु विट्ट दोन्द…केर्रेगे……मुमं विट्ट निदनळिद् कोटि-कविलेयं ब्राह्मणरुं काशियुमनल्दकिरे

बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः।
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥

[इस लेखमें 'पेर्गडे-हासम्' के द्वारा, उक्त मितिको, वलोर-कट्टके गहरे तालाबकी सीढ़ियोंके बनवाने, बांधके निर्माण कराने, नहर या मोरीके बनाये जाने, तथा…………एक 'कोलग' भूमिके देनेका जिक्र है। उसके समयमें कर्ण्णाट (कर्नाटक) पर गङ्ग पेर्म्मनडि शासन कर रहे थे। यह पुण्यकार्य पेर्म्मनडिके दीर्घजीवनकी कामनाके लिये उसकी सरकारके स्थानमें एक नये जिनालयके रूपमें किया गया था।]

[EC, III, Mandya IL, n° 78]

१७३

मथुरा—संस्कृत

[संवत् १०८०=१०२३ ई० सन्]

१ ओ श्रीजिनदेवः सूरिस्तदनु श्रीभावदेवनामाभूत्।
आचार्यविजयसिङ्ग-
२ स्तच्छिष्यस्तेन च प्रोक्तैः ॥ [१ ॥]
सुश्रावकैर्नवग्रामस्थानादिस्थैं स्वसक्तितः।

---

१ संवत्सर 'दुर्म्मुखि' दिया हुआ है: यह स्पष्टतः गल्तीसे लिखा गया है। इसकी जगह 'दुर्म्मति' होना चाहिये जो शक ९४४ से मेल खाता है।

३ वर्द्धमानश्चतुर्बिंबः कारितोयं सभक्तिभिः ॥ [॥ २]

संवत्सरे १०८० थंभकप-

४ प्पकाभ्यां घटितः ॥ ओं[१]

अनुवादः— ॐ। श्री जिनदेवसूरि हुए; उसके बाद श्री भावदेव हुए। उनके शिष्य आचार्य विजयसिङ्ग (विजयसिंह) हैं। उनके उपदेशसे नवग्राम, स्थान आदि (शहरों) में रहनेवाले सुश्रावकोंने स्वशक्ति और स्वभक्तिके साथ वर्धमानकी चतुर्विंब (सर्वतोभद्र) प्रतिमाका निर्माण करवाया। यह प्रतिमा १०८० [विक्रम] संवत्में थंभक और पप्पक शिल्पियोंके द्वारा बनकर तैय्यार हुई थी। ओं ॥

[EI, II, n° XIV, n° 41]

१७४

तिरुमलै - तामिल

[१०२३ ई०]

१ स्वस्ति श्री [।।] तिरुमन्नि वळरविरु निलमडन्दैयुं पोर्च्चयप्पावैयुत्र्
चीर्त्तनिचेल्वियुन् तन् पेरुन् देवियराकि इन्पुरु नेडु तियल्
ऊळियुळ् इडैतु-

२ रैनाडुन्तुडर् वनवेलिप्पडर् वनवासियुत्र् चुळ्ळिच्चुळ् मदिट्को-
ळ्ळिप्पाकैयु नण्णरुकरु मुरण् मण्णैक्कडकमुं पोरु कडल्
ईळत्तरशर् तमुडियुं आङ्ग-

३ वर् देवियरोङ्केळिन् मुडियुमुन्नवर् पक्कल्त्तेन्नवर् वैत्त सुन्दर-
मुडियुं इन्दिरनारमुन्तेण्डिरै ईळमण्डलमुळुवदुं एरि पडैक्के-
रळर्

१ यह लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायका मालूम पड़ता है।

४ मुरैमैयिऱ्शुड्कुलतनमाक्रिय पल्द् पुगळ् मुडियुञ्चेङ्कादिऱ् मालैयुञ् चङ्कादिऱ् वेलैत्तोल् पेरुङ्कावऱ् पल पळन्तिवुञ् चेरुविऱ् चेन-

५ निल् इरुपत्तोर कालैत्तुक्कळ् कट्ट परशुरामन् मेत्रुञ् शान्ति-मत्तिवत्तरण् करुति इरुत्तिय चेन् पोशिरुत्तकु मुडियुं भयङ्कोडु पळि निग मुशाङ्गियिल् मु-

६ ढुकिट्टोळित्त जयसिङ्गन् अळप्पेरुं पुगळोडुं पीडियल् इरट्ट-पाडि एळरै इलक्कमु नवनेदिकुल पेरुमलैकलुं विक्रिरमवीरर् शक्करकोट्टमु-

७ मुदिरपडवरुं मदुरमण्डलमुं कामिडैवळ्य नामणैकोणमुं वेङ्गिलैवीरर् पञ्चप्पळ्ळियुं पाचुडैप्पळनन् माशुणिदेशमुं अयर्वि-

८ ल् वण् किर्त्तियातिनगर वयिऱ् चन्दिरन् रोल् कुलत्तिरतनै विळैयमरुकळत्तुक्किळैयोडुं पिडित्तुप्पल तनत्तोडु निरै कुल तनक्कुवै-

९ शुञ् चिट्टरुञ्चोरि निळैयोड्डविषयमुं भूशुरर् चेर नल्कोशलै-नाडुन्तन्मपालनै वेन् मुनैयळित्तु वण्डुरै चोलैत्तण्डयुत्तियु-मिरण

१० शूरनै मूरनूर चाकि त्तिकगे किर्त्तिकणलाडमुङ् गोविन्द-चन्दन् माविळित्तोडत्तङ्गाद चारल् वङ्गाळदेशमुन्तोडु काडरशङ्गुकोट्टन् महीपालनै

११ वेञ्जम वळाकत्तञ्जुवित्तरुळि ओण्टिरल् यानैयुं पेण्डिर् पण्डार-मुनैचिल नेडुङ्काडलुत्तिरलाडमुं वेरि मणर्रित्तचेरि पुनरगङ्गै युमाप्-

१२ प्पोरु तण्डाऱ्कोण्ड कोप्परकेशरिपन्मरान उडैयाऱ् श्रीराजेन्द्रचोळदेवऱ्कु याण्डु १२ आवदु जयङ्गोण्डचोळमण्डलत्तु पङ्गळनाट्टु नडुविल्

१३ वगैमुगैनाट्टुप्पळ्ळिचन्दं वैगवूऱ् त्तिरुमलै श्रीकुन्दवैजिनालयत्तु देवऱ्कु प्पेरुंबाणपाडिक्करैवळिमळ्ळियूऱ् इरुक्कुंव्या-

१४ पारि नन्नप्पयन् मणवाट्टि चामुण्डप्पै वैत्त तिरुनन्दाविळक्कु [॥] ओन्रिनुक्कुक्काशु इरुपदुं तिरुवमुदुक्कु वैत्त काशु पत्तुम् [॥]

[यह अभिलेख कोपरकेसरिवर्मन्, उर्फ उडैयाऱ् राजेन्द्र-चोल-देवके बारहवें वर्षका है। इसके आरम्भमें उन सभी देशोंके नाम दिये हुए हैं जिनको इस राजाने जीता था। उनमें हमें ७॥ लाख भूमिकरवाले 'इरट्टपाडि' का पता चलता है जिसे राजेन्द्रचोलने जयसिंहसे लिया था। इस देशको उन्होंने अपने राज्यके ७ वें और १० वें वर्षके मध्यमें जीता होगा। इस अभिलेखका जयसिंह 'पश्चिमी चालुक्य राजा जयसिंह तृतीय' (लगभग शक ९४० से लगभग ९६४ तक) के सिवाय और कोई नहीं हो सकता। जब कि राजेन्द्र-चोल और जयसिंह तृतीय दोनों एक-दूसरेको जीतनेकी डींग मारते हैं, तब हमें यह मान लेना चाहिये कि या तो सफलता दोनोंको क्रमशः मिली होगी, या चिर विजय किसीको भी नहीं मिली होगी।

दूसरे दो देश, जिन्हें राजेन्द्र-चोलका जीता हुआ कहा जाता है, 'इडैतुरैनाडु' और 'वनवासि' हैं। पहला 'ईडतोरे' देश है, जोकि मैसूर जिलेके एक तालुकेका हेड-क्वार्टर है, दूसरा बम्बई प्रान्तके 'नॉर्थ केनारा' जिलेका 'वनवासि' है।

"कोल्लिप्पाकै" मि० फ्लीटके अनुसार, पश्चिमी चालुक्य राजा जयसिंह तृतीयकी राजधानियोंमेंसे एक था।

'ईरन्' या 'ईर-मण्डलम्' से मतलब सीलोन (लङ्का) से है। तेन्न-वन्='दक्षिणका राजा' से प्रयोजन पाण्ड्य राजासे है। उसके विषयमें अभिलेख कहता है कि उसने पहिले 'सुन्दर' का मुकुट सीलोनके राजाको दे दिया था जिससे राजेन्द्र-चोलने पुनः वह सुन्दरका मुकुट ले लिया। वर्तमान लेखमें 'सुन्दरका मुकुट' से मतलब 'पाण्ड्य राजाका मुकुट' मालूम पड़ता है। यहाँ 'सुन्दर' कोई पाण्डय-वंशका राजा मालूम पड़ता है। उसका नाम लेखके कर्त्ताने नहीं दिया और न सीलोनके राजाका नाम जिसे राजेन्द्र-चोलने जीता था। आगे लेख यह भी बताता है कि राजेन्द्र-चोलने 'केरळ' अर्थात् मलबारके राजाको जीता था। उसने 'शक्कर-कोट्टम्' के राजा विक्रम-वीरको भी हराया था। लेखका 'मदुरा-मण्डलम्' पाण्ड्य देश है, जिसकी राजधानी मदुरा थी। 'ओड्ड-विषय' उड़ीसा है। 'कोशलैनाडु' दक्षिण कोसल है, जो जनरल कनिंघमके अनुसार, महानदी और इसकी सहायक नदियोंकी ऊपरकी घाटी है। 'तक्कणलाडम्' और 'उत्तिरलाडम्' से मतलब क्रमशः दक्षिणी और उत्तरी लाट (गुजरात) से है। पहला किसी 'रणशूर' से लिया गया था। आगे बताया जाता है कि राजेन्द्र चोलने 'वङ्गालदेश' अर्थात् वङ्गाल को किसी गोविन्दचन्द्रसे जीतकर उसका विस्तार गङ्गातक किया था। शेष देश और राजाओंके नाम, ई हुल्श (E. Hultzsch) कहते हैं कि, वे पहचान नहीं सके।

लेखमें तिरुमलै, अर्थात् 'पवित्र पहाड़' का वर्णन है, और वह इसके ऊपरके मन्दिरको जिसे 'कुन्दवै-जिनालय' कहा गया है, दिये गये दानका उल्लेख करता है। यह 'कुन्दवै' कौन थी, इसके विषयमें ऐतिहासिकोंके दो मत हैं।

इस शिलालेखके अनुसार, तिरुमलै पहाड़की तलहटीमें जो गाँव है उसका नाम 'वेंगवूर्' है। यह 'मुगैनाडु' का है, जो 'जयङ्कोण्ड-चोल मण्डलम्' के 'पङ्गळनाडु' का एक डिवीजन (भाग) है।

[South Indian Ins., I, n° 67 (p. 95-99)

१७५

चिक्क-हनसोगे—संस्कृत

[विना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग १०२५ ई० का]

[चिक्क-हनसोगे (हनसोगे परगना)में, जिन-बस्तिके दरवाजेके ऊपर]

(ग्रन्थ और तामिल अक्षर)

श्री-राजेन्द्र-चोळन जिनालयं देशिगगणं बसदि पुस्तक-गच्छम्

[राजेन्द्र-चोळ जैनमन्दिर, देशि-गण और पुस्तक-गच्छकी बसदि]

[EC, IV, Yedatore tl., n° 21]

१७६

खजुराहो—संस्कृत

(सं० १०८५=१०२८ ई०)

संवत् १०८५ । श्रीमत् आचार्य पुत्र श्री

ठाकुर श्रीं देवधर सुत । श्री सिवि

श्री चन्द्रयदेवः श्री शान्तिनाथस्य प्रतिमा कारी ।

[इस लेखमें स्थापित प्रतिमाका नाम शान्तिनाथ है, सेतनाथ नहीं, जैसा कि लोगोंमें प्रसिद्ध है। सम्वत् (विक्रम) भी साफ १०८५ दिया हुआ है।]

[A. Cunningham, Reports, xx I. p, 61.]

१७७

मुल्लूर—संस्कृत

[विना काल-निर्देशका । लगभग १०३० ई० (लू० राइस) ।]

[मुल्लूरमें, बस्ति मन्दिरमें शान्तीश्वर बस्तिके सामने पादद कल्लु पर]

गुणसेन-पण्डितस्य गुरोः पुष्पसेन-सिद्धान्त-देवस्य श्री-पादम् ।

[गुणसेन-पण्डितके गुरु पुष्पसेन-सिद्धान्त-देवके पवित्र पदचिह्न या पादुकाएँ ।]

[EC, IX, Coorge tl., n° 41]

१७८

अङ्गडि—कन्नड़–भग्न

[विना काल-निर्देशका, पर संभवतः लगभग १०४० (?) ई०
(लू० राइस)।]

[अङ्गडि (गोणीबीडु परगना) में, हरमक्कि दोड्ड-डडवेसें पाषाणपर]

.................राज्यं गेये....द्रविणान्वयद मूल-सं.........

...पण्डित...............तु तर्कचाळितामा....जलधि-यशो...कुतू-
हल...शय वज्रपाणि पण्डित-चरण ॥ एनिसि सले गङ्गवाडिय।
मुनि-वररिं राजमल्ल-भूपालकनीमनु-नीति-मार्गनभयं। जन-पति-सम्य-
क्त्व-सार-नृपतिय गुरुगळ् ॥ वृ ॥ इरदापन्निगळङ्गळिं तळ...व्यक्त
हो....। दुरितारण्यमनेय्दे सुट्टु सोसवूरोळ् विळ्द कालान्तदोळ्। ....
रे सन्यास-विधानादें मुडिपि पूज्यं वज्रपाणि-व्रतीश्वररत्युत्तम-मुक्तियं
पडेदरेम् पुण्यकत्तर् नो.... ॥

(बायीं ओर)..............रविकीर्तिमुनीन्द्रनेन्दु पट्टळियेये
पेळदेनेळ्व कल्नेले-देवर साहसोक्तियम् ॥ श्रीमत्-कल्नेले-देवर्त्तम्म
गुरुगळ्गे निषिधिगेयं माडिसिदर् मङ्गळ

[द्रविणान्वय, मूलसंघके...पण्डितके शिष्य वज्रपाणि-पण्डितके चरणोंमें
जब...राज्य कर रहा था:-गङ्गवाडिके मुनियोंमें प्रसिद्ध राजा राजमल्ल था।
इसके गुरु वज्रपाणि-व्रतीश्वरने सोसवूरमें अपना जीवन व्यतीतकर अन्तमें
संन्यास-मरण धारण किया और उन्हींका यह स्मारक है।]

[EC, VI, Mūdgere tl., n° 18]

१७९

व्या(वया)ना[1] (राजपूताना)—संस्कृत

[सं० ११००=१०४४ ई०]

[IA, XIV, p. 8-10 n° 151, t. & a.]

---

1 यह शिलालेख श्वेताम्बर सम्प्रदायका है।

१८०

दोड्ड-कणगालु—कन्नड़ ।

[वर्ष तारण=१०४४ ई० ? (लू० राइस) ।]

[दोड्ड-कणगालुमें, गौडके खेतमें एक दूसरे पाषाणपर]

श्री-मूलसंघ देशिय-गण पुस्तक-गच्छ कोण्डकुन्दान्वय इङ्गुळेश्वरद बळिय······शुभचन्द्र-देवर प्रियाग्र-शिष्यरुमप्प प्रभाचन्द्र-देवर निसिधि तारण-संवत्सर-चैत्र-शुद्ध-पञ्चमी-शुक्रवारदन्दु मुक्तरादरु ।

[श्री-मूलसंघ देसिय-गण पुस्तक-गच्छ कोण्डकुन्दान्वय और इङ्गलेश्वर बलिके···शुभचन्द्र-देवके प्रिय ज्येष्ठ शिष्य प्रभाचन्द्र-देवकी समाधि (निसिधि) । (उक्त वर्षमें) उन्हें छुटकारा मिला, अर्थात् स्वर्गगत हुए ।]

[EC, IX, Coorg tl., n° 56]

१८१

वेळगामि—कन्नड़

[शक ९७०=१०४८ ई०]

[सोमेश्वर मन्दिरके पासके एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिळकं चालुक्याभरणं श्रीमत् त्रैलोक्यमल्ल-देवर विजय-राज्यं प्रवर्त्तिसे तत्पाद-पद्मोपशोभितोत्तमाङ्ग स्वस्ति सम-धिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरं वनवासि-पुर-वरेश्वरं महाल-क्ष्मी-लब्ध-वर-प्रसादं त्याग-विनोदमायदाचार्य्यनसहाय-शौर्य्यं गण्डर ··ड गण्ड-भेरुण्डं मूरु-रायास्थान-कलि बिरुद-मण्डलिक-वृषभ-शंकरं ·· मोगद कयि बिरुदरादित्यम् प्रत्यक्ष-विक्रमादित्य जगदेक-दानि-

नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरं चा-ण्ड-रायरसर बनवासि-पन्निर्-च्छासिरमनाळुत्तमिरल् राजधानि-बळ्ळिगावेय नेले-वीडिनोळ् शक-वर्ष ९७० नेय सर्व्वधारी-संवत्सरद ज्येष्ठ-शुद्ध-त्रयोदशी-आदित्यवारदन्दु जजाहुति-श्री-शान्तिनाथ-सम्बन्धियप्प बळगार-गणद मेघनन्दि-भट्टारकर-शिष्यरप्प केशवनन्दि-अष्टो-पवासि-भळा(ट्टा)रर बसदिगे पूजा-निमित्तदिं धारा-पूर्व्वकं जिड्डुळिगे ७० र बळिय राजधानि-बळ्ळिगावेय पुलेय-बयलोळ् मेरुण्ड-गळेयोळ् कोट्ट गळ्दे मत्तरय्दु अदर सीमे (सीमाओंकी चर्चा)

धर्म्मेण शौर्य्य-सत्येन त्यागेन च महीतले ।
गण्ड-मेरुण्ड-सादृश्यो न भूतो न भविष्यति ॥
(इमेशाके अन्तिम श्लोक)

बनवासे-देसदोळगण ।
जिन-निळयं विष्णु-निळयमीश्वर-निळयम् ।
मुनि-गण-निळयमिवं रा- ।
यन बेसदिं नागवर्म्म-विभु माडिसिदम् ॥

[जिस समय, (हमेशाकी चालुक्य उपाधियों सहित), त्रैलोक्यमल्ल देवका विजयराज्य प्रवर्द्धमान थाः—बनवासि-पुरवरका ईश्वर, महालक्ष्मीसे जिसने वर प्राप्त किया था, 'गण्ड-मेरुण्ड' 'जगदेकदानी' इन और दूसरे पदों सहित, महामण्डलेश्वर चामुण्डराय रायरस बनवासी १२००० पर शासन कर रहा था;—बळिळगावे राजधानीमें, (उक्त मितिको), जजाहुति शान्ति-नाथके साथ सम्बद्ध बळगार-गणके मेघनन्दि-भट्टारकके शिष्य केशवनन्दि अष्टोपवासि-भट्टारकी बसदिमें पूजा करनेके लिये, जिड्डुळिगे-सत्तरमें, राज-धानी बळ्ळिगांवेके मृगवनमें, 'मेरुण्ड' दण्ड (माप) अनुसार, ५ मत्त धान (चावल)-क्षेत्रका दान किया। (भूमिकी सीमाएँ) ।

'गण्ड-भेरुण्ड' की प्रशंसा। हमेशाके अन्तिम श्लोक। बनवासे देशमें, जिन-निवास, विष्णु-निवास, ईश्वर-निवास और मुनिगणके लिये निवास। ये, रायकी आज्ञासे, नागवर्म्मा-विभुने बनवाये।]

[EC, VII, Shikarpur tl., n° 120]

१८२

कल्भावी—संस्कृत तथा कन्नड़।

शक २६१ (?)

ॐ (॥) श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्त्यमोघवर्षदेव-परमेश्वर-परमभट्टारक-विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारंबरं सलुत्तमिरे [।] तत्पादपद्मोपजीवि समधिगतपञ्चमहाशब्द-महामण्डलेश्वरं कुवलालपुरवरेश्वरं पद्मावतीलब्धवरप्रसादितं कोङ्गुणि-पट्टबन्धविराजितं शासनदेवीविजयभेरीनिर्ग्घोषणं भगवदर्हन्मुमुक्षुपिञ्छध्वजविभूषणं सकलभूपालमौलिमाणिक्यचूडारत्नरञ्जितचरणं विद्विष्टमनोरमालङ्कारहरणं सारस्वतजनितभाषात्रयकवितालतिवाग्ललनालीलाललामं गजविद्याधामं श्रीमत्-शिवमाराभिधानसैगोट्टगङ्ग-पेर्म्मानडिगळ् मरदलुमेतेयागे गङ्गवाडि-तोम्भत्तारु-सासिरमं सुखसङ्कथाविनोददिं प्रतिपाळिसुत्तिल्दु कादलवल्लि-मूवत्तरोळगण कुम्मुदवाडदोळ् जिनेन्द्रमन्दिरमं माडिसिदनदे दोरेयदेन्दोडे ॥ वृ ॥

इदु गङ्गाधीश्वर-श्रीगृहमिदु विलसद्गङ्गभूपालराम्नायद
कीर्त्तिश्रीविहारास्पदकरमिदु गङ्गावनीनाथरौदार्य्यद
...न...न्तरे विबुधजनानन्दमं भव्यसंपत्पदमं
...ट्ट-पेर्म्मानडि जिनगृहमं माडिदं भक्तियिन्दम् ॥

आ जिनमन्दिरक्के । वृ० ।

विमळश्रीगुणकीर्तिदेवरवरंतेन्नासिगळ्-
नागचन्द्रमुनीन्द्रर्तदपत्यरुदूघजिनचन्द्राख्य-
र्त्तदीयात्मजर्दमिताघश्शुभकीर्तिदेवरेसेद-
र्त्तच्छिष्यरुघद्वचो-रमणीयर्स्सले देवकीर्त्तिगुरुगळ्वादीभकण्ठीरव[३॥] .

आ परमेश्वरर्प्परवादिविध्वंसिगळुं विदिताशेपशास्त्ररुं मैलापान्वय मेनिसिद [क]रेयगणगगनचूडामणिगळुमप्प देवकीर्तिपण्डित-देवर कालं कर्च्चि ॥ ॐ शकवर्ष २६१ नेय विभवसंवत्सरद पौष्य (प)-बहुल-चतुर्द्दशीसोमवारमुत्तरायण-संक्रान्तियन्दु सैगोट्ट-गङ्ग कुम्मुदवाडमेम्बूरं बिट्टनल्लिये मत्तं दानसालेगे पोलनुमं कुम्मुदव्वेय देगुलदिं बडग पोगि मूड मुखं केरिवुमं बसदियिं मूडलु दानसालेगे पन्निर्कयि-निवेसणमुमं । ऊरिं मूड सर्पासि(?)गे-गर्द्देयुं बयलुमं बिट्ट-॥-ना ग्रामद सीमेयेन्तेन्दोडे । आलिगोण्डदिं । सिडिलनेरिलिं । समेयदातनकेरेयिं । मलप्प-बूदनिं । तोळप-बळप-बिळियळरियिं । गङ्गरोळादुव-संकिय-केरेयिं । हिच्चलगेरेय कोडियिं । निन्दवेलिं । सिन्दगिरि-चोव्र्भागदिं । सून्दिगेरेय नीर तट-बोव्र्भागदिं । सिङ्गस-गेरेयिं । कदिकोट्ट-बळिबळि-गर्द्देयिन्दोळ-गुळ्ळ भूमि कुम्मुदवाडक्के ॥ मत्तमूरिं तेङ्क दानसालेय पोलक्के एरप-केरेय मूडण कोडिय बडगण गुत्तिय तेङ्क मुखदे मूडलमेरे । तेङ्क [लु] बळिबळि-गर्द्देयुं । आलिगोण्डमुं मेरे । बडगलिविन-केरेय मध्यं मेरे । पडुवलु बिक्किय-बेट्टद तेङ्कण वागोळगागि मेरे ॥ (।) इल्लिन्दोळगुळ्ळ भूमि दानसालेगे ॥ ओम् [॥]

ॐ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द-महामण्डलेश्वरं कुवलाल-पुरवरेश्वरं पद्मावतीलब्धवरप्रसादितं कोङ्गुणिपट्टबन्धविराजितं शासनदेवीविजय-

मेरीनिर्ग्घोषणं भगवदर्हन्मुमुक्षुपिञ्छध्वजविभूषणतुमप्प श्रीमत्कञ्चरस-स्सैंगोट्ट-गङ्गनिं वन्द धर्म्ममं समुद्धरिसिदनिदन्तप्पदे प्रतिपालिसिदातं वारणासियोळ् सासिर्व्वरु ब्राह्मणर्ग्गे सासिर कविलेय[मू], कोट्ट फलम् । इदनळिदातं वाणरासियोळ् सासिर कविलेयुमं सासिर्व्वर्त्तपोधनरुमं सासिर्व्वर्ब्राह्मणरुमनळिद पातकमक्कु [॥] ओम् [॥]

सामान्योऽयं धर्म्मसेतुं नृपाणाम्
काले-काले पाळनीयो भवद्भिस्-
सर्व्वानेतान् भाविनः पार्त्थिवेन्द्रान्
भूयो-भूयो याचते रामभद्रः । (॥)

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम्
षष्टि-वर्ष-सहस्राणि विष्ठायां जायते क्रिमिः ॥
न विषं विषमित्याहुः देवस्वं विषमुच्यते
विषमेकाकिनं हन्ति देवस्वं पुत्र-पौत्रिकम् ॥
वहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरादिभिः ।
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥

ॐ [॥]

[कल्भावी बम्बई प्रान्तके वेलगाँव जिलेके सम्पगाँव तालुकेके मुख्य-शहर सम्पगाँव (Sampgaum) से दक्षिण-पूर्व करीव ९ मील दूर एक गाँव है। इसका पुराना नाम इसी शिलालेखकी पंक्ति ८, १५, और २१ में 'कुम्मुदवाड' दिया हुआ है। लिपिकी लिखावटसे यह लेख ई० ११ वीं शताब्दिका मालूम पड़ता है।

लेख प्रकट करता है कि किसी अमोघवर्ष नामके राजाने मैलाप अन्वय और कारेय गणके देवकीर्त्ति नामके जैन गुरुके पादों (चरणों) का प्रक्षालन किया था। उस अमोघवर्षके सामन्त, गङ्ग महामण्डलेश्वर सैगोट्ट-पेर्मानडि या सैगोट्ट-गङ्ग-पेर्म्मानडिने, जिनका दूसरा नाम शिवमार था,

कुम्मुडवाड (कल्भावीका ही पुराना नाम) गाँवमें एक जिनेन्द्रका मन्दिर बनवाया और इसके लिये गाँव दानमें दे दिया। इस दानका काल शक-संवत् २६१, विभव संवत्सर दिया हुआ है। लेकिन, जे० एफ० फ्लीटकी रायमें, यह काल जाली है और वास्तविक उल्लेख लेखके उत्तरार्ध में सन्निहित है (ॐ स्वस्तिसे लेकर), जिससे मालूम होता है कि उपर्युक्त दान बीचमें या तो ज़ब्त कर लिया गया था या असावधानीके कारण बन्द कर दिया गया था और उसे कञ्चरस नामके किसी दूसरे गङ्ग-महामण्डलेश्वरने फिरसे चालू किया। भले ही तमाम लेख बनावटी हो, पर, जे० एफ० फ्लीटकी मान्यतानुसार, इसका उत्तरार्ध तो सच्चा है। मौलिक दानपत्रके खो जानेसे ही स्वयं लेखगत दानकी बनावटी तिथि देनी पड़ी है। लेखमें खाली 'अमोघवर्ष' ऐसा नाम देनेसे यह पता नहीं चलता कि 'अमोघवर्ष' नामके राष्ट्रकूट राजाओंमेंसे कौन-सा अमोघवर्ष इस समय शासन कर रहा था। मौलिक दानका काल मैलाप अन्वय तथा कारेय गणके आचार्य गुणकीर्ति, नागचन्द्र, जिनचन्द्र, शुभकीर्ति और देवकीर्तिके वर्णनसे निकाला जा सकता है। प्रथम दान देनेके समयका काल शक सं० २६१ गलत है, क्योंकि विभव संवत्सर चालू शक सं० २३१ पड़ता है।]

[Ind. Ant., Vol. XVIII, pp. 309-13.]

१८३

नल्लूर्—संस्कृत तथा कन्नड़

[विना काल-निर्देशका; लगभग १०५० ई० (लूई राइस)]

[नल्लूर् (हत्तुगट्टुनाड्) में, तीतरमाडके घरके पास सर्वे (Survey) ११७ नं. के तालावके बाँधपर एक पाषाणपर]

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाघनाशिने ।
कु-तीर्थ-ध्वान्त-संघात-प्रभिन्न-घन-भानवे ॥

स्वस्ति श्री

प····धनं परत्र-हित-कारणकं परमोपकारकम् ।
कुडे त····ताळ्दि····य तिग····मतिग····भया····दन्तम····।

तडेयदे मुक्तियं पडेवेनेन्दु विचारिसि वन्धु-वर्गंव····।
विडिसि समाधियं पडेदुदेल्लियुमच्चरि जक्कियव्वेय ॥

कस्तूरि-भट्टारर्गे अवर श्रावकि चन्दियव्वे-गावुण्डि····यर..
मन्त्रकि जक्कियव्वे सन्यसनं गेय्दु मुडिपिदळ् ॥ आकेय गण्ड परम-
श्रावक एडय्य मङ्गळम्

[जिनशासनके लिये कल्याण-कामना। स्वस्ति। भयके साथ यह सुनकर कि दाय-त्तिगमति परलोककी इच्छासे मृत्युको प्राप्त हुई—तथा इस बातको न सहन कर, अपने सम्बन्धियोंकी सम्मति लेकर जक्कियब्बेने, जो चन्दियब्बे-गावुण्डिकी 'मन्त्रकि' और कस्तूरी भट्टारकी 'श्राविका' थी, संन्यसन विधि की और स्वर्गगत हुई। उसका पति श्रावक एडय्य था।]

[EC, IX, Coorg tl., n° 31]

१८४

नल्लूर्—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका; लगभग १०५० ई० ? (लूई राइस)]

[नल्लूर (हत्तुगट्टुनाड) में, तीतरमाड्डु मादय्यके घरके पश्चिमकी तरफ हित्तलमें]

····················कोङ्गाळ····ए मग········दिळे आळ्दडे
मेन्दु यति-वरर्गेळुं सादरदि वीळि····पा [द]दोळेरगि ताळिदनी-
सुर-कीर्त्ति भद्रमस्तु जिन-शासनाय श्रीम मदुवङ्गनाड् दोर किविरि-
यय्यङ्गळ् चाङ्गळद वसदियोळ् पन्नेरडं नोन्तु मुडिपि नवर मक्कळ्
बाकियु बुक्किय निरिसिदर्

[...जब कोङ्गाळुवका पुत्र शासन कर रहा था, वीळिय-सेट्टिने देवोंके यशका लाभ किया। जिनशासनका कल्याण हो।

मदुवङ्गनाड्का स्वामी, किविरिके अय्यने १२ दिन तक चाङ्गल वसदिमें व्रत रक्खा और स्वर्गगत हुआ। उसके पुत्र बाकि और बुक्किने इसकी स्थापना की।]

[EC, IX, Coorg tl., n° 30]

१८७

अङ्गडि—कन्नड़

[शक ९२४, वर्ष जय (ठीक शक ९७६=१०५४ ई०) लूई राइस]

[अङ्गडि (गोणीबीडु परगना) में, बसदिके पासके पाषाणपर]

स्वस्ति सक-वर्ष ९२४ नेय जय-संवत्सरद चैत्र-मासद सुद्ध-दशमी.........वार पुष्य नक्षत्रदन्दु विनयादित्य-पोय्सळन राज्यं प्रवर्त्तिसे सूरस्त-गणद श्री-वज्रपाणि-पण्डित-देवर....गन्तियरप्प जाकियब्बे-गन्तियर् (पीछे) सोसवूरोळे नाडे पोपणद दिसेयनरसर्गे बोक्लगं पोन्नरे कोट्टु मण्गरेकोण्डु सोसवूर-बसदिगे बिट्टर् निसिदिगे यडेवळ्ळेय........ण्ण आरतारगे....एरडु-हळ्ळद मेगण गण्ण नाल्कु मकर-जिनालयके बिट्टर् (हमेशाका अन्तिम श्लोक)

[(उक्त मितिको) जिस समय विनयादित्य-पोय्सळका राज्य प्रवर्त्तमान था—सूरस्त-गणके वज्रपाणि पण्डितकी शिष्या जाकियब्बे-गन्तिने सोस-वूरमें नाड्की ओर जानेवाली दिशामें निवासस्थानके लिये पूरा रुपया राजाको देकर और पूरी जमीन लेकर उसे स्मारकरूप सोसवूरकी 'वसदि' के लिये छोड़ दिया। और यडेवळ्ळे की...ण्णने दो खड्डों (ravines) के ऊपर चार गण्ण मकर-जिनालयके लिये दिये।]

[EC. VI, Mūdgere tl., n° 9]

१८८

होन्वाड—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक ९७६=१०५४ ई० सन्]

ॐ [।।] भद्रमस्तु जिनशासनाय संभद्रतां प्रतिविधानहेतवे [।]
अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फाटनाय घटने पटीयसि [।।]

---

१ शक ९२४ जय वर्ष दिया हुआ है। लेकिन शक ९२४ प्लव संवत्सर है; जय शक ९७६ है, और यही ठीक मिति मालूम पड़ती है।

ओं स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परमभट्टारकं **सत्याश्रयकुलतिलकं चालुक्याभरणं** श्रीमत् **त्रैलोक्यमल्लदेवर** विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचन्द्रार्क्कतारं वरं सलुत्तमिरे [।] तद्विशालोरःस्थलनिवासिनियरप्प श्रीमत्-**केतलदेवियर् तर्द्दवाडि-सासिर**-दोळगणरुनूरुं-**बाडद खम्पण बागेयम्बत्तर** वळियमुत्तम-**मग्रहारं पोन्नवाडमं** त्रिभोगाभ्यन्तरसिद्धियिन्दाळुत्तमिरे [।] तत्पादपद्मोपजीवी गणकचूडामणियु [म्] **वाणसकुलाम्बरभानुवुं** अर्हच्छासन-मूलस्तम्भवुं कलिकाल-श्रेयांसनुं सम्यक्त्व-रत्नाकरनुमप्प ॥

वानसवंशकूर्म्मनिभ**कोम्म**जगद्विनुता**त्तिकाम्बिका**-सूनुरुदात्तकीर्त्तिधवलीकृतदिग्जिनयोगिराण**महासेन**मुनीन्द्रपादकमलभ्रमरं
परिपूर्णचारुविद्यानिधि**चाङ्किराज**विभुराश्रितशिष्टजनेष्टतुष्टिदः ॥

गम्भीरो बहुशङ्खमत्स्यमकरश्रीमत्तलं सात्त्विके
लक्ष्मीजन्मगृहस्समस्तवसुधाव्यावेष्टनोद्यद्यशः
अन्तर्ज्योतितचारुरत्ननिवहो निर्द्धूतकल्माषको
जीवानन्दरसाकरो विजयते सम्यक्त्वरत्नाकरः ॥

आहाराभयभैषज्यशास्त्रदाने तथा परं ।
चाङ्कणार्य्यस्समो (आर्य्यसमो) नास्ति न भूतो न भविष्यति [॥]

ओम् [॥] श्री**मूलसंघे** जिनधर्म्ममूले **गणा**भिधाने **वरसेन**नाम्नि
गच्छेषु तुच्छेऽपि **पोगर्य्य**भिख्ये संस्तूयमानो मुनि**रार्य्यसेनः** ॥

अनेकभूपालकमौलिरत्नशोणांशुबालातपजालकेन ।
प्रोज्जृम्भितश्रीचरणारविन्द-श्री**ब्रह्मसेन**प्र(व्र)तिनाथशिष्यः ॥

तस्यार्य्य**सेन**स्य मुनीश्वरस्य
शिष्यो **महासेन**महामुनीन्द्रः ।

सम्यक्त्वरत्नोज्ज्वलितान्तरङ्गः
संसारनीराकरसेतुभूत[:] ॥
तज्जैनयोगीन्द्रपदाब्जभृङ्गः
श्रीवानसाम्नायवियत्पतङ्गः ।
श्रीकोम्मराजात्मभवस्सुतेज-
स्सम्यक्त्वरत्नाकरचाङ्किराज[:] ॥
कलङ्कमुक्तस्सततैकरूपो
दोषेतरश्रीनिलयस्समस्त-
भव्याब्जसंदोहविकासहेतु[:]
विराजते नूतनचाङ्किराजः ॥
तन्निर्मितं भुवनबुम्भुकमत्युदात्तं
लोकप्रसिद्धविभवोन्नत-पोन्नवाडे
रंरम्यते परमशान्तिजिनेन्द्रगेहं
पार्श्वद्वयानुगतपार्श्वसुपार्श्ववासम् ॥
महासेनमुनेच्छात्रं[1] चाङ्किराजेन निर्म्मितं
द्रष्टुकामाघसंहारि शान्तिनाथस्य बिम्बकम् ॥
महासेनमुनीन्द्रस्य च्छात्रेण जिनवर्म्मणा
छत्रीकृतमहानागं रचितं पार्श्वदैवतम् ॥
जनकस्य कोम्मराजस्य[2] धर्म्मोद्देशाद्विनिर्म्मिता
राजते चाङ्किराजेन सुपार्श्वप्रतिमोत्तमा [॥]

ॐ ॐ शकवर्ष ९७६ नेय जयसंवत्सरद वैशाखदमा-
वास्ये सोमवारदन्दिन सूर्य्यग्रहणनिमित्तदिं भीमनदिय तडिय

---

१ "०मुनि-च्छात्र-चाङ्कि०" पढ़ो। २ 'जनककोम्म' पढ़ो।

मणियूर-अप्पयणवीडिनोळ् पोन्नवाडदोळ् चाङ्किमय्यन माडि-
सिद श्रीशान्तिनाथदेवर त्रिभुवनतिलक-चैत्यालयदलिर्प्प ऋषियरज्जिय-
राहारदानक्के सर्व्वनमस्यवागि श्रीमत्त्रैलोक्यमल्लदेवर् श्रीकेतलदेवियर
बिन्नपदिं मूवत्तुगेण गळेयोळ् बिट्ट नेल मत्त [र्] ३५ तोण्ट मत्त [र्]
१ निवेसणदगलमा गळेयोळ् गळे ४ गेणु १७ नीळं गळे ९ बळम्बे-
निवेसणं मूडण बेळदोळा गळेयोळगलं गळे ३ नीळं गळे ७ गोपुरद
मूडण अङ्गडिगं गाण १ अल्लि बेस-गेय्व कल्कुटिगर मने १ सावगरिर्प्प
पोलेमने १ [॥] ॐ अल्लिय सुपार्श्वदेवर वसदिगे आ गळेयोळ् मत्तर
सलिगे अरुवणद लेक्कदे बिट्ट नेलं मत्त[र्] ३५५ आ गळेयोळ् तोण्ट
मत्त [र्] १ गाण १ [॥] ओं तम्मं जिनवर्म्मय्यन माडिसिद पार्श्वदेवर
वसदिगे करहड-नाल्छासिरदोळगण कळम्बडि-३००रर वळिय
कन्नडिगेय सङ्करसन मगं मन्नेयं वज्जरसन गुड्डे-मान्य ५०० मत्तर्-
क्केयोळगे मूवत्तु-गेण गळेयोळ्सर्व्वनमस्यमागि चाङ्किमय्यं मारुगोण्डु
बिट्ट नेलं मत्त[र्] ३५ [॥]

[यह लेख पश्चिमी चालुक्य राजा सोमेश्वर प्रथमका, जो यहाँ अपने विरुद 'त्रैलोक्यमल्लदेव' से वर्णित हुए हैं, उल्लेख करता है और उसकी रानी केतलदेवीका भी जो पोन्नवाड 'अग्रहार' पर शासन कर रही थी। यह एक जैन शिलालेख है; इसका उद्देश यह बताना है कि किस तरह चाङ्किराज, चाङ्कणार्य, या चाङ्किमय्यने, जो कि बानस या बाणस वंशके तथा केतलदेवीके ऑफीसर थे, शान्तिनाथ, पार्श्व, और सुपार्श्वकी वेदियोंको पोन्नवाडमें त्रिभुवन-तिलक नामके चैत्यालयमें बनवाया और किस तरह उन वेदियोंके लिये कुछ जमीन और मकानात दान किये गये।]

[IA. 19, p. 268-275, n° 190]

१ लेखमें वर्णित पोन्नवाड, वास्तवमें, वर्त्तमान होन्वाड ही है।

१८७

वङ्कापुर—कन्नड़

[मन्मथ संवत्सर=शक ९७७=१०५५ ई०]

[इस लेखका परिचयमात्र मिलता है, लेख नहीं । वङ्कापुर धारवाड़ जिलेके वर्त्तमान शिग्गाँम या वङ्कापुर तालुकेसे दक्षिण-पश्चिम छह मील पर है ।

यहाँके सारे लेख किलेमें हैं । यह लेख एक दीवालके सहारे है जो कि पूर्वकी तरफ़से किलेमें घुसते समय दाहिने हाथकी तरफ़ है । एक विशाल चिकने पत्थरपर ५९ पंक्तियोंका यह एक लेख है, हर एक पंक्तिमें करीब ३७ अक्षर पुरानी कनड़ी लिपि और भाषामें हैं। शिलालेखका अधिकांश अच्छी स्थितिमें है; लेकिन चौथी पंक्ति जानबूझकर मिटा दी गई है और उस शिलापर दरारें पड़ी हुई हैं जिनसे ऐसा मालूम पड़ता है कि यदि इस शिलाको किसी सुरक्षित स्थानपर ले जानेका प्रयत्न किया जायगा तो वह टूट जायगी । शिलाके अग्रभागके चिह्न चालाकीसे मिटा दिये गये हैं; लेकिन निम्नलिखित फिर भी कुछ चिह्न मिलते हैंः—मध्यमें लिङ्ग है; इसके दाईं ओर एक बैठी हुई या घुटने टेकी हुई मूर्त्ति; उसके ऊपर सूर्य है और इसके बाहरकी ओर एक गाय और बछड़ा है; और इसके बाईं ओर एक स्थानापन्न पुरोहित या पुजारी, उसके ऊपर चन्द्रमा और उसके बाहर बसवकी मूर्ति बनी हुई है । लेखका काल शकवर्ष ९७७ (१०५५-६ ई०), मन्मथ 'संवत्सर' दिया हुआ है, जब कि चालुक्य राजा गङ्गपेर्म्मानडि-विक्रमादित्यदेव,—जो कि त्रैलोक्यमल्लका पुत्र; कुवलाल-पुरका अधीश्वर; नन्दगिरिका स्वामी, और जिसके मुकुटमें क्रुद्ध हाथीका चिह्न था,—गङ्गवाडि ९६००० और बनवासि १२००० पर शासन कर रहा था, तथा जब कि महाप्रधान हरिकेसरीदेव, जो कादम्ब-सम्राट् मयूरवर्म्माका कुलतिलक था, उसके अधीन बनवासि १२००० पर शासन कर रहा था। हरिकेसरीदेवकी उपाधियाँ अधिकतर उसी तरहकी हैं जैसी कि अन्य कादम्ब राजाओंकी । लेखमें कुछ भूमिके दानका उल्लेख है । यह भूमि निडगुन्दगे बारह, की थी जो पानुङ्गल ५०० का एक 'कम्पंण' था । यह भूमि-दान एक

जैनमन्दिरको हरिकेसरीदेव और उसकी पत्नी लच्चलदेवी तथा वङ्कापुरके पाँच मतोंको आश्रय देनेवाली जनता, नगरमहाजनोंकी गिल्ड (कम्पनी) तथा 'सोलह' वर्गोंने किया था।[१]]

[IA, IV, p. 203, n° 1, a; ASI, XVI, p. 133, a.]

१८८

मुल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड़

[विनाकाल-निर्देशका, पर लगभग १०५८ ई०]

[मुल्लूरमें, पार्श्वनाथ वस्तिकी उत्तरी दीवालपर]

स्वस्ति श्री-राजाधिराज कोङ्गाळ्वनव्वे पोचव्वरसियर् द्रविळ-गणद नन्दि-संघद अरुङ्गळान्वयद गुणसेन-पण्डितदेवर गुड्डि माडि-सिद वसदि मङ्गळ महा ।

[स्वस्ति। द्रविळ-गण, नन्दिसंघ, तथा इरुङ्गलान्वयके गुणसेन-पण्डित-देवकी गृहस्थ-शिष्या, राजाधिराज-कोङ्गाळ्वकी माँ पोचव्वरसिने इस वस्तिको बनवाया। महा मङ्गल।]

[EC, IX, Coorg. tl., n° 37]

१८९

मुल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक ९८०=१०५८ ई०]

[मुल्लूरमें, पार्श्वनाथ वस्तिके पश्चिममें दूसरे पाषाणपर]

धर्म्म-सेट्टि बरेदं स्वस्ति शक-वर्ष ९८० नेय विलम्बि-संव-त्सरद उत्तरायण-संक्रान्तियन्दु श्री-राजेन्द्र-कोङ्गाळ्वं तम्मय्य माडिसिद वसदिगे कोट्ट हारुवनहळ्ळि अरकनहळ्ळि निडुतद गोडल खण्डुगम् ३ के (दूसरे गावोंमें ऐसे ही दान) श्रीराजाधिराज-कोङ्गाळ्वनव्वे पोचब्बरसियर् तम्म गुरुगळु द्रविळ-गणद नन्दि-

---

१ 'वङ्कापुरद पञ्चमत(ठ)स्थानमुं नगरमहाजनमुं पदिनरुवरुम्'।

संघदरुङ्गळान्वयद **गुणसेन-पण्डित-देवर्ग्गे** माडिसि धारा-पूर्व्वकं कोट्टरु ॥ (वही अन्तिम श्लोक) ।

[धर्म्म-सेट्टिके द्वारा लिखित ।

स्वस्ति । (उक्त मितिको), राजेन्द्र-कोङ्गाळ्वने, अपने पिता द्वारा निर्मित वसदिके लिये हेरुवनहळ्ळि, अरकनहळ्ळि, तथा निड्डुत गोडलुमें तीन खण्डुगका दान दिया, और इसी तरह दूसरे गाँवोंमें (जिनके नाम दिये हैं) ।

और राजाधिराज कोङ्गाळ्वकी माँ पोचब्बरसिने अपने गुरु द्रविळ-गण, नन्दि-संघ, तथा अरुङ्गळान्वयके गुणसेन-पण्डित-देवकी प्रतिमा बनवाकर जलधारापूर्व्वक इसे समर्पित की । शाप ।]

[EC, IX, Coorg tl., n° 35]

१९०

मुल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड़

[विना काल-निर्देशका, पर लगभग १०५८ ई० का]

[मुल्लूरमें, पार्श्वनाथ वस्तिके नीचे देहलीमें]

स्वस्ति श्री **राजेन्द्र-चोळ-कोङ्गाळ्वन** पुत्र श्री—रा····**कोङ्गाळ्व**···· वास-स्थानमं तम्म गुरुगळ् तिवुळ-गणदरुङ्गळान्वयद नन्दि-संघद **गुण-सेन-पण्डित-देवर्ग्गे** धारा-पूर्व्वकं कोट्टं मङ्गळ महा श्री श्री ।

[स्वस्ति । राजेन्द्र-चोळ-कोङ्गाळ्वके पुत्र रा···कोङ्गाळ्वने तिवुळ-गण, अरुङ्गलान्वय और नन्दि-संघके अपने गुरु गुणसेन-पण्डित-देवको रहनेके स्थानके रूपमें···दिया ।]

[EC, IX, Coorg tl., n° 38]

१९१

मुल्लूर—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका, पर लगभग १०५० ई०]

[उसी वस्तिके प्राङ्गणमें एक पाषाणपर]

स्वस्ति श्री **गुणसेन-पण्डित-देवर्** अगळिसिद नागवावि नकरद धर्म्म

[स्वस्ति । नाग-कुआँ जिसको गुणसेन-पण्डित-देवने नकर याने व्यापारी संघके धर्मके रूपमें खुदवाया ।]

[EC, IX, Coorg tl., n° 42]

१९२

सोमवार—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका; लेकिन संभवतः लगभग १०६० ई०]

[सोमवार (मल्लिपट्टण परगना) में, बसवण्ण मन्दिरकी बाहरी दीवाल के पाषाणपर]

धरेयोळगेचल-देविगे ।
गुरुगळ् गुणसेन-पण्डितर्द्रविळ-गणम् ।
वर- नन्दि-संघमन्वय-।
मरुङ्ग······नगदेन्दडेम्त्रण्णिपुडो ॥
भद्रमस्तु ।

[एचलदेविके गुरु,—द्रविळ-गण, नन्दि-संघ और अरुङ्गल-अन्वयके, गुणसेन-पण्डित, जो इतने प्रसिद्ध हैं, उनका वर्णन इस संसारमें कैसे हो सकता है? कल्याण हो ।]

[EC, V, Arkalgud tl., n° 98.]

१९३

कडवन्ति—कन्नड़-भग्न ।

[विना काल-निर्देशका पर संभवतः लगभग १०६० ई०]

[कडवन्तिमें, मेलु-कडवन्तिकी चट्टानपर]

भद्रमस्तु जिनशासनाय श्रीमत्-दान····खचर-कन्दर्प सेनमार पृथुवी-राज्यं गेय्युत्तमिरे देव-गणद पाषाणान्वयद महेन्द्र-बोळळं पडेद अङ्कदेव-भटारर शिष्यमहीदेव-भटारर गुड्डं निरवद्यय्यं सेळसरय मेगे निरवद्य-जिनालयमं माडि खचर-कन्दर्प-सेनमारन दयगेये निरवद्यय्यं मानियं पडेदु जक्कि-मानियेन्दु पेसरनिट्टु निरवद्य-जिनालयके कोट्टं

एडेमलेय सासिर्व्वरुं गळदेय मेक्कळ तम्म तम्म गळदेय मेगे एल्ला-कालमुं पलं दप्पदे जक्कि-गोळगमेन्दित्तर्कडमन्तियोम् मादेर रचिपन्दूरुगं एञ्जलिग सिरिपुरसनुमित्तुवु मूगण्डग-भत्तं पोकुळि-भक्किय पलिसिन तार-नित्तरुज्जेनियोळ नाल्-गण्डग भगमनित्तरर्द्देवाडियोळपिन्दगर-ण्डुग मूगण्डुग मित्तमुळ्ळि-भागदोळ्.................मूगण्डुगमित्तं शालादि-त्यर कप्पिगमिर्क्कण्डुगं.......मुळियर कुन्द कोण्टार्प्पन्दियो सार............मेढुकर्य्यं किरगादण्ण मू-गण्डुगं मण्ण...म् इकुळ-भत्तसुमन........न्ददणिकिग देपण्ण मूगण्डु...........मित्तर्.......योळ श्री-त्र....

[जिस समय खचर-कन्दर्प सेनमार पृथ्वीपर राज्य कर रहे थेः—निरवद्यने, जो देवगण और पाषाणान्वयके अङ्कदेव-भटारके शिष्य मही-देव भटारका गृहस्थ-शिष्य था और जिसने महेन्द्र-चोळलुको पाया था,—मेलस चट्टानपर निरवद्य जिनालय खड़ा किया; और खचरकन्दर्प्प सेनमारकी कृपा प्राप्तकर निरवद्यको एक 'मान्य' मिला, जिसे उसने जक्कि-मान्यका नाम देकर निरवद्य-जिनालयको भेंट कर दिया।

और एडेमले हजारने अपनी हरएक धान्यके खेतोंकी फसलसे कुछ धान्य (चावल) दानरूपमें हमेशा के लिये दिया।

और भी जिन लोगोंने अनाजका दान किया उनके नाम दिये हैं।]

[EC, VI, Chikmagalur tl., n° 75]

१९४

अङ्गडि—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका, पर संभवतः लगभग १०६० ईसवी]

[अङ्गडि (गोणीबीडु परगना] में, छठे पाषाणपर]

(ऊपरका हिस्सा टूट गया है) सोसवूर सेट्टिगळ लोकजितनिगे निषिधिय कल्ल नखर-समूह नट्टरु

[सोसवूरके व्यापारी लोकजितके इस स्मारकको उस नगरके व्यापारी लोगोंने खड़ा किया।]

[EC, VI, Mūdgere tl., n° 16.]

१९५

चिक्क-हनसोगे—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका, पर संभवतः लगभग १०६० ई० का]

[चिक्क-हनसोगे (हनसोगे परगना) में जिन-वस्तिके दरवाजेके ऊपर]

श्री-वीर-राजेन्द्र नन्नि-चङ्गाल्व-देवर्म्माडिसिद पुस्तक-गच्छद वसदि

[वीर-राजेन्द्र नन्नि-चङ्गाल्व-देवने पुस्तकगच्छकी वसदि बनवाई]

[EC, IV, Yedatore tl., n° 22.]

१९६

चिक्क-हनसोगे—कन्नड़।

[विना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग १०६० ई०]

[जिन-वस्तिमें, दरवाजेपर पड़े हुए पत्थरोंपर]

दशाशिर-प्रहारियप्प रामस्वामि विट्ट परमेश्वर-दत्तियं शकनोड विक्रमादित्यं पडिसलिसि-तान········मुन्निनन्ते बडगण-तूम्बिन नीर्व्वरिदनितु नेलनं ख················ताम्र-शासन-पूर्व्वकं कोट्टरदं मारसिंह-देव पडिसलिसलेन्ता-परमेश्वर-दत्तिय बडगण तूम्बिन नीर्व्वरिदनितु········मुन्निनन्ते कादना-रामर दत्तिय ताम्र-शासन पडिय········मडि ईयक्कर बरेदवदं नन्नि-चङ्गाल्व-देवर्प्पुनर्ण्णवं माडिसिद वसदिय तूम्बिनलक्करवु प्रतिमेयु माडिद तप्पिदर्गे कविलेगे तप्पिद पाप

[पहलेकी ही तरह, उत्तरीय नहरसे, सींची गई सारी जमीन,–दशशिर (रावण) के वधक रामस्वामीके द्वारा जो छोड़ दी गई थी, परमेश्वरने जिसे दिया था, और जिसे इनामके तौर पर शक तथा विक्रमादित्यने भी दिया था,—ताम्बेके शासन (लेख) पूर्वक······दी। परमेश्वर-प्रदत्त तथा उत्तरीय नहरसे सींची गई सारी जमीनका दान मारसिंह-देवने किया और पहलेकी ही तरह उसका रक्षण भी किया।

......नन्दिने रानके दिये हुए इस वाम्बेके शासनपर दानके अक्षर लिखे और वसदिके पार्श्वकी राहके फाटकपर मूर्त्तियाँ और अक्षर खोदे । इस बसदिको नन्नि-चङ्गाळ्-देवने फिरसे बनवाया ।]

[EC, IV, Yedotore tl., nº 25.]

१९७

हुम्मच—कन्नड़

[शक ९८४=१०६२ ई०]

[सूळे बस्तिके सामनेके पाषाणपर]

स्वस्ति समस्त-सुरासुर-
मस्तक-मुकुटांशु-जाल-जल-धौत-पदम् ।
प्रस्तुत-जिनेन्द्र-शासन-
मस्तु चिरं भद्रमखिल-भव्य-जनानाम् ॥

स्वस्ति श्री पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुल-तिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-त्रैलोक्यमल्ल-देवर राज्यं सलुत्तमिरे ॥ स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महाशब्द महामण्डलेश्वरनुत्तर-मधुरा-धीश्वर पट्टि-पोम्बुर्च्च-पुर-वरेश्वरं महोग्र-वंश-ललामं पद्मावती-लब्ध-वर-प्रसादासादित-विपुल-तुलापुरुष-महादान-हिरण्यगर्भ-त्रयाधिक-दानं वान-रध्वज-विराजित-राजमानं मृगराज-लाञ्छन-विराजितान्वयोत्पन्नं बहु-कला-कीर्ण्णं शान्तरादित्यं सकळ-जन-स्तुत्यं कीर्त्ति-नारायणं सौर्य्य-पारायणं जिनं-पादाराधकं रिपु-बल-साधकं नीति-शास्त्रज्ञं विरुद-सर्व्वज्ञं श्रीमत्-त्रैलोक्यमल्ल-वीर-शान्तर-देवं सान्तलिगे-सायिरमुमनेकच्छत्र-च्छा-येयिन्दमाळुत्तमिरे ॥ तत्पाद-पद्मोपजीवि सत्त्यनेकगुण-गणाभिमण्डनं नखर-मुख-मण्डनं शान्तर-राज्या-भ्युदय-कारणं कलि-युग-दोस(ष)-निवारणं आहाराभय-भैषज्य-शास्त्र-दान-कानीनं विशद-यशो-निधानरण्

श्रीमत्-पट्टण-स्वामि-नोकय-सेट्टि स (श) क-वर्ष ९८४ शुभकृत्-संवत्सरद कार्त्तिक-सुद्ध ५ आदित्यवारदन्दु तन्न माडिसिद पट्टण-स्वामि-जिनालयक्के वीर-सान्तर-देवङ्गे (यहाँ दानकी विस्तृत चर्चा आती है) सर्व्व-बाधा-परिहार-मागि माडि तन्न सहधर्म्मिगळ् सकलचन्द्र-पण्डितदेवर्ग्गे कोट्टम् (यहाँ वे ही हमेशाके अन्तिम वाक्यावयव आते हैं)।

इष्टनोर्व्वनधिदेवतेगेन्दोसेदित्तुदम् ।
दुष्टनोर्व्वनदर फलवं सले तिन्दवम् ।
सिट्टि-मेले परमात्मने वन्देडेगोवदम् ।
कट्टिकोण्ड विदिरन्ते कुल-क्षयमागुगुम् ॥

(वे ही अन्तिम श्लोक।)

अक्कर ॥ ईवरेन्दत्ति पल्लिरिदेरदप····तागि वेळ्दपर् लेज्जेगेट्टु कावरेन्दल्····सरणेन्दु वंन्दपर् त्तावञ्जि मरेवक्कुं वाल्वेमेन्दु साम-वङ्गदा मरेवक्कु वन्······विडियुं निद्दे पट्टियदन्दु

जीवम्जीवके तूकक्के वारदे किळ्वट्टु वरवेके वीर-देव ॥
धुरदोळसि-लतेयनुच्चिदड् ।
अरि-नृप-युवतियर मुगुळ कङ्कणदा-कील् ।
तरतरदिन्नुळ्चिदवु निज- ।
कर-खळगमवर्क्के कीले शान्तर-नृपति ॥
वीरुगन दोरेगे दोरे पेर- ।
रारुं वन्दवरी-कृत-युगं त्रेते द्वा- ।
परं कलि-युगदोळगण ।
वीररुदार-प्रतापिगाळ् धर्म्म-परर् ॥

वृत्त ॥ परम-श्री-जैन-धर्म्मक्कतिशय-विभवं मार्प्प विद्वज्जनक्का- ।
दरदिन्दं नन्तोसं (प) माडुत मुनि-जनकाहार-भैषज्यमं वि- ।
स्तरदिन्दं चिन्ते-गेय्दुन्नत-गुण-[····] युतं पट्टण-स्वामिनोक्कं- ।
धरमारम्भभव्यर्क्केळन्ता-पुरुष-रत्नदि वीरदेवं कृतार्थन् ॥
पुदिद तमन्-तमः-पटलं ओन्दिद चिन्ते तगुळ्दु तळ्तु प- ।
त्तिद रुजे पेर्चि सार्चिद दरिद्रते वट्टेयोळाद सेदे वड्-
गिदपुदु कण्ड काण्केयोळे तप्पदु पट्टण-सावि नोक्कनि- ।
ळ्दडे वळल्दु वन्द बुध-मण्डलिगी-मले सू (शू)न्यमागदे ॥
वल्लळनप्प पेर्ग्गुसिय बग्गिगे भाजनमाद दोळ्गे वी- ।
ळ्ल् वरिवन्ते नेल्द नरे-गड्डद दोड्डर वेळ्वातुगळ् ।
कोल्लुमवार्के केम्मनेडेयाडदिरोवेले शिष्ट वेडिको- ।
ळ्ळोल्वडे नम्म धर्म्मद तवर्म्मने पट्टण-सामि नोक्कनम् ॥
जिननं बण्णिप पूजिप ।
जिनागमोक्तियाडे नेगळ्व जिन-पदमं भा- ।
वनेयं निच्चं ताळ्दुवन् ।
एने पट्ट[ण]-सावि ये जिनागम-निधियो ॥

वचनम् ॥ सम्यक्त्व-वारासियुमेनिसिद पट्टण-स्वामि नोक्कय्यं····
हुरदोळु देवर वल्लभरनेरगिसि रत्नङ्गळम् खचियिसि । पोन्न बेळ्ळिय पवळद महा-मणिय पञ्च-लोहदोळं प्रतिमेगळं माडिसिदं । (यहाँ दानकी विस्तृत चर्चा है ।) सकळचन्द्र-पण्डितदेवर गुड्ड मळ्लिनाथं बरेदन् ॥

सुजन-जन-कुमुद-चन्द्रन ।
सुजन-जनानन-विलोक-मणिमुकुरनना- ।

सुजन-जन-वनज-हंसन ।
सुजनजनं पोगळे मल्लिनाथं नेगळ्दम् ॥

गुडिवयलुमं विट्ट (सिरेयर) पट्टण-स्वामिय परि नेम-व्रतवेरेदन्दे तुरवनिन्तिदु···गेय्यद·········येत्तिद य····सा····सन्तोस(ष)-दान-विनोद······॥ श्री-पट्टण-सामिय गुरुगळ् श्रीमद्-दिवाकरणन्दि-सिद्धान्त-रत्नाकर-देवरु श्री-विरुद-सर्व्वज्ञं वीर-सान्तर-देवम् ॥

पुसियदिरारोळंब-नदिं पर-नारिय चपोगे तप्पू ।
एसगदिराव-जीवदेळमेवडेयेम्बुदनेन्तुमोल्लदिर् ।
कुसियदिरायदिं पोणर्दु तव्लेडेयोळ् व्रतमेन्दु कोण्डुदम् ।
विसडदिरेम्बुदी-वरेद····सने सान्तर-वीर-देवनम् ॥
नेगर्दुग्रान्वय-पद्मिनी-दिनकरं श्री-शान्तरोर्व्वीशनु- ॥

दूघ-गुणाम्भोनिधि वीरुगं विरुद-सर्व्वज्ञं धरा-मण्डळम् ।
पोग[ळ]ळ् कूर्म्मियिनीये निर्म्मळ-यशं धर्म्माधिकं ताळ्दिदम् ।
जगदोळ् पट्टण-सामि-वट्टमनिदेम् नोकं यशो-भागियो ॥
पट्टणस्वामि-जिनालयद शासनम्

[जिनेन्द्रकी प्रशंसा ।

जब, (उन्हीं चालुक्य-पदों सहित), त्रैलोक्यमल्ल-देवका राज्य प्रवर्त्तमान था—जब, (उन्हीं पदों सहित जिनसे अलङ्कृत नन्नि-शान्तर शि० ले० नं० २१३ में हैं), त्रैलोक्य-मल्ल-वीर-शान्तर-देव शान्तळिगे हज़ार-पर एकछत्र राज्य कर रहा था;—

तत्पादपद्मोपजीवी (उन्हीं पदों सहित जैसे कि पद शि० ले० नं० २११ में हैं) । पट्टण-स्वामि नोकय्य-सेट्टिको (उक्तमितिको) अपने बनवाये हुए पट्टण-स्वामि जिनालयके लिये वीर-शान्तर-देवको सोने के १०० गद्याण भेंट करने पर, मोलकेरेका दान मिला; इस गाँवकी सीमायें । इसने

(नोक्कय्य-सेट्टिने) अपना गाँव कुक्कुडवळ्ळि भी दानमें दे दिया, और इसको (उक्त) सब करोंसे मुक्त कर दिया, और अपने सह-धर्म्मी सकल-चन्द्र-पण्डितदेवको सौंप दिया।

शापात्मक और वे ही अन्तिम श्लोक।

राजा वीर शान्तर और 'सम्यक्त्व वारासि' नामसे प्रसिद्ध पट्टण-स्वामि नोक्ककी प्रशंसामें श्लोक। माहुरमें प्रतिमाको रत्नोंसे मढ़ दिया और उसके पास सोना, चांदी, मूंगा (Coral), रत्नों और पञ्चधातुकी प्रतिमायें थीं। शान्तगेरे, मोळकेरे, पट्टण-स्वामिगेरे और कुक्कुडवळ्ळिके तळेविण्डेगेरे-ये सब तालाब उसने बनवाये थे। और सौ सुवर्ण गद्याण देकरके उसने डगुरे नदीका सौळंगके पागिमगल तालावमें प्रवेश कराया।

सकलचन्द्र-पण्डित-देवके गृहस्थ-शिष्य मल्लिनाथने इसे लिखा, उसने गुडिवयलका दान किया। पट्टण-स्वामिके गुरु दिवाकरनन्दि-सिद्धान्त-रत्नाकर-देव और सर्व्वज्ञ-पदलाञ्छित वीर-शान्तर-देवकी प्रशंसा]

[EC, VIII, Nagar tl., n° 58]

१९८

हुम्मच;—कन्नड़

शक ९८४=१०६२ ई०

[पार्श्वनाथवस्तिमें मुखमण्डपके खम्भोंपर]

(दक्षिण-खम्भ)

(पूर्व-मुख)....पृथुवी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळ-तिळक चालुक्याभरण श्रीमत्-त्रैलोक्यमल्ल-देवर् चतु-स्समुद्र-पर्य्यन्तं पृथ्वी-राज्यानुष्ठानदिनिरे ॥ तत्पादपद्मोपजीवि ॥ समधि-गत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरनुत्तर-मधुराधीश्वरं पट्टि-पोम्बुर्च्च-पुर-वरेश्वर महोग्र-वंश-ललामं पद्मावती-लब्ध-वर-प्रसादासादित-विपुल-तुला-पुरुप-महादान-हिरण्यगर्भ-त्रयाधिक-दान वानर-ध्वज-विराजित-राजमान-मृगराज-लाञ्छन-विराजितान्वयोत्पन्नं बहु-कलाकीर्ण्ण सान्तरादित्य सक-

ल-जन-स्तुत्य कीर्त्ति-नारायणं सौर्य्य-पारायणं जिन-पादाराधक रिपु-बळ-साधकं नीति-शास्त्रज्ञं विरुद-सर्व्वज्ञं नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहित श्रीमत् **त्रैलोक्यमल्ल-वीर-सान्तर-देवं सान्तळिगे-सासिरमं** निर्-द्वायादमं निष्कण्टकमं निराकुळमुं माडि निजान्वय-राजधानि-**पोम्बुर्च्चदोळ्** सुख-संकथा-विनोददिनरसु-गेय्युत्तिळ्दु **स(श)क वर्ष ९८४ नेय शुभकृत्संवत्सरं प्र**............

(उत्तर-मुख) **जिनदत्तं** तनगन्दु देवतेय कारुण्यं पोदळ्दिर्प्पिनम् ।
दनु-पत्रंगतिभीतियं निज-भुजावष्टम्भदिं माडि कों-।
ड निजाम्नायद पेम्पु-वेत्त पोळलोळ् **पोम्बुर्च्चदोळ्** माडिदम् ।
जिन-गेहङ्गळनर्त्तियिं पलवुमं श्री**वीर-भूपाळकम्** ॥
सुरसैलेन्द्रमो मेण् **कुबेरगिरि**यो मेण् तुङ्ग-ताराद्रियो ।
दोरेयेम्बन्तिरे तन्न भक्ति मनदिं पोण्मुत्तमिर्प्पन्तेगम् ।
परमोत्साहदे **नोक्कियब्बेय** जिन-श्री-गेहमं माडिदम् ।
धरेयेल्लं पोगळल्कनेगं विरुद-सर्व्वज्ञावनीपाळकम् ॥

वचन ॥ अन्तु नेगळ्द वीर-शान्तरन मनो-
नयन-वल्लभेयेनिसिद **चागलदेवि** ॥

वृत्त ॥ गुणदोळ् रूपिनोळोळ्पिनोळ्
सुबगिनोळ् शृङ्गारदोळ् सौम्यल-।
क्षणदोळ् मैमेयोळोजेयोळ्
विभवदोळ् शीलङ्गळोळ् मृत्य-पो-।
पणदोळ् भोगदोळार्प्पिनोळ्
विभुतेयोळ् कारुण्यदोळ् पोलिसल्क्-।
एणेयार् गेल्व वेडङ्गिगेन्दनुदिनं

विद्वज्जनं वण्णिकुम् ॥

(उत्तरस्तंभ)

(दक्षिणमुख) कन्द ॥ जयदङ्ककात्ति दान-।
प्रिये शान्तर-देवनोप्पुवर्द्धाङ्गद-ल-।
क्ष्मियेनिप्प पुण्यवतियम् ।
जय-देवतेयन्तदुन्ते पेरतेनेम्बर् ॥
श्री-वनितेगे वीरन वाक्-।
श्री-वनितेगे कीर्त्ति-वधुगे सान्तर-विजय-।
श्री-वनितेगविके चागल-।
देवियें भाविसुवदखिल-विश्वम्भरेयोळ् ॥
सल्गोगे सान्यकेक्को ।
पलरक्केन सतियरहितरं गेल्वेडेयू....।
गेल्व वेडङ्गिये वीरन ।
वलद भुजा-दण्डदल्लि केलदोळ् निस्वळ् ॥
पतियं वञ्चिसि सले निज-।
कृतकार्दिनर्द्धावलोकनाक्षिगाळि भ्रू-।
लतेयोळनोळ्पोप्वी-दुर्-।
व्रतेयर् पोल्तपरे चागियब्बरसियरम् ॥
सङ्गत-गुणनमळ-लसद्-।
तुङ्गाखिळ-कीर्त्ति-वीर-सान्तर-नृपन-।
द्धाङ्ग-स्थित-लक्ष्मियेनल्क् ।
एङ्गळ पोल्तपरे चागियब्बरसियरम् ॥
नेत्रावळि-दोर्ब्दर्द्दि-वि-।

चित्राम्बर-कनक-रजत-मणि-मौक्तिकमम् ।
पात्रमरिदीव-गुणकति—।
मात्रेयरेय्दिपरे चागियव्वरसियरम् ॥

(पूर्वमुख) वृ ॥ अतिशयमप्प रूपिनोळुदारतेयोळ् विनयोपचारदोळ् ।
पतिगतिभक्तिनोळ् विपुळ-भोगदोळिं पेरतेननेम्बे माण् ।
रतिगनुंसारि पार्व्वतिगे तोडु कुजातेगे पाटि नोडरुन्—।
धतिगेणे वासवाङ्गनेगे पासटि चागल-देवि धात्रियोळ् ॥

येनिसिद चागल-देवि निज-वल्लभं वीर-शान्तरन कुल-देवतें नोक्कि-यव्वेय वसदिय मुन्दे मकर-तोरणमं माडिसि ॥ मत्तं बळ्ळिगावेयले चागेश्वरमेम्ब देगुलमं माडिसि पलवरुं ब्राह्मणर कन्ने-दानमं माडिसि महादानङ्गेय्दु वन्दि-वृन्दक्काश्रितगर्गं पोन्तुं बुद्दिगेयुमं वेर्प्पन्नेगमित्तु चागमं मेरेदळ् ॥ अन्तु नेगई चागल-देविय तायेनिप अरसिकब्बे प्रसिद्धकेसेदळ् सान्तरन मनेय सर्व्व-प्रधानं ब्रह्माधिराज काळिदासय्यं-बगेदं (पश्चिम मुख) श्री-लोक्किय वसदिगे देकरसं जम्बहळ्ळिय विंट्ट श्री-माधवसेन-देवङ्गे धारा-पूर्व्वकं माडि कोट्टम् ॥

[जब, (उन्हीं चालुक्य पदों सहित), त्रैलोक्यमल्ल-देव समुद्र-पर्यन्त दुनियाके राज्यपर शासन करनेमें लगे हुए थेः—

तत्पादपद्मोपजीवी (नं० २१३ वाले लेखमें जो नन्नि-शान्तरके पद हैं उन्ही पदों सहित) त्रैलोक्यमल्ल वीर-शान्तर-देव, सान्तलिगे हजारको मुक्त करके, अपने वंशकी राजधानी पोम्बुर्चमें शासन कर रहा थाः— (उक्त मितिको),— अपने वंशके प्रसिद्ध नगर पोम्बुर्चमें वीर-भूपालकने बहुवसे जिनमन्दिर बनवाये । इसी पोम्बुर्चमें जिनदत्तने देवी (संभवतः पद्मावती देवी) के प्रसादको प्राप्त करके एक राक्षसके पुत्रको अपने भुजबलसे भयभीत कर दिया था । वीर-भूपालने नोक्कियब्बे जिनमन्दिर शोभाके साथ खड़ा किया था ।

वीर-शान्तरकी पत्नी चागल-देवी थी। उसकी प्रशंसामें बहुत-से श्लोक दिये हैं। अपने पति वीर-शान्तरके कुल-देवतारूप नोकियब्बेकी वसदिके सामने उसने 'मकर-तोरण' बनवाया था और बल्लिगावेमें चागेश्वर नामका मन्दिर बनवाया था और बहुत-से ब्राह्मणोंको कुमारिकायें भेंटकर उसने 'महादान' पूर्ण किया था, तथा प्रशंसकों और आश्रितोंकी भीड़को यथेच्छक दान देकर अपनेको दानी प्रसिद्ध किया था। (तथा) चागल-देवी की माँ अरसिकब्बेकी भी बहुत प्रसिद्धि हुई। (और) शान्तरके घरका 'सर्व्व-प्रधानं' ब्रह्माधिराज कालिदास विख्यात हुआ था।

लोक्किय वसदिके लिये, देकररसने जम्बहळ्ळि प्रदान की, इसका दान माधवसेन-देवको किया था।]

[EC, VIII, Nagar, tl., n° 47]

१९९

श्रवण-बेल्गोला;—संस्कृत—भग्न

[सं० १११९=१०६२ ई०]

(जैन शि० ले० सं०, भा० १.)

२००

अङ्गडि—कन्नड़—भग्न

[शक ९८४=१०६२ ई०]

[अङ्गडि (गोणीबीडु परगना) में, ७ वें पाषाणपर]

................विनयादित्य...........पोय्सळ........ भट्टार गुरुगळ्...

सक-कालं गति-नाग-रन्ध्र-शुभकृत्-संवत्सराषाढदोळ् ।
सुकरं पौर्ण्णमि-भौमवार मोसेदिंळ्दा-श्रावण....
....कदिन्दं वरे शान्तिदेवरमळ्ं सन्यासनं गेय्दु भक्- ।
ति करं कैवशमागे गेय्दु पडेदरु निर्व्वाण-साम्राज्यमम् ॥

(पीछे)······शान्ति-देवर् श्रीमत् सो[सेवू]र···नकर-समूह तम्म गुरुगळ्गे परोक्ष-विनयं गेय्दु निषिदिगे मङ्गळमहा

[······विनयादित्य······पोय्सळके गुरु············(उक्त मितिको) शान्तिदेवने, अपने धर्मके फल-स्वरूप निर्व्वाणको प्राप्त किया।

नगर(व्यापारी संघ)के लोगोंने अपने गुरु शान्ति-देवकी मृत्युके उपलक्ष्यमें यह स्मारक खड़ा किया।]

[EC, VI, Müḍgere tl., n° 17.]

२०१

अङ्गडि—संस्कृत तथा कन्नड़—भग्न

[शक ९८४=१०६३ ई०]

[अङ्गडि (गोणीबीडु परगना)में, बसदिके पासके पाषाणपर]

······················तन्त्र-प··················व्वरसिय ········

············साम्पराय····························· (७ पंक्तियोंमें दानकी चर्चा है) पोय्सळन विद्यावन्तं **पोय्सळाचारि** आतन मगं **माणिक-पोय्सळाचारि** आतं माडिद वसदि उळि-वळ्ळि-पिडिवर चट्टं (पीछे) इन्तिनितुं भूमीयुमं कोट्टु **शक-वर्ष ९८४ नेय शुभकृत्-संवत्सरद फाल्गुन-सुद्ध-पञ्चमी-बुधवारं रोहिणी-नक्षत्रदन्दु** प्रतिष्ठे-गेय्दु पूजेयं माडि तिरु-नन्दीश्वरदन्दु दान-माडेयुं पोय्सळन गुरुगळ् **मुळ्ळूर श्री-गुणसेन-पण्डित-देवर्गे** धारा-पूर्व्वकर्दि स्थानमं कोट्टर् ॥

श्री-वनितेगे धरणिगे वाग्-देविगे रुग्मिणिगे रतिगे रम्भगे सीता- ।
देविगे कोन्तिगे **परियल-** । देवियिमिळ्ळिळि गुणके वप्परुमुण्टे ॥

श्रीमदभिमानपिण्डः । पर-गण्ड-प्रलय-काल-यम-दण्डः ।
सद्गुणरत्नकरण्डः । स जयतु भुवि **मलेपरोळ् गण्डः** ॥ ····
रकस-चोय्सलनेम्वा- । ऱ्-अक्करवं बरेदु पटमनेत्तिदडिदिरोळ् ।

लक्कद् सव-लेक्कद् मरु- । वक्कं निन्द्पुवे समर-संघट्टनदोळ् ॥

(हमेशाके अन्तिम श्लोक)

[प्रथम भाग बहुत घिसा हुआ है और अन्तिम पंक्तियोंमें दानकी विशेष चर्चा है ।

छेनी और बळिको पकड़नेवालोंमें प्रधान, अर्थात् पाषाणशिल्पियोंमें प्रधान विद्यावान पोय्सळाचारिके पुत्र माणिक्र-पोय्सळाचारिने यह वसदि बनवाई ।

इतनी भूमि देकरके, उन्होंने (उक्त मितिको) भगवान्की प्रतिष्ठा की, और पूजाकर तिरु-नन्दीश्वरके कालमें दान देकर मन्दिर पोऽसलके गुरु मुल्लूरके गुणसेन-पण्डितदेवको सौंप दिया ।

परियल-देवी और मलेपरोळ्-गण्डकी प्रशंसा । "रक्कस-होय्सळ" इन ६ अक्षरोंको अपने झण्डेपर लिखकर यदि वह उसे उड़ाता है, तो लक्षावधि शत्रु भी क्या उसका युद्धमें सामना कर सकते हैं ? (हमेशाके अन्तिम श्लोक)]

[EC, VI, Mūḍgere tl., n° 13.]

२०२

मुल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक ९८६=१०६४ ई०]

मुल्लूर (निडुत परगना) में, बस्ति मन्दिरमें पार्श्वनाथ बस्तिके पश्चिममें प्रथम पाषाणपर]

(पहली ओर) स्वस्ति शक-नृप-कालातीत-संवत्सर-शतङ्गळ् ९८६ नेय क्रोधि-संवत्सरं परिवर्त्तिसुत्तिरे तद्-चैत्र-बहुल-नवमी मङ्गळवारं पूर्व्वाभाद्रपद-नक्षत्रम्मिनोदयदल् ॥

स्वस्ति समस्त-सुरासुरेन्द्र-मकुट-तट-घटित-मणि-मयूख-रेखालङ्कृत-चा (दूसरी ओर) रु-चरणारविन्द-युगळं भगवदर्हत्-परमेश्वर-परम-भट्टारक-मुख-कमल-विनिर्गतागमामृत-गम्भीराम्भोराशि-पारगरप्प श्रीमद्-गुणसेन-पण्डित-देवरम्मोक्ष-लक्ष्मी-निवासके सन्दइ (तीसरी ओर)

गुरुगळ् सिद्धान्त-तत्त्व-प्रवचन-पटुगळ् पुष्पसेन-व्रतीन्द्रर् ।
वर-सङ्घं नन्दि-सङ्घं द्रविळ-गण-महारुङ्गळाम्नाय-नाथम् ।
परमार्हन्त्यादि-रत्न-त्रय-सकल-महा-शब्द-शास्त्रागमादि- ।
स्थिर-षट्-तर्क-प्रवीणर् व्रति-पति-गुणसेनार्य्यरार्य्य-प्रणूतर् ॥

[(उक्त मितिको), आगमरूपी अमृतके गहरे समुद्रके पार जाने वाले श्रीमद् गुणसेन-पण्डित-देवने मोक्ष-लक्ष्मीका निवास प्राप्त किया। उनके गुरु पुष्पसेन-व्रतीन्द्र थे। गुणसेन-पण्डित-देव द्रविळ-गणके नन्दिसंघके तथा महा अरुङ्गलाम्नायके नाथ थे। ये सब विद्याओं—व्याकरण, आगम, तर्क—में प्रवीण थे।]

[EC, IX, Coorg tl. n° 34]

२०३

हुम्मच—कन्नड़

[शक ९८७=१०६५ ई०]

[हुम्मचमें, चन्द्रप्रभ बस्तिकी बाहरी दीवालपर]

भद्रमस्तु जिन सा (शा)·······स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथिवी-वल्लभं महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळति-ळकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-त्रैलोक्यमल्ल-देवर् चतुस्समुद्र-पर्य्यन्त-पृथ्वी-राज्यानुष्ठानदिनिरे तत्पादपद्मोपजीवि । स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरनुत्तर-मधुराधीश्वर पट्टि-पोम्बुर्च्चे-पुर-वरेश्वरं महोग्र-वंश-ललामं पद्मावती-लब्ध-वर-प्रसादासादित-विपुळ-तुळापुरुष-महादान-हिरण्यगर्ब्भ-त्रयाधिक-दान वानर-ध्वज- विराजित-राजमानं मृग-राज-लाञ्छन-विराजितान्वयोत्पन्नं बहु-कलाकीर्ण्ण सान्तरादित्यं सकळ-जन-स्तुत्यं कीर्त्ति-नारायणं सौर्य्य-परायणं जिन-पदाराधकं रिपु-बळ-साधकं नीति-शास्त्रज्ञं विरुद-सर्व्वज्ञं नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्रीमत् ·· ·भुजबळ-शान्तर-देवं शान्तळिगे-सासिरमं निर्द्दायाद्दवुं निरा-

कुळं माडि राज्यं गेय्युत्तिल्दु स(श)क-वर्ष ९८७ नेय विश्वावसु-संवत्सरं प्रवर्त्तिसुत्तमिरे निजान्वय-राजधानि-पोम्बुर्च्चदोळ् भुजवळ-शान्तर-जिनालयक्के माघ-मासद सुद्ध-पञ्चमी-सोमवारमुमुत्तरायण-संक्रमण-दन्दु तम्म गुरुगळ् कनकणन्दि-देवर्गे धारा-पूर्व्वकं माडि हरवरियं बिट्टम्।
(यहाँ सीमाओंकी विस्तृत चर्चा आती है)।

जिनशासनके कल्याणकी कामना। स्वस्ति। जब, (उन्हीं चालुक्य पदों सहित) चतुस्समुद्रपर्यन्त पृथ्वीके राज्यपर त्रैलोक्यमल्लदेव शासन कर रहे थेः—

तत्पादपद्मोपजीवी,—जिस समय, (उन शान्तरके पदों सहित जो कि शि० ले० नं० १९७ में दिखाये गये हैं), त्रैलोक्यमल्ल भुजबल-शान्तर-देव, शान्तलिगे हजारको उपद्रवों और कष्टोंसे मुक्तकर शासन कर रहे थे;—(उक्त मितिको), अपनी राजधानी पोम्बुर्च्चमें भुजबल-शान्तर जिनालयके लिये अपने गुरु कनकनन्दि-देवको हरवरिका दान किया थाः इसकी सीमायें। बसदिका ऐसा शासन (लेख) है।]

[EC, VIII, Nagar tl., n° 59]

२०४

वलगाम्वे—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक ९९०=१०६८ ई०]

[वलगाम्वेमें, बडगियर-होण्डके पासके आंगनमें पाषाण-खण्डोंपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर ·········भट्टारकं सत्याश्रय-कुल-तिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत्त्रैलोक्य-मल्लनाहवम·········सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरेयिरे॥

वृत्त॥ मलेपर् म्माराम्परिल्लक्रमदि·····तराटर्प्परिल्लुर्क्कि दर्कुन्-।
दलें-वाय्गुद्धृत्तरिल्लोट्टजि-वेरसु कुरुम्वर्त्तरुम्बिर्प्परिल्ले-।

त्तलु····वर्प्पं दळ्ळेन्दुरिव रिपुगळ्ळिेम्बिनं कुन्तळोर्व्वी- ।
तिळकं **त्रैलोक्यमल्ल**-क्षितिपतिगे धरा-चक्रदो····क-चक्र ॥
लाट-कळिंग-गंग-करहाट-तुरुष्क-वराळ-चोळ-क- ।
र्ण्णाट-सुराष्ट्र-माळव-दशार्ण्ण-सुकोशल-केरळादि-दे- ।
शाटविकाधिपर् म्मलेदु निल्लदे कम्पमनित्तु निर्म्मिता- ।
घाटदोळिर्प्प····अळवी-दोरेताहव**मल्ल-देव**न ॥

कन्द ॥ इन्तु चतुरन्त-धात्री- । कान्तेयनळवडिसि चक्रवर्त्ति-श्रियम् ।
तां तळेदु सुखदे पल-का- । लन्तव तत्र-निधिगधीशनाहव-**मल्लम्** ॥

वृत्त ॥ **म ···श्रावन्ति-वंग-द्रविळ-कुरु-खसाभीर-पाञ्चाळ-लाळा**
दिगळं पेसेंळे कोन्दुं कवर्दुमसदळं कोट्टजं गोण्डुमाळो- ।
ळिगे दण्डुं तोळ्तीतुं मनद तवकमुं पोगदेन्दिन्द्रनं का- ।
डि गेलल् कप्पं गोडल् वरिसि तळ्र्देनेकांगदिं सार्व्वभौमम् ॥
गगन-नवाङ्क-संख्ये शक-काळदोळागिरे कीळकाब्दकम् ।
नेगळे तदीय-चित्र-बहुळाष्टमियोळ् रविवारदोळ् जसम् ।
मिगे कुरुवर्त्तियोळ् परम-योग-नियोगदे तुम्········द्रेयोळ् ।
जगदधिपं त्रिविष्टपमनेरिदनाहवमल्ल-वल्लभम् ॥

कन्द ॥ आ-चालुक्य-ललाम-म- । हा-चक्रिय पेर्म्मगं धरा-तळमं गो-
त्राचळ-जळधि-परीतमन् । आ-चन्द्र-स्थायि यागळाळ्व महात्मं ॥
····दित-**व्योम-नवाङ्क-संख्ये सक-काळं वर्त्तिसल् कीळका-**
ब्दद वैशाखद सुद्ध-सप्तमियोळ् इज्य-ज्योतियोळ् शुक्रवा- ।
वृत्तं ॥ रदोळ्स्यन्त-कुळीर-लग्नदोळिभाश्व-व्रात-रत्नातप- ।
च्छद-सिंहासन-पूज्य-राज्य-पदमं **सो[मे]श्वरं** ताळ्दिदम् ॥

वृत्तं ॥ जयमं धर्म्मक्के धर्म्मान्वियमनसदळं साधु-वर्ग्गक्के वर्ग्ग- ।
त्रयमं तन्नन्तरङ्गक्कोडरिसि धरेयं कूडे सन्मान-दान- ।
त्रयदिं सन्तय्से काळं कृत-युग-मयमाप्पेन्निनं तन्न राज्यो- ।
दयदोळ् लोकक्के रागोदयमोदविदुदेम् धन्यनो सार्व्वभौमम् ॥
आ-प्रस्तावदोळ् ॥

वृत्तं ॥

नव-राज्यं वीर-भोज्यं पुगलिदवसरं सुत्तुवें गुत्तियं मु- ।
त्तुवेनेम्बी-गर्व्वदिं चोळिकनधिक-बळं मुत्ति मार्-ग्गुत्तियं प- ।
ण्णुवुदं केळ्देत्तेनुत्तेत्तिद तुरग-धळन् तागे सप्तागदग्रा- ।
हवदोळ् वेङ्गोड्ड सोमेश्वर-नृपन वळक्कोडिदं वीर-चोळम् ॥
पेसरं केळ्द्ळ्कि वेळ्कुत्तुद्दु पर-धरणी-मण्डलं गण्डु-गेट्टाळ्- ।
वेसनं पूण्दत्तु शौर्य्योन्नतिगगिदसुहृन्मण्डळं मेल्पनावर्- ।
ज्जिसिदोन्दाज्ञा-विसेपक्केळसिद्दुदु सुहृन्मण्डळं सन्तमिन्ता- ।
देसकं कैगण्मे सोमेश्वर-नृपति मही-चक्रमं पाळ्सुत्तम् ॥
अन्तःकण्टकरं पडल्वडिसि दुर्ग्गाधीशरं दुष्ट-सा- ।
मन्त-द्रोहरनुद्धताटविकरं निर्म्मूळनं गेय्दु वि- ।
क्रान्ताराातिगळं कळल्चि धरेयं निष्कण्टकं माडि नि- ।
श्चिन्तं श्री-भुवनैकमल्ल-महिपं राज्यं गेयुत्तिर्प्पिनम् ॥

वचन ॥

तत्पादपद्मोपजीवि समधिगत-पञ्च-महा-शब्द-महा-मण्डलेश्वरनुदार-महेश्वरं चलके वलगण्डं शौर्य्य-मार्त्तण्डं पतिगेक-दाशं संग्राम-गरुडं मनुज-मान्धातं कीर्त्ति-विख्यातं गोत्र-माणिक्यं विवेक-चाणिक्यं पर-नारी-सहोदरं

वीर-वृकोदरं कोदण्डपार्त्थं सौजन्य-तीर्त्थं मण्डलिक-कण्ठीरवं परचक्र-भैरवं राय-दण्ड-गोपाळं मलय-मण्डलिक-मृग-शार्दूळं श्रीमत् **त्रैलोक्यमल्ल-देव**-पाद-पङ्कज-भ्रमरं श्री-**भुवनैकमल्ल**-वल्लभराज्य-समुद्धरणं पति-हिता-भरणं मण्डलिक-मकरध्वजं विजय-कीर्ति-ध्वजं मण्डळिक-त्रिनेत्रं रिपु-राय-मण्डलिक-यम-दण्डं जयाङ्गनालिङ्गित-दोर्-द्दण्डं विसुळर-गण्डं गण्ड-भूरि-श्रवनेन्वित्र मोदलागे पल्वुमन्वर्त्थाङ्क-मालेगळिनलंकरिसि ॥

कं ॥ **त्रैलोक्यमल्ल**-वल्लभन् - । आळ्वेनिसिदरोळगे मिक्क पसयितनुं मि-
क्काळुं मिक्कण्मिन व- । छालुं **लक्ष्मण**ने पेररनरिवरुमोळरे ॥
भुवनैकमल्ल-देवन । भवनदोळं ताने मानसं ताने महा- ।
व्यवसायि ताने विजय- । प्रवर्द्धकन् ताने पसयितं **लक्ष्म-नृपम्** ॥

अन्तेनिसि ॥

वृत्त ॥ अणुगाळ् कार्य्यद शौर्य्यदाळ् विजयदाळ् चालुक्य-राज्यके का-
रणमादाळ् तुळिलाळ्तनक्के नेरेदाळ् कट्टायदाळ् मिक्क म- ।
न्नणेयाळ् मान्तनदाळ् नेगळ्ते-वडेदाळ् विक्रान्तदाळ् मेळ्दाळ्
रणदाळाव्दन नच्चुवावेडेयोळं विश्वासदाळ् लक्ष्मणम् ॥
एरडुं राज्यदोळं प्रजा-परिजनं कोण्डाडे चक्रेशरि- ।
व्वरु मोरन्दद कूर्म्मयिन्दे **बनवासी**-देशमं शासनम् ।
वरेदश्व-द्विप-पट्टसाधन-समेतं कोट्ट कारुण्यदिम् ।
पोरेयल्मण्डलिक-त्रिणेत्रनेसेदं भू-भागदोळ् लक्ष्मणम् ॥
किरियं विक्रम-गङ्ग-भूपनेनगा-पेर्म्माडि-देवङ्गे ने-
ग्गिरियं वीर-नोणम्ब-देवनेनगं पेर्म्माडिगं सिङ्गिगम् ।
किरियै नीं निनगेल्लरुं किरियरेन्दग्गयिसि कारुण्यदिम् ।
नेरे कोट्टं प्रतिपत्ति-वृत्ति-पदमं लक्ष्मङ्गे सोमेश्वरम् ॥

मिगे वनंत्रासे-नाल्के विभु लक्ष्मणनागे नोळम्ब-सिन्दवा-।
डिगे विभुवागे विक्रम-नोळम्बनळंपुरमादियाद भू-।
मिगे विभु गङ्ग-मण्डलिकनागे यमाशेगे नीळ्द लाड़-वि-।
ण्डिगेयेंने कण्डु कोट्टनवर्गा-नेलनं भुवनैक-वल्लभम् ॥

मदवद्वैरि-नरेन्द्र-मण्डलिक-सेना-भञ्जनं वीर-नी-।
रद-दुर्व्वार-समीरणं वितरण-क्रीडा-विनोदं प्रता-।
प-दिलीपं रिपु-पुञ्ज-कञ्ज-वन-केळी-कुञ्जरं लञ्जिका-।
मदनाख्यं चलदङ्क-राम नृप-लक्ष्मी-लक्ष्मनं लक्ष्मणं ॥

कं ॥ वलिवलेव मलेव केलेवद-टलेव पळववलेव मलेपरेल्वं मुरिदं ।
मलेयद केलेयद वलियद । मलेपरनिसुवेसके वेससिदं लक्ष्म-नृपम् ॥

वृ ॥ शाळियनिट्टु कोङ्कणमनङ्कणियोक्किदपं तगुळ्दु कोम्ब्-।
एळुमनट्टि मुट्टि मले-येळुमना····मुंर्च्चे मुक्कि नि-।
र्म्मूळिसिदप्पनेन्दु मलेपर्त्तले दोरदे रायदण्ड-गो-।
पाळनृपङ्गे मुन्दुवरिदेन्दुद्नेन्दपरेम् प्रतापियो ॥

आळवलमुळ्ळडश्व-वलमिल्ल भटाश्व-बलङ्गळुळ्ळडम् ।
तोळ्वलमिल्ल भृत्य-हय-दोर्-ब्बलमुळ्ळडमेर्व्वलङ्गळिल्ल् ।
आळ् वेसगेय्यदेके वलिवर् मलेपर् म्मलेयेम्बुदेनदम् ।
वेळ्वलमागे मुन्तुळिदनल्लने लक्ष्मणनेम्ब कावणम् ॥

कवि दुग्ग चातुरङ्गं बवसे दळवुळं धांळि सूळेरेनिप्पा-।
हवदोळ् चाळुक्य-रामं वेससे रिपु-वळक्केल्ननिन्द्रारियन्नम् ।
भन्ननन्नं भद्रनन्नं सिडिल वळगदन्नं ज्वल-ज्वालियन्नम् ।
जवनन्नम्मारियन्नं समर-समयदोळ् लक्ष्मणं रामनन्नम् ॥

कुदुरेय मेले विल् परसु शूलिगे तीरिके भिण्डिवाळमे-।

त्तिद करवाळमाटिडुव कर्क्कडे पारुव चक्रमेन्दोडेन्त् ।
ओदरुवरेन्तु पायिसुवरेन्तु तरुम्बुवरेन्तु निल्परेन्त् ।
ओदवुवरेन्तु लक्ष्मणनोळान्तु बर्दुङ्कुवरन्य-भूभुजर् ॥
ईयल् बन्दडे कल्प-वृक्षमिदिरं बन्दान्त विद्विष्टरम् ।
सोयल् बन्दडकाळ-मृत्यु शरणायातावनीपाळरम् ।
कायल् बन्दडे वज्र-शैल-कृत-दुर्ग्गं लौल्य-भावं पर-।
स्त्रियल् बन्दडे रावणात्मज-चमू-विद्रावणं लक्ष्मणम् ॥
विसुपळिदर्क्कनुर्क्कुडिगुमिन्दुव कान्ति कळ्ळगुमागसम् ।
कुसिगुमिळा-तळं तळर्गुमम्बुधि बत्तुगुमिल्लि लक्ष्मणम् ।
पुसिदोडमार्ग्गे टेप्परमनोड्डिदोडं मनमोल्दु कूडि छि-।
द्रिसिदोडमन्य-नारिगे मरुळदोडमाहवदोळ् मरल्दडम् ॥
शत्रघ्नं हरि-शौर्य्यनङ्गद-भुजं सुग्रीवनात्मेश-सौ-।
मित्रं रामनपामरं नर-वरं दुर्य्योधनं भीम-गा-।
त्रं भीष्म युधिष्ठिरं गुरु कृपं सत्-कर्ण्णनेन्दन्दे दल् ।
चित्रं भाविसे लक्ष्म-भूप-चरितं रामायणं भारत ॥
कलितनमिल्ल चागिगे वदान्यते मेय्गलिगिल्ल चागि मेय्- ।
गलियेनिपङ्गे शौच-गुणमिल्ल करं कलि-चागि-शौचिगम् ।
निले-नुडि-वोजे यिल्ल कलि चागि महा-शुचि सत्य-वादि मं-
डलिकरोळीतनेन्दु पोगळ्गुं बुध-मण्डलि लक्ष्म-भूपन ॥
कं ॥ मुनिर्यि किसुकळ्बुवरोसे- । दु नगुवरिन्तिनिते पेरर मुनिसुं मेच्चुं ।
मुनियिसे मुनिद जवं ह- । र्षनागे हर्षं गवृषभ-लक्ष्मं लक्ष्मम् ॥
एने नेगळ्द लक्ष्म-भूपं । विनमित-रिपु-नृपति-मकुट-घट्टितचरणम् ।
बनवसे-पन्निच्छासिर- । मनाळुतुं सुखदिनरसु-गेय्युत्तिळ्दम् ॥

इरे वनवसे-धरित्रिर्ग्गा- । सिरकमर्त्यविकारियुं कार्य्य-धुर- ।
न्धरनुं तद्-राज्य-समु- । द्धरणनुमेने नेगळ्द् मन्त्रि मन्त्रि-निवासं ॥
वृ ॥ कविता-चूताङ्कुर-श्री-मद-कळ-कळकण्ठोपमं काव्य-सौधा- ।
र्ण्णव-वेळा-पूर्ण-चन्द्रं सम-विषम-महा-काव्य-वल्ली-तलान्तो-
ल्लव-चञ्चच्चञ्चरीकं वसुवेगेसेदनुर्व्वी-नुतं दण्डनाथ- ।
प्रवरं श्री-शान्तिनाथं परम-जिन-मताम्भोजिनी-राजहंसम् ॥
कुनयक्कळ् जैन-मार्ग्गामृत दोळिरे जळ-क्षीरदन्तिळ्ळि सद्-वा- ।
क्य-निशानोच्चञ्चुविन्दं कुमत-कळुष-पानीयमं बुळ्ळ्द् जैना- ।
नन-निर्य्यत्-तत्त्व-दुग्धामृतमनखिळ-भव्योत्करं मेच्चलासा- ।
दने-गेय्वोत्सिपन्दमादं परम-जिन-मताम्भोजिनी-राजहंस ॥
परमात्मं निष्ठितात्मं जिनपति परम-स्वामि तद्-धर्म्ममार्म्मम् ।
गुरु-वन्द्यं वर्द्धमान-व्रति-पति जनकं सन्द गोविन्द-राजम् ।
पिरियण्णं कन्नपार्य्यं तनगधिपति लक्ष्म-क्ष्मापाळनात्मा- ।
वरजं वाग्भूषणं रेवणनेने नेगळ्दं वात्रियोळ् शान्तिनाथम् ॥
कं ॥ सहज-कवि चतुर-कवि निस्- । सहाय-कवि सुकवि सुकर-कवि मिथ्यात्वा-
पह-कवि सुभग-कवि नुत-महा-कवीन्द्रं सरस्वती-मुख-मुकुरन् ॥
सुकर-रसभावदिं व- । र्ण्णकदिं तत्त्वार्थ-निचयदिं सूक्तिमेनल् ।
सुकुमार-चरितमं पेळ्- । द कवीन्द्राग्रणि सरस्वती-मुख-मुकुर ॥
असहायनागियुं सुज- । न-सहायं मद-विहीननागियुमर्त्थि- ।
प्रसरोत्कट-दानाधिक- । नसदृश-विभवं सरस्वती-मुख-मुकुर ॥
वृ ॥ हरहासाकाश-गङ्गा-जळ-जळरुह-नीहार-नीहार-धात्री- ।
धर-नीहारांशु-तारावनीधर-शरदम्भोधर-क्षीर-नीरा- ।

कर-तारा-भारती-दिग्-रदनि-रदन-पीयूष-डिण्डीर-मुक्ता- ।
कर-कुन्देन्द्रेभ-हंसोज्वळ-विशद-यशो-वल्लभं शान्तिनाथं ॥
ओड्वेयनोळिपर्नें पडेदु पुञ्जिसि पूजिसि कोण-ताणदोळ् ।
मडगदे शिष्टरिङ्डेगे वन्धुगळिल्ल मेगप्पुदेन्दुमे- ।
न्नोडमे शरीरमेन्नदु नियोगद पर्व्वमिदेन्नदेन्दु मे- ।
ळपडदिरिमेन्दु गोसनें तोळल्वुदु··········शान्तिनाथन ॥
कं ॥ एने नेगळ्द शान्तिनाथं । जिन-शासन-सत्-सरोजिनी-कलहंसम् ।
विनयदे निजाधिपति-ल- । क्ष्म-नृपङ्गें सु-धर्म्म-कार्य्यमं विन्नविकुं ॥
चञ्चच्चामीकर-र । त्नाञ्चित-जिन-रुद्र-बुद्ध-हरि-विप्र-कुलों-
·······ह-सङ्कुळदिं । पञ्चमठ-स्थानमेनिसुगुं **बळि-नगर** ॥
व ॥ अन्तु समस्त-देवता-निवास-पवित्रीभूतमप्प राजधानियोळ्प्प
जिनधर्म्म-प्रभावमं पेळ्वडे ॥
वृ ॥ सले जम्बू-द्वीपमोळ्पं तळेदुदु पलवुं····भारतोर्व्वी-।
वळ्यं तद्-द्वीपदोळ् रञ्जिसुगुमेसेगुमा-क्षेत्रदोळ् **कुन्तळं** कु-
न्तळदोळ् सन्तं बसन्तं बनवसे वनवासोर्व्वियोळ् भव्य-सेव्यम् ॥
बळि-नाम-**ग्राम**मा-ग्रामदोळमर-नुतं शान्ति-तीर्त्थेश-वासम् ॥
कं ॥ अ····र्म्म-निर्म्मित-। मदं शिला-कर्म्ममागे माडिसु कोळ्वो-॥
दुदु निनगे धर्ममेम्बुदुम् । अदर्के बगेदन्दु धर्म्म-निर्म्मळ-चित्तम् ॥
वृ ॥ जिननाथावासमं वासव-कृतमेनें मुन्नं शिला-कर्म्मदिं शा-।
सनमप्पन्तागिरल् माडिसि बळिके शि·······स्तम्भमं तज्-।
जिनगेह-द्वारदोळ् निर्म्मिसि विलिखित-नामाङ्क-मालावळी-शा-
सनमं चन्द्रार्क-तारं निले निलिसिदनेम् धन्यनो **लक्ष्म-भूपम्** ॥
कं ॥ मिगे **मूल-संघदोळ्** दे-। **सिग-गणदोळ्** सन्द **कोण्डकुन्दा-
न्द्रान्वयमं** ।

जगती-त····न्त् । इरे नेगळ्चिदर् नेगळ्द-वर्द्धमानमुनीन्द्रर् ॥
वृ ॥ पडेदडे पेम्पनेय्दे वडेयर् श्रुतमं श्रुतदोन्दु मय्मेयम् ।
पडेदडे दिव्यमप्प तपमं पडेयर् तपमं निरन्तरम् ।
पडेदडे कीर्त्तियं पडेयरी·······गुणङ्गळन् ।
पडेवडे वर्द्धमान-मुनिपुङ्गवरन्तिरे मुन्न नोन्तु···॥
सन्ततमोन्दि निन्द तपदोळ् श्रुतदोळ् गुणदोळ् विशेपरि-।
न्निन्तिवरेल्लरिं पिरियरिन्तिवर् अग्गळदग्रगण्यरोर्-।
अन्तिवरेन्दु कीर्त्तिपुदु कूर्त्तु······देव-सि-।
द्धान्त-मुनीन्द्ररं नत-नरेन्द्ररनब्धि-परीत-भूतळम् ॥
मुनिसणमागलाग मुनिासें मुनियुं मुनि-वन्द्यनागना-।
मुनिसु ममत्वदिं ममते मायेयिनन्तदु लोभदिं प्रव-।
र्द्धनकरमेन्दु···········वीत-कपायराद स-।
न्मुनि मुनिचन्द्र-देवरे धरित्रिगे देव····देवरल्लरे ॥
सार-कळा-प्रबोधित-सुदारकलार्ज्जित-साधु-संघ-नि-।
स्तारकर····जात-महीजात-विदारकरुग्र-कर्म्म-सम्-।
हारकरल्युदार······सर्व्वणन्दि-भ-।
ट्टारकरल्ते भव्य-सुकुमारक-कैरव····धिपर् ॥
उरग-पिशाच-भूत-विहगोग्र-नव-ग्रह-शाकिनी-निशा-।
चर-भय····चरदोळ्द्भुतदिं विपरीतमाडदम् ।
वरेदुदे यन्त्रमो·······तन्त्रम्············।
···॥
जित-कुसुमास्त्ररूर्ज्जित-यशो-वनराज्जित-पुण्य-कर्म्मर-।
न्वित-वहु-शास्त्रराद्भुत-सुशीळरवः कृत-किल्विसर् प्रवो-।

धित-त्रुध···।

···॥

····अभिविनुतर् श्री-माघनन्दि-देवर् प्पल्वुं जिन-निळयङ्गळम-खिळा-वनि वर्णिसे वळ्गिगा···································जिन-पूजाभि····र्च्चना-निरतनाहारादि-दान-प्रवर्द्धन-शीलं नुत-भव्य·············हा-मण्डलेश्वरं लक्ष्मरसं श्रीमल्लिकामोद शान्तिनाथ-जि·······कीलक-संवत्सरद भाद्रपदद पुण्णमे-सोमवारद···········देसिगगणद ताळकोलान्वयद माघनन्दि-भट्टार···········र्गे मुन्न श्रीमज्जगदे-कमल्ल-देवर् व्वळ्गिगावेय·······································ळदे मत्तर् प्पन्नेरडु अळ्लिय गोळपय्यन वसदिगे·················श्रीमच्चालुक्य-गङ्ग-पेर्म्मानडि-विक्रमादित्य- देवर··············· ·······मुमं नन्दन-वनद वसदिगे पूर्व्वदिन्नडेव·················भूपं समुचित-विनयं विन्नपं गेय्ये··································दर्प्प-देवम् ॥ अनघ-श्री-शान्तितीर्थेश्वर-पद··················विधि-सहितं शासनं माडि कोट्ट ········(हमेशाके अन्तिम वाक्यावयव तथा श्लोक)·······जिङ्कुळिगे गुळ्दि नाल्कारु पोम्मानिगर्द्धम्···········एरडक्कु कृष्ण-भूमक्कदररे किसु·······अदररेयुं नोडि सिद्धायमक्कुम् ॥·······ग दासोजं खण्ड-रिसिदं मंगळ महा श्री ॥

[जिन शासनकी प्रशंसा।

जिस समय (चालुक्य उपाधियों सहित) त्रैलोक्यमल्ल आहवमल्ल-देव शान्ति और बुद्धिमानीसे राज्य कर रहे थेः—उन्हें लाट, कलिंग, गंग, करहाट, तुरुष्क, वराड, चोळ, कर्णाट, सुराष्ट्र, मालव, दशार्ण्ण, कोशल, केरल ये सब राजा भेंट देते थे। मगध, आन्ध्र, अवन्ति, वंग, द्रविळ, ··रु, खस, आभीर, पाञ्चाळ, लाळ और दूसरे देशोंका उन्होंने नाश कर

किया था। शक सं. ९९० में उक्त मितिको उन्होंने प्रधान योगका उत्सव किया और वे तुंगभद्रामें स्वर्गवासको सिधार गये।

इनका ज्येष्ठ पुत्र सोमेश्वर था। उसका दूसरा नाम 'भुवनैकमल्ल' था। वह जब राज्य कर रहा था:—

तत्पादपद्मोपजीवी लक्ष्मण था। उसकी बहुत-सी प्रशंसा। जिस समय यह बनवसे १२००० पर राज्य कर रहा था:—

उसका दण्डनाथ शान्तिनाथ था। उसकी प्रशंसा। बलिनगर, या बलिग्राम (बलगाम्वे) में सभी धर्मोंके मन्दिरोंके होनेकी बात। राजा लक्ष्मणने भी वहाँ मन्दिर (जिन भगवान्‌का) बनवाया।

मूल संघ, देसिग-गण और कोण्डकुन्दान्वयके वर्द्धमान मुनीन्द्र। मुनिचन्द्र-देव-सिद्धान्त। इन दोनोंकी प्रशंसा। इन्होंने भी जैनमन्दिर बनवाये। महामण्डलेश्वर लक्ष्मरसने, मल्लिकामोद शान्तिनाथ-मन्दिरके लिये, (उक्त मितिको) देसिग-गण तालकोलान्वयके माघनन्दि-भट्टारको कुछ जमीन दानमें दी। दासोजने इस लेखको उत्कीर्ण किया।]

[EC, VII, shikarpur tl., n° 136.]

२०६

सौंदत्ति—कन्नड़-भग्न

[काल लुप्त ?]

भद्रमस्तु जिनशासनाय ॥ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलांछनं [।] जीयात्रै(त्रै)लोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं [॥] स्वस्ति समस्तभुवनाश्रयं श्रीपृथ्वीवल्लभमहाराजाधिराज-परमेश्वर-परमभट्टारकं सत्याश्रयकुलतिलकं चालुक्याभरणं श्रीमद्भुवनैकमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारं सलुत्तमिरे [।] तत्पादपद्मोपजीवि [।] समधिगतपंच-महाशब्द-महामण्डलेश्वरं लत्तलूर्पुरवरेश्वरं त्रिवलीतूर्य्य निर्घोषणं वैरिकुलविध्वान्तकविभीषणं सिन्दूरलाञ्छनं समस्तविद्याविरिंचनं सुवर्णगरुडध्वजं विदग्धमुग्धाङ्गनामकरध्वजं रट्टकुलवनज-

वनमार्त्तण्डं कदनप्रचण्डं रिपुसमरवीरवृकोदरं परनारीसहोदरं साह-
सोत्तुंग सेनर्नसिंग नामादिसमस्तप्रशस्तिसहितं श्रीमन्महामंडलेश्वरं
कार्त्यवीर्यरसर वंशावतारमेन्तेन्दडे ॥ श्रीरमणनतुळविजयश्रीरमणं विपुळ
विमळ समुदित कीर्ति श्रीरमणं चतुरवचःश्रीरमणं **नन्न**भूपनतु-
परूप ॥ आतन तनय । स्थिरतुडिवं कलितनदोळ्पोरेदाळि
मुन्नमिरिवनेन्दडे सकळोर्व्वरेयोळ् कत्तन सत्वद दोरेगं शौर्यद
पोगळ्केगं समनोरे ॥ अन्तेनिसिद वीरकत्तरसर्नि पिरिय ॥ वृ ॥
वसुधा चक्रदोळेन्तु वण्णिसुवदं तन्न(न्ना) [ळ्के] तन्नेळ्गो
तन्नेसकं तन्न पोगर्त्ते तन्न विभवं तन्नोजे तन्नुद्धसाहससंपन्नतेयिं
धरावळयमं नानाविध (धं) कूडे मुद्रिसिदं रट्टर मेरु डायिंम महीपाळं
नृपाळोत्तमं ॥ तदनुज ॥ सुरकुजमं पळंचलुवु[दी]वगुणं सले **संद** वज्र
पंजरमननागतं पळिवुत्तिर्प्पुदु [का]वगुणं परीक्षिसल् सरधियनेय्दे रेग-
पुदु तन्न गभीरगुणं समस्तदिक्परिवृड(ढ)देळ्गेयं नगुवुदुद्धगुण(णं)
कलि**कन्न**भूपन । तत्सुत ॥ क ॥ निरुपम समस्त कडेयोळ्रसिज
(स)
भवनेसेव वाद्यविद्याधरनोळ्ळरसंकसंकरं कप्परवर्षनेरेगे नेगर्द्दनेरेग
महीश ॥ तदनुज ॥ वृ ॥ कदनदोळान्तरातिगहि[यल्ल]द राहुवि-
जाति रूपुनल्लद विनतासु [हंगेयु]र्व्वे(र्वे) दव्कुरियल्लद देहिकालन-
ल्लद जवन ॥ ..म (?) वें ..सुतेल्लद वादव(न)न्त मानविल्लध (द)
रुक्मियेन्दोडांपुदटरा[रु रणा]ग्रदोळ्क्क भूपन ॥ तदग्रजनप्पेरगभूपा-
त्मज ॥ असुहृद्भूपकिरीटताडितपदं वीरांगनालिग(लिं)गनोल्लसि[तां]
सं .. हारहासकाशशिकान्ताकाशगंगाजळप्रसरामोघदिगंतकीर्ति तपनप्र-
..स्फु(सा)जद्गुणदीपवर्ति नेग[र्द्दं] श्री **सेन**-
नप ॥ अरिभूपाळ कृशान्तनुद्धतरिपुक्ष्मापाळसंदोह

शीकर कालानळनु (ने)..........ग्नदर्प्प (?) भयंकरविक्रि[ड्ड]महिपाळ मेघलयकाळोत्पातवातं क्षितीश्वरचूडाम[णि]............[॥] श्रीवनिते़शं कीर्तिश्रीवनितावीशनुदित संशुद्धवच(च:)श्रीरमणीशं वीर (श्री) ....[॥ जिन] नारायिपब्रह्मशुद्धचरितल्विद्यावन............ ट्टासनधर्म्मा (?) रुगळ्विरो........जनकनुविर्जाते प्रत्यक्षगोमिनि तायि मळ्लदेवियेन्दधिक...............नोळ्दमतक्विवर्प्पे (?) री क्षितिपति सैनि (?) र वधूप्रकर.......दिति........आतन कुळांगने [॥] श्री वनिते ताने वन्दु मही वनितेगे तिळकमेनिसि कत्तन वक्ष (क्ष:) श्रीवनिते नेगर्द्द [भाग]लदेवी जगज्जननि सज्जनाग्रणियेनिकु ॥ आ दंपतिगळगे गिरिसुतेगं हरंगमनुरागदे पण्मुखनेन्तु पुट्टुवंत(वि)रे नेगर्द्द रुग्मिणिगमा ह[रिगं] स्मरनेन्तु पुट्टुवन्तिरे सले कान्तिगं रविगमर्कतनूभव नेंतु-पुट्टुवन्तिरलवग्गोल्दु पुट्टिदनु रगु कलि **सेन**भूभुज ॥ अवनीपालानत श्री[पद]कमलयुगं तत्वनिर्ण्णिक्तराद्धान्तविदं चारित्ररत्नाकरनमळ-वच(च:)श्रीवधूकान्तनं गोद्भवदर्प्पारण्यदावानळनुदितलसद्बोधसंशुद्धनेत्रं **रविचन्द्रस्वामि** भव्याम्बुजदिनपनघौघाद्रिसद्वज्रपात ॥ कं ॥ कंड्र-र्गणाब्धिचन्द्रन खण्डितसुतपोविभासिखण्डितमदनं डिंडीरपिंड सुर-वेदण (ण्ड)[य]शश्पिण्डनर्हणंदि मुनीन्द्र ॥ मल्लिकामाले ॥ कन्तु-राजगजेन्द्रकेसरि भ[व्यलोकसुखाकरं कान्तवाग्वनितामनोरमनुप्रवी-रतपो]मयं शान्तमूर्ति दिगन्तकीर्तिविराजि द्रडा (ढाभिमानी रणभू-सेनानि रट्टान्वयश्रीनेत्रं बुधमित्र नुज्व (ज्ज्व) ळयशश्पात्रं नृपं रंजिपं आ सेनावनिपंगमप्रतिमलक्ष्मीदेविगं पुट्टिदं । भूसंरक्षणदक्षदक्षिणभुजं विध्वस्तशत्रुव (व्र) जं त्रासानम्रनृपालपाळितजयश्रीस(श)स्तान्विता

भासं सूनृतवाग्विळासनवनीनाथोत्तमं कत्तमं ॥ आ विभुविन वधु पद्मलदेवी कळारूपविभवजिनमतदोळ्वाग्देवी रतिदेवी लक्ष्मीदेवी शचीदेवियेनिसि मिगे सोगयिसुवळ् ॥ श्रीपति ना विष्णुः पृथुवीपति येने लक्ष्मीदेवनो-गेदु वसुदेवोपमकत्तमविभुगं श्रीपद्मलदेवियेम्ब मुतदेवकिगं ॥ प्रकटि-ततेजनन्वयसरोजसमूहविकासि(शि) सज्जनप्रकररथांग सम्मदकर (रं) नियताभ्युदयप्रशोभिताधिकनिजमण्डळं जितकळंक पवित्रचरित्रनागि चन्द्रिकेगधिनाथनादनिदु विस्मयन्त प्रभुलक्ष्मीभूभुजं ॥ श्रीयुवतीशहेम-गरुडध्वजमंडितमण्डलेश्वरनारायणलक्ष्मणंगे तनुजम्भुजदन्ते धरोरु-भारधौरेयरनून दानजयधर्मधर्ब्विभुकार्त्तवीर्यलक्ष्मीयुतमल्लिकार्जुन महीश्वररादरतर्क्यविक्रमर् ॥ परचक्रं निजविक्रमक्कगिदु तेजःच (जश्ज) क्रमं विट्टु कोव्वर चक्रक्केणे र्यप्पनन्तिरेविनं दिक्चक्रमं व्यापिसुत्तिरे

[यह लेख भी एक टुकड़ा है और उस पाषाण-तलसे लिया गया है जो मि० फ्लीटको उस मन्दिरके आँगनमें आधा गड़ा हुआ मिला था जिसमें कि पूर्वके दो लेख (नं. १३० और १६०) मिले थे। इसमें नन्नसे ले कर कार्त्तवीर्य द्वितीय तककी वंशावली मिलती है। का० द्वि० को चालुक्य राजा भुवनैकमल्लदेव या सोमेश्वर द्वितीय बतलाया गया है। इसका काल सर डब्ल्यू इलियट (Sir W. Elliot) ने शक ९९१ ? (१०६९–७० ई०) से लेकर शक ९९८ (१०७६–७ ई०) तक बताया है। इसमें उसके पुत्र सेन द्वितीयका नाम भी आता है, लेकिन लेखकी वंशावलिके भागका मुख्य उद्देश्य स्पष्टतः ७ वी पंक्तिमें है जिसमें कार्तवीर्यकी सन्तान-परम्पराका उल्लेख है। यही कार्तवीर्य उस समय अपने कुटुम्बका प्रतिनिधि था, उसका पुत्र सेन नहीं, क्योंकि वह उस समय निरा बच्चा रहा होगा। दानगत लेखका भाग लुप्त है।]

B, X, p. 172, a; p. 213–216, t.; p. 217–219, tr. (ins. n° 4)]

२०६

मुल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड़

[काल लुप्त पर लगभग १०७० ई०]

[मुल्लूर (निड्डुव परगना)में, पार्श्वनाथ बस्तिके पश्चिममें तीसरे पाषाणपर]

....................यानिवि सत्या....................ळ्देवि ॥ भूतळ

............विनिर्गत.... ....ळोक्यविख्याते............यण मोक्षदे

.............वर्ण्ण..............धामुळं.........पनिद्....माळि..............

वुर्व्वीपाळ-भूत....ग्ररसिद् काळणियोद्व.............न वचन काय वङ्गि

........तुळ्ळिन........यन्वन्तिरे स.............त दिविजळोक ॥ खं

.............पृथुविकोङ्गाळ्वनरसि....

[यह समस्त लेख बहुत बिगड़ा हुआ है। किसी मरे हुएका स्मारक है। और पृथुविकोङ्गाळ्वकी रानी.........]

[EC, IX, Coorg tl., n° 36]

२०७

चन्द्रलिके—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न

[शक ९९६=१०७४ ई०]

[चन्द्रलिकेमें, उसी बस्तिके उत्तरकी ओरके एक दूसरे पाषाणपर]

भद्रं समन्तभद्रस्य पूज्यपादस्य सन्मतेः ।
अकलंक-गुरोर्भूयात् शासनाय जिनेशिनः ॥

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति श्री-प्रमदा-प्रमोद-जनकं यस्योरु-वक्ष-स्थलम्
यद्दोर्द्दण्ड-कृतान्त-वक्त्र-विवरे मग्नं द्विषट्-पार्थिवैः ।

यस्येयं वसुधा चतुर्ज्जलनिधिर्व्यविष्टिता प्रेयसी
जीयाच्छ्री-**भुवनैकमल्ल-नृपतिः** सोऽयं नतानन्दनः ॥
तेनेदं नरपाल-मौलि-विळसन्माणिक्य-लीढाङ्घ्रिणा
श्रीमद्-मल्ल-सुतेन शासनमहो दत्तं द्विषण्माथिना ।
आहारादि-चतुर्व्विधं मुनिगणे दानं च यस्य प्रियम्
तेनाप्तं **कुलचन्द्र-देव-मुनिना** शुभ्राभ्र-सत्-कीर्त्तिना(म्) ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळ-तिळकं चालुक्याभरणं श्रीमद्-**भुवनैकमल्ल-**देवर विजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारं-बरं सलुत्त-मिरे **बङ्कापुरद** नेलेवीडिनोळ् सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे ॥ तत्पादपद्मोपजीवि स्वस्ति समस्त-भुवन-प्रस्तुत-ब्रह्म-क्षत्र-वीरान्वय श्री-**पृथ्वी-वल्लभ** महाराजाधिराज परमेश्वरं **कोळाळ-पुर**वरेश्वरं विक्रम-गङ्ग जयदुत्तरङ्ग............मणि मण्डलिक-मकुट-चूडामणि श्रीमच्चा........ पेर्म्माडि भुवनैक-वीर**नुदयादित्यनुं** चालु........ल-स्तम्भं नर-वैद्यं कुमार-मण्डलिकं बुद्धर........गेय्यलु श्रीमद्-**भुवनैकमल्ल-देवरु भर** ....**कवर्त्ति**-नवीकृतमप्प **बन्दणिके**-य तीर्त्थ........शान्ति-नाथ-देव........त-नवीकार........लाप्रवर्त्तन........कालान्तरित-पु ....नव........द कम्पणं **नागरखण्ड**........बाड........ **शक-वर्ष ९९६** रनेय आ.......द पुष्य-मासदुत्तरायण-संक्रमण.... ....**श्री-मूल-संघान्वय-क्राणूर्-गण**........च्छद श्रीमदुभय-सिद्धान्त-वार्द्धि-चू............प्प **राम(परमा)नन्दि-सिद्धान्त-देवर** शिष्यरु **कुळ**........**देवर** कालं कर्च्चि सर्व्व-नमश्यं धारा-पूर्व्व........ नशासनमुं शिला-शासनमुं माडि........(हमेशाके अन्तिम वाक्यावयव

और श्लोक)········तं रितोक्ति-सहितं·········खं मुखाब्ज-लसित ·······मतोदयं सद········मदनेन्त्रिनं, नेगळ्द············(इमेशाका अन्तिम श्लोक)।

[जिनशासनके कल्याणकी कामना। श्रीमद् मल्लके पुत्रद्वारा यह शासन (दान) कुलचन्द्र-देव-मुनिको मिला था। जिस समय (चालुक्य पदों सहित) भुवनैकमल्ल-देवका विजय-राज्य प्रवर्द्धमान था और वे बंकापुरमें रहते थेः—तत्पादपद्मोपजीवी चालुक्य पेर्म्माडि भुवनैकवीर उदयादित्य शासन कर रहे थे;—भुवनैकमल्ल-देवने शान्तिनाथ-मन्दिरके लिये, (उक्त मितिको), मूलसंघान्वय तथा काणूर-गणके परमानन्द-सिद्धान्त-देवके शिष्य कुलचन्द्र-देवको नागरखण्डमें भूमिदान किया।]

[EC, VII, Shikarpur tl., n° 221.]

२०८

बलगाम्बे—कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका, पर संभवतः लगभग १०७५ ई० ?]

[बलगाम्बेमें, चन्न-बसवप्पके खेतमें भग्न जिन-मूर्तिपर]

(नागरी अक्षर)

स्वस्ति श्री चित्रकूटाम्नायदावलि मालवद शान्तिनाथ-देव-सम्बन्ध श्री-बलात्कार-गण मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवर शिसिनु अनन्त-कीर्त्ति-देवरु हेग्गडे केसव-देवङ्गे धारा-पूर्व्वकं माडि कोट्टेवु प्रथिष्टे पुण्य सान्ति (यहाँ दानकी विगत दी हुई है)।

[बलात्कार-गणके, मालवके शान्ति-नाथ-देवसे सम्बन्धित चित्रकूटाम्नायके मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवके शिष्य अनन्तकीर्त्ति-देवने हेग्गडे केशव-देवको दान दिया (यहाँ उसकी विगत है)।]

[EC, VII, shikapur tl., n° 134.]

२०९

कुप्पुटूरू—कन्नड़

[शक ९९७=१०७५ ई०]

श्रीमज्जयत्यनेकान्त-वाद-सम्पादितोदयम् ।
निष्प्रत्यूह-नमपाकशासनं जिन-शासनम् ॥
पदिनाल्कु.........................आस्पदमा- ।
दुदशेष-लोकमल्लिर्प्पुदु मध्यम-....एक-रज्जु-प्रमितम् ॥

आ-मध्यम-लोकद

.................नडुवण ।
पोम्बेट्टद तेङ्कलेसेव भरतावनि........॥
........बुजवदनेय कुन्तळव् ।
एम्बन्ते सेदत्तु ललित........... ॥
कुन्तळ-भूतळक्के तोडवादुदु तां **वनवासि-देशमो-** ।
रन्तेसेवग्रहार-पुर-पल्लिगळिन्दुरु-नन्दनाळियिन्- ।
दं तुरुगिर्द्द शाळि-वनदिन्द्............।
क्रान्त-विरोधियिर्द्दु वनवासियोळन्वय-राजधानियोळ् ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डळेश्वर **वनवासि-पुर-**वराधीश्वर...........लब्ध-वर-प्रसादं **कादम्ब**-कुळ-कमळ-मार्त्तण्डने-निसिद **कीर्त्ति-देवन** वंश-वीर्य्य-प्रभावमेन्तेन्दडे ॥

विनुतानन्द-जिन-व्रतीन्द्र-भगिनी....... ।
वन-जैनाङ्घ्रि-सरोज-भृङ्गनधिकाभ्यस्तास्त्र-शास्त्रं....।
....नुतोर्व्वीज-तळ-प्रसूति-वर-वानप्रस्थ-तद्-योगि-पू- ।
जन-शीलं वनवासियागि.........इन्द्रोत्तमम् ॥

शासन-देवियिं कुडिसि राज्यमना·······तद्-वनम् ।
देशमदागि निर्मिसि नोसलिगडे पट्टमिदेन्दु पीलियम् ।
वास्···········वळिक्का-विभुविङ्गे नाममादुवुद्- ।
भासि मय्···वर्म्मनभिवन्द्य-कदम्ब-कुळं त्रिलोचनम् ॥
नयदा **मयूरवर्म्मा**-न्वय·········अलर्च्चिदं कुवळयमम् ।
जय-लक्ष्मी-रमणं···जय-भुज-वळनमळकीर्त्ति **कीर्त्ति**-नृपाळ ॥
असम-वितरण···स-मीमं **कीर्त्ति-देव**नेम्बी-पेसरम् ।
वसुधे कुडे पडेदनेण्टुं-देसेयानेगे कीर्त्ति कीर्त्ति-मुख्यवादुदरिम् ॥
किं कर्ण्णः किं··········विज-पतिष् किं स्मरः किं विधाता
दानी नूनं प्रतापी पृथु···र-विभवश्चारु-रूपप् कला-वित् ।
य····यस्येति नित्यं वितरण-विजय········न्दर्य्य-विद्या- ।
वार्द्धिस् संस्तूयतेऽसौ सकळ-रिपु-कुलो·······नः **कीर्त्ति-देवः** ॥
चलदिं साधिसि सप्त-कोङ्कणमनाटन्दिक्कि विद्विष्ट-मण्—।
············उव्वरा-वळयमङ् केयूरमं पेत्तल् ।
तळे····दक्षिण-वाहु-दण्डदोळुदात्तं **कीर्त्ति-देवं** यशो—।
मळ-मुक्ता-फळ्········णोचित-लसद्-दिक्-कामिनी-सङ्कुळम् ॥

आ-**कीर्त्ति-देव**नग्रमहिषी ॥

परिवार-सुरभि जिनमत-। शरधि-सुधाकिरण-लेखे सुचरि···।
भरणेयेने नेगळ्द नृप- सौन्-। दरि **माळल-देवि**येणेगे राणिय-रेणेये ।
पुरु-जिन-पति कुल-देव्यं । गुरु वेट्टद···मुनि **कीर्त्ति**-नृपेश्वरम् ।
आत्म-कान्तनेने वा-। प्पुरे **माळल-देवि**-राणियेणेयार् स्सतियर् ॥
सिरि गिरिजाते सीते रति भा····रुक्मिणि-देवि रूप-सौन्द-
रतेगे पेर्म्मेगुद्ध········कधिकं सुवगिङ्के सत्कळा-।

करतेगणं जिनेन्द्र-पद-भक्तिगे पासटि········।
सरि कलि-कीर्त्ति-देवन कुळाङ्गने माळल-देवि-राणियोळ् ॥
मिळिर्वे पताकेगळ् मकर-तोरण-मण्डलि मान-गम्बमग्-।
गळिसिरे·······चैत्य-गृहावळि लेक्किपड्डे सड्-।
गलिपडे लक्केंग मिगिलशेष-जनं तणिवन्तु कोळल्व पू-।
मळेयोळे नोम्प नोम्पि सतकोटिये माळ्ल·········॥

व ॥ आ-वनवासे-नाडोळु ॥

बळेद सुगन्धि-शालि-वनदिन्दोळगोप्पुव नारिकेळ-का-।
दळ-नव-पूग-नागलतिका-वनदिं परि········ळदिम् ।
वळयितमागि विप्र-सुर-चित्र-निकेतन-माळेयिन्दे कण्-।
गोळिपुदु कुप्पटूर् ससकळ-विद्येगे तानेने जन्म-भूतलम् ॥
नेगळ्दखिवळ····ति-पुराण-कळा-वहु-तर्क-तन्त्र-पा-।
रगरुचिताध्वरावभृथ-संस्नपनाति पवित्र-गात्रर-।
त्यगणित-सत्य-शौच········तिथि-पूजन-देव-पूजेयिम् ।
सोगयिप कुप्पटूर विभु-विप्ररिदेम् भुवन-प्रसिद्धरो ॥
धरेगे चतुस्समय-समु ।······शरणागतैक-रक्षामणिगळ् ।
निरवद्य-चरितराज्ञा-। धरारी-कुप्पटूर सासिर्वरवोल् ॥
ब्रह्मैकश्चतुरा····थ विबुधा देवाः कविर्भार्गवो
येषामग्रत एव नान्य इति ये प्रस्तुत्य-विद्यार्ण्णवाः ।
उत्तुङ्गाः कुळशैळवत्तरणिवत्तेजस्विनो वार्द्धिवत्
गम्भीरा भुवि कुप्पटूर्-व्विभु-वरा विप्रा जयन्ति स्थिरम् ॥
प्राणुतं वन्दणिका-सु····कृत-सम्बन्धं जगक्केय्दे भू-।
षणमी-ब्रह्म-जिनालयं दलेने पेळ्दी-कुप्पटूरोळ् गुणो-।

क्वने मुं मा········दी-स्थलकदेडे-नाडोळ् चल्वु-वेतिर्द - सिड्डु ।
डणियं माळल-देवि तां विडिसिदळ् श्री-कीर्ति-भूपाळनिम् ॥

अन्ता-वन्दणिका-तीर्त्यादि-सकळ-चैत्यालयकाचार्य्यरुं मण्डळाचार्य्यरुमेनिसिद पद्मनन्दि-सिद्धान्त-देवर गुरु-कु·······न्वय-प्रभावमेन्तेन्दोडे ॥

दुरित-कुलान्तकं चरम-तीर्थकरं विभु वीरनाथनी- ।
धरे तिळिवन्तु हेयमिद·······समस्त-तत्त्वमम् ॥
परिविडियिन्दे पेव्ददु जनमं वर-मोक्ष-पथक्के तिर्द्दि वित्- ।
तरिसिद मुक्ति-कान्तेय लताङ्गमनप्पिदनिन्द्र-वन्दि -॥
आ-नेगळ्द्दन्त्य-कश्यपनिनादुदु काश्यप-गोत्रमी-जनम् ।
ज्ञान-निधानना-जिनन सद्गण-नायकरग्रिमावधि- ।
ज्ञानिगळप्प गौतम-मुनि·······मु····रे श्रुतकेवळ-प्रभा- ।
भानुगळप्प विष्णु-मुनि-मुख्यरुमा-पथमं निमिर्च्चिदर् ॥
यतिगळवरिन्दे पलवरुव् । अतीतवा····वळिक्कमवतरिसि वहु-।
श्रुतनागियुं वलं वि- । श्रुतनादं भद्रबाहु-यतियिदुचित्रम् ॥

अवरिं वळिक्के ॥

श्रुत-पारगरनवद्यर् । चतुरङ्गुळ-चारणर्द्धि-सम्पन्नर् स्सं- ।
हृत-कु-मत-तत्त्वरेनिसिदर् । अतर्क्य-गुण-जलधिकुण्डकुन्दाचार्य्यर् ॥

आ-कोण्डकुन्दान्वयदोळु ॥

श्री-कुण्डकुन्दान्वय-मूलसंघे काणूर्-गणे गच्छ-सु-तिन्त्रिणीके (यू)
अम्भोनिधाविन्दुरिवोदपादि सिद्धान्ति-चक्रेश्वर-पद्मनन्दी ॥
शान्त-रसं पोनल्वरिदु संयमवल्लि मडल्तु पर्व्वि तो- ।

........चराचर-व्रजमनात्म-वचोऽमृतदिं विनेयर ।
खान्त-रजो-मळं तोळेदु पोय्तेने पेळ् बुध-पद्मनन्दि-सि- ।
द्धान्तिक-चक्रवर्तियनदार् पोगळर् ग्गुण-शील-मूर्त्तियम् ॥

आ-प्रतिष्ठाचार्य्यरेनिसिद श्री-**पद्मनन्दि**-सिद्धान्ति-देवरिं सु-प्रतिष्ठितमाद **कुप्पटूर** श्री-**पार्श्वदेवर** चैत्यालयमं पट्ट-**मा-देवि माळल-देवि** नेरेये माडिसि स्वस्ति यम-नियम-स्वाध्याय-ध्यान-धारण-मौनानुष्ठान-जप-समाधि-शील-गुण-सम्पन्नरप्प श्रीमदनादियग्रहारं कुप्पटूरशेष-महाजनङ्गळं यथोक्त-विधियिं पूजिसियवरिं **ब्रह्म-जिनालयमेन्दु** पेसरिट्टुयल्लिय **कोटी वर-मूलस्थान**-प्रमुख-पदिनेण्टु-स्थानदाचार्य्यरुं बेरसु **बनवसेय मधुकेश्वर**-देवराचार्य्यरं बरिसि पूजेयं कोट्टु जोग-वट्टिगेय-निक्किसिया-महाजनङ्गळिगेयय्नूरु-होन्नं कोट्टु स्त (स्थ) ल-वृत्ति (आगेकी ३ पंक्तियोंमें दानकी विस्तृत चर्चा है) **शक-नृप-वर्षद ९९७ य पिङ्गल-संवत्सरद् क्षय-तदिगेयमावास्ये-आदित्यवार-संक्रमण-व्यतीपातवोन्दिद दिनदोळु** देवर नित्य-नैमित्त-पूजेगं, ऋषियराहार-दानक्कवेन्दु **पद्मणन्दि-सिद्धान्तिचक्रवर्त्तिं**गळ् कालं तोळेदु धारा-पूर्व्वकं माडि कोट्टळु (हमेशाके अन्तिम वाक्यात्रयव) आरुवणव नमस्यवागि बिट्टरु ॥ (हमेशाके अन्तिम श्लोक) **बम्मरहरियणण** हेळद शासन मङ्गळ महाश्री ॥

[मेरु पर्वत, भरत क्षेत्र, कुन्तल-देश, और वनवासिके उल्लेखपूर्वकः—कादम्ब-कुल-कमल-मार्त्तण्ड कीर्त्ति-देव राज्य करते थे, जिनका वंशावतार निम्न प्रकार हैः—मयूरवर्म्मा नामके एक राजा या युवराज थे। शासन-देवीकी कृपासे इनको राज्य मिला था, और एक वनको राज्यके रूपमें रूपान्तरित किया गया था। एक मयूरके पङ्खोंका बनाया हुआ पट्ट उनके सिरपर रक्खा गया था, इसलिए उनका नाम मयूरवर्म्मा था। ये कदम्ब-कुलके अभिवन्द्य थे। उन्हींकी साक्षात् सन्तान कीर्त्ति-देव थे; उनकी

प्रशंसा। उन्होंने सप्त कोंकणोंको, लीलामात्रमें ही वश कर लिया था। उनकी ज्येष्ठ रानी माळल-देवी थीं; उसकी प्रशंसा।

उस वनवासे-नाडमें, (अनेक आकर्षणों सहित) कुप्पटूर् था, जिसके हजार ब्राह्मण अपनी विद्या और भक्तिके लिये विख्यात थे। प्रसिद्ध बन्दणिकेसे सम्बन्ध रखनेवाली चीजोंमेंसे कुप्पटूरका ब्रह्म-जिनालय सबसे आगे था; इसके लिये माळल-देवीने राजा कीर्तिसे सिडुणि, जो एडे-नाडमें सर्व-सुन्दर स्थान था, प्राप्त किया था।

बन्दणिके तीर्थ तथा दूसरे चैत्यालयोंके मुख्य पुरोहित मण्डलाचार्य पद्मनन्दिसिद्धान्तदेवके आध्यात्मिक वंशका अवतार-वर्णनः—भगवान वीरनाथ, गणधर गौतम (इन्द्रभूति) मुनि, तथा श्रुत-केवली विष्णुमुनि ये तीन ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने जिन-मार्गका विशेष रूपसे विस्तार किया। उनके बाद कई मुनियोंके गुजर जानेके बाद भद्रबाहु यति हुए। उनके बाद, जैनपरम्परामें परिपूर्णरूपसे निष्णात, चार अङ्गुल ऊपर जमीनसे चलनेवाले (चारणऋद्धिधारक) कुन्दकुन्दाचार्य हुए। उसी कुन्दकुन्दान्वयमें मूल-संघ, काणूर्-गण तथा तिन्त्रिणीक-गच्छके सिद्धान्ति-चक्रेश्वर पद्मनन्दि हुए; उनकी प्रशंसा।

उस पट्ट-महिषी माळल-देवीने कुप्पटूरके पार्श्व-देवचैत्यालयको उन पद्मनन्दिसिद्धान्त देवसे सुसंस्कृत कराके और उसका नाम वहाँके ब्राह्मणों (जिनमें साधुओं-मुनियोंके गुण थे) से 'ब्रह्म जिनालय' रखवाकर कोटीश्वर-मूलस्थान तथा वहाँके सभी अन्य १८ मन्दिरोंके पुरोहितोंके साथ, तथा वनवासि-मधुकेश्वरको भी बुलवा कर उनकी पूजा करके और उन्हें ५०० 'होन्नु' देकर, और उनसे (उक्त) भूमियाँ प्राप्त करके,—इन सबको तथा कीर्ति-देवसे प्राप्त सिडुणिबल्लिको (उक्त मितिको) प्राप्तकर, पद्मनन्दि सिद्धान्त-चक्रवर्तिके पाद-प्रक्षाल-पूर्वक दैनिक पूजा और ऋषियोंके आहारके लिये दान कर दिया।]

[EC, VIII, sorab tl., n° 262.]

२१०

गुडिगेरी—कन्नड़-भग्न

[शक सं० ९९८=१०७६ ई०]

१ –˘ – – लवर बसदि [म्] ॥ वृ ॥ सर ˘ ˘ – ˘ – ˘ ˘ ˘ –
˘ ˘ – ˘ ˘ – ˘ – ˘ – ˘ ˘ ˘ ˘ – ˘ – ˘ नय-मूकरनन्तदु माणे
वाग्न–

२ याकरनभयाकरं द्विज-दिवाकरन्– ˘ ˘ – ˘ – ˘ – ˘ ˘ ˘ ˘
भीकरं बुध-निशाकरनुद्घयशं **प्रभाकरम्** ॥ अन्तेनिसिद
पेर्ग्गडे

३ **प्रभाकरय्य**ननुभवणेयल्तु ॥ ॐ स्वस्ति समस्त-भुवनवलय-
निलय-निरतिशय-केवलज्ञान-नेत्रतृतीय-विराजमान-
भगवदर्हत्सर्व्वज्ञवीतरागपरमेश्वरपरमभट्टारकमुखकमंलविनिर्ग्ग-
तानेक-सदसदादिवस्तुस्वरूपनिरूपणप्रवीणसिद्धा-

५ न्तादि-समस्तशास्त्रामृतपारावारपारगरुमनेकनृपतिमकुटतटघटि-
तमणिगणकिरणजलधाराधौताचदातपूतचर-

६ णारविन्दरुं बुधजनमनःपुण्डरीकवनमार्त्तण्डरुं षट्तर्क्कषण्मुखरुं
परमतपश्चरणनिरतरुं **परवादिशरभभेरुण्डा**पर-

७ नामधेयरप्प श्रीमत् **श्रीनन्दिपण्डितदेवरा**चार्य्यरागि तपो-
राज्यं-गेय्युत्तमिरे ॥ वृ ॥ जिनसमयागमाम्बुनिधिपारगरु-

८ ग्रतपोनिवासिगळ् मनसिज-वैरिगळ् शम-दमाम्बुधिगळ् बुध-
सज्जनस्तुतर्व्विनतनरेन्द्ररुन्द्रमकुटार्च्चितपादपयोज-

९ युग्मरेम्त्रिनितु महत्त्वदिं **सिरियनन्दि-मुनीन्द्ररे** देवरुर्व्वि-
योळ् ॥ अवर शिष्यितियर् ॥ शम-दम-यम-नियमयुतर्व्वि-

१० मल-चरित्रर् जिनेन्द्रधर्म्मोद्धरणक्रमनिरतरेल्ले लोकोत्तमरेसेवष्टो-
पवासिगन्तियरेळेयोळ् ॥ वृ ॥ अन्तवरेळु
११ मत्तरने पण्डितरीये नमस्यमागि कल्पान्तदिनं वरं पडेदु पार्श्व-
जिनेश्वर-पूजेगं श्रुतात्यन्तसदान्नदान-
१२ विधिगं सले कोट्टरिदं नितान्तवोरन्तिरे रक्षिप[र्] व्वज-
तटाकद पन्नेरडुं-गवुण्डुगळ् ॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥
१३ ॐ समस्तगुणसम्पन्ननप्प श्रीमत्सेनवोव सिङ्गणाङ्क ॥
अरुहने नम्बिद देय्वं गुरुगळु परवादि-शरभ-भेरुण्ड-
१४ बुधर्प्पर-हितमे तनगे चरितं दोरे-वेत्तुदु सिङ्गनेम् कृतार्त्थनो
जगदोळ् ॥ परमश्रीजैनधर्म्मक्कनवरतविशेषान्नदानक्के
१५ मुन्नं भरतं श्रेयांसनीगळु निजकुलतिलकं जैनधर्म्माब्धिचन्द्रं
स्फुरदुद्यत्तेजनत्युन्नतनमलयशं शिष्टरत्नाकरं-
१६ वाप्पुरे सिङ्गं भव्यसेव्यं शुचि-शुभचरितं धात्रियोळु पुण्य-
पुञ्जम् ॥ कन्द ॥ परहितचरित्रननुपमवरगुणनिल-
१७ यं प्रियम्वदं धर्मदनक्षरपक्षपाति यतिपति-सिरिणन्दिव्र(व्र)ति-
पदाब्जभृङ्गं सिङ्गम् ॥ अमलचरित्रं बुधहृत्क-
१८ मलाकरदिनकरं कृतार्त्थं जैनक्रमनलिनेष्टं श्रीनन्दिमुनीन्द्रर
सेनवोवसिङ्गं धरेयोळ् ॥ अन्तेनिसिद ॥ ॐ ॥
१९ शकवर्ष ९९८ नेय नल-संवत्सरद आहेयोळु स्वस्ति
श्रीमत् परवादि-शरभभेरुण्डापरनामधेयरप्प
२० श्रीनन्दिपण्डितदेवर्म्मुन्नं श्रीमत् चालुक्य-चक्रवर्त्तिविजया-
दित्यवल्लभानुजेयप्प श्रीमत् कुङ्कुम-महा-

२१ **देवि पुरिगेरेयल्लु** माडिसिदानेसेजेय-बसदिगे ताम्र (ताम्र) शासन-मर्य्यादेयिन्दाळ्व **गुडिगेरेय** भूमियोळगे प—

२२ डुवण पोलनोत्तु-त्रोगिळदडे कालदिय-नायिम्मरसंगे शासनमं तोरि पडेद भूमियोळगे तम्म गुड्डं **सिङ्गय्यंगे** कारु—

२३ ण्यदिं सर्व्वनमस्यमागि पदिनाल्कु मत्तरं दये-गेय्दु कोट्टदा-यय्यना पदिनाल्कु मत्तरुमं ऋषियर्गे **गुडि-**

२४ **गेरेयोळ्** आहारदानं नडेवन्तागि बिटनी केय्योळ् पुट्टिदर्त्थ-मन्निल्लियाहारदानक्कल्लदे पेरतोन्दु धर्म्मक्कं

२५ पेरतोन्देडेगमुर्य्यलागदिन्ती मर्य्यादेयनरसुं पण्डितरुं पन्निर्व्व-गर्गावुण्डुगळुं धर्म्मवरिववरेल्ल-

२६ रुवोडेयरागि परिरक्षे-गेय्दु स्वधर्म्मदिं नडसुवुदु ॥ कन्द ॥ **गुडिगेरेयोळु** धर्म्मंगळिगोडरिसुववरेल्ल

२७ बोडेयरी धर्म्मं कावोडेयरेमोर्व्वरे वेनवेदुड्डपति रवि जलधि धात्रि निलुपन्नेवरं ॥ अन्तु **सिङ्गण्णं** बिट्ट

२८ केय्यो चतुस्सीमेयेन्तेने मूड बन्दि-गावुण्डन केयि तेङ्क **पुल्लुङ्गूर** बट्टे पडुव बसदिय केय्यु [म्]

२९ नाकय्यन केयि बडग गावुण्डुगळ पसुगेय पोलनन्तु मत्तर्प्प-दिनाल्कु ॥ मत्त**मष्टोपवासि-कन्तियर**

३० बिट्ट केय्गे चतुस्सीमेयेन्तेने मूड **बङ्गगेरिय** केयि तेङ्क ग्रामचै-त्यालयद केयि पडुव पेर्ग्गडे

३१ प्रभाकरय्यन केयि बडग **पुल्लुङ्गूर** बट्टेयन्तु मत्तरेळुमनिन्ती येरडुं पर्य्यायद मत्तरिर्प्पत्तो

३२ न्दुमं प्रतिपालिसुववर्ग्गे वारणासि कुरुक्षेत्रं प्रयागेयर्ग्घ्यतीर्त्थं
मोदलागि पुण्यतीर्त्थङ्गळो-

३३ ळु सूर्य्यग्रहणदोळु सासिर कविलेयनलङ्कारसहितं चतुर्व्वेदपार-
गरप्प सासिर्व्वर्ब्राह्म-

३४ णर्ग्गेयुभयमुखिगोट्ट प(फ)लमक्कुवी धर्म्ममनळियल्लु मनंद-
दवर्ग्गेयिन्ती पुण्य-तीर्त्थङ्गळोळु सासि-

३५ रकविलेयुम [म्] सासिर्व्वर्ब्राह्मणरुमनळिद पञ्चमहापातकनक्कु ॥
ॐ स्वस्ति श्रीमत् परवादि-शरभ-भे-

३६ रुण्डापरनामवेयरप्प **श्रीनन्दि**पण्डितदेवर्म्मत्तमा पडुववोल-
दोळगे पन्निर्व्वर्ग्गावुण्डुगळ्गो दये-गेय्दुम्वळियागि

३७ कोट्ट मत्तर्न्नूर पन्नोन्दु पेर्ग्गडे प्रभाकरय्यन मग **रुद्रय्यङ्गे** दये-
गेय्दुम्वळियागि कोट्ट मत्तर्प्पदि-

३८ नाल्कु । **सेनवोव हव्वणंगे** दये-गेय्दुम्वळियागि कोट्ट मत्त-
र्प्पदिनाल्कु **भूकियर-कावणंगे** दये-गेय्दुम्वळि-

३९ यागि कोट्ट मत्तरेळु **कन्तियर-नाकय्यङ्गे** दये-गेय्दुम्वळियागि
कोट्ट मत्तर्न्नाल्कु कम्मवरुनूरु श्रीमद्भुवनै-

४० **कमल्ल-शान्तिनाथ-देवर्ग्गे** सर्व्वनमस्यमागि पडेद मत्तरिर्प्पत्तु ॥
वहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः य-

४१ स्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा प(फ)लम् ॥ स्वदत्तां
परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम् षष्टिर्व्वर्षसहस्रा-

४२ यां (णि) मि (वि) ष्ठायां जायते कृमिः ॥

[प्रभाकर (पंक्ति २) या प्रभाकरय्य (पंक्ति ३) नामके 'पेर्गडे' की जगहपर काम करनेवाले एक अधिकारीके वर्णनके साथ यह लेख शुरू होता है। उसके समयमें श्रीनन्दि पण्डितदेव (पं. ७) सिरियनन्दि

मुनीन्द्र (पं. ९), या सिरिणन्दि (पं. १७) नामके गुरु थे जो सर्व पदार्थोके व्याख्यान करनेमें चतुर थे, जिनकी पदवी 'परवादि-शरभ-भेरुण्ड' (पं. ६) थी। जब ये आचार्य, श्रीनन्दिपण्डित, तपश्चर्यामें संलग्न थे, उनके शिष्य 'अष्टोपवासिगन्ति' (पं. १०), या अष्टोपवास-कन्ति (पं. २९) थे, जो जिनधर्मके उद्धार करनेमें बहुत प्रसन्न थे। और इनको श्रीनन्दि पण्डितसे सात 'मत्तर' भूमिका 'नमस्य' दान मिला था और इस दानका उपयोग ध्वजतटाक (पं० १२) (गाँवके) १२ 'गवुण्डु' सरदारोंकी छत्रछायाके नीचे, पार्श्वजिनेश्वरकी पूजा तथा शास्त्र लिखनेवालोंके भोजनके प्रबंधके लिये किया। इसके बाद लेखमें एक 'सेनबोव' या पटवारी सिङ्गण्ण (पं. १३), सिङ्ग (पं. १४), या सिङ्गय्य (पं. २२) का उल्लेख आता है जो जिनधर्मभक्त था। यह सिङ्ग श्रीनन्दिका पटवारी था।

इसके बाद कथन है कि अनल संवत्सर, जो व्यतीत शक सं. ९९८ था, की आही या आश्रहीमें श्रीनन्दिपण्डितको गुडिगेरीकी भूमिमें पश्चिम दिशाके खेतोंका अधिकार मिल गया था। ये खेत, एक ताम्रपत्रके अनुसार, उस आलेसेज्जेय बसदिके जैनमन्दिरके अधिकारमें थे, जिसको श्रीमत् चालुक्यचक्रवर्ती विजयादित्यवल्लभकी छोटी बहिन कुङ्कुमसहादेवीने पहले पुरिगेरीमें बनवाया था। श्रीनन्दि पण्डितने इन खेतोंमेंसे अपने शिष्य सिङ्गय्य (पं. २२) को, 'सर्वनमस्य' दानके तौर पर, १५ मत्तर भूमि दी। सिङ्गय्यने यह भूमि गुडिगेरीके मुनियोंके आहारके प्रबन्धके लिये दे दी, और इस बातका ध्यान रखते हुए कि इसकी उत्पन्न इसी कार्यमें खर्च होती है, किसी दूसरे धर्म या कार्यमें खर्च नहीं होती, यह काम राजा, पण्डितों, १२ 'गावुण्ड' लोग, और शेष सभी धार्मिक लोगोंको (पं. २५) सौंप दिया। जबतक चन्द्र, सूर्य और समुद्र तथा पृथ्वी हैं तबतक यह दान जारी रहे, यह बात भी निगाहमें रखनेके लिये इन लोगोंको कहा। इसके पश्चात् इस भूमिकी सीमायें दी हुई हैं।

उन्हीं पश्चिम दिशाके खेतोंमेंसे श्रीनन्दि पण्डितने, लगान-मुक्त जमीनके रूपमें, १२ गावुण्डोंको १११ मत्तर (पं. २६); 'पेर्गडे' प्रभाकरय्यके पुत्र रुद्रय्यको १५ मत्तर; सेनबोव हव्वणणको १५ मत्तर (पं. २८);

मूकियर-कावणको ७ मत्तर; कन्तियर-नाकय्यको ४ मत्तर और ६०० 'कम्म' (पं. ३९); और 'सर्वनमस्य'-दानके रूपमें श्रीमद्भुवनैकमल्ल शान्तिनाथदेवको २० मत्तर (पं. ४०) दिये। भुवनैकमल्ल शान्तिनाथदेव नामका मन्दिर 'भुवनैकमल्ल' विरुदवाले पश्चिमी चालुक्य राजा सोमेश्वर द्वितीयने बनवाया था या इसमें शान्तिनाथकी प्रतिमा प्रतिष्ठित कराई थी।]

[इं० ए०, १८, पृ० ३५-४०, नं० १७३]

२११

मथुरा—संस्कृत

सं० ११३४=१०७७ ई०

[पद्मासनस्थ तीर्थंकरकी विशाल मूर्तिका लेख]

[इस मूर्तिका लेख साफ-साफ पढ़नेमें नहीं आता। कुछ भाग पढ़ा जाता है, कुछ नहीं। परन्तु लेख सिर्फ दो पंक्तियोंका है। इस मूर्तिका लेख सिर्फ कालकी दृष्टिसे ध्यान देने योग्य है। डा० फूहरर् (Dr, Führer) के मतसे यह लेख बताता है कि इस मूर्तिका निर्माण मथुराके श्वेताम्बर सम्प्रदायकी तरफ़से हुआ था। शेष लेख नं० १६१ के अनुसार जानना।]

[*Antiquities of Mathura*, (ASI, XX), p. 53, t.]

२१२

हुम्मच—कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका; पर लगभग १०७७ ई० का]

[हुम्मचमें, सूळे बस्तिके सामनेके मानस्तम्भपर]

(पश्चिम मुख) श्री-वीर-सान्तरन पिरिय-मगं तैलह-देवं भुजवळशान्तरनेन्दु पट्टमं कट्टिसि कोण्डु पट्टण-स्वामि माडिसिद तीर्थद-बसदिगे बीजकन-चयलं बिट्टन् (वे ही शापात्मक वाक्यावयव) स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-कल्याणाष्ट-महाप्रातिहार्य्य-चतुस्त्रिंशदतिशय-

1 "Progress Report" for 1890-91, p. 16.

विराजमानं भगवदर्हत्-परमेश्वर-परम-भट्टारक-मुख-कमळ-विनिर्गत-सद-सदादिवस्तु-स्वरूप-निरूपण-प्रवीणरुं सिद्धान्तामृत-वार्द्धि-वारद्धौत-विशु-द्धेद्ध-बुद्धि-समृद्धरुभय-सिद्धान्त- रत्नाकररप्प श्रीमद्-दिवाकरनन्दि-सि-द्धान्त-देवर गुड्ड स्वस्त्यनेक-गुण-गणाभिमण्डनं नरवर-मुख-मण्डनं शान्तर-राज्याभ्युदय-कारणं कलि-युग-दोष-निवारणं शान्तळि-देश-कान्तारान्तर-जङ्गम-तीर्थं कलि-युग-पार्त्थं पोम्बुर्च्च-कुलोद्भव-दिवाकरं जिन-पाद-शेखरं आहाराभय-भैषज्य-शास्त्रदान-कानीनं विशद-यशो-निधानं सम्यक्त्व-वाराशियुमप्प श्रीमत्पट्टण-स्वामि-नोक्कय्य-सेट्टियर वृत्त ।। जिन-तत्त्व व्याप्त-चित्तं जिन-मत-तिळकं जैन-कल्पावनीजं ।

जिन-धर्म्माम्भोधि-चन्द्रं जिन-समय-सरोजाकरोत्तंस-हंसम् ।
जिन-राज-स्तोत्र-माळाविळ-मुख-कमलोद्भासि सिद्धान्त-रत्ना- ।
कर-देव-श्री-पदाम्भोरुह-मधुपनेनल् पट्टण-स्वामि सन्दम् ।।

(उत्तरमुख) गुणिगळ् सिद्धान्त-रत्नाकररमळ-चरित्रर्म्महा-योगि-वृन्दा- ।
ग्रणिगळ् श्री-शान्तिनाथ-क्रम-कमळ-युगाराधकर् भारती-भू-।
षणवुद्धर् ज्ञानिगळ् देशिग-गण-तिळकर् जैन-सिद्धान्तचूडा-।
मणिगळ् श्री-पट्टण-स्वामिगे गुरुगळेनल् नोक्कनन्तार् कृतार्त्थर् ।।

परम-श्री-जैन-धर्म्मकतिशय-विभव मार्प्प विद्वज्जनक्का- ।
दरदिन्दं सन्तोसं माडुव मुनि-जनकाहार-भैषज्यमं वि- ।
स्तरदिन्दं चिन्ते-गेय्दुन्नत-गुण-युतं पट्टण-स्वामि नोक्कम् ।
वरमार् भव्यर्कळ् अन्ता पुरुष-रतुनर्दि वीर-देवं कृतार्त्थम् ।।

हरि-संघातदे कट्टु-पेत्त वडव-ज्वाळाळियिं वेन्द भी- ।
कर-पाठीन-तिमिङ्गिळाळियिनतिक्षोभक्के सन्दिळ्दग- ।
स्त्यरिनपू-प्राशनकेय्दे वारदति-तीक्ष्ण-क्षार-वारि-प्रभं- ।

गुरु-वाराशियोळन्तु पोलिपुदो पेळ् सम्यक्त्व-वाराशियम् ॥
सिरिगावासमनेक-रत्न-निचयोत्पत्त्याश्रयं मेरु-र- ।
क्ष-रतं चन्द्र-कळा-प्रवर्द्धन-मुदं पीयूष-पिण्डास्पदम् ।
वर-वेळा-वळयामृतं समतेयिं वारासि पोल्तुं मनो- ।
हर-दानत्वदिनेय्दे पोल्दे वलं सम्यक्त्व-वाराशियन् ॥

पट्टण-स्वामिय मगं **मल्लं** बरेदन् ।

(पूर्वमुख) जडरुं बाळ्करुं बुध-प्रकरमुं तत्त्वार्थमं कल्तघम् ।
किडे सम्यक्त्वमनेय्दि सप्त-परम-स्ता(स्था)नाप्तियं निश्चयम् ।
पडेयल् माडिदरोप्पे·········· **तत्त्वार्थसूत्रके** क- ।
न्नडदिं वृत्तियनेल्लिगं नेगळ्दिपनं **सिद्धान्त-रत्नाकरं** ॥
कन्तु-दर्प्प-हरं जिनं तनगाप्तनाब्दनवार्य्य-वि- ।
क्रान्तनोळ्पालि वीर-शान्तरनम्मणं गुणि तन्दे दिग्- ।
दन्ति-वर्त्तित-कीर्त्तिगळ् गुरुगळ् **दिवाकरणन्दि-सि-** ।
द्धान्त-देवरेनल्के **पट्टण-सामिनो**क्कने सन्नुतम् ॥
स्नानं पञ्चामृताख्यं पटु-पटह-रणं झल्लरी-शब्द-रम्यम्
पूजां पुष्पाभिरामं मळयज-पयसा लेपनं दिव्य-धूपम् ।
नित्यं कृत्वा जिनानां सकल-जन-दया-जीव-रक्षान्न-दानम्
पोम्बुर्च्चार्हत्-प्रतिष्ठा तव भवति परं लोक-विद्या-विवेकः ॥
दारिद्र्य-लोभ-मद-भय-नाशकरं एकमेव तत्क्षणतः ।
पञ्चाक्षरमिदं मन्त्रं **पट्टण-सामि** ते जप-विबुधम् ॥
पुसि नुडिव चपल-वित्तियोळ् ।
असदळमेसगुव पराङ्गना-सङ्गतिगा- ।
टिसुव तवगिल्लदोळ्पम् ।

पसरिप नररणम-नोक्कंनं पोल्तपरे ।

(दक्षिण मुख) चारु-चरित्ररी-दोरेयरारेनिपोंळिपन **चन्द्रकीर्ति-भ-** ।

ट्टारकरग्र-शिष्यरघ-हारिगळार्हत-तत्त्व-वस्तु-वि- ।

स्तारिगळङ्गजारिगळशेष-विशेष-गुणावली-मनो- ।

हारिगळेम्बिनं नेगळ्दरल्ते **दिवाकरणन्दि-सूरिगळ्** ॥

वचंन ॥ उभयसिद्धान्त-चूडामणिगळुं त्रैविद्य-देवरुमेनिसिद श्री-**दिवाकर-णन्दि-सिद्धान्त-रत्नाकर-देवर** शिष्यर् ॥

सकलचन्द्र-मुनि-नाथरुर्व्वेरा- ।

सकलदोळ् परम-योग्यरेम्बुदम् ।

ककुभ-दन्तिगळ दन्तदोळ् करम् ।

प्रकटमागे वरेदं पितामहम् ॥

वचन ॥ सम्यक्त्व-वाराशियुमेनिसिद **पट्टण-स्वामिनोक्कय्य-सेट्टियर** मगम् ॥

सुन्दर-रूपदिं विनयदिन्दभिमानदिनोळिपनिं जना- ।

न्द-परोपकार-गुणदिं सुजनत्वदिनोजेयिं जगद्- ।

वन्दित-कीर्त्ति पुण्य-निधि तन्देयोळच्चिनोळोत्तिदन्ननेन्द्- ।

अन्देले वैश्य-वंश-तिलकं नेगळ्दिन्दिरनेम् कृतार्त्थनो ॥

[वीर-शान्तरके ज्येष्ठ पुत्र तैलह देवने, जो भुजबल-शान्तर नामसे भी ज्ञात था, राजा होकर, पट्टण-स्वामिके द्वारा निर्मित तीर्त्थद-वसदिके लिये मन्दिरके दानके रूपमें, वीजकन-वयल्का, दान किया। (शाप)

भगवदर्हत्के द्वारा प्रतिपादित सत्य और असत्यकी प्रकृतिके प्रतिपादन ...नेमें निपुण दिवाकरनन्दि सिद्धान्तदेव थे, जिनके गृहस्थ-शिष्य पट्टणा भी नोक्कय्यसेट्टि थे। उनकी और उनके गुरुकी प्रशंसा । उसके द्वार-

नानादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरं चा-ण्ड-रायरसर बनवासि-पन्निर-च्छासिरमनाळुत्तमिरल् राजधानि-बळ्ळिगावेय नेले-वीडिनोळ् शक-वर्ष ९७० नेय सर्व्वधारी-संवत्सरद ज्येष्ठ-शुद्ध-त्रयोदशी-आदित्यवारदन्दु जजाहुति-श्री-शान्तिनाथ-सम्बन्धियप्प बळगार-गणद मेघनन्दि-भट्टारकर-शिष्यरप्प केशवनन्दि-अष्टो-पवासि-भट्टा(ट्टा)रर बसदिगे पूजा-निमित्तवागि धारा-पूर्व्वकं जिड्डुळिगे ७० र बळिय राजधानि-बळ्ळिगावेय पुडिय-बयलोळ् मेरुण्ड-गळेयोळ् कोट्टु गळेद मत्तरप्पु अदर सीमे (सीमाओंकी चर्चा)

धर्म्मेण शौर्य्य-सत्येन त्यागेन च महीतले ।
गण्ड-मेरुण्ड-सादृशो न भूतो न भविष्यति ॥
(इसके बाद अन्तिम श्लोक)
बनवासे-देसदोळगण ।
जिन-निळयं विष्णु-निळयमीश्वर-निळयम् ।
मुनि-गण-निळयमिवं रा- ।
यन बेसदिं नागवर्म्म-विभु माडिसिदम् ॥

[जिस समय, (हमेशाकी चालुक्य उपाधियों सहित), त्रैलोक्यमल्ल देवका विजयराज्य प्रवर्द्धमान था:—बनवासि-पुरवरका ईश्वर, महालक्ष्मीसे जिसने वर प्राप्त किया था, 'गण्ड-मेरुण्ड' 'जगदेकदानी' इन और दूसरे पदों सहित, महामण्डलेश्वर चामुण्डराय रायरस बनवासी १२००० पर शासन कर रहा था;—बळ्ळिगावे राजधानीमें, (उक्त मितिको), जजाहुति शान्ति-नाथके साथ सम्बद्ध बळगार-गणके मेघनन्दि-भट्टारकके शिष्य केशवनन्दि अष्टोपवासि-भट्टारकी बसदिमें पूजा करनेके लिये, जिड्डुळिगे-सत्तरमें, राज-धानी बळ्ळिगावेके सुगवनमें, 'मेरुण्ड' दण्ड (माप) अनुसार, ५ मत्त धान (चावल)-क्षेत्रका दान किया । (भूमिकी सीमाएँ) ।

मृगराज-लाञ्छन-विराजितान्वयोत्पन्नं बहु-कळा-सम्पन्नं **सान्तर-कुल**-कुमुदिनीशशांक-मयूखाङ्कुरं रिपु-मण्डलिक-पतङ्ग-दीपाङ्कुरं **तोण्ड**-मण्डलिक-कुळाचळ-वज्र-दण्डं विरुद-भेरुण्डं कन्दुकाचार्य्यं मन्दर-धैर्य्यं कीर्त्ति-नारायणं सौर्य्य-पारायणं जिन-पादाराधकं पर-बल-साधकं सान्तरादित्यं सकळजन-स्तुत्यं नीति-शास्त्रज्ञं विरुद-सर्व्वज्ञं श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरं **नन्नि-सान्तरदेव** ॥

वृत्त ॥ चरण-विनम्रनागि तोदळेम्बिडि मुन्ने ललाट-पट्टदल् ॥
वरेद दुरक्षरावळिगळं तोळेदप्पुवु तामे निन्न सच्-।
चरण-रजङ्गणेन्दोडुळिदर्न्निनगार्द्दरे देव मण्डळे- ।
श्वर-कळभेक-केसरि नरेन्द्र-शिखामणि **नन्नि-सान्तरा** ॥
प्रतिबिम्बं रूपिनोळ् पोल्केम गुणदोळ्दार् पोलतपर्न्निन्ननेम्बी-।
स्तुतियं निश्चयिसि **गोविन्दर** वेसेयदिरेन्तेम्ब निन्नन्ते नोडु- ।
न्नतियोळ् हेमाचळं क्षान्तियोळवनि-तळं मेरेयोळ् वार्धि शौच- ।
व्रतदोळ् सिन्धूद्भवं सत्यदोळिन-तनेयं सौर्य्यदोळ् **भीमसेनम्** ॥

अन्तेनिसिद **नन्नि-सान्तर-देव**रन्वयमदेन्तेने । उत्तर-मधुराधीश्वरनु मुग्रवंशोद्भवनुमेनिसिद **राहनेम्ब** मण्डलेश्वरं कुरुक्षेत्रदोळ् भारतदल् कादि गेल्वडे नारायणं मेच्चि एक-संखमुमं वानर-ध्वजमुमं कोट्ट ॥ आतर्निं पलबरुं राज्यं गेय्दु पोगे । **सहकारनातं** नर-मांस-व्रतनागे आतङ्गं **श्रिया-देवि**गं पुट्टिद **जिनदत्तनातन** चरितक्के पेसि दक्षिणाभिमुखनागि बरुत **सिंहरथनेम्बसुरनं** कोन्दडे **जक्कियब्बे** मेच्चि सिंहलाञ्छनं कोट्टळ् ॥ **अन्धकासुरनेम्बसुरन** कोन्दु **अन्धासुरमेन्दु** माडिद । **कनकपुरके** वन्दल्लि **कनकासुरनं** कोन्द । **कुन्दद** कोटि-

योळिर्द् करनुं करदूपणनुमं कादि योडिसिदडे **पद्मावती-देवी** मेच्चि कनकपुरं एनिसिद **पोम्बुर्च्चद्** लोक्किय मरदल् नेलसि **लोक्कियब्बेये-**म्बेरडनेय पेसरं ताळ्दि **पोम्बुर्च्च**मातङ्गे राज्यस्थानमेन्दु पोळलं माडिदळ् ॥ अल्लि जिनदत्तनुं पलवरुमरसु-गेय्दु सले **श्री-केशियुं जयकेशियु**मादरा-श्रीकेशिगं मुददि महादेविगं **रणकेसि** पुत्रनादनातर्नि पलवररसु-गेय्ये । **हिरण्यगर्भ**मिर्दु महादानं माडियधिवासद पलवररसुगळं कोन्दुं ओडिसियुं तेङ्क सूलद-होळे पडुव तवनसि वडगं वन्दगे मेरेयागे **सान्तलिगे-सायिर-नाडु**मुमनेकायत्तं माडि **कन्दुकाचार्य्यनुं दान-विनोदनुं विक्रमसान्तर**नुमेनिसिदम् । आतङ्गं वनवासियरसं काम-देवन मगळु **लक्ष्मी-देविगं चागि-सान्तरं** तनेयमादनातं **चागिस-मुद्र**मं माडिसिदन् । आतङ्गं (म्) **आळ्वर नन्नयन** मगळेज्जल-**देविगं वीर-सान्तरं** सुतनादन् । आतङ्गमदेयूर शान्ति-वर्म्मन सुते जाकल-देविगं **कन्नर-सान्तरं** तनूभवनादन् । आतर्नि किरिय काव-देवङ्गं वीर-वयल्नायन मगळ् चन्दलदेविगं **त्यागि-सान्तर**नात्मजना-दन् । आतगं कदम्बर हरिवर्म्मनात्मजे नागल-देविगं **नन्नि-सान्तरं** तनूजनादम् । आतगं पलसिगे-नाडरिकेसरिय नन्दने सिरिया-देविगं **राय-शान्तरं** पुत्रनादन् । आतगमक्का-देविगं **चिक्क-वीर-शान्तरं** नन्दन नादन् । आतगं विज्जल-देविग **मम्मण-देव**नात्मजनादन् । आतङ्गं होचल-देविगं मगळ् **बीरब्बरसियुं** मगं **तैलपदेवनुं** पुट्टिदर् ॥ आ-वीरल-देवि **वङ्कियाळ्वरङ्गे** महादेवियादळ् । या-वङ्कियाळ्वरर्नि किरिय **माङ्क-ब्बरसियुं गङ्गवंश**-तिलकं पालय-देवन सुते **केळेयब्बरसियुं** तैलप-देवङ्गे वल्लभेयरादरल्लि मादेवि-केळ्यब्बरसिगे ।

वृ ॥ वर-लक्ष्मी-लक्ष्मणं सान्तर-कुल-तिळकं सूर्य-तेजःप्रभाव ।
पर-नारी-दूरमावर्ज्जित-गुण-निळयं वैरि-कालानलं मन्- ।
दर-धैर्य्यं नीति-पारायणनमळ-लसत्-कीर्त्ति-मूर्त्ती-वितानम् ।
धरेयं कायल् समर्त्थं सुरपति-विभवं पुट्टिदं **वीर-देवम्** ॥

क ॥ धुरदोळसि-लतेयनुच्चिदोड् ।
अरि-नृप-युवतियर मुगुळ कङ्कणदा-कील्- ।
तरतरदिनुच्चिदवु निज- ।
कर-खड्गमवर्के कीले **शान्तर-नृपति** ॥

वीरुगन दोरेगे दोरे पेरर् ।
आरुं बन्दपरे कृत-युगं त्रेता-द्वा- ।
पार-कलि-युगदोळगण वी- ।
ररुदारर् प्रतापिगळ् धर्म्म-परर् ॥

आतननुजर् जगद्वि- ।
ख्यातर् श्री-**सिङ्गि-देव**नुं रिपु-बळ-निर्- ।
ग्घातनेने **बम्र्म-देव**नुम् ।
आतत-कीर्त्ति-वितानरवनी-तळदोळ् ॥

व ॥ अन्तेनिसिद **वीर-देव**ङ्गे काडव-मादेवियेनिसिद चट्टल-देवियिं किरिय **वीरल-मादेवियं** विवाहोत्सवदिं कूडेया-**वीर-मादेवियु** नोळम्ब नारसिंग-देवन सुते **बिज्जल-देवियु**माळ्वर मगळ**चलदेवियु** कुल-वधुगळवरोळगे **वीर-महादेवि**यन्वय-क्रममदेन्तेने ॥ स्वस्ति समस्त-भुव-नाधीश्वरेक्ष्वाकु-कुल-गगन-गभस्तिमालिनीपराक्रमाक्रान्त-**कन्याकुब्जा**-धीश्वर-शिरो-विलग्न-निशित-शिळीमुख पार्थिव-पार्थस् समर-केली-धनञ्जयो **धनञ्जयः** तद्-वल्लभा **गान्धारी-देवी** तत्सुतो **हरिश्चन्द्र**स्तदग्र-महिषी

रोहिणी-देवी तत्सुतौ **राम-लक्ष्मणौ** तौ **दडिग-माधवापर-नामधेयौ** तदन्वयो **गङ्गान्वयः** ॥

क ॥ माधवन जय-श्री-रा- ।
मा-धवन भुजावलेपमं वण्णिसला- ।
माधवनु त्रि-भुवनदोळु- ।
माधवनुं नेरेयरुळिदवर् नेरेदपरे ॥

आ-नृपनग्रजनातन- ।
मानुप-शौर्य्यावलेप-मत्स्य-महीभृत्- ।
सेनेगे नेट्टने कौरव- ।
सेनेयनाटङ्कु वडिद दडिगं दडिग ॥

व ॥ आतन नन्दनं **किरिय-माधवं** माधन-पराक्रमनेनिसि नेगळे ॥

क ॥ तत्-तनयं **हरिवर्म्मनु**- ।
पात्त-नयं **विष्णुगोपनातन** सुतनु- ।
द्वृत्त-रिपु-नृपति-सैन्यो- ।
न्मत्त-द्विप-सिंहना-नृ-सिंहन तनयम् ॥

व ॥ अन्ततिवळ-पराक्रमं **तडङ्गाल-माधवनातनात्मजर्** ॥

क ॥ अविनीत-रिपु-वळाटविग् ।
अविनीतरमोघमेनिसि विस्मयमुग्रा- ।
हवदोळ-विनीतरेनिसिदर् ।
अवनियोळविनीत-दुर्व्विनीत-नरेन्द्रर् ॥

वसुधेगे रावण-प्रतिमनेम्व नेगर्त्तेय काडुवेट्टियम् ।
विससन-रङ्गदोळ् पिडिदु तन्न तनूजेय पुत्रनं प्रति- ।
ष्ठिसि **जयसिंह-वल्लभननन्वय-राज्यदोळुर्व्वियोळ्** विगुर्-

विसिदनिदेनगुर्व्वो निज-दोर्-चळदुन्नतिदुर्व्विनीतन ॥

व ॥ अन्तातनिं मुष्करनति-मुष्करनागि राज्यं गेय्ये तन्-नन्दनम् ॥

क ॥ ताविय तडि-वरेगं धर-।
णी-वळयमनाळ्दु वाहु-विक्रमदिम् ।
श्रीविक्रम-भूविक्रम-।
भूवल्लभरधिक-कीर्त्ति-वल्लभरादर् ॥

व ॥ अन्तातननुज नृप-कामं गज-दाननं अर्त्थिगित्तुचागियेम्ब पेसर पडेदनातन मर्म्मं श्रीपुरुषं श्रीवल्लभनेनिपन्वर्त्थ-नाममं ताळ्दि गज-शास्त्र-कर्त्तृवेनिसि ॥

वृ ॥ शात्रव-सङ्कुळ-प्रळय-भैरवनेम्ब यशं पोदळ्दु लो-।
क-त्रय-मध्यदोळ् परेये वीरद कच्चिय काडुवेट्टियम् ।
चित्रविदं चिळर्देयोळसुगोळे कादि तदीय-पल्लव-।
च्छत्रमनिर्द्दुकोण्डु मेरेदं भुज-गर्व्वमना-महीभुज ॥

क ॥ आ-नृप-चूडामणि काञ्-।
ची-नायन कय्योळिर्द्दुकोण्डं गड पेर्- ।
म्मानडियेम्वी-पेतरुमन् ।
एनेम्बुदो गङ्ग-नृपर शौर्य्योन्नतियम् ॥

व ॥ अन्तु वीरमार्त्तण्ड-देवनेनिसिदातन मगं शिवमार-देवं सैगोट्टनेम्बेरडनेय पेसरं ताळिऽ सिवमार-मतमेन्दु गज-शास्त्रमं माडि-मत्तम् ॥

कं ॥ एवेळवुदो शिवमार-म- ।
ही-वळयाधिपन सुभग-कविता-गुणमं ।
भू-वळयदोळ् गजाष्टक ।

मोवनिगेयुमोनके-वाडुमाढुदे पेळ्गु ॥

वृ ॥ विजयादित्य-नरेन्द्रनातननुजं तन्नन्दनं चागि भू- ।
भुजरोळ् मिक्केरेगङ्ग-नातन मगं श्री-राजमल्लं तदा- ।
त्मजनातं मरुळं तदीय-तनेयं श्री-नूतुंग तत्-सुतम् ।
विजिगीषुत्वमनाळ्दु निन्देरेयपं ताना-महेन्द्रान्तकम् ॥

क ॥ एनिप भुवनैकवीरन ।
तनयं नरसिंगनवने वीर-वेडेङ्गम् ।
मनुजपति राजमल्लाङ्- ।
कनातर्नि किरियनवने कच्चेय-गङ्गम् ॥

व ॥ अन्तातङ्गनुजतुं सकळ-शास्त्रज्ञानुमेनिप वूढुग-वेर्म्मानडि
कृष्ण-राजङ्गे भावनेनिसि ॥

वृ ॥ तानिरदन्दु कोन्दपुढु मण्डलमं पेररोळ् समानमेम्ब् ।
ई-नुडि वेढ कोळ्कोडेगे वल्लहनातन सब्बिवारदुद् ।
दानिगे रायनापेडेगे चोळनिवर् दोरेयेन्दोडिन्न भू ।
तो न भविष्यमेन्नदवरारळवं जगदुत्तरङ्गन ॥

त्रि ॥ जाह्नवि साक्षी मध्याह्नार्क-सम-कोप- ।
वह्नि लल्लयन अळूरे वूतगं राज्य- ।
चिह्नमं-तदन्तुळिगङ्गे ॥

अक्कर ॥ वलवं पेळवडे धाळियोळ् कोण्डना-चित्रकूटमुमेळुमाळवम- ।
तलेयं कोण्डना-रायतम्मनं दहळेयं कोण्डनन्तोन्दे मेय्योळ् पलवुं कलाळ-
नेल्लियुं निरिसिदं गङ्ग-मालवमेन्दु पेसरनिट्टुकलियपेळेन्दोडेयम्ब कलिय-
निन्तचलित-गङ्गनं पोल्वनावम् ॥

क ॥ रेवक निम्मडिगं वि- ।

या-वैलभनप्प वूतुगेन्द्रगमुमा- ।
देविगमिन्दुधरग पाव- ।
कित्रोल् **मरुळ**-देवनग्र- तनूजम् ॥
स-स्नेहात् सकल-महीश कृष्ण-भूपो
भूनाथः खलु मदनावतार-संज्ञा ।
छत्रं तनू-नरपतिर्भिन कैश्चिदाप्तस्
संप्राप्तो **मरुळ** इति प्रतीत-नामा ॥

व ॥ अन्ता-कृष्ण-राजङ्गळियनेनिसिद ॥

क ॥ आ-मरुळ-देवननुजम् ।
भीमानुज-सन्निभ पराक्रम-सिंहम् ।
श्री-**मारसिंह-देवम्** ।
हेमाद्रि-शिरो-विलग्न-कीर्त्ति-पताकम् ॥

व ॥ अन्तातं नोळम्ब-कुळान्तकनुं पल्लवमल्लनुं गुन्तिय-गङ्गनुमे-निसिदनातननुज ॥

क ॥ श्री-**राजमल्ल-देवम्** ।
*भारवि-केयूर **राजशेखर**नातम् ।
भारवि साक्षाद् **बाण** म- ।
यूरं वाल्मीकि कालिदासं व्यासम् ॥

आतनं तम्म ॥ श्री-**नीतिमार्ग**-भूपति ।
कानीनं **बलि दधीचि** गुत्तं साक्षाद्
दीनानाथ- जनक्के नि- ।
धानं **गोविन्दा**भिधान- नरेन्द्र ॥

---

*शायद 'भारति' की जगह गल्ती हो गई है ।

व ॥ आतर्नि किरिय वासव-महीभुजङ्गं त्रैलोक्यमल्लनेनिसिद्दाहवमल्लदेवन मावनप्यण रेवरसन ताय् सावि निम्मडियिं किरियकञ्चलदेविगं पुट्टिद गोविन्दरदेव ॥

क ॥ निरवद्य-चरितनन्वय- ।
धुरन्धरं सत्यवाक्य निर्व्वैर-गण्डम् ।
परचक्र-कर्क्कशं ग- ।
ण्डरमूकुति गण्ड-दल्लळं नृप-तिळकम् ॥

वृ ॥ वसुधालंकारनारोहकर मोगद कै वल्कणि व्रह्मनुग्रा- ।
रि-समूहोत्साह-शक्ति-प्रलय-कर-करामीळ-खळ्गं यशश्री-
प्रसर-प्रच्छन्न-दिङ्मण्डलनधिक-बळं गङ्ग-नारायणं र- ।
क्कस-गङ्गं गङ्ग-चूडामणि निरूप (नृप)-तिळकं वीर-मार्त्तण्डदेव ॥

क ॥ तळियं दाटुव करियम् ।
घळिलेने पिडिदुगिये निज-शिरं पेचकमम् ।
कळिदुदु करि-सिरसुरमम् ।
पळिलेने तागिदुदु कदन-कण्ठीरवन ॥
आतनतुजं जगद्-वि- ।
ख्यातं कोमरङ्क-भीमनरुमुळि-देवम् ।
नीतिज्ञनधिक-तेजन- ।
राति-बळ-प्रलय-काळनाहव-धीरम् ॥

व ॥ अन्तातङ्गे कदम्ब-मयूरवर्मनात्मजे जाकल-देविगं पञ्चल-देवङ्गम् पुट्टिद सान्तियब्बरसिगं गुडिय-दडिगेगे पट्टं गट्टि राज्यं गेय्सिदनन्वयद बलवर्म्म-देवगं पुट्टिदब्बल-देविगं सहस्रबाहु-प्रतापनुं

मही-हय-वंशोद्भवनुं ज्योतिष्मती-पुरवरेश्वरनुं मध्य-देशाधिपतियुं एनिसि-दय्यण-चन्दरसङ्गं पुट्टिद गावब्बरसिगं अरुमुळि-देवङ्गम् ॥

क ॥ सरसतियुं सिरियुं दिन- ।
करनुं पुट्टिर्दुवेम्बिनं चट्टलेयुम् ।
वर-वधु कञ्चलेयुं सत्- ।
पुरुषोत्तमनेनिप राज-विद्याधरनुम् ॥
पुट्टे तनगन्दु राज्यद ।
पट्टं कै-सार्दुदेन्दु रक्कस-गङ्गम् ।
निट्टिसि तन्नरमनेयोळ् ।
नेट्टने तन्दिरिसिदं महोत्सवदिन्दम् ॥

व ॥ अन्तु सुखर्दि वळेयुत्तिर्द्द कन्या-रत्नङ्गळिर्व्वरिं पिरिय-चट्ट देवियं तोण्डे-नाडु नाल्वत्तेण्छासिरक्कधिपतियुं कञ्ची-नाथनुवीश्वर-वर-प्रसादनुं वृषभ-लाञ्छननुमेनिसिद काडुवेट्टिगे रक्कस-गङ्ग-पेर्म्मानडि विवाहोत्सवमं माडि चट्टल-देविगे काडव-महादेवि-वट्टमं कट्टि सुखदि निरिसिदन् । आ-वीर-देवङ्गं कञ्चल-देवियेनिसियुं वेरडनेय पेसरं ताळ्दिद वीर-महादेविगम् ॥

क ॥ दसरथन तनयरन्दमन् ।
एसेदिरे पोळ्तिर्द्द तैलनुं गोग्गिगनुम् ।
कुसुमास्त्रनेनिसिदोड्डुग- ।
वसुधेसनुमन्तु बर्म्मनुं तनयरवर् ॥
पुट्टलोडमात्म-गृहदोळ् ।
पुट्टिदुदैश्वर्य्यमोळ्पुमार्प्पुं कूर्प्पुम् ।

नेट्टनरि-नृपर गृहदोळ् ।
पुट्टिदुवुत्पात-भीति चेतो-विकळम् ॥

व ॥ अन्ता-कुमारर् सुखर्दि वळेयुत्तिरे यवरोळग्रजं तैलप-देव-नसहायसिंहनेनिसियुं तन्न बाहा-बळमे चतुरङ्ग-बळमागे दायिगरुमनाट-विकरुमं राज्य-कण्टकरुमं निःकण्टकं माडि तन्न दोर्व्वेळ-विक्रमदि सान्तर-वट्टमनवटय्सि भुजबळ-शान्तरनेनिसि सुखर्दि राज्यं गेय्द ॥

भुजबळ-शान्तर-नृपतिय ।
भुजबळदळवुं प्रतापमुं शौर्य्यतेयुम् ।
विजिगीषु-वृत्तियुं निज- ।
विजयमुमी-लोकदोळगे मुम्भुकमेनिकुम् ॥

अन्तातननुज गोविन्दर-देवम् ॥

गोविन्दरन पराक्रमम् ।
आवगमवु तन्नोळेय्दे तोरिरे धरेयं ।
कांव पर-नृपरनळ्करे ।
सोव महा-गुणमे तनगे निज-गुणमेनिकुम् ॥

वृ ॥ देव समुद्र-मुद्रित-वसुन्धरेयोळ् नृपरादरेल्लरम् ।
भाविसि कण्डेनान्त रिपु-सन्ततियं नेलेगेट्टु पोपिनम् ।
सोव बुधाळिगार्त्तु पिरिदीव शरण्-बुगे काव सद्-गुणक्क् ।
आवनो निन्नवोल् नेरेद मण्डलिकर् कलि-नन्नि-शान्तर ॥
पिरिदेत्तं मेरुगं सागरसे जगदोळा-मेरुगं सागरकम् ।
धरणी-चक्रं करं भाविसुवडे पिरिदा-मेरुगं सागरकम् ।
धरणी-चक्रक्कमाशालिये कडुविरिदा-मेरुगं सागरकम् ।
धरणी-चक्रक्कमाशालिगमेले पिरियं शान्तरादित्य-देव ॥

ख्यातियनेनं पेळ्वुदो ।
वूतुग-बेर्म्माडि पडेद महिमोन्नतियम् ।
भूतळदोळ् शान्तरनुप- ।
मातीतं चक्रि कुडल पडेदनमोघ ॥
अर्द्ध-पथमिदिर्गे वोन्दु तद्
अर्द्धासनमेनिप लोह-विष्टरदोळ् सम्- ।
वर्द्धित-शान्तरनेनिप ध- ।
नुर्द्धरनं चक्रवर्त्ति निलिसिदनेसेयल् ॥

व ॥ इन्तेनिसिदुन्नतियं ताळ्दि तन्न मण्डळदोळगण राज्य-कण्टकरं निष्कण्टकं माडि तनगे नन्नियें निज-गुणमप्प कारणदिं **नन्नि-शान्तरने-** म्ब पट्टमं ताळ्दि पल-कालदिं परायत्तमाद भूमियं स्वायत्तं माडि जग-देक-दानियेनिसि लोकदर्त्थि-जनक्के पिरिदनित्तु सम्यक्त्व-रत्नाकरनुं जिन-पादाराधकनुमेनिसियुमेल्ला-समयगळं स्व-धर्म्मदिं नडयिसुत्तुं परा-ङ्गना-सहोदरनेनिसि वीरदोऴं वितरणदोळं धर्म्मदोऴं शौचदोऴं लोकदोळ् पेररिल्लेनिसि नडेदु वन्धु-जनमुमं स्व-देशमुमं रक्षिसि **चट्टल-देवियुं** कुमारर् **ओड्डमरसनुं वर्म-देवनुं** तामु **पोम्बुर्च्चदोळ्** सुखदिं राज्यं गेय्युत्तमिर्द्दु धर्म्मं प्रागेव चिन्तेदेम्ब वाक्यार्त्थमुमं भाविसियर **तुळि-देवङ्गं** **गावब्बरसिगं वीरल-देविगं राजादित्य-देवङ्गं** परोक्ष-विनयमं माडले-न्दुर्व्वी-तिळकमेनिसिद **पञ्च-वसदियं** मार्प्युवोगमनेतिकोण्डु ॥

कं ॥ 'श्रीविजय-देवरुग्र-त- ।
पो-विभवर् ग्गुरुगळखिळ-शास्त्रागम-सं- ।
भावितरेनिसल् चट्टल- ।
देविये कृत-पुण्यवन्ते विश्वम्भरेयोळ् ॥

वृ ॥ जनकं रक्कस-गङ्ग-भूमिपति काञ्चीनाथनात्म-प्रियम्
विनुतर् श्री-विजयर् सुशिक्षकरेनल् विद्विष्ट-भूपाळ-सं- ।
हण-विक्रान्त-यशो-विलास-भुज-खड्गोल्लासि तां गोग्गि-
नन्दनना-चट्टल-देविगेन्दोडे यशश्रीगिन्तु मुन्नोन्तरार् ॥

क ॥ केरे भावि वसदि देगुलम् ।
अरवण्टगे तीर्थं शत्रमारवे-मोदलाग् ।
अरिकेय धर्म्मादिगळम् ।
नेरे माडिसि नोन्तलेसेके चट्टल-देवि ॥
उत्तुंग-प्रासादमन् ।
उत्तर-मधुरेशनप्प गोग्गिय ताय् लो- ।
कोत्तरमेने माडिसिदळ् ।
वित्तरदिं पञ्च-कूट-जिन-मन्दिरमम् ॥
देसेयागसमेम्बेरडुमन् ।
असदळमेय्दिर्द्दवेम्बिनं पोस-गेरेयम् ।
वसदियुमं माडिसि तन्न् ।
एसमं शान्तरन ताय् निमिर्च्चिदळेत्त ॥

वृ ॥ इन्तु समस्त-दान-गुणदुन्नतिगं पेरारो मुन्नमेम् ।
नोन्तवरेम्बिनं नेगर्दद चट्टल-देवि चतुस्-समुद्र-प- ।
र्य्यन्तमनेक-विप्र-मुनि-सन्ततिगन्न-हिरण्य-वस्त्रमम् ।
सन्ततमित्तु शान्तरन ताय् पडेदळ् पिरिदप्प कीर्त्तिय ॥

व ॥ अन्तु पोगर्त्तेगं नेगर्त्तेगं नेलेयेनिसि चट्टल-देवियुं नन्नि-शान्तरनु **बोडेय-देवर** गुड्डगळप्प-कारणदिं श्रीमत्-**तियङ्गुडिय निडुम्बरे-ती-र्त्थदरुङ्गळान्वयद** सम्बन्धद **नन्दिगणाधीश्वररेनिसिद श्रीविजय-भ-**

द्दारकर नामोच्चारणदिं शुभ-करण-तिथि-मुहूर्त्तदलवर शिष्यर् **श्रेयांस-पण्डित**रुर्व्वी-तिळकमेनिसिद पञ्च-वसदिगुन्नतमप्पेडेयल् करुवेनिसे केसर्क्कळिक्किदरवराचार्य्यावळियदेन्तेने । श्री-वर्द्धमान-स्वामिगळ तीर्थं प्रवर्त्तिसे **गौतमर् गन(ण)धर**रेने त्रि-ज्ञानिगळप्प मुनिगळ् सले यवरिं चतुरङ्गुळ-ऋद्धि-प्राप्तरेनिसिद **कोण्डकुन्दाचार्य्य**रिं केलव-कालं पोगे **भद्रबाहु-स्वामि**गळिन्दित्त कलिकाल-वर्त्तनेयिं गण-भेदं पुट्टिदुदवर अन्वय-क्रमदिं कलि-कालगणधररुं शास्त्र-कर्त्तुगळुमेनिसिद **समन्तभद्र-स्वामि**गळवर शिष्य-सन्तानं **शिवकोट्याचार्य्य**रवरिं **वरदत्ताचार्य्य**रवरिं **तत्त्वार्थ-सूत्रकर्त्तुगळे**निसिद**ार्य्य-देव**रवरिं गङ्ग-राज्यमं माडिद **सिंहनन्द्याचार्य्य**रवरिन्दे**कसन्धि-सुमति-भट्टारक**रवरिम् ।

वृ ॥ राजन् बुद्धोप्यबुद्धस्सुरगुरुरगुरुः पूरणोऽपूरणेच्छः
स्थाणुः स्थाणुस्त्वजोजोविरविरळघुर्म्माधवो माधवस्तु ।
व्यासोप्यव्यास-युक्तः कणभुगकणभुग् वागवागेव देवी
स्याद्वादामोघ-जिह्वे मयि विशति सति मण्डपं **वादिसिंहे** ॥

व ॥ एनिसिद**कलङ्क-देव**रवरिं **वज्रणन्द्याचार्य्य**रवरिं **पूज्यपाद-स्वामि**गळवरिं **श्रीपाल-भट्टारक**रवरिं **अभिनन्दनाचार्य्य**रवरिं **कवि-परमेष्ठिस्वामि**गळवरिं **त्रैविद्यदेव**रवरिनकळङ्क-सूत्रके वृत्तियं बरे**दनन्त-वीर्य्य भट्टारक**रवरिं **कुमारसेन-देव**रवरिं **मौनि-देव**रवरिं **विमळचन्द्र-भट्टारक**रवरशिष्यर् ॥

क ॥ आदिल्यन केलदोळ् चन्- ।
द्रोदयमेसेयदवोली-धरा-मण्डलदोळ् ।
वादिगळेम्बी-टुण्टुक- ।
वाडिगळेसेदपरे **वादिराजन** केलदोळ् ॥

व ॥ अन्तेनिसि राय-राचमल्ल-देवङ्गे गुरुगळेनिसिद कनकसेन-भट्टारकरवर शिष्यर् शब्दानुशासनक्के प्रक्रियेयेन्दु रूपसिद्धियं माडिद दयापाळदेवरुं पुष्पषेण-सिद्धान्त-देवरुम् ॥

वृ ॥ अळवे दिग्-दन्ति-दन्तं वरमेसेदुदु सद्-गद्य-पद्योक्तिविद्या-
वळवे सर्व्वज्ञ-कल्पं निरुदजुनिदुद्विजन्य-वादीन्द्रर्नि वा-
वक्किसल् वेडोहो पत्रं गुडदिरेदळ्ळिर् केन्दपं पेळ्वोडिदिनिम् ।
अळवल्ते वादिराजं पर-मत-कुमुद आर्मोळ-वाग्-वज्र-पातन् ॥

व ॥ इन्तेनिसिद षट्-तर्क-षण्मुखरुं जगदेकमल्ल-वादियुमेनेनिसिद वादिराज-देवरुं ॥ रक्कस-गङ्ग-पेर्म्मानडिगळ चट्टल-देविय वीरदेवन नन्दि-शान्तरन गुरुगळेनिसिद ॥

व ॥ यद्विद्या-तपसोः प्रशस्तमुभयं श्री-हेमसेने मुनौ
प्रा········त्रिराभियोग-विधिना नीतं परामुन्नतिम् ।
प्रायश्श्रीविजयेश-देव सकलं तत्त्वाविकायां स्थिते
संक्रान्ते कथमन्यथा··········हक् तपः ॥
शास्त्रं बुधानामुपसेव्····
यं दातुकामं यत एव दाता ।
ततोपि हि श्रीविजयेति-नाम्ना
पारेण वा पण्डित-पारिजातः ॥

व ॥ एनिसिद श्री-विजय-भट्टारकरुमवर शिष्यर् चोळ········ शान्तादेवर् गुणसेन-देवर् दयापाल-देवर् कमळभद्र-देवरजितसेनपण्डित-देवर् श्रेयांस-पण्डितरन्तवरायुर्व्वी-तिळकरेनिसिद पञ्चकूट-वसदिय शक-वर्ष ९३९ नेय पिङ्गळ-संवत्सरद जेष्ठ शुद्ध-बिदिगे-बृहस्पतिवारदन्दु प्रतिष्ठेयं माडिया-वसदिय खण्डस्फुटित-जीर्णोद्धारण-

कमळ्िई ऋषि-समुदायदाहार-दानकं पूजा-विधानकमागे नन्नि-सान्तर-देवनुमोड्डमरसनुं वम्म-देवनुं चट्टल-देवियुमाचार्य्यर् कमळ-भद्र-देवर कालं कर्च्चि धारा-पूर्व्वकमासम्बन्धिय समुदाय-मुख्यमागे माडि कोट्ट ग्रा······· (यहाँ दान और सीमाओंकी विस्तृत चर्चा है।)

[जिन-शासनकी प्रशंसा। (उक्त मितिको), जब (हमेशाके चालुक्य पदों सहित) त्रिभुवनमल्लदेवका राज्य सब ओर प्रवर्द्धमान था—तत्पादपद्मोपजीवी, महामण्डलेश्वर, उत्तर-मधुराधीश्वर, पट्टिपोम्बुर्च्च-पुर-वरेश्वर, महोग्र-वंशललाम, जिसने पद्मावती देवीके प्रसादसे 'तुलापुरुष,' 'महादान,' और 'हिरण्यगर्भ' ये तीन दान पूरे किये थे, सान्तर-कुल-कुमुदिनीके लिये प्रदीप्त किरणोंवाला चन्द्रमा, जिनपादाराधक, सान्तरादित्य, नीतिशास्त्रज्ञ,—महामण्डलेश्वर नन्नि-सान्तर-देव था। इसकी प्रशंसा। नन्नि-सान्तर-देवकी वंश-परम्परा इसप्रकार थीः—

उत्तर-मधुराका अधीश, उग्र-वंशोत्पन्न राहु राजा था, जो [महा] भारतके युद्धमें कुरुक्षेत्रमें लड़ा था और जीतनेपर जिसे नारायणने प्रसन्न होकर एक शंख और वानर-ध्वज दिया था। इसके बाद बहुत-से राजा हुए, उन सबके बाद,—एक सहकार नामका राजा हुआ, जो अन्तमें नर-मांस-भक्षी हो गया। उससे और श्रियादेवीसे जिनदत्त उत्पन्न हुआ, जो अपने पिताके आचरणसे ग्लानि-प्राप्त होकर दक्षिणमें आया और जिसके सिंहरथ नामके असुरके मारनेसे जक्कियब्बे (देवी) प्रसन्न हुई और प्रसन्न होकर उसने उसे सिंहका लाञ्छन (मुद्रा) दिया। अन्धकासुर नामके असुरको मारनेसे उसने अन्धासुर नामका नगर बसाया। कनकपुरमें आकर उसने कनकासुरका वध किया; तथा कुन्दके किलेमें रहनेवाले कर और करदूषणके भगा देनेसे पद्मावती देवी प्रसन्न हुई और प्रसन्न होकर उसने वहाँ कनकपुरमें, जो कि पोम्बुर्च्च (हुम्मच) का ही नामान्तर है, एक 'लोक्कि' वृक्षपर वास करना शुरू किया तथा लोक्कियब्बेका नाम धारणकर उसके लिये एक राजधानीके रूपमें शहर बसा दिया। जिनदत्त तथा दूसरे भी राजाओंके राज्य करनेके बाद श्रीकेसि और जयकेसि हुए। श्रीकेसि

और उसकी रानीसे रणकेसी पुत्र उत्पन्न हुआ। इसके बाद अनेकोंके शासन करनेके बाद हिरण्यगर्भ हुआ, जिसने 'महादान' नामका दान किया और जिसने सान्तलिगे-हजार-नाड्का एक भिन्न राज्य स्थापित किया,—इससे वह कन्दुकाचार्य्य, दान-विनोद, विक्रम-सान्तर, इन तीन नामोंसे प्रसिद्ध हुआ। उस और लक्ष्मीदेवीसे चागि-सान्तर उत्पन्न हुआ, जिसने चागि-समुद्रका निर्माण कराया। उस और जाकल-देवीसे कन्नर-सान्तर उत्पन्न हुआ। उसके छोटे भाई काव-देव और चन्दल देवीसे त्यागिसान्तरने जन्म लिया। उस और नागल-देवीसे नन्नि-सान्तरका जन्म हुआ। उस और सिरिया-देवीसे राय-सान्तरने जन्म धारण किया। उस और अक्का-देवीका पुत्र चिक्क-वीर-सान्तर हुआ। उस और बिज्जलदेवीका पुत्र अम्मण-देव हुआ। उस और होचल-देवीसे एक पुत्री वीरवरसि तथा एक पुत्र तैलप-देव हुआ। वह वीरल-देवी बङ्कियाळवकी रानी हो गई। उस बङ्कियाळवकी छोटी बहिन माञ्चब्बरसि, और गङ्गवंशललाम पालय-देवकी पुत्री केलय-ब्बरसि तैलपदेवकी पत्नियाँ हो गईं। इनमेंसे, मादेवि केलयब्बरसिके वीर-देव उत्पन्न हुआ। उसकी प्रशंसा। उसके छोटे भाई विश्व-विख्यात सिङ्गि-देव और बर्म्म-देव थे। उस वीरदेवसे जब काडवकी रानी चट्टल-देवीकी छोटी बहिन बीरल-मादेवीसे विवाह हो गया, तब उसके वीर-मादेवी, बिज्जल-देवी और अचल-देवी ये तीन स्त्रियाँ और थीं। इनमेंसे, वीर-महा-देवीकी उत्पत्तिका वर्णन करते हैं।

इक्ष्वाकु कुलके सूर्य, कान्यकुब्ज (कन्नौज) के अधीश्वर धनञ्जय नामके राजा थे, जिनकी पत्नी गान्धारी-देवी थी। उनका पुत्र हरिश्चन्द्र हुआ, जिनकी ज्येष्ठ रानी रोहिणी-देवी थी। उनके दो पुत्र राम और लक्ष्मण थे, जिनके अपर नाम दडिग और माधव थे। उनका वंश गङ्ग-वंश था। माधवकी प्रशंसा। उसके बड़े भाई दडिगकी प्रशंसा। माधवका पुत्र किरिय-माधव;

उसका	पुत्र	हरिवर्म्म;
,,	,,	विष्णुगोप;
,,	,,	वडङ्गालमाधव;

" " अविनीत;

" " दुर्विनीत;

" " मुष्कर

" " श्रीविक्रम

" " भूविक्रम

उसका छोटा भाई राजा काम (या नृप-काम) था जिसने एक अर्थी (याचक) को गजका दान दिया था और इस कारणसे 'चागि'का नाम प्राप्त किया था।

उस नृप-कामका प्रपौत्र श्रीपुरुष था, इसका 'श्रीवल्लभ' अन्वर्थक नाम प्रसिद्ध था तथा यह गज-शास्त्रका प्रणेता था। इसने विळर्दे (या चिवर्दे) की लड़ाईमें काञ्चीके युद्धप्रिय राजा काडुवेट्टिसे उसका पल्लव-छत्र छीन लिया था तथा उसके हाथसे 'पेर्म्मानडि' का नाम भी छीन लिया था। तब उसका पुत्र शिवमार-देव (सैगोट्ट) हुआ, वह वीरमार्तण्ड-देव नामसे भी प्रसिद्ध था। उसने 'शिवमारमत' नामसे एक गज-शास्त्रका भी प्रणयन किया था। राजा विजयादित्य उसका छोटा भाई था। उसका पुत्र एरेयङ्ग था। उसका पुत्र राजमल्ल; उसका पुत्र मरुळ; उसका पुत्र बूतुग; उसका पुत्र एरेयप; उसका पुत्र नरसिंग; उसके तीन नाम और भी प्रसिद्ध थे—वीर वेडेग, मनुजपति तथा राजमल्ल। उसका (नरसिंगका) छोटा भाई कच्चिग्र-गङ्ग था। उसका छोटा भाई बूतुग-पेर्म्मानडि था। यह कृष्ण-राजाकी बहिनका पति था। उसके पराक्रमकी प्रशंसा। इसका ज्येष्ठ पुत्र मरुळ-देव था। उसका छोटा भाई मारसिंह देव था। इसका छोटा भाई राजमल्ल देव था, जिसे नोळम्बकुलान्तक, पल्लव-मल्ल, और गुत्तिय-गङ्ग भी कहते थे। इसकी प्रशंसा। उसका छोटा भाई नीति-मार्ग्ग था। उसके छोटे भाई राजा वासव और कञ्चल-देवीसे गोविन्दर-दव उत्पन्न हुआ था। उसके पराक्रमकी प्रशंसा। उसका छोटा भाई अरुमुळि-देव था।

अरुमुळि-देव और गावब्बरसिसे चट्टल, कञ्चल और राजविद्याधर उत्पन्न हुए थे। इनमेंसे चट्टल-देवी की शादी काडुवेट्टिसे,—जो तोण्डे-नाड् ००० का शासक तथा काञ्चीका अधिपति था—कर दी थी। कञ्चल

देवी, (जिसका दूसरा नाम वीर-महादेवी था) और वीर-देवसे ये पुत्र उत्पन्न हुए—तैल, गोग्गिग, राजा ओड्डुग, और बम्मी।

इनमेंसे ज्येष्ठ पुत्र तैलप-देवने अपने भुज-बलसे शान्तरका मुकुट प्राप्त किया और भुजबल-शान्तरके नामसे शान्तिलें राज्य किया। उसका नाम सर्वत्र प्रसिद्ध हो गया था। उसका छोटा भाई गोविन्दर-देव था। इसका अपर-नाम नन्नि-शान्तर था। नन्नि-शान्तरके नामसे ही इसने मुकुट धारण किया था। वह जिन-पादाराधक था, तथा चट्टल-देवि और राजकुमार ओड्डुयरस और बम्म देवके साथ शान्तिले राज्य करता हुआ पोम्बुर्च्चमें था।

चट्टल-देवीने अरुमुलि-देव, गावव्वरसि, वीरल देवी और राजादित्य-देवकी स्वर्गयात्राके स्मारकके उपलक्ष्यमें उर्व्वी-तिलक नामसे प्रसिद्ध पञ्चवसदिके बनानेका काम अपने हाथमें लिया।

सर्व शास्त्रों और आगमोंमें पारङ्गत होनेसे सम्मानित, तपस्वी श्रीविजय-देव चट्टल-देवीके गुरु थे। उसका पिता राजा रक्कसगंग था। काञ्चीअधिपति (काडुवेट्टि) उसका पति था। गोग्गि उसका पुत्र था। तालाब, कुआँ, बसदि, मन्दिर, नाली, पवित्र खानागार, स(स)त्र, कुञ्ज इत्यादि प्रसिद्ध धर्म एवं पुण्यके कार्योंको चट्टल-देवीने सम्पन्न किया था।

उत्तर-मधुराके अधिपति गोग्गिकी माँने बहुत उत्सुकतासे दुनियामें अग्रगण्य स्थान प्राप्त करनेवाले पञ्चकूट जिनमन्दिरको बनवाया। क्षितिज और आकाश दोनोंसे बात करनेवाले ऐसे एक नये तालाब और मन्दिरका उसने निर्माण किया। इस तरह शान्तरकी माँ प्रसिद्ध चट्टलदेवीने बहुत यश प्राप्त किया।

श्रीविजय-भट्टारक तियङ्गुडिके तिडुम्बरे-तीर्थके अरुङ्गलान्वयके नन्दि-गणके अध्यक्ष थे। इनके गृहस्थ-शिष्य चट्टल-देवी और नन्नि शान्तर थे। किसी शुभदिन, उनके शिष्य श्रेयान्सपण्डितने पञ्च-बसदिके नींवका पत्थर डाला।

श्रेयांसके आचार्योंकी परम्पराका वर्णनः—वर्द्धमान-स्वामीके तीर्थमें त्रिकालज्ञ गौतम-गणधर हुए। उनके बाद कोण्डकुन्दाचार्य हुए, जो जमीनसे चार इञ्च ऊँचे चलते थे। कुछ समय बाद भद्रबाहु-स्वामी हुए, जिनके

बाद कलि-कालका अवतार (उत्पत्ति) हुआ और विभिन्न गणोंकी उत्पत्ति हुई।

उनमेंसे कलिकालगणधर, शास्त्र-प्रणेता समन्तभद्र-स्वामी हुए। उनकी शिष्य-परम्परामें शिवकोट्याचार्य हुए; उनके बाद वरदत्ताचार्य्य; उनके बाद तत्त्वार्थसूत्रके प्रणेता आर्य्य-देव; उनके बाद सिंहनन्द्याचार्य्य जो गङ्ग-राज्यके स्थापक थे। उनके बाद एकसन्धि सुमति-भट्टारक हुए। इसके बाद अकलङ्क-देव (वादिसिंह) हुए। पुनः क्रमशः वज्रनन्द्याचार्य्य, पूज्यपाद-स्वामी, श्रीपाल-भट्टारक; पुनः अभिनन्दनाचार्य्य; कवि परमेष्टि-स्वामी; त्रैविद्य देव; अनन्तवीर्य भट्टारक, जिन्होंने अकलङ्क-सूत्रकी वृत्ति लिखी थी। इनके बाद कुमारसेन-देव; उनके बाद मौनि-देव; उनके बाद विमलचन्द्र-भट्टारक; उनके शिष्य कनकसेन-भट्टारक थे जो राजा राजमल्लके गुरु थे। उनके शिष्य थे दयापाल जिन्होंने 'शब्दानुशासन' की 'प्रक्रिया' रूप-सिद्धि लिखी है—तथा पुष्पसेन-सिद्धान्त-देव। वादिराज-देव 'षट्-तर्क-षण्मुख,' 'जगदेकमल्ल-वादी' थे। श्रीविजय-देव रक्कस-गङ्ग-पेर्म्मानडि, चट्टल-देवि, वीर-देव तथा नन्नि-शान्तरके गुरु थे। विद्वानोंको ये शास्त्र देते थे तथा जो शास्त्रका महत्त्व नहीं समझते थे उन्हें उनका महत्त्व समझाते थे, इसी कारणसे उनका नाम श्रीविजय था तथा उन्हें 'पण्डित-पारिजात' भी कहते थे।

उपर्युक्त श्रीविजय-भट्टारक और उनके शिष्य चोल्लट···, शान्त-देव, गुणसेन-देव, दयापाल-देव, कमलभद्र देव, अजितसेन-पण्डित-देव तथा श्रेयान्स-पण्डित-देव। इनने (उक्त मितिको) उर्व्वी-तिलक नामसे प्रसिद्ध पञ्चकूट-बसदिकी स्थापना की। बसदिकी मरम्मत, ऋषि-वर्गके आहार तथा पूजाके प्रबन्धके लिये, नन्नि-शान्तरदेव, ओड्डमरस, बम्म-देव, तथा चट्टल-देवीने,—आचार्य कमलभद्र-देवके पाद-प्रक्षालन-पूर्व्वक (उक्त) गाँव दिये।

शेष भाग बहुत घिसा हुआ है।]

[EC, VIII, Nagar tl. n° 35]

२१४

हुम्मच—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक ९९९=१०७७ ई०]

[हुम्मचमें, तोरण-बागिलके दक्षिणी खम्भेपर]

(पूर्वमुख) श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

('स्वस्ति' से लेकर पाँचवी पंक्तिके 'महा-मण्डलेश्वरं' तक का लेख पूर्वके शि० ले० नं० २१३ की पंक्ति १ से ६ तक से मिलता है ।)

एल्गे चेल्वने वीरुगं वपुविनिं भावोद्भवं तक्कनेन्त् ।
एल्गे वीरने वीरुगं विरुदिनिं भीमोपमं वाप्पु मत्त् ।
एल्गे दानिये वीरुगं पिरियना-कर्ण्णाख्यनिन्दकुनेन्त् ।
एल्गे वीरल-देवि नोन्तळवनोळ् कूडिर्प्प सौभाग्यनम् ॥

अन्तेनिसिद वीर-शान्तर-देवगं वीरल-महादेविगं ॥

दशरथन तनेयरन्दमन् ।
एशेदिरे पोत्तिर्द्द तैलनुं गोग्गिगनुम् ।
कुसुमाखनेनिसु वोड्डुग-
वसुधेशनुमन्तु वोम्मनुं तनयरदार् ॥

अवरोळग्रजनराति-सैन्य-शोषण-वाडवानलनुमाश्रित-कल्प-वृक्षनु-मेनिसि परायत्तमाद देशमं तननेकायत्तं माडि सान्तर-वट्टमं ताळ्दि ।

निज-भुज-बळदिन्दरि-भू- ।
भुजरं कोन्दोत्तिकोण्डु देशमनन्ता- ।
विजिगीषु तैल-भूपम् ।
भुजबळ-शान्तरनेनिप्प पेसरं पडेदम् ॥

आतननुजं गोविन्दर-देवननेक-राज्य-कण्टकरं निष्कण्टकं माडि

सम्यक्त्व-चूडामणियुं जगदेक-दानियुं एनिसि सान्तळिगे-सायिरमुमनेक-छत्र-च्छायेयिन्दमाळ्दु **नन्नि-सान्तर**नेम्बेरडनेय पेसरं पडेदम् ॥

(दक्षिणमुख) ख्यातियनेनं पेळ्वुदो ।

वूतुग-पेर्म्माडि पडेद महिमोन्नतियम् ।
भूतळदोळ् शान्तरनुप- ।
मातीतं चक्रि कुडल् पडेदनमोघ ॥
अर्द्ध-पथमिदिर्गे वन्दु त- ।
दर्द्धासनमेनिप लोह-विष्टरदोळ् सं- ।
वर्द्धित-सान्तरनेनिप ध- ।
नुर्द्धरनं चक्रवर्त्ति निलिसिदनेसेयल् ॥

अन्तातन तम्म**नोड्डुग**नशेष-धरा-वळयमं कर-वळयमं ताळ्दुवन्ते लीलेयिं ताळ्दि **विक्रम-सान्तर**नेम्ब पेसरं पडेद ॥

स्वस्ति श्री-लसदुग्र-वंश-तिलकः श्री-वीर-देवात्मजः
दृप्यद्-वैरि-निकाय-दर्प्प-दळन-प्रादुर्भवद्-विक्रमः ।
सम्पूर्णेन्दु-करावदात-सु-यशो-व्यालिप्त-दिक्-भित्तिकः
श्रीमान् **विक्रम-शान्तरो** विजयते लक्ष्मी-वधू-वल्लभः ॥

आतननुज ॥

पर-नरप-शिरः-कुञ्जो- ।
त्कर-करि-कमळा-पयोधर-द्वय-हारम् ।
स्मर-मूर्त्ति निखिळ-दिग्-मुख- ।
परिचुम्बित-कीर्त्ति **बर्म्म-देव** कुमार ॥

अन्तेनिसिदवर तायि ॥

जननं **रक्कस-गङ्ग**-भूमिपति **काञ्ची-नाथ**नात्म-प्रियम् ।

त्रिनुतर् श्रीविजयर् सु-सि (शि) क्षकरेनल् विद्विष्ट-भूपाळ्सं-।
हन-विक्रान्त-यशो-विळास-भुज-खड्गोल्लासि तां गोग्गि नन्- ।
दनना-चट्टल-देविगेन्दोडे यशश्रीगिन्तु मुन्नोन्तरार् ॥

अन्तु समस्त-गुण-सन्दोहक्कं धर्म्मक्कं जन्म-भूमियेनिसिद चट्टल-देवियुं भुजबळ-शान्तर-देवनुं नन्नि-शान्तर-देवनुं विक्रम-शान्तर-देवनुं बर्म्म-देवनुं पोम्बुर्च्चदोळ् सुखदिं राज्यं गेय्युत्तमिर्द्दु धर्म्मं प्रागेव चिन्तेदेम्ब वाक्यार्थमं भाविसि तमगे श्रेयो-निबन्धनार्थं उर्व्वी-तिळक-मेनिसिद पञ्च-बसदियं मार्प्पुद्योगमनेत्ति कोण्डु तामेल्लरु मोडेयदेवर गुड्ड गळप्प कारणदिन्द द्रविळ-संघद नन्दि-गणद रुङ्गुळान्वयद श्रीविजय-देवर नामोच्चारणं गेय्दवर शिष्यरु श्रेयान्स-पण्डितरिन्दुर्व्वी-तिळक-मेनिसिद पञ्च-बसदिगे सु(शु)भ-मुहूर्तदोळाचन्द्रार्क्क-स्थायियप्पन्तुन्नत-मप्पेडेयोळ् केसर्क्कल्लिक्किसिदरु अवराचार्यावळियेन्तेने । श्री-वर्द्धमान-स्वामिगळ तीर्थं प्रवर्त्तिसे सप्तर्द्धिसम्पन्नरप्प गौतमर् ग्गणधररेने त्रिज्ञानिगळप्प मुनिगळ् पलंबरुं सले अवरिं चतुरङ्गुळ-ऋद्धि-प्राप्तरेनिसिद कोण्डकुन्दाचार्यरुं श्रुतकेवळिगळेनिसिद भद्रबाहुस्वामिगळ् मोद-लागि पलम्बराचार्य्यर् पोदिम्बळियं समन्तभद्र-स्वामिगळुदयिसिदरवर-न्वयदोळ् गङ्ग-राज्यमं माडिद सिंहनन्द्याचार्य्यरवरिं अकलङ्कदेवरवरिं रायराचमल्लन गुरुगळप्प वादिराज-देवरेनिसिद कनकसेन-देवरुमवर-शिष्यरोडेय-देवरुं रूपसिद्धियं माडिद दयापाळ-देवरुं पुष्पसेन-सिद्धान्त-देवरुं षट्-तर्क्क-षण्मुखरुं जगदेकमल्ल-वादियुमेनिसिद वादि-राज-देवरवरिं कमळभद्र-देवरवरिम्

एकास्यः चतुराननो गणपतिर्न्नेभाननो भारती
न स्त्री सर्व्व-कलाधरोऽशशधरः कामान्तको नेश्वरः ।

विद्यानां परिनिष्ठित-क्षिति-तळं तन्मूळमाळम्बनम्
वित्ते तेऽजितसेन-देव विदुषां वृत्तं विचित्रीयते ॥

अन्तेनिसिद शब्द-चतुर्म्मुखनुं तार्किक-चक्रवर्त्तियुं वादीभसिंह-नुमेनिसिदजितसेन-देवर सह-धर्म्मिगळु

दुरित-कुळ-प्रध्वंसं ।
स्मर-मायत्-कुम्भि-कुम्भदळन-मृगेन्द्रम् ।
वर-वाग्-वनिता-कान्तम् ।
धरेयोळ् नेगर्दो-कुमारसेन-देव-मुनीन्द्रम् ॥

अन्तेनिसिद कुमारसेन-देवरिं वैद्य-गज-केसरियेनिसिद श्रेयान्स-देव-रन्तवरायुर्व्वी-तिळकमेनिसिद पञ्च-वसदियना- शक-वर्षद ९९९नेय पिङ्गळ-संवत्सरद ज्येष्ठ-शुद्ध-बिदिगे-बृहस्पतिवारदन्दु प्रतिष्ठेयं माडिया-वसदिय खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारणकमल्लिई ऋषि-समुदाय-दाहार-दानक्कं पूजा-विधानक्कमागे समस्त-गुण-मणि-गणविराजमाने-यरप्प श्रीमतु-चट्टल-देवियरुमन्तु तम्मं नाल्वरुमिर्द्दु कमळभद्र-देवर काळं कर्च्चि धारा-पूर्व्वकमासम्बन्धिय समुदाय-मुख्यमागे भुजबळशान्त-रदेवं कोट्ट ग्रामङ्गळु (जैसाकि कहा गया है) मत्तमातननुजं नन्नि-शान्तर-देवं सुखदिं राज्यं गेय्युत्तमिर्द्दु पोम्बुर्च्च-नाडोळगण हादिगारु अदर काल्वहळ्ळि हल्लवनहळ्ळियुं बिडेयुमं कोट्ट अन्तातन तम्मं विक्रम शान्तर-देवं राज्यं गेयुत्तमिर्द्दु पोम्बुर्च्च-नाडोळगण हालन्दूरुं कल्लूरु-नाडोळ-गण केरेगोड समीपद मडम्बळ्ळियुमं कोट्टरिन्ती-वसदिय वृत्ति-एल्लवक्कं देवि-देरे अडे-गर्द्दु काणिके सेसे बिर्द्दु वीय-मोदलागे कुमार-गद्याणं किरु-देरे किरु-कुळायं साम्यं सलगे मोदलागि पेरवुं तेरेगळेम्ब सर्व्व-बाधा-परिहारवं माडिदर् । (यहाँ सीमाएँ तथा हमेशाके अन्तिम वाक्यावयव आते हैं)।

[जिनशासनकी प्रशंसा। जिस समय, (उन्हीं चालुक्य पदों सहित), त्रिभुवनमल्ल-देवका विजयी राज्य चारों ओर प्रवर्द्धमान था—और तत्पादपद्मोपजीवी (ऊपरके शिलालेख नं० २१३ में जो उपाधियाँ नन्निशान्तरकी हैं, उन्हींके सहित) महामण्डलेश्वर वीरग या वीर शान्तर-देव था। उसकी प्रशंसा। उसकी रानी वीरल-महादेवी थी। उनके चार लड़के—तैल, गोग्गिक, ओड्डुग, और बम्म—थे। इनमेंसे तैलका नाम भुजबळ-शान्तर, गोग्गिक या गोविन्दर-देवका नन्नि-शान्तर तथा ओड्डुगका विक्रम-शान्तर प्रसिद्ध हुआ। सबसे छोटे भाईका नाम कुमार बर्म्म-देव ही रहा। इनकी माँ चट्टल-देवी (वीरल महादेवी) थी। उसके पिता राजा रक्कस-गङ्ग, पति काञ्ची-अधिपति, गुरु श्रीविजय, और पुत्र गोग्गि (नन्नि-शान्तर) थे।

इस प्रकार, जिस समय सब धार्मिक गुणों और पवित्रताकी जन्मभूमि चट्टलदेवी, भुजबल-शान्तर-देव, नन्नि-शान्तर-देव, विक्रम-शान्तर-देव और बर्म्मदेव पोम्बुर्चमें थे और शान्तिसे राज्य कर रहे थे 'धर्म सर्व प्रथम चिन्तनीय है', इसका खयाल करके, धर्म उपार्जन करनेके लिये, उन्होंने 'उर्वी-तिलक' नामकी पञ्च बसदिके निर्माणका कार्य अपने हाथमें लिया। ये सब ओडेय-देवके (श्रेयांस-पण्डितके शब्दोंमें जो श्रीविजय-देवका नामान्तर है) गृहस्थशिष्य थे। उन सबने किसी शुभ दिन पञ्चबसदिकी नींव डाली।

श्रेयान्सदेवके आचार्योंकी परम्परा—वर्द्धमान स्वामीके तीर्थमें गौतम गणधर हुए। उनके पश्चात् बहुतसे त्रिकालज्ञ मुनियोंके होनेके बाद क्रमशः कोण्डकुन्दाचार्य, 'श्रुतकेवली' भद्रबाहु स्वामी, बहुत-से आचार्योंके व्यतीत होनेके बाद, समन्तभद्र स्वामी, सिंहनन्द्याचार्य, अकलङ्क-देव, कनकसेन देव (जो वादिराज नामसे भी प्रसिद्ध थे), ओडेयदेव (श्रीविजयदेव जिनका ऊपर नाम दिया है), दयापाल, पुष्पसेन सिद्धान्तदेव, वादिराज-देव (जो 'षट्-तर्क-षण्मुख' तथा 'जगदेकमल्ल-वादि' नामसे भी प्रसिद्ध थे), कमलभद्र-देव, अजितसेन देव (प्रशंसासहित) हुए। और अजितसेन-देवके सहधर्मी शब्द-चतुर्म्मुख, तार्किक-चक्रवर्त्ती वादीभसिंह हुए। तत्पश्चात् कुमारसेनदेव मुनीन्द्र। इनके बाद श्रेयान्सदेव हुए।

(उक्त मितिको) पञ्चवसदिकी नींव डालकर, चट्टल-देवी और चारों भाइयोंकी उपस्थितिमें, कमलभद्रदेवके पैर धोकर, भुजवल-शान्तर-देवने (जैसा कि ऊपर कहा गया है) गाँव और भूमियाँ दीं। इसीतरह उसके छोटे भाई नन्नि-शान्तर देवने तथा इसके छोटे भाई विक्रम शान्तरदेवने (जैसा कि लेखमें बताया गया है) गाँव और भूमियाँ दानमें दीं और वसदिके इन दानोंको (जिसकी सूची लेख में दी हुई है) उन्होंने सभी करोंसे मुक्त कर दिया। सीमायें, शाप और आशीर्वचन।]

[EC, VIII, Nagar tl., n° 36]

२१९

हुम्मच—संस्कृत तथा कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका; पर लगभग १०७७ ई० का]

[हुम्मचमें, मानस्तम्भके ऊपर, दक्षिणकी तरफ़]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

नमो अर्हते ॥

स्वस्ति-श्री-रमणी-विनोद-भवनं यस्योद्ध(द्व)-वक्षः-स्थलम्
वाग्-देवी-वनिता-विलास-निळयो यस्याननाम्भोरुहम् ।
वीर-श्री-युवतेरभूत् कुळ-गृहं यद्-बाहु-दण्ड-द्वयम्
यत्कीर्त्तिश्शरदिन्दु-कान्ति-विमला पारेदिशं वर्त्तते ॥
साक्षादुग्र-कुळ-प्रभुर्न्निज-भुज-प्रोद्भासि-कौक्षेयक-
प्रध्वस्तीकृत-भूरि-गर्व्व-वळवद्विद्वेषि-भूपाळकः ।
दीनानाथ-जना यदीय-सु-महा-दानात् परेष्ट-प्रदम्
स श्रीमान् भुवि **नन्नि-शान्तर** इति ख्यातो भृशं भ्राजते ॥
विभाति यस्याप्रतिमः प्रतापः मानोगतो (?) वैरि-महीपतीनाम् ।

सन्तापयत्यैव तदन्तरङ्गम् श्रीमानसावोड्डुग-मण्डलेशः ॥
कुमार-चूडामणिरेष भाति श्री-ब्रह्म-देवो गुणवाननिन्द्यः ।
श्री-जैन-पादाम्बुज-युग्म-भृङ्गः यशोऽभिवेष्टयाखिळ-भूमि-भागः ॥
श्रीमद्-राक्षस-गङ्ग-मण्डलपतिः श्री-गङ्ग-नारायणः
दोर्-दण्ड-द्वय-वीर्य्य-भीपित-रिपुः श्री-गङ्ग-पेर्म्मानडिः ।
स्याद् यस्या जनको मतो निरुपमो विख्यात-कीर्त्ति-ध्वजः
श्रीमच्चट्टल-देवि अत्र भुवने ख्याता वरीवृत्यते ॥
दृष्टे यत्र महोत्सवैक-निळये पश्यज्जनानां मनः
पुण्यं त्वञ्चिनुते-नरामतितरामंहो हरत्यप्यलम् ।
वृत्ताभिः पृथुभिः पुनः प्रतिदिनं वाभाति योऽयं सदा
श्रीमत्पञ्च-जिनालयो निरुपमो भक्त्या यया निर्म्मितः ॥
संसाराम्भोधिमध्यान् निरुपम-गुण-सद्-रत्न-भेदाधिवासम्
निर्व्वाण-द्वीपमाप्तुं प्रतियत-मनसां पण्डितानां मुनीनां ।
कृत्वा श्रीमज्जिनेन्द्रालय-विलसित-पात्रं व्यधाद् यक्षिणामनू-
नानल्पम्भोल्लसत्-कूवरमपि च धनार्य्यर्थि-सार्त्थाय दत्वा ॥
आहाराभय-भैषज्य-शास्त्र-दानैर्न्निरन्तरैः ।
श्रीमच्चट्टल-देवीयं वाभाति भुवन-स्तुता ॥
रोहिणी चेलिनी सीता देवता च प्रभावती ।
श्रूयन्ते वार्त्तया सेयं दृश्यन्ते विमलैर्ग्गुणैः ॥
श्रीमद्द्रविळ-संघेऽस्मिन् नन्दिसंघेऽस्त्यरुङ्गळः ।
अन्वयो भाति योऽशेष-शास्त्र-वाराशि-पारगैः ॥
यद्-वाग्-वज्राभिघातेन प्रवादि-मद-भूभृतः ।
सञ्चूर्ण्णितास्तु भाति स्म हेमसेनो महामुनिः ॥

शब्दानुशासनस्योच्चैर् **रूपसिद्धिर्**म्महात्मना ।
कृता येन स वाभाति **दयापालो मुनीश्वरः** ॥
श्री-पुष्पसेन-सिद्धान्त-देव-चक्रेन्दु-सङ्गमात् ॥
जातावभाति जैनीयं सर्व्व-शुक्ला सरस्वती ॥
नम्रावनीश-मौळीद्ध-माला-मणि-गणार्च्चितम् ।
यस्य पादाम्बुजं भातं भातः **श्रीविजयो** गुरुः ॥
सदसि यदकलङ्कः कीर्त्तने **धर्म्मकीर्त्तिः**
वचसि सुरपुरोधा न्यायवादेऽक्षपादः ।
इति समय-गुरूणामेकतस्संगतानाम्
प्रतिनिधिरिव देवो राजते **वादिराजः** ॥
सांख्यागमाम्बुधर-धूनन-चण्ड-वायुः
बौद्धागमाम्बुनिधि-शोषण-वाडवाग्निः ।
जैनागमाम्बुनिधि-वर्द्धन-चन्द्र-रोचिः
जीयादसाव**जितसेन**-मुनीन्द्र-मुख्यः ॥
श्रेयांस-पण्डितर् ग्गत- ।
मायादि-कपायरमळ-जिन-मत-सारर् ।
न्याय-परर् स्सित-कमळ- ।
श्री-युत-द-न्त-कुन्द-रुन्द्र-कीर्त्ति-पताकर् ॥
नमो जिनाय ॥

[जिन-शासनकी प्रशंसा । नन्नि-शान्तरके यशकी प्रशंसा । राजा ओड्डुग, मल्ल (बम्म-)देव, और चट्टल-देवीकी प्रशंसा ।

हेमसेन-मुनि, शब्दानुशासनके लिये 'रूपसिद्धि' बनानेवाले दयापाल, पुष्पसेन सिद्धान्तदेव, श्रीविजय, इन सबका प्रशंसापूर्वक उल्लेख ।

वीरदेव भी सफल हैं। आगेके श्लोकोंमें उनकी समुद्रसे तुलना की गई है। पट्टण-स्वामीके पुत्र मल्लने इसे लिखा।

सिद्धान्त-रत्नाकरदिवाकरनन्दिने मूर्खों या बच्चों तथा विद्वानोंके सबके अवबोधार्थ कन्नडमें तत्वार्थसूत्रकी वृत्ति लिखी। पट्टणस्वामीके इष्ट देव जिन थे; उसके शासक वीर-शान्तर थे, उनके पिता अम्मण, गुरु दिवाकरनन्दि सिद्धान्तदेव थे। (जिनकी पूजाके लिये दैनिक सामग्री तथा लोगोंके कल्याणका वर्णन करनेके बाद),—नोक्की प्रशंसा।

चन्द्रकीर्ति-भट्टारकके मुख्य शिष्य दिवाकरनन्दिसूरिकी प्रशंसा। उन्हींका अपर नाम सिद्धान्त-रत्नाकर था। उनके शिष्य सकलचन्द्र-मुनिनाथ थे।

पट्टण-स्वामीनोक्कय्य-सेट्टिके पुत्र वैश्य-वंश-तिलक इन्द्रकी प्रशंसा।]

[EC, VIII, Nagar tl., n° 57]

२१३

हुम्मच;—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक९९९=१०७७ ई०]

[हुम्मच में, पञ्चबस्तिके आँगनके एक पाषाणपर]

भद्रमस्तु जिन-शासनाय ॥

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

शक-वर्ष ९९९ नेय पिङ्गळ-संवत्सरं प्रवर्त्तिसुत्तमिरे स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिळकं चाळुक्याभरणं श्रीमत्-**त्रिभुवनमल्ल-देवर** राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्धमानमा-चन्द्रार्कतारं सलुत्तमिरे। तत्पाद-पद्मोपजीवि ॥ समधिगतपञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरनुत्तर-मधुराधीश्वरं **पट्टिपोम्बुर्च्च-पुर**-वरेश्वरं महोग्र-वंश-ललामं **पद्मावती**-लब्धवर-प्रसादासादित-विपुळ-तुळापुरुष-महादान-हिरण्यगर्भ-त्रयाधिक-दान वानरध्वज

स्तुत्य-यशोम्बुधि विरुद-नृ- ।
पोत्तम भुजबळन तम्मनेनिपं गोग्गि ॥
आतन तम्मं ॥
ओड्डिदरि-नरपरोड्डम् ।
काहिं कडिदण्णनङ्कार-वेसर्केळ् ।
ओड्डुगनोळेसेये जगदोळग् ।
ओड्डुगनरसङ्कार-वेसरं तळेदन् ॥

आ-कुवळय-चन्द्रमननुजम् ॥
कुरि-दरि-दरिदम् पगेयेम्व् ।
अरिकेय काननमनदटरदटं नुरिदन् ।
नेरेददटं वर्म्मुगनेम्व् ।
अरितद कणि विरुद-कोमर-चूडारत्नम् ॥
तैलन गोग्गियोड्डुगन बोम्मन ताय् जिन-राज-धर्म्म-लल्-
ललेय वीर-देव-नृपनत्तिगे कन्तेगे वीर-लक्ष्मिगिर्- ।
प्पालयमाद मण्डलिक-रक्कस-गङ्गन पुत्रि काणि शी- ।
लाळिगेनिप्पडेनवळे नोन्तळ् चट्टल-देवि नोन्तुदन् ॥
वेरिनहीन्द्रनं नडुविनागसमं कुडियिं दिवाग्रमम् ।
तार-नगङ्गळं कवलिनोळ्ळेलेयिं देसेयं मुगुळ्गाळिम् ।

तारकियं सिताब्जमने पुष्पदे पोल्तुदु पणिण (उत्तरमुख) निन्दुवन् ।
नीरेरेदन्ते दुग्धमने चट्टल-देविय सद्-यशो-द्रुमम् ॥

इन्तेनिसिदिवरु सन्तळिगे-सासिरमं सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्दु तम्म राज्याभिवृद्धि-निबन्धनमप्प श्री-जैन-धर्म्मानुरागदिं शक-

[वलगाम्बेमें, वडगियर-होण्डके पास एक पाषाणपर]

स्वस्ति समस्त-सुरासुर-मस्तक-मकुटांश्म-जाळ-जळ-धौत-पदम् ।
प्रस्तुत-जिनेन्द्र-शासनमस्तु चिरं भद्रमखिळ-भव्य-जनानाम् ॥
श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिळकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-त्रिभुवन-मल्ल-देवर् ॥

वृ ॥ अलगं चोळावणीशङ्गणसनणियरं लाळ-भूपङ्गे बाहा- ।
वळदिन्दं तोरि मीरुत्तडसिदुभय-चक्रेश-सामन्त-भूभृत्- ।
कुळमं तन्नेरिदुग्रेभदिनुरदरे बेङ्कोण्डु चालुक्य-राज्यो- ।
ज्वळ-लक्ष्मी-नाथनाळ्दं भुवन-जन-नुतं विक्रमादित्य-देवम् ॥
धारा-नाथ-महा-भय-ज्वरकरं चोळोग्र-कालान्तकम् ।
सौराष्ट्रांग-कालिंग-वङ्ग-मगधान्ध्रावन्ति-पाञ्चाळ-.... ।
....राजावळि-मौळि-लाळित-पदं पूर्व्वापराम्भोधि-वे-ई
ळारामान्तर-शैळ-केळि-विभवं चालुक्य दिक्-कुञ्जरम् ॥
नरसिंहाकारदिं दानव-पति-सुरमं सीळ्दनण्णमणु रुद्रं- ।
बेरसा-कैलासमं तूगिदनळवळवार्त्तेर्तियिं चर्म्ममं ने- ।
ट्टेरदिन्द्रङ्गित्तनार्प्पर्प्पखिळ-धरे गत-क्षत्रमप्पन्ते धात्री- ।
शरनिर्प्पत्तोन्दु-सूळ् कोन्दन चलमे चलं विक्रमादित्य निन्न ॥
पुदुवेकन्यर्ग्गमानोर्व्वने तळेयलिदं साल्वेनेन्दा-महा- कूर्- ।
म्मद वेन्निन्दा-भुजङ्गाधिपन पेडेगळिन्दा-दिशा-कुञ्जर-स्कन्- ।
धदिना-भूभृद्दरी-मूळदिनखिळ-धरा-भारमं तन्दु विक्रा-
न्तद वर्लिप तन्न तोळोळ् पदुळमिरिसिदं विक्रमादित्य-देवम् ॥

अन्तु धरेयं निष्कण्टकं माडि सुख-संकथा-विनोददिन्देतगिरिय नेलेवी-डिनोळ् राज्यं गय्युत्तमिरे ॥ तत्पाद-पद्मोपजीवि ॥ स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-सामन्ताधिपति महा-प्रचण्डदण्डनायकं दुर्ज्जन-भय-दायकं बन्धु-जन-बन्धुर-कुमुद-सुधाकरं विप्र-दिवाकरं सरस्वती-समय-समुद्धरणं गुण-गणाभरणं चतुर-चतुराननं विक्रम-पञ्चाननं प्रताप-सहायं पति-हितवनतेयं पिसुणर गण्डनहित-कुळ-कमळ-वन-वेदण्डं विनयावलोकं कीर्त्ति-पताकं साहसोत्तुङ्ग श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-देवचरण-सरसीरुह-भृङ्ग-नानादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्रीमद्दण्डनायकं वर्म्म-देवम् ॥

वृत्त ॥ धरेगेल्लं तन्न वहा-बळद नेरवु तन्नणमु तन्नुग्र-तेजस्- ।
स्फुरितं तन्नाप्पु तन्नोर्न्नुडिय निलवु तन्नूर्जित-ख्यातियोळप-
चरियागुत्तिर्प्पिनं रञ्जिसि सकळ-गुणानर्घ्य-रत्नके रत्ना- ।
करनादं दण्डनायाग्रणि सकळ-जगन्मण्डनं वर्म्म-देवम् ॥
जनकेल्लं ताने कण्णुं गतियुमेनिसि तन्नि रिपु-क्षत्र-नक्ष-
त्र-निकायं निल्लदेल्लं मसुळ्वे कलिमळद्ध्वान्तमर्क्कडिविश्वा- ।
वनियं मिक्केळ्गेयिन्दं बेळपेसकमनान्तिर्द्दपं विक्रमादि- ।
त्यनं तेजश्चक्रमिर्प्पन्तेवोलनववि-सत्त्वोदयं वर्म्म-देवम् ॥
हरियिं चाळितमादुदक्कदचळेन्द्रं देल्वनिं सार्द्दुदुर्- ।
व्वि रसा-गर्व्वनना-ळ्यानिळन पोर्न्कि पारिताशा-गजोत्- ।
करमेन्दन्दिवराळि वीर-गुणमेळ्किरेन्दिवं नक्कु वि- ।
करिपं निश्चळमाद धैर्य्य-गुणदोर्क्कि वर्म्म-दण्डाधिपम् ॥
कुडुवेडेगादुदेम्मडगलादुदे वित्तमरातियं पडल्- ।
वडिपेडेगादुदेम्बरिदे पोत्तिरलादुदे कण्डु सत्यमम् ।

नुडिवेडेगादुदेम् पुसियल्लादुदे नाल्गे यिन्दु कीर्त्ति दाम्- ।
गुडिवडे **बम्मदेव**ननितुं क्षणदुन्नतियं नेगर्चिदम् ॥

अन्तु पोगर्त्तेगं नेगर्त्तेगं नेलयाद श्रीमन्महा-सेनाधिपति महा-प्रधान दण्डनायकं **बम्म-देव**रसर् **बनवसे**-पन्निच्छासिरमुं सान्तळिगे-सासिरमुं पदिनेण्टग्रहारगळमं दुष्ट-निग्रह-विशिष्ट-प्रतिपाळनम् गेय्दनु-भविसुत्तं राजधानि-**बळ्ळिगावे**योळिरे ॥

वृत्त ॥ जिननाथ-स्वामि देय्वं निज-गुरु **गुणभद्र-व्रतीन्द्रं** जगत्-पा- ।
वने ताय् **जक्कब्बे सोमं** जनकनवरजं **मेचि भागब्बे** पुण्याङ्····।
गने मावं लोक-पूज्यं गुण-निधि **कलि-देवं** बुधाधारनेन्दन्द् ।
अनवद्यं **सिङ्ग**नेन् केवळमे हितकरोत्तुङ्ग-धर्म्म-प्रसङ्गम् ॥
विनेयद सीमे धर्म्मद तवर्-म्मने सत्यद जन्म-भूमि मान्- ।
तनदेरुवट्टु पेम्पिनदगुन्ति विवेकद बीडु-दाणवार- ।
ण्यिनकणियेन्दु वण्णिपुदु भू-वळयं **प्रतिकण्ठ-सिंगनम्** ।
जिन-पति-पाद-पङ्करुह-भृङ्गननुद्ध-गुण-प्रसङ्गनम् ॥
वरेपद बल्मे वाजनेय विन्नणमोप्पुव लेक्कदोजे सं- ।
कर-सुतनोळ् सरस्वतियोळम्बुरुहासननोळ् विचारिसल् ।
दोरे सरि पाटियेन्दु निखिळोर्व्वरे वण्णिसुतिर्प्पुदेन्दोडेम् ।
पिरियनो सिङ्गनुज्वळ-यशो-विभवं प्रतिपन्न-मन्दरम् ॥
शुचि सुर-सिन्धुजं सुर-सरिद्भवनिन्दनिल-प्रियात्मजम् ।
शुचि गगनापगा-तनयनिं पवमान-तनूजनिं सुकम् ।
शुचि नेगळ्दा-नदीसुतनिना-कपि-राजनिना-सुकर्पिंयिम् ।
शुचियेने सन्दने-दोरेतो शौच-गुणं **प्रतिकण्ठ-सिंगन** ॥
फळ-भरिताम्र-भूरुहके पक्षिगणं भ्रमराळि पुष्प-सं- ।

प्रसर-व्योम-विभागदोळ् सोगयिकुं रत्न-त्रय-श्री-गुणा- ।
वसथ-श्री-**गुणभद्र-देव**-मुनिपाम्भोजात-मित्रोदयम् ॥

कन्द ॥ एनो-दूरं परम-त- । पो-निधि तन्मुनि-गणेश-सहधर्म्मि लसद्- ।
ज्ञान-परं नेगळ्द **महा-** । **सेन-व्रति** तद्-व्रतीश-शिष्यर्-न्नेगळ्दर् ॥

वृत्त ॥ ओदविद शब्द-शास्त्रदेडेयोळ् भुवन-स्तुत-**पूज्यपाद**रेम्- ।
बुदु नेरे तर्क्क-शास्त्रद विवेकदोळिन्त**कळङ्क-देव**रेम्- ।
बुदु कविता-गुणोत्कर-महत्त्वदोळेय्दे **समन्तभद्र**रेम्- ।
बुदु सले **रामसेन**-विबुधोत्तमरं निखिळोर्व्वरा-जनम् ॥

अन्तु समस्तशास्त्र-पारावार-पारग परमतपश्चरणनिरतरप्प **श्रीमूल-संघद सेनगणद पोगरि-गच्छद श्रीमत-रामसेन-पण्डितर्गे** धारा-पूर्व्वकं सर्व्व-नमस्यं माडि कोट्ट **बनवसे-पन्निच्छासिरद** कम्पणं **जिड्डुळिगे** ७० र वळिय वाड **मनेवने** १ । (इमेशाके अन्तिम वाक्यावयव)। श्रीमद्-**गुणभद्र-देव**र गुड्डं **चावुण्डमय्यं** बरेदं मङ्गळ महाश्री

[जिनशासनकी प्रशंसा । त्रिभुवनमल्ल-देवका प्रवर्धमान राज्य । विक्रमादित्य-देवकी प्रशसा । जिस समय वे एतगिरिके निवासस्थानमें रहते हुए राज्य कर रहे थे उस समय तत्पादपद्मोपजीवी (बहुत उपाधियोंसे युक्त) दण्डनायक बर्म्मदेव थे (उसकी प्रशंसामें श्लोक) । जिससमय दण्डनायक बर्म्मदेवरस बनवसे १२०००, सान्तलिगे १००० और १८ अग्रहारोंकी रक्षा करते हुए राजधानी बल्लिगाम्वेमें थेः—

सिंगके गुरुका नाम गुणभद्र-व्रतीन्द्र, माँ जक्कव्वे, पिता सोम, छोटा भाई मेचि, पत्नीका नाम भागव्वे, ससुरका नाम कलि-देव था। (उसकी प्रशंसामें श्लोक, जो उसे 'प्रतिकण्ठ-सिंग' कहते हैं)

प्रतिकण्ठ-सिंगय्यने अपने शासक बर्म्मदेवको प्रार्थनापत्र देकर त्रिभुवनमल्लदेवसे, चालुक्य-विक्रम वर्ष २ में चालुक्य-गंग-पेर्म्मानडि जिनालयको

वनवसे १२००० के जिड्डुलिगे ७० का मनेवने गाँव दिलवाया। यह दान गुणभद्रके शिष्य रामसेनको किया गया था। वे मूल-संघ, सेन-गण, और पोगरिगच्छके थे।]

[EC, VII, Shikarpur tl., n° 124]

२१८

हट्टण—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०००=१०७८ ई०]

[हट्टण (कब्बनहळ्ळि परगना) में, बस्तिके चन्द्रशालेमें एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम्॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं। श्री-पृथ्वी-वल्लभं। महाराजाधिराजम्। परमेश्वरं परम-भट्टारकम्। सत्याश्रय-कुळ-तिळकम्। चाळुक्याभरणम्। श्रीमतु **भूलोकमल्ल-सोमेश्वर**..........देवरु। विजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमा-चन्द्रार्क्क-तारं-वरं सल्लुत्तमिरे॥ श्रीमतु त्रिभुवनमल्ल **एरेयङ्ग[ग]**-होय्सळ-देवर्गम्। **येचल-देविगमुदितो**-दितमागलु वन्द वंशावतारमेन्तेन्दडे॥ स्वस्ति श्रीमनु-महा-मण्डलेश्वरं **द्वारावतीपुरवराधीश्वरम्**। यादव-कुलाम्बर-द्युमणि। सम्यक्त्व-चूडामणि। मलपरोळु गण्ड। कदन-प्रचण्डम्। असहाय-सूर गिरिदुर्ग्ग-मल्ल निश्शङ्क-प्रताप भुजबळ-चक्रवर्त्ति श्री-वीर-**वल्लाळ-देवरु**। पृथ्वीराज्यं गेय्युत्तमिरे। तत्पादपद्मोपजीवि श्रीमन्महा-सामन्तं **गण्डरादित्यङ्गम् हुग्गियवे-नायकित्तिग** सु-पुत्रं कुळ-दीपकरेनिसि पुट्टिदरु सामन्त-**सुब्बयनु** सामन्त-**सातय्यनुं** सामन्त-**बूवय्यनुं** श्रीमनु-महा-सामन्त **माचय्यन** प्रतापवेन्तेन्दडे। स्वस्ति समधिगत-पञ्चमहाशब्द-महा-सामन्त वीर-लक्ष्मी-कान्त। तुरेय रेवन्त

पर-बळ-कृतान्त । विरुद-गण्डर वदिसुव सामन्तर गण्ड । ············गण्ड । समर-प्रचण्ड । नुडिदन्ते गण्ड । ········पराङ्गना-पुत्रं । दायिगमुरारि विनेयोपकारि । ········वल्लभं दुष्टाश्व-मल्लं भीतर कोल्लं हडिय मार्कोळुवं दळुव वेङ्कोळुवं । इडगूर-देवी-लब्धवर-प्रसाद । मृगमदामोद । यत्तिल-वन-विकासचन्द्र सदानन्दभोग-नागेन्द्र होय्सळ-देव-पादाराधकम् । पर-बळ-साधकम् । नीति-चाणुक्यं एक-वाक्य वैरि-मनो-भङ्ग । अय्यन सिङ्ग दायिग-दुट्टर गण्ड । तप्पे तप्पुव । धीरदिन्दो-प्पुव । सामन्तजगदळ । मलेय······दुळिव । मलेगे····आने । येत्तिद मोनेगे मुन्तु केट्ट काळगके पिन्तु लट्टिद········ळम् । चतुरसमयसमुद्ध-रणनप्प श्रीमन् महा-सामन्त-माचाय्यनन्वयवेन्तेन्दडे ।

वेळुगेरेय माचेय-नायक- ।
ननुपम-गुण-रत्न माकल-देविय दान- ।
व्रतमेसेये चैत्य-गेहमु- ।
मनर्त्तियोळोप्पे साव्कुमा-पट्टणदोळ् ॥

[स]रसतिगे रतिगे सीतेगे ।
सरि दोरेयेनिसिद मारेय-नायकन ।
सतियं धरेयं वण्णिसुवुदु ।
निरन्तरं नेगळ्द बम्मियवव्वेय पेम्पम् ॥

सरणेने कायल्व वल्लम् ।
नेरेदर्त्तियोळीय-वल्लनाश्रित-जनकम् ।
पर-बळ वैरि-भूपर ।
कोल वल्लं वेळुगेरेय वल्लनिम्मडि-वल्ल ॥

रुगुमिणि चेळगिदरुन्धति ।

निगिलेनिसिद संतेयेम्ब सनियरोळ्गळ् ।
समनेनिप सतियेनिसिद ।
सति यल्लरे वल्लयनर्द्धाङ्गि केतवे देवियकं धरेयोळ् ॥

श्रीमत्तु सावन्त-बल्लि-देवनर्द्धाङ्गि केतवे-नायकितियरुं देवियक-नायकितियरुमवर सुपुत्र सुव्य-देव पेरुमाळ्ल-देव सावन्त-मारय्य माचि-देवनु सुख-सङ्कथा(या)-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तिरे ॥

सादिसिद मोक्ष-लक्ष्मिय- ।
नादरदिन्दभयरत्न-दान-विनोदन् ।
मेदिनियोळोप्पे माडुव ।
सासल-बम्मय्य भव्य-तिळकं धरेयोळ्
भव्य-कुळ-तिळकनोप्पुव ।
अग्रज माणिक्य चाकि-सेट्टियरनुजन् ।
एरकाट्टि-सेट्टियेन्दी- ।
त्र-पुरुषर् लेगळ्द दान-चिन्तामणिगळ् ॥

तर्क-व्याकरणदोळन् । वखाणगे वल्ल सकल-····क्तिगळिन् ।
मिक्कदतिजाणं धर्- । म्मकर्थिंग नेगळ्दिर्द्द माचि-सेट्टिये धन्यम् ॥
आ-माचि-सेट्टियनुजं । भाविसे श्री-जैन-धर्म्म-सुर-कुजदलङ्कार्
त्समनेनिसल्दकार्द्द परि । यीत्र-गुणं काळि-सेट्टियोरेगं दोरेगन् ॥
काळि-काळ-कल्प-वृक्षमन् । अळसदे नां वेडु काळि-सेट्टिय सुतनं
पल्वुं पोल्नुं वल्लम । सले पीयल्ल वल्ल मान्यना-बम्मदयम् ॥
आश्रित-जन-चिन्तामणि । विश्रुत-कीर्त्तिशनमळ-बोधावीसं (शं)
श्री-श्रेयांस-जिनेशं । वैश्रावण-सेट्टिगीगे सुख-सम्पदमन् ॥
नुडिदेरडु-नुडिवचनल्लं । कड्डु·········इल्ल आश्रित-जनकन्- ।

तेडेयुडुगदीव-दान- । अतियं कर्पूर-सेट्टियं वेडु वुदा ॥
कीर्त्ति-श्री-रमणन-वोलु ।
मूर्त्तियोळभिनव-मनोजन···ःनम् ।
कूर्त्तीव मसण-सेट्टिगे ।
मार्त्तण्डन मग नळ-········नृप ळवे ॥
················मनुजर्गम् ।
मरे-वोकरनेय्दिद् काव वन्धु-जनकम् ।
नेरे पोल्त कल्प-तरुवम् ।
नेरे वण्णिपुदेय्दे काचि-सेट्टियम्······॥
गणधर-भूपनन्वय-शिखामणि गोत्र-पवित्रन-द्विपम्
गुण-गण-नाथ गुणिपन···पेम्बिन मेरु वोन्द् ।
अगणित-चाव सत्यद् तवर्म्मने मानव-वन्यनेन्दोडिन्त् ।
एणे···हट्टणदोळोप्पुव माणिकनन्दि-देवरोळ् ॥

स्वस्ति स(श)क-वरिस-सायिरद कालयुक्त-संवत्सरं प्रवर्त्तिसे नखरजिनालयके विट्ट भूमि-(यहाँ दानकी विगत आती है) आ-पट्टण-दलु नडव देव-दाय हत्तु हेरिङ्गे हाग देवरिगे सोडरेण्णेगे गाण १ (हमेशाके शापात्मक वाक्य) श्री-मूळ-संघदेसिय-गणपोस्तकं-गच्छ-कोण्डकुन्दान्वयद श्रीमतु नागचन्द्र-चान्द्रायण-देवर-शिष्य रुणि-कच्छगोण्डि-देवरु मदवळिगे वोप्पवे मगळु काचवे मल्लवे मांदवे माचवे वाळचन्द्र-देवरु । सेट्टिय हळ्ळिय मळ्ळि-सेट्टि चिक्कसेट्टि तम्म···· सेट्टिगे विट्ट भूमि जक्कसमुद्रदळ्ळि सलगे ५

* रोदद हलोजन मग वीरोज ई-शासनव होयिद ॥

---

* यह पंक्ति पत्थरके सिरेपर है ।

[जिनशासनकी प्रशंसा।

जिस समय, (उन्हीं चालुक्य पदों सहित) भूलोकमल्ल सोमेश्वर-देव-का विजयी राज्य प्रवर्द्धमान था:—

त्रिभुवनमल्ल एरेयङ्ग-होय्सळ-देव और एचल-देवीके कुलमें उत्पन्न,—स्वस्ति। जब (अपने पदों सहित) वीर-बल्लाल-देव पृथ्वीका शासन कर रहे थे;—

तत्पादपद्मोपजीवी, महा-सामन्त गण्डरादित्य और हुग्गियब्बे नायकित्तिके सामन्त सुब्बय, सातय्य, और बूवय्य उत्पन्न हुए थे।

महा-सामन्त माचय्यकी प्रशंसा। उसकी कुछ उपाधियाँ। माचय्यकी उत्पत्तिका वर्णन। जिस समय सामन्त बल्लि-देव (माचय्य) अपनी दोनों स्त्रियों और चार लड़कों सहित शान्ति और सुखसे राज्य कर रहा था;—सासल बम्मय्य और उसके दो लड़कों माणिक्य और जाकि-सेट्टिका उल्लेख। माचि-सेट्टि और उसके लड़के कालि-सेट्टि, फिर उसके लड़के बम्मय्यका वर्णन। माणिकनन्दि-देवका उल्लेख। (उक्त मिति को) नलर जिनालय-के लिये (उक्त) भूमियाँ, दस गट्टोंका दाम, एक कोल्हू दानमें दिये गये थे।

श्री-मूलसंघ, देशिय-गण, पोस्तक-गच्छ, तथा कोण्डकुन्दान्वयके नाग-चन्द्र-चान्द्रायणदेवके शिष्य कणिकच्छगोण्डिदेव थे; उनकी पत्नी बोप्पवे, बच्चे काचवे, मल्लवे, मादवे, माचवे और बालचन्द्रदेव थे। कुछ सेट्टियोंने और भी कुछ भूमियाँ दीं। रोद हलोजके पुत्र वीरोजने यह शासन लिखा।]

[*EC, XII, Tiptur tl., n° 101*]

---

१ ऊपर जो १०७८ ई० काल दिया हुआ है, वह विनयादित्यके कालका है। उसके लड़के बल्लालदेवका (११०१–११०४ ई०) नहीं, और न भूलोकमल्ल (११२६–११३८ ई०) का।

२१९

तट्टेकेरे—संस्कृत तथा कन्नड़—भग्न

[शक १००१=१०७९ ई०]

[तट्टेकेरे (शिमोगा परगना)में, रामेश्वर मन्दिरके सामनेके पाषाणपर]

स्वस्ति सक-वर्ष १००१ नेय क्रोधन-संवत्सरद ज्येष्ठ-बहुल-चट्टि-बड्डवार शासन निन्दुदु

श्रीमत्-परम-गंभीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

नमो वीतरागाय स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय····तिळकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-देवर् कल्याणद-नेलवीडिनोळ् सुखदिं राज्यं गेय्युत्तमि....

जीयात् समस्त-ककुभान्तर-वर्त्ति-कीर्त्तिर्
इक्ष्वाकु-वंश-कुल-वारिधि-वर्द्धनेन्दुः ।
कैळाश-शैल-जिन-धर्म्म-सु-रक्षणार्त्थम्
भागीरथी-वि················तो द्वितीयः ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाधीश्वरेक्ष्वाकु-वंश-कुल-गगन-गभस्तिमालिनी पराक्रमाक्रान्त-कन्याकुब्जाधीश्वर-शिरो··············ळि-मुखो पार्त्थिव-पार्त्थः । समर-केलि-धनंजयो धनञ्जयः । तस्य वल्लभा गान्धारि-देवी तत्सुतो हरिश्चन्द्रः । रोहि·······दडिग-माधवापरनामधेयः । आ-गङ्गान्वयदरसुगळेल्लवेळ्ळोपाडिवद चन्द्रनन्तुदितोदितवागि पृल·······ज्यं गेय्युत्तिरे तदन्वयाम्बर-द्युमणियुं गङ्ग-चूडामणियुमेनिसिद भुज-बळ गंग-पेर्म्माडि··········

गुणि वेळ्वर्थि-जनक्कें दान-मणि दोर्-गर्व्वोद्धताध्मात-निर्-
ग्गण-वैरिप्रकरक्के बल्-कणि कळा-विन्यास-वारासि सत्-

प········वेष्टित-यशं विक्रान्त-तुङ्ग नृपा- ।
प्रणियादं कलि-गंग-देवन सुतं श्री-वर्म्म-भूपाळकम् ॥

कन्द ॥················व्वि वाहा- ।
परिवदिनरि-नृपरनलेट्टु सेलेयोळ् वोय्दुद्
व्वैरे वणिणसल्लेसेदं गं- । गर-भीमं लोकदोळ्गे भुज-बळ-....ग ॥

····ळियेनिसिद पेर्म्माडि-वर्म्म-देवङ्ग पाण्ड्य-कुळोद्भवेयेनिसिद गङ्ग-महा-देवियगं रत्नत्रयं पुट्टुवन्ते·······

वृ ॥ श्री-मारसिंग-नवनी-तळ-रक्ष-पाळम् ।
कामोपमं भगीरथान्वय-रत्न-दीपम् ।
भीम-प्रतापनहिता··················· ।
सामान्यनल्लनुदितोदितनेकवाक्यम् ॥

आतनण्णुमाप्पुं लोक-विख्यातमाद तदनन्तरदोळ् । स्वस्ति सत्य········वर्म्म-धर्म्म-महाराजाधिराज परमेश्वरं कुवळाल-पुर-वरेश्वरम् । नन्दगिरि-नाथं राज-मान्धातम् । पद्मावती-लब्ध-वर-प्र···········चक्रि-ळामोदन् । असती-सहोदरं वीर-वृकोदरम् । सम्यक्त्व-रत्नाकरं जिनपाद-शेखरम् । मद-गजेन्द्र-लाञ्छनम् चतुर-वि········ग-गङ्गेयं शौचाञ्जनेयं । गङ्ग-कुल-कमळ-मार्त्तण्डम् दुट्टर-गण्डम् । मनिय-गङ्गम् जयदुत्तरंगं । श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरम् त्रिभुवन-मल्ल-गङ्ग-पेर्म्माडि-देवर्गङ्गवाडि-तोम्भत्तरु-सासिरमं वाय्केळिसि तदाभ्यन्तरद मण्डलिसासिरमं श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-देवर् दये-गेय्ये निधिनिधानमोळगागि त्रि-भागाभ्यन्तर-सिद्धियिन्दे सुखदिं राज्यं गेय्युत्तिरे ।

कन्द ॥ श्रीगे नेलेयागि वचन- । श्रीगागरमागि निज-भुजार्जितविजय- ।

श्रीगरुहनागिकीर्त्ति- । श्रीगधिपतियागि सुखदिनिरे **गङ्ग-नृपं** ॥

वृ ॥ नुडिदुदे नन्नि माडिदुद्दे शासनं इत्तुदे रामरेखु मार्- ।
प्पिडिदुदे वज्र-लेपमुरदिर्द्दुदे मृत्यु परोपकारदोळ् ।
नडेदुदे बट्टे षड् गुणमे मेय्येने धर्म्मदोळोन्दि निन्नवोल् ।
नडेव नृपेन्द्रनावनखिळावनियोळ् **कलि-गङ्ग-भूपति** ॥
स्थिरने मेरु-गिरीन्द्रदोळ् सेणसुवं गंभीरने वार्द्धियोळ् ।
पुरुडिप्पं कलियें सुरेन्द्र-सुतनं मेच्चं महा-दानिये ।
सुर-भूजक्कोरेगट्टवं चदुरने पाञ्चाळर्नि मिक्कनेन्- ।
दिरदीगळ् धरे वण्णिकुं रण-जय-प्रोत्तुङ्गनं **गङ्गनम्** ॥

क ॥ अमळ-चरित्रं पुरुषो- । त्तमनेनिसिद **गङ्ग**-भूपनातन तम्मम् ।
विमळ-यशं **गोविन्दर्-** । नमोघ-वाक्यं कुमार-चूडा-रत्नम् ॥

अन्तिर्व्वरुं सुखदिं राज्यं गेय्युत्तिरे ।

क ॥ धर्म्मकार्म्मं दयेगे त- । वर्म्मने शिष्टेष्ट-कल्प-भूजं गोत्रा-
शर्म्मम् कुलोत्तमं पोलें- । यम्मनेनल् नल्-गुणके मच्चरसुण्टे ॥

आ-गुणोत्तमनेनिसिद **पोलेयम्मङ्ग** रमणी-रत्नमेनिसिद **केळेयब्बेगं** सु-पुत्रः कुळ-दीपक एनिसि **नोक्कय्यं** पुट्टि समर्त्थनागि **मण्डलिय केञ्च-गावुण्डन** मक्कळु **काळेयब्बेयुम्मल्लियब्बेयुमं** मदुवेयागि काळब्बे-गावितिगे **गुज्जणं** पुट्टि तन्देगे पदिर्म्मडियागि **पेर्म्माडि-गावुण्ड**नेम्ब पेसरं पडेदम् । मल्लियब्बे **जिनदास**नेम्ब मगनं पडेदळन्तिर्व्वरुम्मक्कळ् वेरसु नोक्कय्यं सुखदिनिर्प्पुदुं गङ्ग-पेर्म्माडि-देवर् **तट्टकेरे**गे विजयं गेय्दु समस्ताधिकारं मकुडे देवेन्द्रङ्गे बृहस्पतियन्तु बळीन्द्रङ्गे भार्ग्गवनेन्तन्ते समस्तराज्य-भर-निरूपितमहामात्य-पदवी-विराजमान-मानोन्नत-प्रभु-मन्त्रोत्साह-शक्ति-त्रय-सम्पन्नं सह[जम]हिमोत्पन्नम् । सुजन-जनाधारं बान्धव-प्राकारम् । पुरुष-रत्नाकरं

पर-बळ-भीकरन् । पति-कार्य्य-भार-वलनसहाय-विक्रमन् । उपार्ज्जिता-
चार्य्यन् अचलित-धैर्य्यन्···क्षात्र-समुद्रं लक्ष्मकार-मुख-मुद्रं । पतितो
द्धापन् जय-लक्ष्मी-निक्षेपन् । कोदण्ड-पार्थं सौजन्य-तीर्थन् । जिन-
पादाराधकन् । कलि-युग-साधकन् । गङ्गन हनुमन्तन् । जय-लक्ष्मी-
कान्तन् । श्रीमन्महाप्रधानन् । पिरिय-पेर्ग्गडे नोक्कय्यन् ।

वृ ॥ पार्त्थिवरं निराकरिप दान-गुणोक्तियिनर्त्थिगर्त्थमन् ।
प्रार्त्थिसदीव-कारणदे पेर्ग्गडे नोक्कगनी-परोपका-
रार्त्थमिदं शरीरमेनिपोन्दु पुराण-वचोक्तियिन्दमं
प्रार्त्थित-दानदिन्दे नेगळ्दुदनी सन्तुदिक्क-तळाग्रदोळ् ॥
नार्ग्गदोळोळ्पिनोळ् गुणदोळग्गलिनोळार्प्पिनोळळ्दुदोन्दु पेम्-
पार्ग्गनसाध्यमिन्तिरिव-काव-गुणङ्गळे साजमेन्दु केळ्-
दर्ग्गदळोण्डु केङ्करिसे राज-गुणक्कवटु नोक्कगन् ।
पेर्ग्गडेयेम्बुदे दुरक्के नार्ग्गडेयं पतियेक-सावनन् ॥

क ॥ पेर्ग्गडेतनमं वल्लर् । सुग्गल्लानननणनारियलळिदमालरु लोकं ।
पेर्ग्गडे-नोगन मनेयोळ् । मार्ग्गडे सेगरद मोनेयोळैने मेच्चदरार् ॥
किरिदरोळळ्वडद नतं । नेरे पिरिदक्कासे-गोय्व बुद्धियिनातन् ।
तेरे-विडिदु जोळदिन्दन । पेरेयन्ददे नोक्कनुत्तरोत्तरमादं ॥
अगळिसिद केरेगे नाडिसि-द गद्दे गोचिसिद देवता-गृहकरवण-
दोगम-दानदेडेगांजगदोळ् पवणिङ्डेने कृतार्त्थनो नोक्कम् ॥
सुरनिधि वळसिद्दुदेम्बन- । तिरलिदा-तट्टकेरेय पेर्गेरे सुचल् ।
पलिय नट्टुवनसैळ्द । दोरेयेनिसिद तेरदे बसदि सोगयिसि
तोर्कुम् ॥

पिरिय-मगं गुज्जणनन्- । तरायवागिळ्दनातनेय्दुगे सर्गम् ।
वरलिन्दु नोक्क-पेर्ग्गडे । हरिगेयलेत्तिसिदनेरडु जिन-मन्दिरम् ॥
तनगेपर-हितमे हितमेन् । दनुमानिसि नोक्कनोल्दु माडिसे
विश्वा-। वनियोळगे नेल्लवत्तिय-।

जिन-भवनं ऋभु-विमानमं पोलितर्कुम् ॥ आ-नेल्लवत्तिय तट्टेके-रेयेरडुं वसदियुमं जिनदासङ्गे परोक्ष-विनयमागे माडिसिद पेर्ग्गडे-नोक्कय्यन परोपकारार्त्थक्के वीरक्के वितरणक्के श्री-गंग-पेम्र्माडि-देवर् म्मेच्चिरु-गळे-गुडि-चामर-मेघाडम्बरादि-राज्य-चिह्नङ्गळ-नित्तदके तेल्लन्ति-येन्दु मोदलमूल-धन तट्टेकेरे कीळूरु अरेयूरु हेरिगे कडवूरु सीमोगे तरिकेरि हेन्न-बुरद-गावुण्ड-वृत्तियुमनिर्प्पत्तु-कुदुरेग-वश्नूरा-ळाळनित्तुर्गळ सिद्धायवनित्तु चन्द्रार्क-तारं-बरं सर्व्व-नमस्यमागे पनसवाडियं बिट्टनितु महा-महिमेयं ताळ्दिद पेर्ग्गडे-नोक्कय्यं मूल-संघद् काणूर्-गणद मेषपाषाण-गच्छद् श्री-प्रभाचन्द्र-सिद्धान्ति-गर गुड्डनागि नाल्कु वसदियं माडिसि तट्टेकेरेय वसदियं पूजिसुवरा-ग्रण्-गच्छदस्थान-पतिगळ्गे तम्म बळियल् तट्टेकेरेय केळगे गळदे गळेय मत्तरोन्दु ओळ-गेरेयल्लु बेळ्दले मत्तरोन्दु अल्लि परेकारर्ग्गे गळदे गुणिगण मत्तरु मूरु बेळ्दलेगळेय मत्तरोन्दु। कुम्बारर्ग्गे गळ्दे गुणिगन मत्तरोन्दु बेळ्दले गुणिगन मत्तरोन्दु तट्टेकेरेय अङ्गडिय तेरेयुं सुङ्कमं वसदिगे गंग-पेम्र्माडि-देवंबिट्ट यी-धर्म्ममं रक्षिसिदातं सासिर-कपिलेयं दानं गेय्दं किडिसिदं गङ्गेयोळ् सासिर-कपिलेयं तिन्दम् । सन्धि-विग्रहि दाम-राजं सासन-गब्बमं पेळ्दु बरेदं पोय्दं सान्तोजनु पन्नतुं मङ्गळ श्री ।

[(उक्त मितिको) यह शासन लिखा गया था। जिनशासनकी प्रशंसा। जिस समय त्रिभुवनमल्ल-देव कल्याणमें रहते हुए शान्तिसे राज्य कर रहे थे: एक धनञ्जय नामका राजा हुआ, जिसने अपने पराक्रमसे कान्यकुब्ज

अर्चानकर उसके राजाका सिर बाणोंसे छेद दिया। उसकी पत्नी गान्धारिदेवी और पुत्र हरिश्चन्द्र था। तदनन्तर दडिग-माधव इत्यादि जिस समय गंगवंशके राजा राज्य कर रहे थे, उसके वंशका सूर्य, गङ्ग-चूडामणि भुजबल-गंग-पेर्म्माडि······हुआ।

राजाके रूपमें प्रसिद्ध (अन्य प्रशंसाओं सहित) कलिंग-देवका पुत्र धर्म्मनृपालक था। भुजबल-गंग, गङ्ग-भीमकी प्रशंसा।

पेर्म्माडि-धर्म्मदेव और गंग-महादेवीसे मारसिंग नामका पुत्र उत्पन्न हुआ। (तीन पुत्र उत्पन्न हुए थे, लेकिन औरोंका नाम नहीं गिनाया है।)

तदनन्तर जब गङ्ग-पेर्म्माडि-देव शान्तिसे राज्य कर रहे थे: गङ्ग और कलि-गङ्ग राजाओंकी प्रशंसा। गंग-भूपालका छोटा भाई गोविन्दर था। जब ये दोनों शान्तिसे राज्य कर रहे थे—पोलेयम्म हुआ। उसकी पत्नी केलेयब्बे थी, उनका पुत्र नोक्कय्य था, जिसने नण्डलिके केञ्च-गावुण्डकी पुत्री कालेयब्बे और मल्लियब्बेसे विवाह किया। पहली स्त्रीसे गुज्जण नामका लड़का हुआ, जो 'पेर्म्माडि-गावुण्ड' रूपसे विख्यात हुआ। दूसरी स्त्रीसे जिनदास हुआ। जब नोक्कय्य इन दोनों पुत्रोंके साथ सुखसे रहता था, तब एक दिन गङ्ग-पेर्म्माडि-देवने बट्टेकेरे आकर समान राज्य-शासनका भार उसे सौंप दिया। उसने बट्टेकेरेमें एक जिनमन्दिर और एक विशाल तालाब खुदवाया। उसने और भी दो मन्दिर हरिगे और नेल्लवत्तिमें बनवाये। नेल्लवत्ति और बट्टेकेरेकी बसदियोंके लिये गङ्ग-पेर्म्माडिदेवने उसे दो भेरी, एक मण्डप, चामर, तथा बड़े-नगाड़े राज्यकी तरफसे दिये, तथा बदलेकी भेंटमें ८ गावोंकी गावुण्ड-वृत्ति, २० घोड़े, ५०० दास तथा पनसवाड़ी दी। वह प्रभाचन्द्र-सिद्धान्तीका शिष्य था तथा २ मन्दिर उसने और बनवाये।]

[EC, VII, Shimoga tl. n° 10]

२२०

सोमवार—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १००१=१०७९ ई०]

(देखो, जैन शिलालेखसंग्रह, प्रथम भाग)

[EC, V, Arkalgud tl., n° 99, t. and tr.]

२२१

इसूर—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न

[काल-निर्देश लुप्त, पर संभवतः लगभग १०८० ई० ?]

[इसूर (शिकारपुर परगना)में, कोटे रामेश्वर मन्दिरकी दीवालके पाषाणपर]

........धार्मिक-पुण्डरीक-पण्ड-मोदन-कराय गुणोत्तराय ।

संसार-सागर-निम........हस्तावळम्बनवते जिन-शासनाय ॥

आदि-ब्रह्मन्'''जिनं तावेनुत सासिर्व्वरु ब्रह्म-जिन-निळयकर्त्तरु ब्रह्म-जिना''''सरं मुददिम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महा''''राज परमेश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिळ........त्रिभुवनमल्ल-देवर वि........ प्रवर्द्धमानमा-चन्द्रार्क-तारं........अनवरत-परमकल्या...... लक्ष्मी-सम .....अनवरतं-वित्त........मुख-दर्पण..........भ्युदय-सूचन........मृदु-मधुर''':.............त्रिभुवनमल्ल.................'''संकथा वि'''' गेय्युत्तं बनवासि...........ळुत्तमिरलु........नियम-स्वाध्याय........ ....कुळ-तिळक''''.................सक शिष्ट.......... वळ-परा...............ळोन्नत.........मतद्...............महाप्र ....म-भट्टा.................शास्त्र-पारा............न्दान्वयद''''' परम............अपास्त................जैन-शा''''देवर........निज-कीर्त्ति''''नर मास.................दिगन्तर.............विणिय-ब••• ....समू..............पुर.........हत्तु गद्याणकयेन्दु.... ....वडगण.......विणिय-ब'''सेट्टि तन्न बसदिगे बिडिसिद गळ्दे गुणि........बडगण-जवळिय तन्न बसदिगे बिडिसिद'''गुणिगन मत्तळोन्दु रायि......गळ्दे गुणिगन मत्त'''ओन्दु मत्त विणिय'''

•••गुणिगन मत्तळेन्दु इन्तीनाल्कु मत्तलु गळ्दे देवर•••अङ्ग-भोगक्के प्रजारिगु••••आहारन्दानक्के जीर्णोद्वार•••कर्म्म••वेसक्के चिन्तीनाल्कु••••गळ्देय••••••सासिर्व्वरु-चन्द्रार्क्कस्थायिवरं•••(इसमेंशाके अन्तिम वाक्यावयव और श्लोक)

जाणनदेस् वरित्रि••••••••••इयु•••• ।
श्रीग••••••••••ओष्पि तोर्प्प गोरु- ।
व्वाण-यु••••••तर्क्कु नेगळ्दग्रहारदोळ् ।
वंगेय•••••••••••••••उत्सवोदयम् ॥
••••निर्म्मिसिदोन्द-कृत्रिम-जिनेन्द्रागारमं••• ।
••••सञ्जनित-पुण्यरु•••••••••••• ।
•••••••••तम-सद्धर्म्म न••••सन्देस•••••••• ।
•••••••••••मुखोदयं••••••••••••••• ॥

••••व्यानमागल्के•••राजान्वित•••••••••द्रागारमं माडि••••• माडल्के सासिर्व्वरु तम्म••••त्रं विणेय-वम्मि-सेट्टि माडिसिद•••••• दोण्डं वेक्कुवेन्दु कारुण्यं गेय्दु••••••इप्पत्तनाल्कु २४••••••जनसाळेयं••••••वडगलु सासिर्व्वर वेसदि समस्त••••••र्या-जिनालयङ्गळ वसङ्गळनारुन्दु पुरो-वृद्धिगे•••••••••••मंगळ महा श्री

[जिनशासनकी प्रशंसा। जब (चालुक्य पदों सहित), त्रिभुवनमल्लदेवका विजयराज्य चारों ओर प्रवर्द्धमान था और त्रिभुवनमल्ल•••••• वनवासेपर शासन कर रहा था,-विणेय वम्मि-सेट्टिने एक जिनालय बनवाकर उसे दान दिया और•••••अग्रहारके हजारों ब्राह्मणोंके लिये एक सत्र खोल दिया। (शिला-लेखका अधिकांश घिसा हुआ है)।]

[EC, VII, Shikarpur tl, n° 8.]

२२२

हरकेरे—कन्नड

[विना काल-निर्देशका, पर लगभग १०६० ई०]

[हरकेरे (शिमोगा परगना)में, रामेश्वर मन्दिरके रंग-मण्डपमें उत्तर-पश्चिम स्तम्भपर]

स्वस्ति श्रीमन्महा-मण्डलेश्वर भुज-बळ-गंग पेर्माडि-बर्म्मदेव मण्डलिय-ऽर्थद पट्टद-बसदिगे बिट्ट दत्ति (आगेकी दो पंक्तियोंमें दानकी चर्चा है) मत्तमातन-पट्टदरसि **गङ्ग-महादेवी** बिट्ट बृत्ति सूळेयबयलु । मत्तमातन मग **मारसिंग-देव** बिट्ट बृत्ति आर्द्दबळ्ळि । मत्तमातन बिट्ट तळ-बृत्ति बसदियाग्नेय कोणरेयिं मूडलु गद्देगळेय मत्तलोन्दु बेद्दलेगळेयं मत्तले-रडु । मत्तमातन तम्म **सत्य-गंग** बिट्ट बृत्ति सिरियूरु । मत्तमा-गद्देयिं तेङ्कलु बिट्ट तळ-बृत्ति गद्देगळेय मत्तलोन्दु बेद्दलेगळेय मत्तलेरडु । मत्तमातन तम्म **रक्कस-गंग हुलियकेरेय** गद्देयुमद्र सुत्तण बेद्दलेयम बिट्ट । मत्तं **हरकेरेय** सीमे-पर्य्यन्त बिट्ट गद्देगळेय मत्तलोन्दु बेद्दले-गळेय मत्तलेरडु । मत्तमातन तम्म **भुजबळ-गंग** हेग्गणलेय बिट्ट । **हर-केरिय** बृत्तिय केरेयोळगे बिट्ट गद्देगळेय मत्तलोन्दु । मत्तमाकेरेयिं हडुवण कोळद केळगे बिट्ट साल-केयिगळेय मत्तलोन्दु मत्तमा-कोळदिं बडगलु बिट्ट बेद्दलेगळेय मत्तलोन्दु । मत्तमातन मग **मारसिंग-देव नन्निय-गङ्ग-पेर्म्माडि** बसदिय मुन्दे बिट्ट गद्देगळेय मत्तलोन्दु । मत्तं बसदिय बडगण हेग्गेरेगे परिद काल-केळगे बिट्ट बेद्दलेगळेय मत्तलेरडुमदके सीमे मूडण कोळ हडुवलु मोरसर-कोळ । मत्तं बसदिय-हळ्ळिय सुंकमं बिट्ट । मत्तं तन्नाळ्वनाड्-ऊर्गोळोलु पद्मावति-देविगे काणिकेयं कोट्ट शर ५ मित पणमना-चन्द्रार्क्क-तारं-बरं ॥ मत्तं **वीर-गङ्गन**

पट्टके हिरियकेरेय केळगे बिट्ट गद्देगळेय मत्तलोन्दु (आगेकी ३ पंक्तियोंमें दानकी चर्चा है)

[महामण्डलेश्वर भुजवल-गंग पेर्म्माडि-बर्म्मदेवने मण्डलि-तीर्थकी पट्टद बसदिके लिये (उक्त) भूमिका दान किया और उसकी रानी गंग-महादेवी, उसका पुत्र मारसिंग-देव, उसका छोटा भाई सत्य (नन्नियं) गंग, उसका छोटा भाई रक्कस-गङ्ग, उसका छोटा भाई भुजवल-गंग, उसका पुत्र मारसिंग-देव नन्नियं-गङ्ग-पेर्म्माडि, इन सबने (उक्त) भूमि-दान किये ।

और अपनेद्वारा शासित नाड्के गाँवोंमें पद्मावती देवीको ५ पणका उपहार दिया । यह उपहार तबतकके लिये जारी रहेगा जबतक आकाशमें सूर्य, चन्द्रमा और तारे चमकते हैं ।]

[EC, VII, Shimoga tl. n° 6]

२२३

चिक्कहनसोगे—कन्नड

[बिना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग १०८० ई०]

[जिन-बस्तिमें, नवरङ्ग-मण्टपके दरवाजेके ऊपर]

श्री-कोण्डकुन्दान्वय देशिय-गण पुस्तक-गच्छद श्री-दिवाकरनन्दि-सिद्धान्त-देवर ज्येष्ठ-गुरुगळप्प (भट्टार) दामनन्दि-भट्टार सम्बन्दि ई-पनसोगेय चङ्गाळ्व-तीर्थदेल्ला वसदि-गळुमव्वेय वसदियुं तोरे-नाड ब्रेळिवनेय वसदियुं तत्समुदाय-मुख्यम्

[कोण्डकुन्दान्वय, देशि-गण तथा पुस्तक-गच्छके, दिवाकरनन्दि-सिद्धान्त-देवके ज्येष्ठ गुरु—दामनन्दि भट्टारक-के अधिकारमें इस पनसोगेके चङ्गाळ्व-तीर्थकी सारी बसदियाँ (मंदिर) हैं । अव्वेय बसदि तथा तोरेनाड्की बसदि भी उनके प्रधान शिष्य-गणके अधिकार-क्षेत्रमें हैं ।

आगेका शिलालेख ।

[हनसोगेमें, आदीश्वर-बस्तिके दाहिनी ओरके दरवाजेके ऊपर)

नोटः—यह लेख ऊपरके ही लेख-जैसा है । उसमें कुछ फेरफार नहीं है ।

[EC, IV, Yedatore tl. n° 23 and 27]

२२४

मद्दलापुर—कन्नड़-भग्न

[काल लुप्त,—पर संभवतः लगभग १०८० ई०]

[मद्दलापुर (मल्लिपट्टण परगना) में, गोणि वृक्षके नीचे एक पाषाणपर]

(सामने) स्वस्ति श्रीमनु····वर्य-नल्लरस········अरकेरेय वसदि माडिसु इदक्के····ल्वद्दु-गद्दे·········मण्णु अय्-गण्डुग पिरिय····दोळ्य्-गण्डुग-मण्णु विसवूर-मण्णु अय्-गण्डुग कोटेय मण्णु मू-गण्डुग इनितु वसदिगे सल्व-भूमि अदा-पदके अदटरादित्य अधिरत-पाण्ड्यय वेळ्तु ···············अरसर-काल्दोळ् श्रीम····मन्ले-ग····सिवय्य···· गुड्डेय···········मण्डळ कलाचन्द्र-सिद्धान्त-देव-भट्टारर शिष्यर···· अमळचन्द्र-भट्टारकर्गे········वसदिय माडि········सल्सिद्दु········ (इमेशाका अन्तिम श्लोक)।

सेनवोव दे················

[·······नल्लरसने अरकेरेकी वसदि बनाई। (उक्त) भूमिका दान उसके लिये किया। जो कोई इसे नष्ट करेगा, वह अदटरादित्यके क्रोधका पात्र होगा।

·······अरसके समयमें,·······रमण्डल कलाचन्द्र-सिद्धान्तदेव-भट्टारके शिष्य अमलचन्द्र-भट्टारकने इस वसदिको बनवाया। इमेशाका अन्तिम श्लोक। सेनवोव दे······]

[EC, V, Arkalgud tl. n° 102]

२२५

खजुराहो—संस्कृत

[सं० ११४२=१०८५ ई०]

[इस प्रतिमा-लेखके लेखका पता नहीं है, क्योंकि यह लेख एक खण्डित प्रतिमापरसे ए. कनिंघमने लिया है, जो कि प्रतिष्ठाकाल और प्रतिमाके सिवा और कुछ नहीं बताता। इस प्रतिमाकी प्रतिष्ठा या स्थापना

श्रेष्ठी श्री वीबतसाह और उसकी पत्नी सेठानी पद्मावतीने की थी। इस लेखके ऊपरसे ए. कनिंघमने फलितार्थ यह निकाला है कि प्राचीन बौद्ध मन्दिर ग्यारहवीं शताब्दिके जैनोंद्वारा अपने काममें लाया गया था। संभव है बौद्धमतकी हीनताके समय खजुराहामें जैनोंकी संख्या अधिक होनेसे उन्होंने उस प्राचीन बौद्ध मन्दिरको अपना बना लिया हो; या हो सकता है कि कनिंघमका यह अनुमान ही गलत हो कि गन्धरई-भग्नावशेष जैनोंका न होकर बौद्धोंका था। अस्तु, जो कुछ हो। इन खण्डित दि० जैन मूर्तियोंसे उस समय खजुराहोमें जैनधर्मकी प्रधानता द्योतित होती है।]

[A. Cunningham, Reports, II, p. 431, a.]

२२६

हुम्मच—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १००९=१०८७ ई०]

(उत्तरमुख)

स्वस्ति-श्री-लसदुग्र-वंश-तिलकः श्री-वीर-देवात्मजः
दृप्यद्-वैरि-निकाय-दर्प्प-दळन-प्रादुर्भवद्-विक्रमः।
सम्पूर्ण्णेन्दु-करावदात-सु-यशो-व्यालिप्त-दिग्-भित्तिकः
श्रीमान् विक्रमशान्तरो विजयते लक्ष्मी-वधू-वल्लभः॥
ओदेदु तट्तटेम्ब पद-ताटनेयिन्दे दिशा-गजादिगळ्।
मद्मुडुगिळ्दुवल्लि पुगुविर्प्पेडे गाणने नागराजनुम्।
कदळ्द गम्पदिन्दमेळे कम्पिसे कूडे कलङ्के सागरम्।
निंदिर्दलगिन्दे तारकि कळल् तरलोड्डुगनाईडोड्डुगुम्॥
अदिरदे वर्प्प वप्पारिय कप्परि पाईळगोत्ति शाळमम्।
विदिर्दु मरल् मरल्वेनुते कुत्तुव कुत्तिदोडान्तु कंड्डिदा-।
पददोळे द्रुत्ति मुत्तिदवोलेरने तोळव गेण विन्नणक्।
ओदवुव विन्नणं नेगळ्ळोड्डुग नीनरसङ्क-गाळनै॥

परिदुदराग्नियं मरेदु तिन्द पेणङ्गळिनादजीर्णदिम् ।
मरुळ वळाळि वैद्य-मरुळं वेसगोण्डडे दन्ति मद्देनल् ।
करियने नुङ्गि सूडुकोळे वैद्य-मरुळ् नगे वीर-लक्ष्मि नो-।
डरि-हर निन्निनार्प्पिदेने **विक्रम-शान्तरनादनोड्डुगम्** ॥

अन्तेनिसिद **विक्रम-शान्तर-देवर् स्स(श)क-वर्ष १००९ नेय प्रभव-संवत्सरद शुद्ध-पाडिवदन्दु** पञ्च-वसदिय पूजा-विधान-जीर्णोद्धरणकमल्लिर्प्प ऋषि-समुदायकाहार-दानार्त्थमुमागि ॥

सरसति निनगिनितु कला-।
परिणति नेगर्द्दजितसेन-पण्डितरिन्दम् ।
दोरेवेत्तु देवियादी-।
पिरियतनं निन्नदल्तिदवर महत्त्वम् ॥

एनिसिद परवादीभसिंहापर-नामधेय-श्रीमत् **अजितसेन-पण्डित-देवर** कालं कर्च्चि धारा-पूर्व्वकमा-सम्बन्धद समुदायं मुख्यमागे कोट्ट ग्रामङ्गळ् (यहाँ दानकी विस्तृत चर्चा तथा वे ही अन्तिम वाक्यावयव और श्लोक आते हैं) **द्रमिळ-गणो** लसतितरां निरुपम-धी-गुण-महितैः ॥

श्रीमत्-सेनबोवं शोभनय्यं दिगम्बर-दासि बरेदम् ॥

[स्वस्ति । वीर-देवके पुत्र विक्रम-शान्तरकी प्रशंसा । उसका मूल नाम ओड्डुग था । उसकी प्रशंसाके श्लोक । ओड्डुग 'विक्रम-शान्तर' हो गया ।

विक्रम-शान्तर-देवने (उक्त मितिको) पञ्चवसदिमें पूजाके लिये, मरम्मत तथा ऋषियोंके आहारके लिये, वादीभसिंह इस द्वितीय नामसे प्रसिद्ध अजितसेन-पण्डित-देवके पैरोंके प्रक्षालनपूर्वक (उक्त) गाँवोंका दान, संपूर्ण करोंसे मुक्ति दिलाकर, किया । वे ही अन्तिम श्लोक ।

द्रमिळ-गणकी अत्यन्त शोभा है । सेनबोव शोभनय्य दिगम्बर-दासिने इसे लिखा है ।]

[EC, VIII, Nagar tl., n°. 40 (Part II).]

२२७

कोणूर (जिला बेलगाँव)—कन्नड़

[विक्रमादित्य चालुक्यका १२ वां वर्ष=१०८७ ई०]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥

श्रीनारिप्रिये(य) कण्डु तन्न नयनद्वन्द्वाळकव्रातमं जैनाङ्घ्रिद्व(द्वि)नखाळियोळमधुकरव्रातं सरोजाळियं तानेंतिर्दुगे तन्दुदेन्दु बगेदळ्मुग्धत्वदिन्दा जिनं भूनाथेशवरेश मोक्षुनिधिगंगी गायुमं श्रीयुमं ॥

स्वस्ति श्री त्रैभुवनाश्रयं पृथुधराश्रीवल्लभं शूकरन्यस्तेद्ध्वजलाञ्छनं नुतमहाराजाधिराजं यशोविस्तारं परमेश्वरांकपरमं भट्टारकं शात्रवोन्मस्तन्यस्तपदाब्जनूर्जितयशं चालुक्यकण्ठीरवं ॥

सत्याश्रय-कुळतिळकं सन्य युधिष्ठिरननेकविद्यानिपुणं प्रत्यक्षविक्रमादित्यात्यंतयशोविळासि त्रिभुवनमल्लं ॥

तद्राज्यमुत्तरोत्तरवृद्धिप्रभुचन्द्रसूर्य्यरुळ्ळन्नेवरं भद्रं सल्वुत्तमिरे रिपुविद्रावणतत्प्रियात्मजं जयकर्ण्णं ॥

जयकर्ण्णावनिपाळभासुरलसल्लालाटिकं श्रीवधूनयनाळंकृतरूपनूर्जितयश:श्रीकामिनीवल्लभं जयकान्ताभुजदण्डनाहवगदादण्डं गुणोन्मण्डितं नयदिं कूंडिधराधिपत्यदोळिरल् चामण्डदंडाधिपं ॥

स्वस्ति समधिगतपंचमहास्तुत्यविराजमानशब्द महाश्रीविस्तारं पृथुविमळगुणस्तोमं मण्डळेश्वरं सेनन्नृपं ॥

वदनं निर्म्मळवाग्वधूसदनवात्मीयोरुवक्षं लसत्सदळंकाररमाविळासविळसल्लक्षं स्वदोर्द्दण्डवुन्मदवीरारिशिर:प्रकन्दुकहतिक्रीडोद्धदण्डं निजाम्युदयं सर्वजनानुरागदुदयं श्रीसेनभूपाळन ॥

इभपतियंतिरे दक्षिणशुभदोर्घत्करविळासि भासुरतेजं सुभटमदकरट-विघटनविभवं **चामण्डरायनि**रे निज सभेयोळ् ॥

शुभमति योगंधरनवोलभयप्रदनय्यणय्यनार्जितसुयशोविभवं निजसभे-योळिरलप्रमुमन्त्रोत्साहशक्तिगुणसंपन्नं ॥ दुष्टोग्रविनिग्रहदिं शिष्टप्रतिपाळ-नदि निळेयनाळुत्तुं शिष्टप्रदम्नत्युत्कृष्टदे राज्यंगेयुत्तमिरे **सेननृपं** ॥

श्रीरमणीभासि **बळत्कारगणाम्भोधिक्कोण्डनूरोळ्** निधिगं भूरमणी-मकुटाळंकारदि नेसेदोप्पि तोर्प्प जिनमन्दिरमं ॥ एसेदिरे माडिसि वृत्तियन सदळमेनलोसेदु विडिसुतं निधिगं पेंर्त्रिसिदनदेन्तेन्दडे निजलसदाचार्य्यान्वयोद्भवप्रक्रममं ॥

श्रीलीलोभनयाक्षि निर्म्मळदयादेहं गुणोन्मल्लिकामाळाकुन्तळभासि भासुरतरश्रीजैनधर्मोद्भवं त्रैळोक्योदरवर्त्तिकीर्त्तिविळसत्स्याद्वादनामांकितं भूलोकक्के निरन्तरं सोगयिकुं **श्रीमूलसंघान्वयं** ॥

जिनसमयमेम्ब सरसिज वनदोळगल्र्दोप्पि तोर्प्प हेमाम्बुजदन्तनुप-ममेने करमेसेवुदवनियोळ् सद्गुणगणं **बळात्कारगणं** ॥

वारिधिवेष्टिताखिळधरानळशोभितकीर्त्तितद्बळात्कारगणाम्बुजाकरवना-न्तरदल्लि मराळलीलेयिं चारुचरित्रमार्ग्गद जिनेशमुनीश्वरद्बुद्धपापहर्म्मा-रमदेभकुंभविलुठोत्कटशूररनेकरोप्पिदर् ॥

उदयगिरीन्द्रदोळेसेवग्युदितोदयवागि वळेप चन्द्रन तेरदन्तुदियिसिदं कुवळयकम्युदयकरं तद्गणाद्रियोळ्गणचन्द्रं । पक्षोपवासि देवनघक्षय-तन्मुनिपदाब्जमधुकरशीळं रक्षितगुणगणनिळयमुमुक्षुजनानंदियप्प **नयनन्दिबुधं** ॥

आ **नयनन्दिय** शिष्यं नानाविद्याविळासनूर्ज्जिततेजं श्रीनारीनाय-नवोळ् भूतुतना **श्रीधरार्य्य**यतिपतितिळकं । तन्मुनिपदाब्जमधुकरनुन्म-

दलिप्याकथाविमथनं मुनिपं सन्मार्गि चन्द्रकीर्ति वियन्मार्गद चन्द्रनन्ते कुवलयपूज्यं ॥

अतिचतुरकविचकोरप्रतति दरस्मेरनयनमींटिदपुद्दु दंवित कर्ण्ण-चंचुपुटदि श्रुतिकीर्तिमुनीन्द्रचन्द्रवाक्चन्द्रिकेय ॥

श्रीधरदेवं ब्रुयशःश्रीधरनविगतसमस्तजिनपतितत्व श्रीवरनेसेदं सद्दाक्श्रीवरना चन्द्रकीर्तिदेवन तनयं ॥

आ मुनिमुख्यन शिष्यं श्रीमच्चारित्रचक्रि बुजनविळासं भूमिपकिरीट-ताडितकोमळनखरश्मि नेमिचन्द्रमुनीन्द्रं ॥

श्रीवरवनजद सिरियं साविपेनेम्वन्तिरेसेव मधुपन तेरनं श्रीधरपद-सरसिजदोळ् साविप बोल्सेदु वासुपूज्यं पोल्तं ॥

त्रैविद्यास्पदवासुपूज्यमुनिपं स्याद्वादविद्यावचःप्रावीण्यप्रतिभासि-नोडनुडियल्-भव्याळिगाप्युद्भवं नोवाप्तु प्रतिवादिगळ्गे पिरिदुं भ्रान्ताप्तु मिथ्यामदोद्ध्रीवर्गेन्तु निजैकवाक्यदिननेकान्तत्वमं तोरिदं ॥

श्रीवाणीवदनांबुजातरसमं नलकिर्रि पीव्दुं लावण्यांगितपःप्रकृष्टवधुवं व्यालिंगनंगेय्वुतुं जीवानन्ददयावधूवदनमं कूर्त्तीर्तियिं नोडुतुं त्रैविद्यास्य-दवासुपूज्यमुनिपं तानिप्पनी धात्रियोळ् ॥

वृंहितपरमतमदकरिसिंहं त्रैविद्यवासुपूज्यानुजनुद्दाहम् संहरनेसेदं संहृतकामं यशस्विमलधारिबुधं ॥

अतिचतुरकविकदम्बकनुतपद्मप्रभमुनीश राद्धान्तेशं श्रुतकीर्तिप्रियनेसेदं यतिपत्रैविद्यवासुपूज्यतनूजं ॥

श्रीरत्नणीभासि वळात्कारगणाम्भोजमधुपरिरितिरे सततं चारुतरं हिल्लेयरवतारं तद्गणसरोजगुणद बोल्सेयुं ॥

तत्कुल राजान्वयदोळ् सत्कविराज-प्रियावलोकनलीलोद्यत्कनका-म्बुजदन्ते वृहत् किरणं **सोरिगांक**विभु धरेगेसेदं ॥

तत्सुत रमळिनसकळजनोत्सवकर रुचिवचनरचनाळापमौत्सर्य्यप्रभुसु-भटमरुत्सुतरा वळुकळुगामण्डवुधर् ॥ श्रीयुगे भवतियन्ता भूविदितमे-नल्केमानकांगियनन्ता श्रीविभु**कलिदेवं** वलदेवानुजनेम्व कीर्त्तिगास्पद-नादं ॥ अळिकुळकुन्तळे कुवळयदळलोचने चक्रवाककुचे कनकलतो-ज्ज्वळमध्ये कनकिगामण्डल सत्तत्प्रभुमनोजसति रतियन्नळ् ॥

वरचूतद्रुमवेषनोज्ज्वळलतापुष्पांकुरोत्पत्तियन्तिरे तदपंतिगळिगे पुट्टि-दसुरुश्रीजैनधर्मोत्सवं वरभव्याळिमनोनुरागविळसद्याशीर्व्वचोविस्तरं पर-मानंदयशोधिकं निधियमं सत्पात्रदानोद्यमं ॥

श्रीधरदेवपदाब्जश्रीधरनादोळिपनिं हृदब्जदोळीतं श्रीवरनादं नि-धिगं साधितगुरुचरणनप्पवं पडेयुदुदें ॥ तत्पुत्रर् श्रीरमणीकनत्कनक-कुण्डळ रावनिताविळाससस्मेरकटाक्षवीक्षणपरर्प्पुरुषोत्तम मरुद्धकीर्त्तिगळ् श्रीरम वासुपूज्यमुनिपादपयोरुहभृंगरोप्पुवर्चारुगुणाकरागि **कलिदेव**ल-सद्गल देवरीर्व्वरुं ॥

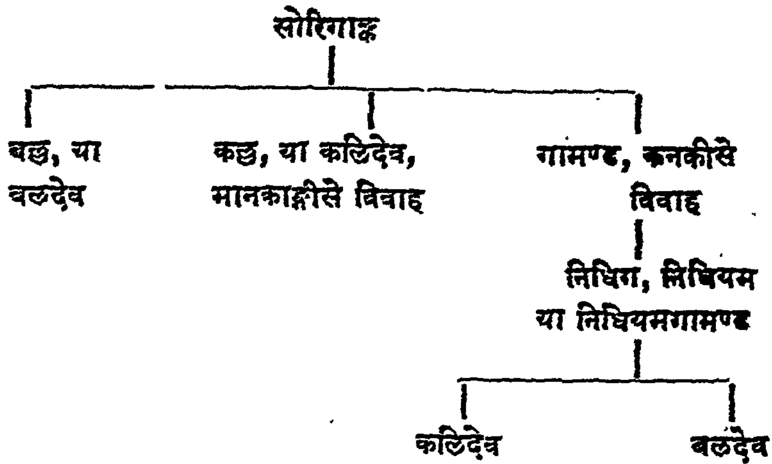
स्वस्ति श्रीमच्चाळुक्यविक्रमकालद १२ नेय प्रभवसंवत्सरद पौषकृष्णचतुर्दशीवड्डवारदुत्तरायणसंक्रान्तियन्दु श्रीमन्महाप्रभु **निधि-यमगामण्डं** तन्न मान्यदोळगे हिंडादिय होलदोळ् सर्व्वबाधापरिहारवागि कूण्डिय कोललिम्मत्तर्क्केय्युमं पन्नेरडु मनेयु मनोन्दु गाणमुमोन्दु तोण्टमुमं तळवृत्तियागि माडि कोट्टना देवसं श्रीमन्महाप्रधा·········ण·········णेयिं·········तज्जिनालयवन्दनार्थं वन्दु श्रीमन्महामण्डळेश्वर·········**कन्नरपं** देवरंगभोगरंगभोगक्कं खण्डस्फटितजीर्णोद्धारक्कं तन्न **सीवट-**दोळगण त·········वणनागि माडि·········**श्रीधर-पंडितदेवर** श्रीपा-

दप्रक्षालनं माडि·······पाळिसुत्तं तत्काळद् ४६ नेय प्रवसंव-त्सरद् पौषशुक्लत्रयोदशी······दु·······श्रीमद्विक्रमचक्रिय प्रिया-त्मजं जयकर्ण्ण······वसदिय भोगक्कं रि [पिजना] हार] कं···· विगो······प्प करंजगोड्डरद·······यसाम्य······रडु गद्यान········ + + +······[श्री] मद्वासुपूज्य [मुनि] देवर पा (दप्रक्षा-ळन)म(मं) मा(डि)·······धर्म्मरक्षणा (फ)ळं·······[गंगप्र]-यागाकु-[रुक्षेत्र]·······दान्त महा (?) (र) कित्त फळंगळं पडगुम् [॥] तद्धर्म्म तत्तीर्थंगाघातकं श्रीमूलसंघद्रगुणाव्वोगगुणोजनि-वाळक्कारगणं वसदिय स्तंभस्थापनेयन्दु निधियमगामण्डं सर्व्वबाधापरि-हारवागि कोट्ट················केय्य मने १ कूण्डिय कोल ·कम्म० १५० [॥]

[इस शिलालेखके प्रथम अंशका ऐतिहासिक भाग चालुक्य राजा त्रिभुवनमल्ल या विक्रमादित्य द्वितीयके वर्णनसे शुरू होता है, और दूसरा नाम उसके पुत्र जयकर्ण्णका दिया है। फिर लेखमें जयकर्णके अधीनस्थ दो शासकोंका उल्लेख आता है,—

दण्डाधिप (सेनापति) चामण्ड, जो कुण्डी देशका शासक था, और मण्डलेश्वर सेन, जिसका शासन-क्षेत्र नहीं दिया हुआ है।

यह सेन संभवतः रट्टोंकी सूचीमेंका द्वितीय नाम है। तत्पश्चात् बला-त्कारगणके व्यक्तियोंकी गणना आती है। ये कोरके उच्च-गुरु थे। बादमें 'हिलेयर' खान्दानका परिचय, जिसके घरके लोग सेनके राज्यकालमें गाँवके चौकीदार थे। हिलेयरको तो बलात्कारगणका ही बतलाया गया है, पर सोरिगाङ्कके विषयमें कुछ नहीं बतलाया गया। इस खान्दानके लोगोंके ये नाम दिये गये हैं:—



प्रथम दान निधियमगामण्डने अपने बनाये हुए कोण्डनूरके मन्दिरको शक वर्ष १००९ (१०८७-८ ई०) में, जो कि प्रभव संवत्सर था, किया था। उसी समय एक दान कन्न नामको धारण करनेवाले दूसरे राजाने, जो इसी मन्दिरके दर्शन करनेके लिये आया था, दिया था। दूसरा दान शक सं. १०४३ (११२१-२ ई०) प्लवसंवत्सरमें, सम्राट् विक्रमके प्रिय पुत्र जयकर्णने अपने पिताके राज्यमें किया था। तीसरा दान निधियमगामण्ड-का ही है। इस दानमें उसने कुण्डी-वृत्तमें एक मकान और १५० 'कम्म' भूमि दी थी।]

[JB, X, p. 179–181; p. 287–292, t.; p. 293–298, tr; ins. n° 8, (*1st part*).]

२२८

दुबकुण्ड—संस्कृत

सं० ११४५=१०८८ ई०

[दुबकुण्ड ग्राममें स्थित जिनमन्दिरका शासनपत्र ।]

पं. १ ओं ॥ [ओं] न [मो] वीतरागाय ॥ आ --द्र[ि] ट- ⏑ ⏑ टना- [चत्पा] दपीठं लुठन्मं[दा]रस्रगमं[द]गुंज[द] लि[म]न्निष्ठ्यूत सांराविणम् । [त]-

२ [त्पा] ˚ ⌄ ⌄वद्द[च]: ⌄सु---⌄[तां]तं⌄ – द्वि[ग]-
मित्राकरोत्स ऋषभस्वामी श्रिये स्तात्सता[म्]॥वि (वि) श्रा-
३ [णो] गुण[सं]ह[तिं] हततमस्तापो निजज्योतिषा [यु] क्ता-
त्मापि जगंति संगतजय [श्रं]क्रे सरागाणि यः । उन्माचन्म-
४ कर[व्व]जोर्जितगजग्रासोल्लसत्केसरी संसारोग्रगदच्छिदेस्तु
स मम श्री सां(शां)तिनाथो जिनः ॥ जा[ड्यं]सखदखंडित-
५ क्षयमपि क्षीणाखिलोपक्ष[यं]नाक्षादीक्षितमक्षिभिर्दधदपि प्रौढं
कलंकं तया । चिह्नत्वाद्यदुपांतमाप्य सततं [जात]-
६ [स्तया:]नंदकृच्चंद्रः सर्व्वजनस्य पातु विपदश्चंद्रप्रभोर्हन्स
नः ॥ सो(शो)कानोकहसंकुले रतितृणश्रेणि प्रणश्य [क्रम]-
७ - - [त्मा]व्वगणूगसुद्दनमहामिथ्यात्ववातघ्वनि । यो
रागादिमृगोपघातकृनवीर्य्यानाग्निना भस्मसाद्भावं कर्म्म-
८ वनं निनाय जयतात्सोयं जिनः सन्मतिः ॥ प्रसाधितार्थ-
गुर्भव्यपंकजाकर[भा]स्करः । ध्वंतस्तमोपहो वोस्तु गो-
९ तमो मुनिसत्तमः ॥ श्रीमज्जिनाधिपतिसद्वदनारविंदमुद्गच्छ-
दच्छतरवो(वो)वसन्नृद्धगंधम् । अध्यास्य या जगति पं-
कजवासिनी-
१० ति ख्या[तिं]जगाम जयतु श्रु[श्रु]त देवता सा ॥ आसीत्क-
च्छपघातवंशतिलकस्त्रैलोक्यनिर्यद्यशःपांडुश्रीयुवराजसूनुर-
११ समयद्भीमसेनानुगः । श्रीमा[न]र्जुनभूपतिः पतिरपाम-
प्याप यत्तुल्यतां नो गांभीर्यगुणेन निर्जितजग[द्ध]न्वी धनु-
१२ र्व्विद्यया ॥ श्रीविद्याधरदेवकार्यनिरतः श्रीराज्यपालं
हठात्कंठास्थिच्छिदनेकबाणनिवहैर्हत्वा महत्याहवे ।

१३ [डिंडीरा]वलिचंद्रमंडल[मि]लन्मुक्ताकलापोज्ज्व(ज्ज्व)लैस्त्रैलोक्यं सकलं यशोभिरचलैर्योजस्त्रमापूरयत् ॥ यस्य

१४ प्रस्थानकालोत्थितजलधिरवाकारवादित्रशब्दा(ब्दा)वेगान्नि-र्गच्छदद्रिप्रतिमगजघटाकोटिघंटारवाश्च । संस-

१५ र्पन्तः समंतादहमहमिकया पूरयंतो विरेमुर्नो रोदोरंध्रभागं गिरिविवरगुरूद्यत्प्रतिध्वानमिश्राः ॥ दिक्च-

१६ क्राक्रमयो [ग्य] मार्ग्गणगणाधारानेकान् गुणानच्छिन्ना-ननिशं दधद्विधुकलासंस्पर्द्धमानद्युतीन् । [सू] नु-

१७ [श्छि]न्नधनुर्ग्गुणं विजयिनोप्याजौ विजित्यो [र्जि] तं जातोस्मादभिमन्युरन्यनृपतीनामन्यमानस्तृणम् ॥ यस्या-त्य [द्भुत]-

१८ वाहवाहनमहाशस्त्रप्रयोगादिषु प्रावीण्यं प्रविकत्थितं पृथु-मतिश्रीभोजपृथ्वीभुजा । च्छत्रालोकनमात्रजात-

१९ भयतो दत्तारिभंगप्रदस्यास्य स्याद्गुणवर्ण्णने त्रिभुव[ने] को लब्ध(ब्ध)वर्ण्णः प्रभुः ॥ तुरगखरखुराग्रोत्खात-[धात्री]-

२० समुत्थं स्थगयदहिमरस्से(श्मे)मंडलं, यत्प्रयाणे । प्रचुरतर-रजोन्याशेषतेजस्वितेजोहृतिमचिरत

२१ एवा[शं]सतीवानिवारम् ॥ शरदमृतमयूखप्रेंखदंशु-प्रकाशप्रसरदमितकीर्त्तिव्याप्तदिक्चक्रवालः । अजनि विजय-

२२ पालः श्रीमतोस्मान्महीशः शमितसकलधात्रीमंडलक्लेशलेस (शः) ॥ भयं यच्छत्रूणां त्रिदशतरुणीवीक्षितरणे

२३ क्रमेणाशेषाणां व्यतरदसदप्यात्मनि सदा । सतोप्यंशन्ना-
दादव-[नि]वलयस्याधिकमतो वु(बु)धानामाश्चर्यं व्यत-
नुत

२४ नरेंद्रो हृदि च यः ॥ तस्माद्विक्र[म]कारिविक्रमभर-
प्रारंभनिर्भेदितप्रोत्तुंगाखिलवैरिवारणघटोद्यन्मां[स]कुंभ-

२५ स्थलः । श्रीमान्विक्रमसिंहभूपतिरभूदन्वर्थनामा समं
सर्व्वासा(शा)प्रसरद्विभासुरयशःस्फारस्फुरत्केसरः ॥

२६ वा(बा) लस्यापि विलोक्य यस्य परिघाकारं भुजं दक्षिणं
क्षीणाशेषपराश्रयस्थितिधिया वीरश्रिया संश्रितम् । सर्वांगेष्व-

२७ वगूहनाग्रहमहंकारादहंपूर्व्विका राज्यश्रीरक्[ता]धिगस्य
विमुखी सर्व्वान्यपुंवर्गतः ॥ अत्यंतोद्भूतविद्विट्तिमि-

२८ रभरभिदि च्छादिनानी[ति]ताराचक्रे विश्वक् प्रकाशं सकल-
जगदमंदावकाशं दधाने । निःपर्यायं दिगास्यप्रसरदुरु-

२९ क[राक्रां]तधात्रीधरेंद्रे यस्मिन् राजांसु(शु)मालिन्यहह सति
वृथैवैषकोन्योंशुमाली ॥ यद्दिग्जयेवरतुरंगखुराग्रसं-

३० गक्षुण्णावनीवलयजन्यरजोभिसर्प्पत् । विद्वेषिणां पुरवरेषु
तिरोहितान्यवस्तूत्करं प्रलयकालमिवादिदे-

३१ श ॥ तस्य क्षितीश्वरवरस्य पुरं समस्ति विस्तीर्ण्णशोभम-
भितोपि चडोभसंज्ञम् । प्राप्तेप्सितक्रयसमग्रदिगागतांगि-

३२ व्यावर्ण्यमानविपणिव्यवहारसारम् ॥ ० ॥ आसीज्जायस-
पूर्व्विनिर्ग्गतवणिग्वंशांव(ब)रांशुमान् जासूकः प्रक-
[टाक्षता]-

३३ र्थनिकरः श्रेष्ठी[1] प्रभाधिष्ठितः । सम्यग्दृष्टिरभीष्टजैन[च] रणद्वंद्वार्चने यो ददौ पात्रौघाय[चतु]र्व्विधं[त्रि]विबु(बु)-
३४ धो दानं श्रुतः श्रद्धया । श्रीमज्जिने[श्वर]पदांबु(बु)रुह-द्विरेफो विस्फारकीर्त्ति[ध]वलीकृतदिग्विभागः । पुत्रोस्य वैभवपदं
३५ जयदेवनामा सीमायमानचरितोजनि सज्जनानाम्॥ रूपेण सी(शी)लेन कुलेन सर्व्वस्त्रीणां गुणैरप्यपरैः
३६ शिरस्सु । पदं दधानास्य व(ब)भूव भार्या यशोमतीति प्रथिता पृथिव्याम् ॥ तस्यामजीजनदसावृपिदाहडाख्यौ पुत्रौ प-
३७ वित्रवसुराजितचारुमूर्त्ती । प्राच्यामिवार्कस(श)शिनौ समयः समस्तसंपत्प्रसाधकजनव्यवहार हे[तू] ॥ प्रोन्माद्यत्सकला-
३८ रिकुंजरशिरोनिर्द्दारणोद्यद्यशोमुक्ताभूषितभूरभूरपि भियान्नो-न्मार्ग्गगामी च यः । सोदाद्विक्रमसिंहभूप-
३९ तिरतिप्रीतो यकाभ्यां युगश्रेष्ठः श्रेष्ठिपदं पुरेत्र परम[2]प्राकार-सौधापणे ॥ ० ॥ आसीद्विशुद्धतरवो(बो)धचरित्रदृ-
४० ष्टिनिःशेपशू(सू)रिनतमस्तकधारि[ता]ज्ञः । श्रीलाटवागट-गणोन्नतरोहणाद्रिमाणिक्यभूतचरितो गुरुदेवसे-
४१ नः ॥ सिद्धांतो द्विविधोप्यवाधितधिया येन प्रमाणध्व[नि] ग्रंथेषु प्रभवः श्रियामवगतो हस्तस्थमुक्तोपमः ।
४२ जातः श्रीकुलभूषणोखिलवियद्वासोगणग्रामणीः सम्यग्द-र्शनशुद्धवो(बो)धचरणालंकारधारी ततः ॥ रत्नत्रया[भ]रण-

---

1 शायद 'श्रेष्ठिप्रभा०' में परिवर्तित । २ 'परमप्राकार०' पढ़ो ।

४३ धारणजातशोभस्तस्मादजायत स दुर्लभसेनसूरिः। सर्व्वं
श्रुतं समधिगम्य सहैव सम्यगात्मस्वरूपनिरतो भवदिद्ध-
४४ [वी]र्यः ॥ आस्थानाधिपतौ वु(बु)धा[दवि]गुणे श्रीभोज-
देवे नृपे सभ्येष्वंव(ब)रसेनपंडितशिरोरत्नादिषूद्यन्मदान्।
येने-
४५ कान् शतशो व्यजेष्ट पटुतामीष्टोवमो वादिनः शास्त्रांभोनि-
धिपारगोभवदतः श्रीशांतिषेणो गुरुः ॥ गुरुचर-
४६ णसरोजाराधनावाप्तपुण्यप्रभवदमलवु(बु)द्धिः शुद्धरत्न-
त्रयोस्मात्। अजनि विजयकीर्त्तिः सूक्तरत्नाव-
४७ कीर्ण्णां ज[लधि]भुवमिवैतां यः प्रस(श)स्तिं व्यधत्त ॥
तस्मादवाप्य परमागमसारभूतं धर्मोपदेशमधिकाधिगत-
४८ प्रवो(बो)धाः। लक्ष्म्याश्च वं (वं)धुसुहृदां च समागमस्य
मत्वायुषश्च वपुषश्च विनश्वरत्वं ॥ प्रारब्धा (ब्धा) धर्मकां-
तारविदाहः
४९ साधु दाहडः। सद्विवेकश्च[कू]केकः सूर्पटः सुकृते पटुः ॥
तथा देवधरः शुद्धः धर्मकर्मधुरंधरः। चं[द्रा]लिखि-
५० तनाकश्च महीचंद्रः शुभार्जनात् ॥ गुणिनः क्षणनाशि-
श्रीकलादानविचक्षणाः। अन्येपि श्रावकाः केचिद-
५१ कृतं[धन]पावकाः ॥ किं च लक्ष्मणसंज्ञोभूद हरदेवस्य
मातुलः। गोष्ठिको जिनभक्तश्च सर्व्वशास्त्र-
५२ विचक्षणः ॥ शृंगाग्रोल्लिखितांव(ब)रं वरसुधासांद्रद्रवापां-
डुरं सार्यं श्रीजिनमन्दिरं त्रिजगदानंदप्रदं सुं-

५३ दरम् । संभूयेदमकारयन्गुरुशिरःसंचारिकेत्वंव(ब)रप्रांतेनोच्छलतेव वायुविहतेर्धामादिश[त्पश्य-]

५४ ताम् ॥ ० ॥ अथैतस्य जिनेश्वरमंदिरस्य निष्पादनपूंजनसंस्काराय कालान्तरस्फुटितत्रुटितप्रतीका-

५५ रार्थं च महाराजाधिराजश्रीविक्रमसिंहः स्वपुण्यरासे(शे)रप्रतिहतप्रसरं परमोपचयं चेतसि [नि] धाय

५६ गोणीं प्रति विंशोपकं गोधूमगोणीचतुष्टयवापयोग्यक्षेत्रं च महा[चक्र]ग्रामभूमौ रजकद्रहपू-

५७ र्व्वदिग्भागवाटिकां वापीसमन्वितां । प्रदीपमुनिजनशरीराभ्यंजनार्थं करघटिकाद्वयं च दत्तवान् । तच्चाचं-

५८ द्रार्कं महाराजाधिराजश्रीविक्रमसिंहोपरोधेन । "व (ब) हुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य य-

५९ स्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फल"मिति स्मृतिवचनान्निजमपि श्रेयः प्रयोजनं मन्यमानैः सकलैरपि

६० भाविभिर्भूमिपालैः प्रतिपालनीयमिति ॥ ० ॥ लिलेखोदयराजो यां प्रस(श)स्तिं शुद्धधीरिमाम् । उत्कीर्ण्णवा-

६१ न् शिलाकूटस्तील्हणस्तां सदक्षराम् ॥ संवत् ११४५ भाद्रपदसुदि ३ सोमदिने ॥ मङ्गलं महाश्रीः ॥

[यह शिलालेख सन् १८६६ में कप्तान डब्ल्यू. आर. मैलविलीको दुबकुण्डके एक मन्दिरके भग्नावशेषमें मिला था। इस लेखमें कुल ६१ पंक्तियाँ हैं। ५४-६१ की पंक्तियोंको छोड़कर शेष लेख श्लोकोंमें हैं। इसको प्रशस्ति (पंक्तियाँ ४७ और ६०) कहा है। इसको विजयकीर्ति (पं. ४६) ने बनाया, उदयराजने (पं. ६०) लिखा और उत्कीर्ण करनेवाला

शिल्पी तिल्हण (पं. ६१) था । इस सारे लेखमें 'व' 'ब' अक्षरसे लिखा गया है ।

इस लेखका उद्देश्य एक जैनमन्दिरकी—जिसके कि पास यह शिलालेख मिला है—स्थापनाका उल्लेख करना है। इसकी स्थापना कुछ निजी आदमियोंने की थी और इस मन्दिरको कुछ दान महाराजाधिराज विक्रमसिंह (पं. ५४–५८) ने दिया था। इस शिलालेखके लिखनेके समय, विक्रम सं. ११४५ में, वे दुबकुण्डके आसपासके प्रदेशपर शासन करते थे। इस लेखके स्पष्टतः दो विभाग हो जाते हैं: पहले विभागमें (पंक्तियाँ १०–३२) युवराज विक्रमसिंह और उनके पूर्वजोंका वर्णन है; दूसरे में (पंक्तियाँ ३२–५१) मन्दिरके संस्थापकों (या प्रतिष्ठापकों) तथा उनसे सम्बद्ध कुछ मुनियोंका वर्णन है। प्रारम्भके छह श्लोकों (पं. १–१०) में कवि ऋषभस्वामी, शान्तिनाथ, चन्द्रप्रभ और महावीर इन तीर्थंङ्करोंकी, तथा गणधर गौतम, श्रुतदेवताकी जो पंकजवासिनीके नामसे जगत्में प्रसिद्ध है, स्तुति करते हैं।

युवराज विक्रमसिंहके वर्णन (पं. १०–३२) में ऐतिहासिक तथ्य इस प्रकार है:—

कच्छपघात (कछवाहा) वंशमें—

१ पांडु श्रीयुवराज (?) हुए। उनके बाद उनके लड़के—

२ अर्जुन हुए, जिन्होंने विद्याधरदेवके कार्यसे, युद्धमें राज्यपालको मारा। उनके पुत्र—

३ अभिमन्यु हुए, जिनके पराक्रमकी प्रशंसा राजा भोजने की थी। उनके पुत्र—

४ विजयपाल हुए; और फिर उनके पुत्र—

५ विक्रमसिंह हुए, जिनके कालकी तिथि यह शिलालेख संवत् ११४५ भाद्रपद सुदि ३ सोमवार बतलाता है।

दूसरे विभागके लेखका सार यह है कि विक्रमसिंहके नगरका नाम चंदोभा था। यह चंदोभा वर्तमान दुबकुण्ड ही होना चाहिये और उस समय यह एक बड़ा भारी व्यापारका केन्द्र रहा होगा। ३२–३९ की पंक्तियोंके श्लोकोंमें उस समयके दो प्रसिद्ध जैन व्यापारियोंका नाम—ऋषि और दाहड

दिया हुआ है। विक्रमसिंहने उनको 'श्रेष्ठि' की पदवी दी थी और इन्हींमें से एक—साधु दाहड़-मन्दिरके संस्थापकोंमेंसे हैं। ऋषि और दाहड़ दोनों ही जयदेव और उसकी पत्नी यशोमतीके पुत्र, तथा श्रेष्ठी जासूकके नाती थे। जासूक जायसवाल वंशके थे जो 'जायस' (एक शहर) से निकला था।

३९-४५ की पंक्तियोंमें कुछ जैन मुनियोंका वर्णन है। उनमेंसे अन्तिम विजयकीर्ति थे। उन्होंने न केवल इस शिलालेखका लेख ही तैयार किया था, बल्कि अपने धार्मिक उपदेशसे लोगोंको इस मन्दिरके निर्माणके लिये भी, जिसका कि यह शिलालेख है, प्रेरणा की थी। उल्लेखित मुनियोंमेंसे सर्वप्रथम गुरु देवसेन हैं। ये लाट-वागट गणके तिलक थे। उनके शिष्य कुलभूषण, उनके शिष्य दुर्लभसेन सूरि हुए। उनके बाद गुरु शान्तिषेण हुए, जिन्होंने राजा भोजदेवकी सभामें पंडित शिरोरत्न अंबरसेन आदिके समक्ष सैकड़ों वादियोंको हराया था। उनके शिष्य विजयकीर्ति थे।

मन्दिरके संस्थापकोंमेंसे पंक्तियाँ ४८-५१ उनका नामोल्लेख इस प्रकार करती हैं:—साधु दाहड़, कूकेक, सूर्पट, देवधर, महीचन्द्र, और लक्ष्मण। इनके अलावा दूसरोंने भी जिनका नाम यहाँ नहीं दिया गया है, इस मन्दिरकी स्थापनामें मदद दी थी।

गद्यभागमें (५४ वीं पंक्तिसे शुरू होनेवाला) कथन है कि महाराजाधिराज विक्रमसिंहने मन्दिर तथा इसकी मरम्मतके लिये तथा पूजाके प्रबन्धके लिये प्रत्येक गोणी (अनाजकी ?) पर एक 'विंशोपक' कर लगा दिया था तथा महाचक्र गाँवमें कुछ जमीन भी दी थी तथा रजकद्रहमें कुँआसहित बगीचा भी दिया था। दिए जलानेके लिये तथा मुनिजनोंके शरीरमें लगानेके लिये उन्होंने कितने ही परिमाणमें (ठीक ठीक परिमाण जाना नहीं जा सका; शिलालेखके शब्द हैं 'करघटिकाद्वयं') तेल भी दिया।

अन्तमें आगामी राजाओंको भी उपर्युक्त दानको चालू रखनेकी प्रार्थना करनेके बाद, ६०-६१ पंक्तियोंमें इस प्रशस्तिके लिखनेवाले और इसको खोदनेवाले दोनोंका नाम दिया है। लिखी जानेकी तिथिका उल्लेख करके यह शिलालेख समाप्त हो जाता है।]

[F. Kielhorn; EI, II, n° XVIII. (p. 237-240).]

२२९

श्रवणबेलोला—संस्कृत

[विना कालनिर्देशका]

[देखो, जैन शिलालेखसंग्रह, प्रथम भाग]

२३०

कणवे—संस्कृत तथा कन्नड़—भग्न

[वर्ष शुक्ल. १०९० ई० ? (लू० राइस) ।]

[कणवेमें, कल्लु-बस्तिमें एक समाधि-पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

साहस..................महिमं जिन-शत्रु वि........होय्सळ........ निळ्वं सम्यक्त्व-चूडामणियने नेगळ्दं भण्डारि-चन्दिमय्यन प्रियेयुं जिन-पादाम्बुजमं स्मरियुत्त दिविजेन्द्र-दिद्रेन्द्रोडे कृतार्थरिल्लाद् विलावनि-योळु ॥

स्वस्ति समस्त-प्रशस्ति-सहितं जिन-गन्धोदक-पवित्रीकृतोत्तमाङ्गलु भव्य-रत्नाकरन सरस्वती-देवी-कर्ण्ण-कुण्डलाभरणनप्प श्रीमन्महा-प्रधान होय्सळ-देवन भण्डारि चन्दिमय्यन हेण्डति बोप्पव्वेयु शुक्ल-संवत्सरद पौष्य-मासदल्लु सन्यासनं गेय्दु समाधि-सहित सोमवारदेरडनेय-जावदल्लु स्वर्ग्ग-प्रापितरादरु

[जिनशासनकी प्रशंसा । प्रधान मंत्री होय्सळ-देवके खजाञ्ची चन्दिमय्यकी पत्नी बोप्पव्वेने (उक्त मितिको), संन्यसन करते हुए, समाधिपूर्वक 'स्वर्ग' प्राप्त किया ।]

[EC, VIII, Tirthahalli tl., n° 198.]

२३१

वाळहोन्नूर—संस्कृत

[विना कालनिर्देशका;-पर संभवतः लगभग १०९० ई० का]

[वाळहोन्नूरमें, दूसरी चट्टानपर]

श्रीमद्वादीभसिंहस्याजितसेन-महा-मुनेः ।
अग्रशिष्येण मारेण कृता सेयं निशीधिका ॥
अगणितगुणगणनिलयो जैनागम-वाधि-वर्द्धन-शशाङ्कः ।
····त्यूर्जित-मण्डलि········र-गणे नत-गणाधीशः ॥

[वादीभसिंह अजितसेन-महामुनिका यह स्मारक उनके प्रधान शिष्य मारके द्वारा बनवाया गया था । ये गणाधीश अगणित गुणोंके निलय (स्थान) थे, जैनागमरूपी समुद्रके पानीको बढ़ानेके लिये चन्द्रमा थे ।]

[EC. VI, Koppa tl., n° 3.]

२३२

कणवे—संस्कृत तथा कन्नड

[वर्ष आङ्गिरस, १०९३ ई० ? (लू० राइस) ।]

[कणवेमें, एक दूसरे समाधि-पाषाणपर]

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

श्री-मूलसंघ-कोण्डकुन्दान्वय-देशीयगण-पुस्तकगच्छ लोक्कि-यब्बे वसदिय प्र············तळताळ वसदि

वळ····रं वळल्चुव लतान्त-सङ्गि····दि सञ्- ।
चळिसि पळञ्चि तू····रन नडिसि मेय्वगेयाद-दूसरिं ।
कळयदे निन्द कय्दुनद कगिगद विट्टिनमरक्केवेत्त क- ।
त्तळमेनिसित्तु पुत्तडर्द मेय्य मलं मलधारि-देवर ॥

स्वस्ति श्रीमदाङ्गिरस-संवत्सर-पौष्य-मास-वहुळ-सप्तमियादित्यवारदन्दु अवर शिष्यरु शुभचन्द्र-देवर् समाधिविधियिं स्वर्गस्थरादरु ।

[जिनशासनकी प्रशंसा । श्री-मूलसंघ, कोण्डकुन्दान्वय, देशिय-गण और पुस्तक-गच्छ,—लोकियव्वे वसदिकी तलताल वसदिके मलधारि-देव थे, कठोर तपस्यासे जिनका सारा शरीर धूल-धूसरित हो रहा था, लोहेके समान वहुत समयतक जिसपर जङ्ग-सी चढ़ी हुई थी, और वल्मीक (चींटियोंकी खोदी हुई मिट्टीका ढेर) के समान हो गया था। (उक्त मितिको), उनके शिष्य शुभचन्द्र-देवने समाधिके वलसे स्वर्ग प्राप्त किया।]

[EC, VIII, Tirthahalli tl., n° 199.]

२३३

हळे-वेलोला—संस्कृत तथा कन्नड़
[शक १०१५=१०९३ ई०]
(जैन शिलालेखसंग्रह, प्र० भाग)

२३४

सोमवार—कन्नड़-भग्न
[शक १०१७=१०९५ ई०]
[सोमवार (मल्लिपट्टण परगने)में, वसव मन्दिरकी एक सोटपर]

स्वस्ति.... भद्रमस्तु जिनशासनाय स्वस्ति शक-वर्ष १०१७ नेय युवसंवत्सरद भाद्रपद-मासद सुद्ध-सप्तमी-गुरुवारदन्दु मकर-लग्नं गुरूदयदल् श्रीमत्-सुराष्ट्र-गणद कल्नेलेय रामचन्द्र-देवर शिष्यन्तियरप्प अरसव्वे-गन्तियर् (यहाँ खत्म हो जाता है)।

[(उक्त मिति को) सुराष्ट्र-गणके कल्नेलेके रामचन्द्र-देवकी शिष्या अरसव्वे-गन्ति......]

[EC, V, Arkalgud tl., n° 96.]

२३५

दुबकुण्ड—स्तम्भपर-संस्कृत

[संवत् ११५२=१०९५ ई०]

संवत् ११५२—वैशाखसुदिपञ्चम्यां ॥

श्रीकाष्ठासंघमहाचार्यवर्यश्रीदेव-

सेनपादुकायुगलम् ।

[स्पष्ट है]

[A. Cunningham, Reports, XX, p. 102.]

२३६

सोमवार—कन्नड़

[विना कालनिर्देशका,—लेकिन संभवतः लगभग १०९५ ई०]

[सोमवार (मल्लिपट्टण परगना)में, बसवण्ण मन्दिरके मुख-मण्डपके सामनेके पाषाणपर]

पतिय सन्ततिय पति पेळ्द-मार्ग्गदिम् ।

पति-हितनागि निस्तरिसि तत्पति माडिप जैनगेहमुन् ।

नति-वेरसिर्....यनन्तदर्कहर् ।

प्पति-शशियुळ्ळिनं निरिसि जक्कनिदेम् सुकृतार्त्थनादनो ॥

दुद्दमल्ल-देवन वाणसि जक्कय्यं माडिसिदम् ॥

[अपने स्वामीके कुटुम्बमेंसे, उसी पद्धतिसे जिसे उसके स्वामीने बतलाया था, स्वामीके प्रति रहे हुए प्रेमसे उसने उसी मन्दिरको खड़ा किया जिसे उसका स्वामी बना रहा था। उसे आशा थी कि यह मन्दिर तब तक खड़ा रहेगा जब तक आकाशमें सूर्य और चन्द्र चमकते हैं। जक्क कितना भाग्यशाली था? दुद्दमल्ल-देवके रसोइये जक्कय्यने इसे बनवाया।]

[EC, V, Arkalgud tl., n° 97.]

२३७

सौंदत्ति – संस्कृत तथा कन्नड़

[विक्रमादित्य चालुक्यका २१ वाँ वर्ष=१०९६ ई०]

स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय (यं) श्रीपृथ्वीवल्लभ (भं) महाराजाधिराज(जं) परमेश्वर (रं) परमभट्टारकं । सत्याश्रयकुळतिलक (कं) चाळुक्याभरणं श्री[म]त्त्रिभुवनमल्लदेवविजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारंबरं सलुत्तमिरे ॥ तत्पादपद्मोपजीवि ॥ स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्दमहामण्डलेश्वरं । लत्तलूर्पुरवराधीश्वरं त्रिवळीतूर्यनिर्घोषणं । रट्टकुळभूषणं । सिन्धुरलाञ्छनं । विवेकविरिञ्चनं । सुवर्णगरुडध्वजं सहजमकरद्व(ध्व)जं नामादिसमस्तप्रस(श)स्तिसहितं श्रीमन्महामण्डळेश्वरः कार्तवीर्यनृपः ।

रट्टवंशोद्भवः ख्यातो नन्नभूपस्य नन्दनः । श्रीमदाहवमल्लस्य पादपद्मोपसेवकः ॥ सहस्रबाहुरिव ख्यातः कार्त्तवीर्य्यः प्रतापवान् । कुहुण्डिदेशया(स्या)ग्राटं सादि(धि)तं तेन भूभुजा ॥ राजन्वत्यः प्रजा जाता दाबरिनाम भूभुजा । तस्यानुजः प्रतापी स्यात् कन्नकैरो महीपतिः ॥ तस्याग्रनन्दनो भाति वाद्या विद्याविदो भुवि । एरगाख्यमहीपः स्यादनुजोस्याङ्कभूपतिः ॥ वाद्या विद्याधरस्याग्रसूनुः श्रीसेनभूपतिस्तस्याग्रमहिषी जाता मैळलादेविरूर्जिता ॥ श्रीकाळसेनभूपस्य तस्यासीदग्रनन्दनः [।] कन्नकैरनृपः ख्यातो नृत्यगीतादिकोविदः ॥ तस्य गुरवः ॥ त्रैविद्यो राजते भूमौ सर्वशास्त्रविशारदः । कनकप्र(भ)सिद्धान्तदेवो गणधरोपमः ॥ कनकप्रभदेवेभ्यः संक्रान्तो (न्तौ) सत्तियौ तदा । निवर्त्तनं द्वादशं (श) दत्तं नमस्यं (स्यं) नन्नभूभुजा ॥ तस्यानुजः ॥ गम्भीरेण समुद्रोसि

गौरवेणासि मन्दरः । श्रीकार्तवीर्य लोका(नां) कल्पवृक्षोसि दानतः ॥ तस्याग्रनन्दनः ॥ वृत्त ॥ श्रीरागतामळयशो वनिता सुयाता तत्र स्थिता जयवधू तत्र मण्डलाग्र (ग्रे) ॥ धारापथे सुभटमण्डलिकाग्रगण्य श्रीसेन-भूपकथमस्खलनेन चित्रं ॥

श्लोक ॥ सुगन्धवर्त्याह्वके ग्रामे धर्मज्ञजनतावृते । श्रीकाळसेनभूपेन कारितं जिनमन्दिरं ॥ निवर्त्तनं द्वादशं(श) तस्मै । जिनगेहाय भक्तितः । वृहद्दण्डेन संदत्तं । नमश्यं(स्यं)सेनभूभुजा ॥ वचनं ॥ वीरविक्रम 'काळ'नामधेयसंवत्सरैकविंशतिप्रमितेष्वतीतेषु । वर्त्तमानधातुसंवत्सरे पुष्यवहुळत्रयोदश्यामादिवारोत्तरायणसंक्रान्तो (न्तौ) । श्रीवीरपेर्माडि-देवेन कारेयवागुनामधेयस्वसीवटे द्वादशनिवर्त्तनं सर्वनमश्यं (स्यं) दत्तं ॥ तस्मिन्नेव सीवटे श्रीकन्नकैरेण स्वगुरवे द्वादशनिवर्त्तनं नमश्यं (स्यं) दत्तं ॥ तस्य सीमा । पूर्वस्यां दिसि (शि) हलसय्यसीवटाद(दा) रम्य पुलिगेरेवळ्ळिग्रामस्य सीमा । दक्षिणदिग्भागे सुगन्धवर्त्तिग्रा-मस्य सीमा । पश्चिमदिग्भिळये कुकुम्वाळु ग्रामस्य सीमा । उत्तरस्यां दिशि मळहारी नदी सीमा । सामान्योयं धर्म्मसेतुर्नृपाणां काळे काळे पाळनीयो भवद्भिः । सर्व्वानेतान्भाविनः पार्थिवेन्द्रान् भूयो भूयो याचते रामभद्रः ॥ वहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिर्यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फळं ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां । षष्टिर्वर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥ वृत्त ॥ इदनानन्ददे (दि) नोदि पाळिसिदवंगक्कुं शुभं मंगळं । मुदमुत्साहमशेषसौख्यमेसेवायुं श्रीयुमन्तल्लदिन्तिदे तोनकेग······न्द पूण्डु किडिसल्केन्दिर्प्प कष्टं निगोद (दि) दोडकेन्द (न्दु) गळुळ्ळिनं विषमदुःखावासमं पोर्द्दुगु ॥···· ····न्त ॥ गंगासागरयमुनासंगमदोळ् वारणासि गयेयेम्बी तीर्थंगळोळो

[तु] कुळद्विजपुंगवगोकुळमनळि दरिन्तिदनळिदर् ॥ वीरपेर्माडिदेवस्य जिनालयं ॥

[इस लेखमें चालुक्य राजा पेर्माडिदेवके द्वारा शकवर्ष १०१९ में †जो धातु 'संवत्सर' था, १२ 'निवर्तन' भूमिके दानका उल्लेख है। तत्पश्चात् कन्नकेरके दानका उल्लेख है। यह दान उक्त दानसे पहलेका होना चाहिये। यह कन्नकेर, प्रथम या द्वितीय है, यह इस लेखपरसे कुछ पता नहीं चलता। अन्तमें यह लेख अपने साधारण तरीकेसे भूमिदान करनेके तथा पूर्ववर्ती राजाओंके दानोंकी रक्षा करनेके फायदोंके बतानेवाले श्लोकोंसे समाप्त होता है।]

[JB, X, p. 170–171 a; p. 194–198; t, p. 199, tr., ins. n° 2, (II part.).]

२३८

हुम्मच—कन्नड़-भग्न

[काल लुप्त, पर संभवतः १०९८ ई० ? (लुई राइस)]

[पंचवस्तीके प्राङ्गणमें, दक्षिणकी ओरके एक पाषाणपर]

स्वस्ति श्री-मूल-संघद·········पुस्तकगच्छदोळे प्रसिद्धि-वडेद श्री ·········भट्टारक-शिष्यरप्प लक्ष्मीसेन-भट्टारक-देवरु चिरकाल तपं गेय्दु·············॥ विदित-वहुधान्य·········कार्त्तिकशुक्ल-तृतीयार्कज-वार-सूर्य्योदय·····लक्ष्मीसेन-मुनिपरमरास्पदमं ॥························ देवसेन-भट्टारक·············चारित्र-गुणोल्लसित-श्री-पार्श्वसेन-भट्टारक···एने जसं वडे···॥

विदित-वहुधान्य-नामा ।
ब्ददोळोप्पुव-चैत्र-वहुळ-नवमी-कुजवा-।

---

† मूल लेखके अनुसार शक काल १०१८ बीतनेके वाद जो कि चालुक्य विक्रमादित्य द्वितीयके राज्य प्रारम्भ होनेका २१ वाँ वर्ष था।

रदोळोड्डि समाधियि····।
य्दिदरनुपम-पार्श्वसेन-मुनिपर् दिवमम् ॥

[स्वस्ति । श्री-मूलसंघ और पुस्तक-गच्छमें प्रसिद्ध······भट्टारकके शिष्य लक्ष्मीसेन-भट्टारक-देवने बहुत समयतक तप किया। (उक्त मितिको), सूर्योदयके समय लक्ष्मीसेन मुनिने अमरपद प्राप्त किया।

पार्श्वसेन-भट्टारककी प्रशंसा, जिन्होंने उसी वर्षमें, समाधि-विधिके द्वारा स्वर्ग प्राप्त किया।]

[EC, VIII, Nagar tl., n° 42.]

२३९

चिक्क-हनसोगे—कन्नड़-भग्न

[शक १०२१=१०९९ ई०]

[जिन-बस्तिमें, अन्दरके दरवाजेके दक्षिणकी ओरके एक पाषाणपर]

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाघनाशिने ।
कुतीर्थध्वान्तसङ्घातप्रभिन्नघनभानवे ॥

वननिधि-परिवृत-सीमा-वनियोळ् सले नेगळ्द **कोण्डकुन्दान्वयदोळ्** ।
पनसोगे-निवासि-महा-मुनि-वरश्री-कर-[वि]मुक्तरागम-युक्तर् ॥

यमि-नाथाग्रणि **पूर्णचन्द्र-मुनिपर्त्त**········**दामणंदि-मुनीन्द्रर्** तदपत्यरन्तवर शिष्य-**श्रीधराचार्य्यर्** आयमि-शिष्यर् **मलधारि-देव**-रवर्गादर् **चन्द्रकीर्त्तिव्रति**-प्रमुखर्त्तत्तनुजातराततयशर् स्सिद्धान्त-चक्रेश्वरर् ॥

स्वस्ति यम-नियम-स्वाध्याय-ध्यान-मौन········परायणरप्प श्री-मूल-सङ्घद देशि-गणद पुस्तक-गच्छद श्री-**दिवाकरनन्दि-सिद्धान्ति-देवर** ····न्तिर्व्वेसवबे-गन्तियर् सक-वरिष सायिरद इ १०२१ नेय

प्रमादि-संवत्सरद फाल्गुण-सुद्ध-पञ्चमी-आदिवारदन्दु............य पाळि मूळपरिग्रहं चरियलु ३० गद्याण............चन...............

[जिनशासनकी प्रशंसा। कोण्डकुन्दान्वयमें पनसोगे-निवासी मुनियोंमें प्रधान पूर्णचन्द्र मुनि थे। उनके शिष्य दामनन्दि-मुनीन्द्र थे; उनके शिष्य श्रीधराचार्य्य थे; उनके शिष्य मलधारी-देव थे; उनके पुत्र चन्द्रकीर्त्ति-व्रती थे।

मूलसंघ, देशिगण तथा पुस्तकगच्छकी, दिवाकरनन्दि सिद्धान्त-देवकी शिष्या, वेसवचे-गन्तिने...............के करनेके लिये ३० गद्याण दिये।]

[EC, IV, Yedatore tl., n° 24.]

२४०

चिक्क-हनसोगे—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग ११०० ई०]

[चिक्क-हनसोगेमें, शान्तीश्वर वस्तिके दरवाजेके ऊपर]

श्रीमूलसङ्घद देसिग-गणद होत्तगे-गच्छद समुदाय मुख्यते **राम-स्वामि** विट्टीपरमेश्वर-दत्तिगे ॥

उपवास-प्रोन्नत-विधि- । युपवासानेक-वार-चान्द्रायणदिन्-
न्दर्प-मद-**जयकीर्तिं-मुनि-** । प्रवरं श्री-पुस्तकान्वयाम्बुजसूर्य्यं ।

दशरथसुतनुं लक्ष्मणाग्रजनुं सीता-वल्लभनुं इक्ष्वाकु-कुलजनुमप्प **राम**न प्रतिष्ठे देसिग-गणद वसदि इल्लि ६४

रामम्र्माडे गङ्गर्प्पडि सलिसे **वन्द्-तीर्त्थद**-वसदियं यादवरप्प चङ्गाळ्वरोळगे **श्री-राजेन्द्र-चोळ-नन्नि-चङ्गाळ्व-देवर्** पुनर्नवं माडिदरी-**पनसोगेयल् देसिग**-गणद **होत्तगे**-गच्छद वसदि ४ के **तले-कावेरिय** वसदिगळ्ुं तत्समुदायमुख्यं

[रामस्वामीके छोड़े हुए (?) परमेश्वर-अदत्त (?) दानका प्रधान मूलसङ्घके देशी गणके होत्तगे गच्छका समुदाय है। पुस्तकान्वयरूपी कमलके लिये

जयकीर्त्ति-मुनि सूर्यके समान थे। ये अनेक उपवास और 'चान्द्रायण' व्रत करनेमें विख्यात थे।

यहाँ दशरथके पुत्र, लक्ष्मणके बड़े भाई, सीताके पति, इक्ष्वाकुकुलोत्पन्न रामके द्वारा प्रतिष्ठित देसिग-गणकी ६४ वसदियाँ हैं।

चन्द्-तीर्थकी वसदिको जिसे पहले रामने बनवाया था और जिसको गङ्गोंने दान किया था, चङ्गाळ्ववंशी यादवीय राजेन्द्रचोळ-नन्नि-चङ्गाळ्व-देवने फिरसे बनवाया।

इस पनसोगेमें देसिग-गणके होत्तगे गच्छकी ४ वसदियों, और तल-कावेरीकी वसदियोंका वही समुदाय मालिक है।]

[EC, IV, Yedatore tl., n° 26]

२४१

चिक्क-हनसोगे—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग ११०० ई० ?]

[चिक्क-हनसोगेमें, नेमीश्वर बस्तिके दरवाजेके ऊपर]

श्रीमद्-देसिग-गण पुस्तक-गच्छद श्रीधर-देवर शिष्यरेळाचार्य्य-रवर शिष्यर्द्दामनन्दि-भट्टारकरवर सधर्म्मिगळ् चन्द्रकीर्त्ति-भट्टारक-रवर शिष्यर्द्दिवाकरणन्दि-सिद्धान्तदेवरवर शिष्यर्च्चान्द्रायणी-देवापर-नामधेयरप्प श्रीमज्जयकीर्त्ति-देवरादियागा-समुदाय-मुख्यमी-वसदिगळे-ल्लवर्क्कमासमुदायद वशमल्लदवरना-समुदायमिर्द्दु निर्दोडिसि पोर्मडिसि कळेवुदु। रामस्वामि विट्ट परमेश्वर-दत्तिगे तोळ्ळडियिन्द बडगण तुम्बिन नीर् वरिद नेलन विक्रमादित्यं विट्टं १८ गेण कोलिन्दं १५०० कम्म मोदलेरियल्लु वेजिरिगट्टद केळगे आ-कोलि(न्दं) २५० कम्म मण्णं तोण्टके चङ्गाळ्वं मद्दूरनहळ्ळियुमनल्लि ५००. कम्म

[देसिग-गण और पुस्तक-गच्छके श्रीधरदेव थे, जिनके शिष्य एलाचार्य थे, उनके शिष्य दामनन्दिभट्टारक थे, उनके साथी चन्द्रकीर्त्ति-भट्टारक थे, उनके शिष्य दिवाकरनन्दि सिद्धान्तदेव थे, उनके शिष्य जयकीर्त्ति-देव थे जिनका दूसरा नाम चान्द्रायणी-देव भी था; इन सबका समुदाय इन बसदियोंका मालिक है। जो इस समुदायके अधीन नहीं हैं उन्हें यह समुदाय भगा देगा, बाहर भेज देगा।

चङ्गाळ्वने, १८ विलस्तके दण्डेके नापसे, विक्रमादित्यकी छोड़ी हुई और तोलुडिकी उत्तरीय नहर या मोरीसे सींची गई तथा परमेश्वरकी दी हुई और रामस्वामीकी छोड़ी हुई १५०० 'कम्म' (एक नापविशेष) जमीन दानमें दी; उसी नापसे बेजिरिगट्टकी २५० 'कम्म' जमीन बगीचेके लिये, और ५०० 'कम्म' मट्टुरनहल्लिमें दिये।]

[EC, IV, Yedatore tl., n° 28]

२४२

अङ्गडि—कन्नड़—ध्वस्त।

[विना काल-निर्देशका, पर संभवतः लगभग ११०० (?) ई० का]

[अङ्गडि (गोणीबीडु परगना)में, बसदिके पासके पाषाणपर]

भद्रमस्तु जिनशासनस्य श्री····ण गङ्गदासि-सेट्टि सोमर्दि····
········धिय मुडिहिद प····क्षके मग चटयं निलिसिद सासन

[जिन-शासनका कल्याण हो। गङ्गदास-सेट्टिके मर जानेपर, उसके पुत्र चटयने यह स्मारक उसके लिये खड़ा किया।]

[EC, VI, Mūḍgere tl., n° 10]

२४३

सण्ड—संस्कृत तथा कन्नड़—भग्न

[विना काल-निर्देशका, पर संभवतः लगभग ११०० ई० का]

[सण्डमें, तालाबके प्रवेश-द्वारपरके एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळतिळक चालुक्याभरण श्रीमत् **त्रिभुवनमल्ल देवर** विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारम्बरं सलु-त्तमिरे ॥ तत्पादपद्मोपजीवि ॥ स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-सामन्ताधिपति महा-प्रचण्ड-दण्डनायक विबुधवर-दायक सुजन-प्रसन्न नुडिदु मत्तेन्नं गोत्र-पवित्र पराङ्गना-पुत्र··· ·········सोत्तुङ्गनय्यन-सिङ्ग नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्री·······वेर्ग्गडे **मने-वेर्ग्गडे-दण्डनायकननन्तपाळय्यं गजगण्ड-अरुनूरुमं वनवासे··········मुम सप्तार्द्ध-लक्ष्म(क्ष)यच्छ-पन्नाय-मुमं** पडेदु सुख-संकथा-विनोददिं··· तत्पादपद्मोपजीवि ॥

श्री-वनिता-कुच-सम्भृत-।
पीवर-वक्ष-स्थळं लसद्गुण-मणी····।
·······························।
······सकळ-विभु (बु) ध-जनता·······॥ ... ...

आ-समस्त-गुण-गणाभरणनु विबुध-जन-पर···········विळसित-जगद्-वळय····वनुं रण-रङ्ग-भैरवनं सकळ-सु-कवि-जन-क··········· वीर-लक्ष्मी-विळासनुमनन्तपाळ-प्रसादनुदिताधिकार-लक्ष्मी-विळासनुं···· ··········**[गो]चिन्दरसं** वनवासे-पन्निर्च्छासिरसुमं **मेलपट्टेय वड्ड-रावुळसु**··········नोददिं प्रतिपाळिसुत्तमिरे ॥

श्रियं निज-भुज-बळदिम् ।
दायाद-वळ···················।

··························न-।

ळेयं रिपु-नृप-पयोज-सोमं सोमम् ॥

आनेग···········गळ महा····वेयोगेववोलानत-रिपु-वोगेद······ महीपति-प्रतिम-प्रताप-निळ्यं निज-सन्ततिगोप्पुगे पुट्टे रिपु············ पुट्टिदं सोवरस ॥····जमदनणिमनार्प्पेने कट्टायदे चलदोळोदविदूप्नति-नमर्म·············रेम् पुट्टिदर् ॥

शरणेमगोन्नदेवुदेमगे-वेसनावुदु वुद्धियेन्नदुम् ।
वरिसि नितान्तमेरिसिद विल्लवोल्दुद्धत-वृत्तियन्ने पेण्-
डिर् केळदोळ् केळ्दु वीरव स्विडे वीरवविक-वैरि-भू-।
परनातनचर मरुळ तण्डम नोडने सोम-भूमिपम् ॥
किं कल्पद्रुम-वल्लरी किमु रतिः शृङ्गार-भङ्गी-गुरोः
किं वा चान्द्रमसी कला विगलिता लावण्य-पुण्या दिवः ।
सम्यग्दर्शन-रेवती किमु परा सोमाम्बिका राजते
राज्ञी सा वनवासि-सोम-नृपतेर्ज्जाता मनोवल्लभा ॥

श्लोक ॥ क्षीर-सिन्धोर्य्यथा लक्ष्मीर्हिमांशोरिव दीधितिः ।
तथा तयोस्सुते जाते जिन-शासन-देवते ॥
पूर्व्वं वीराम्बिका जाता ततोऽजन्युदयाम्बिका ।
इति भेदं तयोर्म्मन्ये सद्-गुणैस्समता द्वयोः ॥
किं देवेन्द्र-विमान एष किमुत श्री-नागराजाश्रयः
किं हेमाचल-शैल इत्यनुदिनं शङ्का दधानं जने ।
निश्शेषावनिपाल-मौलि-विलसन्-माणिक्य-मालाञ्चितम् ।
मात्युन्नतिमज्जिनेन्द्र-भवनं ताभ्यां विनिर्म्मापितम् ॥
तोडरे तोडङ्कु मचरिसे गण्डल सिल्किद्-गाळें वुके मार्-।

नुडिदडे जिह्मं पिडिदु किळप तोडर्प्पिन पाशवेन्देडेन्त् ।
एडरुव (व) रेन्तु मच्चरिपरेन्तु कारं कडि केण्दु दप्पम [मू] ।
नुडिदपरण्ण बार्प्पु मुळिदम्बद जूजिनोळन्य-भूभुजर् ॥
विडदेडरे सेणसि चुन्न ।
नुडिवरी-मन्नेयर वेन्न वारं मिडियिम् ।
पेडेतले-वरम्माळपोत्तुव ।
कडु-गलि शसि-विशद-कीर्ति जूज-कुमार ॥
जवनेरे बच्चितेम्बिनेगमान्तरि-भूपरनट्टि कोन्दु कू- ।
गुव तवे तिन्दु तेगुव तडगडिदि....व वेन्न-वारनेत्- ।
तुव पिडिदच्चि मुक्कुव पसुगरिडिं वडगिन्दियाद्वुवा- ।
हव-भुज-शौर्य्यमं**'लि-वीरदनेन्दोड् इन्नार्ग्गेर पोगळर् नेगळद
कुमार-गजकेसरियं ॥

अरमनेयोळे................... ।
.....................न्दु विगिदु संगरमादन्दे ।
शिरलेय मुञ्जाल्गेणेयनि- ।
परसर् प्पोल्तपरे कु..................... ॥
............डे मोगमं तिरिपुवरिन्****दडे नगुवरन्यरम्बद जूजं
मुनि...............यं रिपु-जनक्कमर्थि-जनक्कम् ॥ अनुपममे-
निसिद गुण.................वारितमेनिप दान-गुणदोळु मत्त-
वण दोरेय................तळदोळ् ॥ आतनळिय ॥ खण्डदोळि
.........................नेद्दु मूळेगळम्मूरि...............
....

[जिन-शासनकी प्रशंसा। जिस समय, (चालुक्य उपाधियों सहित), त्रिभुवनमल्ल-देवका राज्य चारों ओर प्रवर्द्धमान था और तत्पादपद्मोपजीवी मने-वेर्गडे दण्डनायक अनन्तपालय्य, गजगण्ड ६००, वनवासे १२०००, और ससार्द्ध-लक्ष (देश) अच्छ-पन्नायको प्राप्त करके उनके ऊपर शासन कर रहा था; तत्पादपद्मोपजीवी, जिस समय (अनेक उपाधियों सहित) गोविन्दरस वनवासे १२००० तथा मेल्पट्टे 'वड्डु-रावुळ'की शान्तिसे रक्षा कर रहा था;—उसका पुत्र (प्रशंसासहित) सोम या सोवरस था, जिसकी पत्नी सोमाम्बिका थी। उनकी चीराम्बिका और उदयाम्बिका, ये दो पुत्री थीं। इन दोनोंने एक जिनमन्दिर बनवाया। अम्ब जूज-कुमारके, जिसे कुमार गजकेसरी भी कहते थे, पराक्रमकी प्रशंसा। उसका दामाद,... (लेख बहुत घिसा हुआ है)।]

[EC, VII, Shikarpur tl., n° 311]

२४४

गुव्वी—कन्नड़

[विना कालनिर्देशका]

(देखो, जै० शि० सं०, प्र० भाग)

२४५

उदयगिरि (कटकके पास)—संस्कृत

[लगभग ईसाकी ११ वीं शताब्दि]

उद्योतकेसरीके समयका शिलालेख

नोटः—इस शिलालेखके लेखका कुछ पता नहीं है। इसका उल्लेख मात्र टी. ब्लॉक (T. Bloch) के Archaeological Survey of India, Annual Report 1902–1903, पृ० ४० के उल्लेख परसे हुआ है।

[उद्योतकेसरीके समयका यह शिलालेख, जो कि ई० ११ वीं शताब्दिका है, शुभचन्द्रके कुल और गणका उल्लेख करता है। शुभचन्द्रके शिष्यका

नाम कुलचन्द्र था । ये (कुलचन्द्र) यहाँकी किसी गुफामें रहते थे और अपने गुरुकी तरह, अवश्य जैन रहे होंगे]

[T. Bloch, A S I, Annual Report 1902-1903, p. 40]

२४६

नेसर्गी (जिला वेलगाँव):—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका, पर ई० ११ वीं या १२ वीं शताब्दिका (फ्लीट)]

वेलगाँव जिलेके सम्पगाँव तालुकामें नेसर्गीके एक छोटेसे तथा अर्द्ध-ध्वस्त जैनमन्दिरकी एक खड्गासनस्थ बुद्ध-प्रतिमाके चरणपाषाणपर निम्नलिखित अभिलेख पुरानी कन्नड़के ई० ११ वीं या १२ वीं शताब्दिके अक्षरोंमें है:—

श्रीमूलसंघद बलात्कारगणद श्रीपार्श्वनाथदेवर श्रीकुमुदचन्द्रभट्टारकदेवर गुड्ड बाडिगसात्ति-सेट्टियरु मुख्यवागि नख (ग ?) रङ्गलु माडिसिद नख (ग ?)रजिनालय ॥

[श्रीमूलसंघ बलात्कारगणके, श्रीपार्श्वनाथदेवके श्री कुमुदचन्द्र-भट्टारकदेवके शिष्य या अनुयायी बाडिगसात्ति-सेट्टि जिनमें मुख्य था ऐसे नगरके (व्यापारी लोगों) द्वारा 'नगरका जिनालय' बनवाया गया ।]

[IA, X, p. 189, n° 16, t. & tr.]

२४७

ऐहोले—कन्नड़—भग्न

[विक्रमादित्य चालुक्यका २६ वाँ वर्ष; शक १०२३=११०१ ई० (फ्लीट)]

[ऐहोले गाँवके दक्षिण-पश्चिम दरवाजेके बाहर ही हनुमन्तकी आधुनिक कालकी वेदी है । इसके सामने 'ध्वजस्तम्भ' नामका एक पाषाण है । इस ध्वजस्तम्भके पादुकातलमें एक वीरगल् या स्मारक पत्थर बनाया गया है ... पुरानी कर्णाटकभाषामें एक शिलालेख है । इस लेखकी नकल

१ Elliot MS. Collection पृ० ४१० पर दी हुई है ।

पत्थरका ऊपरी हिस्सा दृष्टिसे ओझल हो गया है। लेकिन लेखकी तीन पंक्तियां द्रष्टव्य हैं। इनमें सोमवार दिन तथा विषु संवत्सरके, जो कि चालुक्य विक्रम-कालका २६ वाँ वर्ष अर्थात्, शक १०२३ (=११०१ ई०) होता है, श्रावणमासके शुक्लपक्षकी एकादशीका काल निर्दिष्ट है। पाषाणके दूसरे हिस्सेमें भगवान् जिनेन्द्रकी मूर्त्ति है जो कि पद्मासन है और जिसके दोनों तरफ़ यक्षिणियाँ चँवर ढोर रही हैं। पाषाणका शेष हिस्सा दृष्टिमें नहीं आता है; लेकिन उसमें अय्यावोळे (ऐहोले) के पाँचसौ महाजनोंद्वारा दिये गये दानका उल्लेख है।]

[ई० ए०, ९, पृ० ९६, नं० ६९]

२४८

दानसाले—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०२५=ई० ११०३]

[दानसालेमें, दक्षिणकी ओर, बस्तिके पासके एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं श्री-पृथ्वी-वल्लभं महाजाराधिराजं परमेश्वर-परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिळकं चाळुक्याभरणं श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-देवर विजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क्कतारं सलुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि ॥ समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरनुत्तर-मधुरावीश्वर पट्टि-पोम्बुर्च्चपुर-वरेश्वरम्महोग्र-वंशललामं पद्मावती-लब्ध-वर-प्रसादासादित-विपुळ-तुळा-पुरुष-महादान-हिरण्यगर्भ-त्रयाधिक-दान वानर-ध्वज मृगराज-लाञ्छन-विराजितान्वयोत्पन्न बहु-कळा-सम्पन्न शान्तर-कुल-कुमुदिनी-शशाङ्क-मयूखाङ्कुर रिपु-मण्डलिक-पतंग-दीपाङ्कुरं तोण्ड-मण्डळिक-कुळाचळ-वज्रदण्डं विरुद-मेरुण्डं कन्दुकाचार्य्यं मन्दर-धैर्य्यं कीर्ति-नारायणं शौर्य्य-पारायणं जिन-पादाराधकं परबळ-

साधकं शान्तरादित्यं सकल-जन-स्तुत्यं नीति-शास्त्रज्ञं विरुद-सर्व्वज्ञं नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरं **त्रिभुवनमल्ल-सान्तर-देव** ॥

॥ वृत्त ॥

कनकाद्रीन्द्रक्कमम्भोनिधिगमवनिगं पेम्पिनोळ् गुण्पिनोळ् तिण्-।
पिनोळेन्तुं ताने पोपासटि सरि समनेन्दन्ददावं समस्कन्-।
धनदावं पोल्वनावं पडिय्ये निभुवनं राज-सर्व्वज्ञनोळ् तै-।
ळनोळर्थि-स्तोम-चिन्तामणियोळखिळ-भू-भागदोळ् नोर्प्पडेन्तुम् ॥

व ॥ अन्तेनिसिद कलि-काल-कल्पावनिजङ्गा-महानुभावङ्गे जन्म-निळयमेनिसिद अखिळ-क्षत्रिय-कुलोत्तममुमद्वितीय मुमेनिसिदुर्गान्वया-वतारमेन्तेन्दडे **पार्श्वनाथ**-सन्तानदोळनेकसमर-सम्मर्दित-रिपु-व्यूह-राहनेन्वनुत्तर-**मधुरा**-पुरी-भुजङ्गनुं प्रतिपाळित-चतुस्समुद्र-मुद्रित-रुद्वरी-रंगनुमेनिसि राज्यं गेय्दनातनिन्दनन्तरमर्थि-जन-कल्पभूरुहा-कार-सहकारं राज्यभर-धुरन्धरनादनातन तनय ॥

क ॥ जगदोळगण नृपरेल्लम् ।
मृगदन्तिरलात्म-विक्रम-प्राभवदिम् ।
मृग-रिपुविनंतिरेसेदम् ।
नेगळ्दुग्रान्वय-नगेन्ददोळ् **जिनदत्तम्** ॥

व ॥ आ-नृपेन्द्रचूडामणि दुर्व्वार-भारत-समर-समय-समुदीर्ण्ण-सौर्य्या-तिरय-समरय-महारयार्द्धरथ-समूह-सम्मर्द्दन-लब्ध-विजयलक्ष्मीविवाहोत्सवनुं त्रिविक्रम-कारुण्य-लब्ध-लसदेकशङ्खनुं धनञ्जय-दत्त-शाखामृग-ध्वजनुम-तर्क्य-विक्रमोपात्त-कण्ठीरव-ध्वजनुमागि दिग्-विजय-यात्रा-निमित्तं दक्षिण-दिशाभिमुखनागि विजयं गेय्दु समस्त-दैत्य-वंशध्वंसनं माडि पद्मावती-

पदाराधना-लब्ध-सप्ताङ्ग-राज्य-राजधानी-पोम्बुर्च्चदोळु सान्तर-पट्टमं ताब्दि सान्तळिगेशायिरमुमनेक-च्छत्र-च्छाय-यिन्दाळ्दु शान्तरमेम्बेरडनेय पेसरं पडेदनन्दि वळिक्कमुग्रान्वयं शान्तरान्वयाभिधानमं पडेदुदातनिं वळिक्कमनेक-राज-सन्तानकमतिक्रान्तमागे तदन्वयदोळु ॥

वृ ॥ विरुदर मृत्यु वीरद तवर्मने त्यागद जन्म-भूमि शा- ।
न्तर-कुळ-वार्धि-वर्द्धन-शरत्-समयेन्दु समस्त-सत्-कळा-परिणत-
नङ्गना-जन-मनोभवनेन्दोसेदर्त्थियिं बुधो-
त्करसभिवर्णिणसल्के नेगळ्दं धरेयोळ् विभु शान्तर-ओड्डुग ॥

क ॥ नव-जळददळि मिञ्चुम्-मुवुदुवदं शान्तरोड्डुगं वाळ् गित्तन्- ।
तेवोलादुदेन्दु पोगळ्वं । भुवनाधिपनात्म-समेयोळा-भूपतिय ॥

आतननुज ॥

क ॥ अदटिनिदिरान्त-भूपर- । नदटळदेरदर्त्थि-निकरमं तणिपि जगद्- ।
विदित-यशं नेगळ्दं भू- । प-दिळीपं वैरि-वीर-काळं तैल ॥

तत्पुत्र ॥

क ॥ आयद कट्टळे मदवद्- ।
दायाद-नृपाळ-दर्प्प-विच्छेदनन- ।
ल्पायत-दोर्-दर्प्पं जय- ।
जायापति दळित-वैरि-वीरं वीर ॥
अवन मनोरमे गङ्गा- ।
न्ववाय-पीयूष-वार्द्धि-सम्भवे लाव- ।
ण्यवति मनोभव-राज्यो- ।
द्भव-विळसज्जन्म-भूमि वीरल-देवी ॥

अवरिर्व्वर्ग्गम् ॥

भुजबल-शान्तरनत्यु-
दग्र-जय-श्री-ललित-घन-भुजा-दण्ड भू- ।
भुज-बन्धनवर्ग्गे ताना- ।
त्मजनादं रिपु-बळाटवी-दवदहन ॥

आतनि किरिय ॥

वृ ॥ शरणायात-शरण्यनर्त्थि-जन-कल्पक्ष्माजनन्यावनी- ।
श्वर-सैन्यार्ण्णव-बाडबानळनशेषाशावधि-न्यस्त-भा- ।
सुर-कल्हार-सुरापगा-निभ-यशश्श्रीवल्लभं नन्नि-शान्-
तर-देवं जगदेक-दानि नेगळ्दं विश्वम्भरा-भागदोळ् ॥

तदनुजन्मनोड्डुगनात ॥

क ॥ विक्रम-चक्रिय पुण्यदे ।
चक्रं पुरुष-स्वरूपदिं पुट्टितेनल् ।
विक्रमदिन्देसेदातं ।
विक्रम-शान्तरनेनिप्प पेसरं पडेद ॥

व ॥ आतन मनोरमे पाण्ड्य-कुल-वियत्-तळ-चन्द्र-लेखेयु शफर-पताक-जय-पताकेयुमेनिसिद चन्दल-देविग ॥

क ॥ उदयाचलदोळहिमकरन् ।
उदधियोळमृतकरनुदयिपन्तिरलवर्ग्गन्द् ।
उदयिसिदं सकळ-कळा- ।
सदनं महिमा-निळिम्प-शैलं तैल ॥

अन्तु जगज्जनद पुण्यदिं कल्पवृक्षमे क्षत्रिय-स्वरूपदिं पुट्टितेनि ॥ पुट्टि सान्तळिगे-सायिरसुमनेक-च्छत्र-च्छायेयिं सुखं राज्यं गेय्युत्तिरेसि

क ॥ अरुमुळि-देवन गाव- ।
व्वरसिय सुते वीर-भूपनत्तिगे वीर- ।
व्वरसियग्रजे तैलप- ।
धरणीश्वरनज्जि नेगळ्द-चट्टल-देवि ॥

भुजबळन गोग्गियोङ्ग- ।
न जय-श्री-कान्तनेनिप वर्म्मन तायि वि- ।
श्व-जगद्-वन्द्ये तानव- ।
निजेगमरुन्धतिगमधिके चट्टल-देवि ॥

काञ्ची-नाथ-मनः-प्रिये ।
चञ्चज्जिन-समय-कामधेनु दिगन्त- ।
प्राञ्चित-कीर्त्ति-पताके वि- ।
रञ्चि-रमा-सदृशे नेगळ्द-चट्टल-देवि ॥

व ॥ आ-जिन-समय-निदान-दीप-वर्त्ति भुजबळ-शान्तर नन्नि-शान्तर विक्रम-शा [न्] तरं वर्म्मदेवं मोदलागि निज-नन्दन-सनेतं सुखं राज्यं गेय्युत्तिर्द्दु राजधानि-पोम्बुर्च्चदोळु पञ्च-वसदियं माडिसि या-वसदिय खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारक्कमल्लिर्प्प ऋषि-समुदायक्काहार-दानार्त्थमागि भुजबळ-शान्तर नन्नि-शान्तर विक्रमशान्तरनुं मूवरुमिर्द्दु बिट्ट ग्रामङ्गळु रावनाडोळगण अग्रहारमानंदूरुं (दूसरे स्थानों के भी नाम दिये हैं) बिट्टरा-पञ्च-वसदिय प्रतिबद्ध मागियानन्दूरल्ल चट्टल-देवियुं श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-शान्तर-देवनुं वीरव्वरसियर्गे परोक्ष-विनयमागि यी-वसदियं श्रीमद्-द्रविल-सङ्घदरुङ्गलान्वयद वादि-घरट्टनेनिसिद श्रीमद् अजितसेन-पण्डित-देवर नामोच्चारणदिं केसर्-कल्लिकिसिद-वराचार्य्यावलियेन्तेन्दडे श्री-वर्द्धमानस्वामिगळ तीर्त्थं प्रवर्त्तिसे

गौतमर् ग्गणधररागे तत्-सनातनदोळनेकरतिक्रान्तरागे कलियुग-गण-धरर् **दयापाळ-देवरादरवरिं** वळिक पट्-तर्क-षण्मुखापर-नामधेय **जगदेकमल्ल-वादिराज-देवरवरिं ओडेय-देवरवरिं श्रेयान्स-पण्डित-**रवरिं वळिक ॥

क ॥ दूरीकृत-दुरघं निर्-
हारित-मदनं स्व-तर्क-विद्या-वळ-सम्- ।
हारित-पर-समयं वाक्- ।
श्री-रमणी-रमण**नजितसेन-मुनीन्द्र** ॥
प्रद्युम्न-मद-विदारणन्- ।
उद्यद्गुण रत्न-वार्द्धिनेगळ्दं पेर्देन् ।
अद्यतन-गणधरं निर- ।
वद्यं श्रीमत्-**कुमारसेन-व्रतिप** ॥

तार्किक-चक्रवर्त्तियुं वादीभ-पञ्चाननमेनिसिद **श्रीमदजितसेन-पण्डिदेतवर** गुड्ड ॥

क ॥ नृप-विद्याम्बुधि-पारगन् ।
अपरिमित-त्याग-गुणनराति-मुखेन्दु- ।
ग्लपन-रुहा-राहु रिपु- ।
द्विप-सिंहं **शान्तरान्वयाम्बर-चन्द्र** ॥
चागदद्गुन्ति याचकर्- ।
आगिसिद्दुदु पलवरर्सरं वीरददोन्द् ।
ओगडिसदेळ्गो वनचरर् ।
आगिसिद्दुद् पलवरहितरं **तैलुगन** ॥
अवननुजं निज-निर्म्मि- ।

दा-विदारित-वैरि-नृप-मदेभ-शिरः-पी- ।
ठ-विसृत-मौक्तिक-द्युति- ।
वच्छित-भू-भुवनन्तुम्बं गोविन्द ॥
अवनि किरियं बोप्पुगन् ।
अवनाहित-अत्र-पुत्र-वित्रसनं भू- ।
भुवन-प्रस्तुतं रिपु- ।
युवती-वैवश्य-शील-शिक्षा-दक्ष ॥

व ॥ यिन्तीवरडुगकुमिर्द्दु सक-वर्ष १०२५ यदेनेय सुभानु-संवत्सरद चैत्रद पुण्णमे बुधवार-सोम-ग्रहणद तात्कालदोळु प्रतिष्ठेयं माडि आ-बसदिय खण्ड-स्फुटित-नव-कर्म्मकाहार-दानक्कं देवरष्टविधार्च्चने कारणमागि आ-बूरोळाद सेसे विट्टु बीयं देविदेरं अडिगर्ळु काणिके कप्पगाणिके हालवु हव्वद वाय्य कुलारगधा-णन्मोद्ळागि धारा-पूर्व्वकं सर्व्व-बाधा-परिहारं माडि विट्टरु

(ये ही अन्तिम वाक्यावयव)

इदना-चन्द्रार्क्क-वर- ।
मुदितोदितमागि कादवं परन-सुखा- ।
स्पदनक्कुं पापदिनळि- ।
द दुरात्मं नरक-गतिगे गळगळनिळिगु ॥

(ये ही अन्तिम श्लोक) ।

[जिनशासनकी प्रशंसा । जब (इन्हीं चालुक्य उपाधियों सहित) त्रिभुवनमल्ल-देवका विजयी राज्य चारों ओर प्रवर्द्धमान था तब तत्पाद-पद्मोपजीवी महामण्डलेश्वर त्रिभुवनमल्ल-शान्तर देव था । इसका साधारण नाम तैल था, इससे किसीकी तुलना नहीं हो सकती थी ।

जो उग्रान्वय कलिकालके कल्याणका जन्मस्थान था और जिसमें उच्चवंशी क्षत्रिय कुटुम्बोंने जन्म लिया था, उसका अवतार (उत्पत्ति)। पार्श्वनाथके वंशमें एक राहु था, जो उत्तर मथुरा शहरके भुजङ्ग (वीर) के रूपमें प्रसिद्ध था। उसके बाद सहकार हुआ और उसका पुत्र जिनदत्त हुआ। उसने राजकीय नगर पोम्बुर्चमें शान्तर-मुकुट पहना और इस शान्तलिगे-हजारपर एकच्छत्र राज्य करने लगा तथा दूसरा नाम 'शान्तर' धारण किया। इसके बाद उग्रान्वय नाम 'शान्तरान्वय'में परिणत हो गया।

उसके बाद कई राजा क्रमशः व्यतीत हो गये। इस परम्पराके अन्तमें,— शान्तर ओड्डुग हुआ। उसका भाई तैल हुआ। उसका पुत्र वीर हुआ। उसकी पत्नी वीरल-देवी थी। उन दोनोंके भुजवळ-शान्तर पुत्र हुआ। उसका छोटा भाई श्रीवल्लभ नन्निशान्तर-देव था। उसका छोटा भाई ओड्डुग, जिसने बादमें विक्रमशान्तर नाम धारण किया। उसकी पत्नी चन्दलदेवी थी। उनसे तैलका जन्म हुआ।

जब वह शान्तलिगे हजारमें राज्य कर रहा था:—अरुमुळि-देवकी (पत्नी), गावब्बरसिकी पुत्री, राजा वीरके बड़े भाईकी पत्नी, वीरब्बरसिकी ज्येष्ठ बहिन, राजा तैलपकी नानी, चट्टल-देवी प्रसिद्ध थी। यह भुजबळ, गोग्गि, ओड्डुग और बम्मीकी माता थी।

जिन-समुदायके उस दीपकने राजधानी पोम्बुर्चमें पञ्च-बसदि बनवायी और उसके लिये भुजबळ-शान्तर, नन्नि-शान्तर, तथा विक्रम-शान्तर, इन तीनोंने (उक्त) गाँव प्रदान किये। और आनन्दूरमें, पञ्च-बसदिके सामने, चट्टल-देवी और त्रिभुवनमल्लशान्तर-देवने, वीरब्बरसिकी स्वर्गयात्राकी स्मृतिमें, एक बसदिकी नींवका पत्थर जमाया। यह काम उन्होंने अजितसेन-पण्डित-देवका नाम लेकर किया। ये 'वादि-घरट्ट'के नामसे प्रसिद्ध थे और द्रविळसंघ तथा अरुङ्गलान्वयके थे।

उनके आचार्य्योंकी परम्परा इस प्रकार थी:—वर्द्धमान-स्वामीके तीर्थमें गौतम-गणधर हुए। इस परम्परामें बहुत-से आचार्योंके होनेके बाद, एक कलियुग-गणधर दयापाल-देव हुए। उनके बाद, जिनका अपर नाम 'षट्-तर्क-

षण्मुख' था ऐसे जगदेकमल्ल वादिराज-देव हुए। उनके वाद ओडेय-देव, उनके वाद श्रेयांस-पण्डित, और उनके वाद परचक्रविजेता अजितसेन-मुनीन्द्र हुए। अद्वितीय कुमारसेन व्रतिप निर्विवाद रूपसे आधुनिक गणधर रूपमें प्रसिद्ध थे।

तार्किक-चक्रवर्त्ती अजितसेन-पण्डित-देवके एक गृहस्थशिष्य राजा तैलुग थे। उनकी प्रशंसा। उनका लघु भ्राता गोविन्द था। उनसे छोटा भाई वोप्पुग था।

इन राजाओंने (तैलुग, गोविन्द, वोप्पुगने) मिलकर, (उक्त मिति को) चन्द्रग्रहणके समय, वसदिकी स्थापना की, और उसकी मरम्मत, ऋषिवर्गके आहार, तथा देवकी अष्टविध पूजाके लिये (उक्त) दान दिये। वे ही अन्तिम श्लोक।]

[EC, VIII, Tirthahalli tl., n° 192]

२४९

दावनगेरे—(मैसूर) कन्नड़

[वि० चा० का ३३ वाँ वर्ष=११०८ ई०]

निम्नलिखित श्लोक मूल लेखकी २१ वीं पंक्ति है:—

कोगळि-नाडोळग्गद कदम्ब-दिसायरदागरङ्गळोळ्
देगुलकं जिना(य)लयकत्तारवेगं केरे वाविं सत्रकम्।
रागदे तन्न पन्नयद सुङ्कदोळं दशवन्नवित्तनि-
न्तागरमुक्किनं नेगळ्दं (ळ्द) बम्मरसं गुण-रत्नदागरम्॥

अनुवादः—"कदम्बोंके सर्वश्रेष्ठ, सर्वोपरि स्थानोंमें अग्रगण्य कोगळि-देशमें, प्रसिद्ध वम्मरसने,—एक जैनमन्दिर, एक जिनकी वेदी, एक वगीचे, एक तालाव, एक कुआँ (वापी) तथा एक दानशाला (सत्रक) के लिए,—'पन्नय'की,—तवतकके लिये जवतक कि वह कर जारी रहे,—अपनी तमाम चुङ्गीपर 'दशवन्न'[1] खुशीसे दिये।"

[IA, XXX, p. 107, t. & tr.].

---

१ 'दशवन्न'से मतलव आधुनिक 'दसवन्द' या 'दशवन्द'से है, जिसका अर्थ मि० राइसने यह किया है कि "जो व्यक्ति किसी तालावकी मरम्मत या उसका

२५०

होन्नूर—कन्नड़

[लगभग शक १०३०=११०८ ई० (फ्लीट) ।]

[कोल्हापुरके पास कागलसे दक्षिण-पश्चिमकी ओर दो मील दूरपर होन्नूरमें जैनमन्दिरके भीतर एक प्रतिमाके अभिषेक-स्थल (पाण्डुक शिला) के सामने यह प्राचीन कन्नड़का लेख है । प्रतिमा खड्गासनस्थ सिरपर सर्पके सप्तफणाधारी छत्रसे मण्डित पार्श्वनाथस्वामीकी है । इसके दोनों कोनोंमें एक-एक झुकता हुआ या बैठा हुआ आकार (मूर्त्ति) है । लेख १¾ इञ्च ऊँची तथा २ फुट ७ इञ्च चौड़ी जगहको घेरे हुए है । यह कोल्हापुरके शिलाहारोंमेंसे वल्लाळ और गण्डरादित्यके समयका है, अर्थात् *लगभग शक १०३० (११०८-९ ई०) के समीपवर्ती है ।*]

लेख

स्वस्ति श्रीमूलसंघद पो(पु)न्नागवृक्षमूलगणद रात्रिमतिकन्तियर गुड्डं बम्मगावुण्डं माडिसिद वसदिगे श्रीमन्महामण्डलेश्वरं वल्लाळदेवनुं गण्डरादित्यदेवन्म(नुम्) आहारदानक्के विट्ट कम्मविन्नूरकं अरुगयि मने..

[स्वस्ति । श्रीमन्महामण्डलेश्वर वल्लालदेव और गण्डरादित्यदेवने श्रीमूल संघके (भेद) पुन्नागवृक्षमूलगणके रात्रिमतिकन्तिके गुड्ड (शिष्य या अनुयायी) बम्मगावुण्डके द्वारा निर्मापित बसदिके लिये, (तपस्वियोंको) आहारदान के लाभार्थ २०० 'कम्म' एवं छः हाथ या ३ गज़का एक भवन दानमें दिया ।]

[IA, XII, p. 102, n° 6, t. & tr.]

निर्माण करता था उसको कुछ भूमि भेंटमें दी जाती थी; इसके सिवाय उस तालावसे फायदा उठानेवालोंसे तालावके निर्माण करनेवालेको उत्पन्न (फसल) का १० वाँ हिस्सा या और कोई छोटा हिस्सा मिलता था । इसीका नाम 'दशवन्न' था ।

२५१

हेव्वण्डे—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न

[वर्ष ३५ चालुक्य-विक्रम=१११० ई०]

[हेव्वण्डेमें, तालावके दक्षिण नष्ट हुए बाँधके पासके पाषाणपर]

श्रीमत्-परम····॥

·········चालुक्याभरणं श्रीमत्-त्रिभुवनमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानम्माचन्द्रार्क्क-तारं सलुत्तमिरे ॥ आतन मगं एरेयङ्ग (४ पंक्तियाँ नष्ट हो गईं हैं) विष्णुवर्द्धन-म·····················एनिसि केतवेर्ग्गडे (६ पंक्तियाँ नष्ट हो गईं हैं) श्री-शुभचन्द्र-देव············ ·········तुण्डरुं वादि-कोळाहळ················स्व-समय-रक्षण-पक्षपाति ·····················एनिसिद कनक····त्रैविद्यसिद्धान्तदेवर शिष्यरप्प मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्डि केतव्वे···············बिट्टि-देवनुं भुजवळ-गंग-पेर्म्माडियुं वम्म-गावुण्डनु नाळ्-प्रभु चाळुक्य-विक्रम-कालद ३५ नेय विकृत-संवत्सरद फाल्गुन-मासद शुद्ध-पञ्चमी बृहवारदन्दु···मुख्य-स्थानवागि···चन्द्रशेखर-वेर्ग्गडे कट्टिसिद केरेय केळगे गळदे कम्म मूवोत्तु आ-केरेय तेङ्कण-कोडियल्लु वेद्दले मत्तरोन्दु मने आरु गाण वोन्दु (हमेशाका अन्तिम श्लोक) श्रीमत् कनकनन्दि-त्रैविद्य-देवर गुड्ड सेनवोव-वोग-देवन बरह ॥ श्री

[जिनशासनकी प्रशंसा। जब (अपनी उपाधियों सहित) चालुक्य त्रिभुवनमल्लका विजयराज्य चारों ओर प्रवर्द्धमान था। (इस स्थानपर होय्सलोंके विवरण हैं, जो कि बहुत घिस गये हैं ।) शुभचन्द्र-देव (से परम्परागत आये हुए) कनकनन्दि-त्रैविद्य-देवके शिष्य, मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवके गृहस्थ शिष्य केतव्वेकी प्रशंसा ।

बिट्टिदेव, भुजवळ-गंग-पेर्म्माडि, वम्म-गावुण्ड (? तथा) नाळ्-प्रभुने, चालुक्य-विक्रम-कालके ३५ वें वर्षमें, जो कि विकृत-वर्ष था, ६ मकान और

१ तेलकी चक्कीके साथ, (उक्त) भूमिका दान किया। हमेशाके अन्तिम श्लोक। यह लेख कनकनन्दि-त्रैविद्य-देवके गृहस्थ-शिष्य, सेनवोव बोग-देवके द्वारा रचा गया।]

[EC, VII, Shimoga tl., n° 89]

२५२

महोवा*—संस्कृत

[संवत् ११६९, फाल्गुन सुदि ८ (१११२ ई०)]

यह लेख संभवतः जयवर्म्मदेवके कालका होना चहिये, जो, जैसा कि इतिहास कहता है, सिर्फ ४ साल बाद, सं० ११७३ में शासन कर रहा था।

[A. Cunningham, Reports, XXI, p. 73, a]

२५३

आलहळ्ळि—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न

[वर्ष ३७ चालुक्य विक्रम=१११२ ई०]

[आलहळ्ळि (होळल्कूर् परगना)में, तलवारके खेतमें पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ॥
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं श्री-पृथ्वी-वल्लभं महाराजाधिराज परमेश्वरं परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिळकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-देवर विजय राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमा-चन्द्रार्क्क-तारम्बरं सलुत्त-मिरे कल्याणपुरद-नेलेवीडिनोळ् सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तिरे तत्पादपद्मोपजीवि।

---

* महोवाके ये (नं० २५२, ३२५, ३३७, ३४१, ३६०, ३६१, ३६५) अतिसंक्षिप्त शिलालेख ए. कनिंघमको भग्न जैन मूर्त्तियोंके चरण-पाषाणपर मिले थे। इनमेंके कुछ शिलालेख बहुत कामके हैं, क्योंकि उनमें जिस समय मूर्त्तिका निर्माण या प्रतिष्ठा हुई थी उसका काल तथा उस समय शासन करनेवाले राजाका नाम, ये दोनों चीजें दी हुई हैं। कुछमें शासक-राजा का नाम नहीं ...त, पर कालका उल्लेख मिलता है, कुछमें वह भी नहीं मिलता।

स्वस्ति समस्त-वस्तु-गुण-भूपणनब्धि-परीत-भूतळ- ।
प्रस्तुत-कीर्त्ति भावभव-मूर्त्ति जया-वनिता-प्रपूर्ण्ण-वृ- ।
त्त-स्तन-हार···वाञ्छित-कल्प-कुजानुसारन- ।
भ्यस्त-कळागम-ज्ञनेने गङ्गरसं सरसं धरित्रियोळ् ॥
विनयाधारमुदारमुन्नति कुळङ्···श्रयनेम्ब् ।
इनितुं शोभिसे शोभे-वेत्तनेनुतं धात्री-तळं कूर्तु-की- ।
र्त्तिने-येय्युं जयदुत्तरंगननशेप-श्री····वर्द्ध-प्रसं- ।
गन्·······वितरण-व्यासङ्गनं गङ्गनम् ॥

अन्तेनिस्ति नेगर्द **नीतिवाक्य-कोङ्गुणिवर्म्म** धर्म्म-महाराजाधिराज **परमेश्वरं कुवळालपुरवराधीश्वरं नन्दगिरि**-नाथं सकळ-गुण-सनाथं मद-गजेन्द्र-लाञ्छनं परिपूर्णाङ्कित-विवुध-जन-मनोवाञ्छनं पद्मावती-लब्ध-वरप्रसादन् मृगमदामोदन् गङ्गकुळ-कुवळय-शरच्चन्द्रं मण्डळिक··द्रं दर्प्पोद्धताराति-मण्डळिक-वनज-वन-वेदण्ड दुर्द्धर-गण्ड नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहित श्रीमन्महामण्डळेश्वरं त्रिभुवनमल्ल **भुजबळ-गंग-पेर्म्माडि-देवर** पट्टमहादेवी ॥

पुट्टिद··अनुजं । **पट्टिग-देवङ्गे गङ्गवाडिगे** तळेदळ् ।
पट्टमनेसेदिरे गङ्गन । पट्ट-महादेवियन्तु नोन्तरुमोळरे ॥
परिवार-सुरभिगन्तर्- । पुर-मुख्य-मण्डनेगे **गङ्ग-मादेविगे** नायकि ।
यरनद्····ओडं सति । दोरे·······नृप·······पडेये ॥
अन्तवर्गे ॥

गङ्ग-कुळ-तिळकरेनिसिद । **गङ्ग-नृपं मारसिंग-नृप गोग्गि-नृपं** ।
तुङ्ग-यशनेनिसिदं **कलिय्** । **अङ्ग-नृपं** नेगर्दरेळेगे कुमाराग्रणिगळ् ॥
कोळालपुर-वरेश-नृ-पाळ-सुतर्म्मद-गजेन्द्र-लाञ्छनररि-भू-
पाळ-कुळ-वनज-वन-शुण्डाळर्न्नेगर्दर् स्समस्त-सु-भटाग्रणिगळ् ॥

अन्तेनिसि नेगर्द्दग ङ्ग-पेर्म्माडि-देवरुं गङ्ग-महादेवियरुं कुमार-वर्ग्गमुं मण्डलि-सासिरदोळ्गणेडेहल्लिय वीडिनोळ् सुख-संकथा-विनोददि राज्यं गेय्युत्तमिरला-महा-मण्डलेश्वरनद्धाङ्ग-लक्ष्मि ॥

श्री-वधु जय-वधु कीर्त्ति- । श्री-वधु वाग्वधुवेनिप्प वधु गङ्ग-नृपङ्ग् ।
ई-वधुवेनिसिद वाचल-देवियोळेणेयेन् वेतुळिद नृप-वनितेयरम् ॥
ई-चतुरम्बुधि-वेष्टित-।भू-चक्रद सतियरेन्नलादडवेनो ।
वाचल-देविगे समन्····।-च-मणि-प्रतति दोरेये चिन्तामणियोळ् ॥
काम-मदेभ-गामिनिगे····नमे पूज्यमेनिप्प पेम्पिनिन्द् ।
ईव····मं तणुपि कल्प-कुजक्केणे························।
द्·······र-दान-गुण-भूषणे दान-विनोदे दान-चिन्-।
तामणि दान-कल्प-लतेयेम्बिदु वाचल-देविगोप्पदे ॥
एरगदराति-भूभुजरनाजियोळञ्जिसि····निजाङ्घ्रिगळग् ।
एरगिसुतिर्प्प दर्प्पद पोड········गण्डनप्प त-।
न्नेरेयन········तनगे गङ्ग-महीभुजनं विलासदिन्द् ।
एरगिसि··भाग्य-भरदुन्नति वाचल-देविगोप्पुगुम् ॥
अन्तुमल्लदे ॥
अरि-विरुद-पात्र-जगदळ । धरेगेल्लं नीने राय जगदळे नानी-।
धरेगेल्लमेन्दु पिरिदा-। दरदिन्द·······सि पात्र-जगदळे-वेसरम् ॥
कुडे राय जगदळे-पेसर- । वडेद्······डेय कडेय वडवुगळीयल् ।
पडेदळ् रायरोळर्प्पं कुडे वाचल-देवि पात्र-जगदळे-वेसरम् ॥
मत्तम् ॥
···········मेवुदे-नडे-तन्न महत्त्व-वृत्तियं ।
वेडदे नोडिरे नेगळद वाचल-देविय कीर्त्ति·······।

आडि दिगङ्गना-नटियरोळ् तणिविल्लदे मत्तविन्तु·····।
··········वीर···पात्र··········मेले पात्रमुम् ॥

मत्तं स्वस्त्यनवरत-परम-कल्याणाभ्युदय-सहस्र-फळ-भोग-भागिनि ललित-करण-गृहीत-भाव-प्रयोगिनि भुजबळ-गंग-भूपाळ-विशाळ-वक्ष-स्थळ-निवासिनि । नृत्य-विद्या-प्रभाव-प्रभूत-निर्म्मळ-यशो-विभासिनि···स्थान-पात्र-मुख-मण्डने । प्रतिपक्ष-गायिका-गान-मान-परिखण्डने । अनवरत-दान-जनित-विबुध-जन-हर्षे । देवा····न····स····तर्ष····। चतुर-विद्या-विनोदे । कस्तूरिकामोदे । अरि-विरुद-पात्र-जगदळे । जिन-गन्धोदक-पवित्रीकृतविनीळ-नीळ-कुन्तळे । निखिळ-कुळ-पाळिका-गीयमान-विशद-यशो-गीति····स्थान····जिन-शासन-साम्राज्य-यशर्-पताके । परोपकार-कमळाकरचक्रवाके । सौभाग्य-सची-देवि श्रीमद्-**बाचल-देवियर् बण्णिकेरेय** त्रिभोगाभ्यन्तर-सिद्धियिन्द कुरवदिनिरप्प ।

जन-नुते **बाचल-देविय**···।
जननिगे सरि दोरे समानमेनल्के केळ-।
वनियोळ् पडवळति···।
जननिय······जननियरेणेये ॥

पडेदोडमे दान-धर्म्म-। कोडल्लु विशेष-व्रतक्कविने नेगळ्द जसं ।
बडेदडव्····मतिगे ।········वसुधा-तळदोळ् ॥

आ-महानुभावेयोडपुट्टिदम् ॥

जिन-पदाम्बुज-भृङ्गं । जिन-समय-सरोजिनी-मार्ता··· ।
··········प्रभ- । वेने नेगर्द **बाहुबलि** धरा-मण्डलदोळ् ।
एळेयं मूरडियं कोट्ट् । अळिपदनव्जो················ ।
············दिन्द्र । इळिसिदपं नम्म बाहु-बलिया-बलियम् ॥

अन्तेनिसि नेगर्द श्रीमद्-वाचल-देवि····हुवलियण्णनु धर्म्म-कार्य्या-ळोचनमनाळोचिसि ॥

ई-भवनंदोळेन्दुं परि- । शोभितं················ ।
······एन्देन्दाहा- । राभय-भैषज्य-शास्त्र-दानमनेसेयल् ॥

माडुव बगेयिं मण्डलि- । नाडोळगण वन्नि······अनुनयदिन्दम् ।
माडिसिदळ् जिन-गृहमं । नाडाडिगळुम्बमेन्दु धरे पोगळ्विनेगं ॥

सङ्घगळोळगिदुत्तम- । सङ्घ····मूल-संगमा-संग-··· ।
तुङ्गं देसिग-गणमा- । सङ्घदोळा········गुड्डि वाचल-देवि ॥

देसदोळुत्तममेनिसुव । देसिग-गणद···माडिसिदळिदम् ।
देसिग-गणक्के मण्डलि- । सासिरकं तिळकमेनिप चैत्यालयमम् ॥

अल्लिगे देसिग-गणदव- । र्गेल्लदे मत्ताव-गणदलार्गेन्देडकूळ् ।
अल्लदे तेजं वोन्दिप- । र्गेल्लददेन्तुं बुधाब्ज-वन-कळ-हंसा ॥

सुर-मनुज-भुजग-भुवना- । न्तरदोळ् मुन्दादविन्नुदिप्पुवाविन्तिम् ।
दोरेये जिन-भवनमल्लेम्- । वर मातु दिटं बुधाब्ज-वन-कळ-हंसा ॥

जळधि-परीत-भू-वळयदोळ् नेगर्दोप्पुव गङ्गवाडि-ना- ।
डोळगे नेगर्त्ते-वेत्तेसेव मण्डलि-नाल्के मुखक्के मूगेनिप्प् ।
अळवियनान्त वन्निकेरेयोळ् नेरेदोप्पुव पार्श्वनाथनीग् ।
अळि-कुळ-नीळ-कुन्तळेगे वाचल-देविगभीष्ट-सिद्धियम् ॥

अन्तेनिसि नेगर्द श्री-पार्श्वनाथ-देवर्गे चालुक्य-विक्रम-वर्षद ३७ नेय नन्दन-संवत्सरद पौष्य-शुद्ध ५ बृहवारदुत्तरायण-सङ्क्रान्ति-यन्दु मण्डलिसासिरद वळिय बाड बूडङ्गेरेयल् वन्निकेरेयल् तळ-वृत्ति गर्दे मत्तर्मूरु तोण्ट मत्तरोन्दु गाणवेरडु पुरद कोलियो····आ-येरडूर-मण्डद सुङ्कवोळगागि यिन्तिनितुमं भुजबळ-गङ्ग-पेर्म्माडि-देवरुं

गङ्ग-महादेवियरं वग्गडे-वाचल-देवियरं कुमार-गङ्ग-रसनुं मार-सिंग-देवनुं गोग्गै-देवनुं कलियङ्ग-देवनुं समस्त-प्रधानर नाड-प्रभु-गळ सन्निधानदल्लु सर्व्व-बाधा-परिहार सर्व्व-नमस्यमागि देवर श्री-पाद-पद्मगळ्दोळ् धारा-पूर्व्वकं माडि बिट्टरु ॥

धरे पुसिवोगदे वेळगी- । धरेयं भुज-बळदिनाळ्द भुजबळ-गङ्गम् ।
परेदिर्के जैन-धर्म्मं । धरेयोळ् चन्द्रार्क-तारमुळ्ळन्नेवरम् ॥
सकलोर्व्वी-स्तुतमप्प धर्म्ममनिदं कादं चिरैश्वर्य-मुम्- ।
मुकनक्कुं विपरीतदिं नडेदवंगा-गङ्गेया-वारणा-
सि-कुरुक्षेत्रदोळेय्दे गो-द्विज-मुनि-स्त्रीयर्क्कळं कोन्द पा-
तकनक्कुं बिडदिर्क्कुमा-पुरुषनेन्तुं रौरव-स्थानमम् ॥

(इसमेंके अंतिम श्लोकके बाद)

शासनमिदावुदेल्लिय । शासनमारित्तरेके सल्लिसुवे नानी- ।
शासनमनेम्व पातक-।ना-सकळं रौरवके गळगळनिळ्गुम् ॥

देवर श्री-पाददोळु धारा-पूर्व्वकदिं पुर-वर्गद सुङ्कवं देवर्गे बिट्टर् बन्निकेरेयल्ल कल्लुकुटिग काळोज देव-दासिगळिगे बिट्ट बेद्दले गळेयल्लु मत्तरोन्दु ॥

श्री-देशी-गण-वार्धि-वर्द्धन- करश्चन्द्रोऽकलंकाङ्कितम् ।
स्थेयान् श्री-मलधारि-देव-यमिनः पुत्रः पवित्रो भुवि ॥
सद्-धर्म्मैक-शिखामणिर् जिनप···चिन्तामणिम् ।
स-श्रीमान् शुभचन्द्र-देव-मुनिपस्सिद्धान्त-रत्नाकरः ॥

श्री-लोक्किगुण्डिय प्रभु एरकण्णं श्री-पार्श्व-देवरंग-भोगक्के बङ्कि-चिन्द-क्षयमागि कोट्ट लोक्किय गद्याणं १ ॥ मत्तं बिट्ट गर्द्दे मत्तरोन्दु बेद्दले मत्तरु मूरु ॥

[जिनशासनकी प्रशंसा। त्रिभुवनमल्ल-देवके विजय-राज्यमें तत्पादपद्मोपजीवी गङ्गरस था; इसको 'जयदुत्तरंग' नाम भी दे रक्खा था। नीतिवाक्य कोङ्गुणिवर्म्म धर्ममहाराजाधिराज परमेश्वर महामण्डलेश्वर त्रिभुवनमल्ल भुजबळ-गंग-पेर्म्माडिदेवकी पट्टरानीने अपने छोटे भाई पट्टिग-देवके लिये गङ्गवाडिका मुकुट धारण किया। तमाम रानियों और राजाओंसे वह ज्यादा प्रतिष्ठित थी।

उन दोनोंके चार पुत्र उत्पन्न हुए—गङ्ग, मारसिंग, गोग्गि, और कलियङ्ग। ये सब महान योद्धा थे।

जिस समय गङ्ग-पेर्म्माडि-देव, गंग महादेवी, और उनके लड़के मण्डलि हज़ारमें अपने निवास-स्थान एडेहल्लिमें थे, उस महामण्डलेश्वरकी एक अन्य अर्द्धाङ्गिनी बाचल-देवी (उसकी प्रशंसा) थी। उसने अपने पतिको 'पात्र-जग-दळे' की उपाधि दी थी।

जिस समय (अनेक उपाधियोंवाली) बाचल-देवी बन्निकेरेमें, अपनी तीसरी पीढीकी खुशीसे विश्रब्ध होती हुई, सुखपूर्वक रहती थी, उसने अपने बड़े भाई बाहुबलीसे परामर्श करके बन्निकेरेमें एक सुन्दर जिनालय बनवाया।

बाचल-देवी मूलसंघ, देशीगणकी गृहस्थ-शिष्या थी। उस देशीगणके लिये उसने चैत्यालय बनवाया। समुद्र-परिवेष्टित लोकमें गङ्गवाडि-नाड् प्रसिद्ध है और उसमें मण्डलि-नाड् प्रसिद्ध है। उसमें चेहरेपर जैसे नाक है उसी तरह बन्निकेरे था। पार्श्वनाथ भगवानके लिये चालुक्य विक्रमके ३७ वें वर्षमें भुजबल-गङ्ग-पेर्म्माडिदेव, गंग-महादेवी, पेर्गडे-बाचल-देवी, और कुमार गङ्गरस, मारसिंग देव, गोग्गि-देव, कलियङ्ग-देव, और तमाम मन्त्रियोंने, नाड्-प्रभुओंकी उपस्थितिमें सब करों एवं चुङ्गियोंसे मुक्त, मण्डलि-हज़ारके बूदङ्गेरे, बन्निकेरेकी कुछ ज़मीन, एक बगीचा, दो कोल्हू, और उन दोनों शहरोंकी कुछ चुङ्गीकी आमदनीका दान किया। आशीर्वचन और शाप। पाषाण-शिल्पी काळोज (शासनके उत्कीर्ण करनेवाले) का नर्त्तकियोंके लिये दान। शुभचन्द्र-देव-मुनिपकी प्रशंसा। लोक्किगुण्डि प्रभु एरेकण्णने भगवानके भोगके लिये ५½ लोक्कि गद्याण, तथा कुछ भूमि दान की।]

[EC, VII, Shimoga tl., n° 97]

२५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१

श्रवणबल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड़

(देखो जैनशिलालेखसंग्रह, प्रथम भाग ।)

२६२

मत्तावार—कन्नड़-भग्न

[शक १०३८=१११६ ई०]

[मत्तावार पार्श्वनाथ बस्तिके प्राङ्गणमें एक पाषाणपर]

स्वस्ति श्री सक-वरुष १०३८ नेय दुर्मुकि-संवत्सरद चैत्र-मासद कृष्ण······यादिवार········चेदळ्ळियु मायन····मग मावण्णन शिष्यरुं सन्यसन गेय्दु मुडिहिद निसिदि ।

[(उक्त मितिको), मायनका पुत्र और मावण्णका शिष्य सन्यसन (संन्यास=समाधि) धारण करके मर गया । उसका यह स्मारक है ।]

[EC, VI, Chikmagalūr tl., n° 51]

२६३

तिप्पूर—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक सं० १०३९=१११७ ई०]

[तिप्पूर (कुलगेरी-प्रदेश)में, गाँवके उत्तर-पूर्व, पहाड़ीपर]

भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधानहेतवे ।
अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फोटनाय घटने पटीयसे ॥
श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
स्वस्ति होय्सल-वंशाय यदु-मूलाय यद्भवः ।
क्षत्र-मौक्तिक-सन्तानः पृथ्वी-नायक-मण्डनम् ॥
स्वस्ति श्रीजन्मगेहं निभृत-निरुपमौर्वानळोद्दाम-तेजं ।
विस्तारोपात्त-भू-मण्डलममल-यशश्चन्द्र-सम्भूति-धामं ॥

वस्तु-त्रातोद्भव-स्थानकमतिशय-सत्त्वावलम्बं गभीरं ।
प्रस्तुत्यं नित्यमम्भोनिधिनिभमेसेगुं **होय्सळो**र्व्वीश-वंशम् ॥
अदरोळ् कौस्तुभदोन्दनर्घ्य-गुणमं देवेभदुद्दाम-स-
त्त्वदगुर्व्वं हिम-रश्मियुज्वल-कला-सम्पत्तियं पारिजा-
तदुदारत्वद पेम्पनोर्व्वने नितान्तं ताळ्दि तानल्ते पु-
ट्टिदन् उद्वेजितवीर-वैरि **विनयादित्या**वनी-पालकम् ॥
विनयादित्यनृपं सज्जनगं दुर्ज्जनर्गमात्मविनयं तेजं ।
जनियिसे नयमं भयमं । विनूत नाळ्दों विशालभूमण्डलमं ॥
आ-विनयादित्य-वधु । भावोद्भव-मन्त्र-देवता-सन्निभे सद्-
भाव-गुण-भवनमखिलकलाविलसिते **कयेळेयब्बरसि** येम्बळु पेसरिं
आ-दम्पतिगे तनूभवन् । आदं शचिगं सुराधिपतिगं मुन्नन्तु ।
आदं जयन्तन् अन्ते वि-। षाद-विदूरान्तरङ्गन् **एरेयङ्ग-नृ**पं ॥
एरेयन् अखिलोर्विग् एनिसिर्द्द । एरेयङ्ग-नृपाल-तिलकन् अङ्गने चलिवग्-।
एरेवट्ट शील-गुणदिं । नेरेद् **एचल-देवि**य् अन्तु नोन्तरुमोळरे ॥
एने नेगळ्द् अवरिर्व्वर्गं । तनूभवर् नेगळदर् अल्ते **वल्लाळं विष्णु-**
नृपाळकन् उदयादि- । त्यनेम्ब पेसरिन्दमखिळ-वसुधातळदोळ् ॥
अवरोळ् मध्यमनागियुं धरणियं पूर्व्वापराम्भोधिय् ए-
य्दुविनं कुडे निमिर्च्चुवोन्दु निज-बाहा-विक्रम-क्रीडेयु-
द्भवदिन्दुत्तमनादनुत्तमगुणव्रातैक-धामं धरा-
धव-चूडामणि यादवाब्ज-दिनपं श्री-**विष्णु**-भूपालकम् ॥
॥ कं ॥ एळेगेसेव **कोयतूर्** तत्-। **तळवनपुर**मन्ते रायरायपुरम्बळ्-
पळ बळेद विष्णु-तेजो-। ज्वळनदे वेन्दवु वळिष्ठ-रिपुदुर्ग्गङ्गळ् ॥
स्वस्ति समधिगत-पञ्चमहाशब्दं महामण्डलेश्वरं **द्वारावती-पुरवरा-**

धीश्वर यादवकुळाम्बरद्युमणि सम्यक्त्व-चूडामणि मलपरोळ्-गण्डाद्यनेक-नामावली-समलङ्कृतरु अप्प श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल तलकाडु-गोण्ड भुज-बळ **वीरगङ्गविष्णुवर्द्धन-होय्सल-देवर**-विजयराज्यप्रवर्द्धमानमाच-न्द्रार्कतारं सलुत्तिरे तत्पादपद्मोपजीवी ॥

जनताधारनुदारनन्यवनितादूरं वचस्सुन्दरी-
घन-वृत्त-स्तन-हारनुग्र-रण-वीरम्मारनेनेन्द्रप ।
जनकं तानेने **माकणब्बे** विबुध-प्रख्यात-धर्म्म-प्रयु-
क्ते निकामात्त-चरित्रे तायेनलिदेनेचं महा-धन्यनो ॥

उत्तमगुणततिवनिता। वृत्तियनोळकोण्डुदेन्दु जगमेल्लं कै-
ग्येत्तुविनममळ-गुण-संन पत्तिगे जगदोळगे **पोचिकब्बेये**
नोन्तळ् ॥

अन्ते निसिदेचि-राजन **पोचिकब्बेय** पुत्रं श्रीमन्महाप्रधानं दण्डनायकं द्रोहघरट्ट **गङ्गराजं** चोळन-सामन्तर् **इडियमं** मोदलागि तळकाड-वीडिनोळ् पडियिप्पन्तिर्द्दु चोळं कोट्ट नाडं कुडदे कादि कोळ्ळिमेने विजिगीषु- वृत्तियिन्देत्ति बलमेरड्डु सार्चिदल्लि ॥

इत्तण भूमि-भागदोळ् अदन्यरदेके भवत्प्रताप-सं-
पत्तिय वर्ण्णना-विधिगे **गङ्ग**-चमूप-जिगीषु-वृत्तियिन्द् ।
एत्तिद निन्न कय्य निशितासिय तेमोने वेन्न-वारनेत्-
तुत्तिरे पोगि कञ्चि-गुर्रि-यप्पिनमोडिद **दामनेयूदने** ॥

आन् ओन्दे-मेय्योळ् एय्दि **नरसिंग-वर्म्म**-मोदलाद चोळन-सामन्तर् एल्लरं वेङ्कोण्डु **नाड्** आदुदू एल्लमनेक-च्छत्रम्माडि कुडे कृतज्ञ **विष्णु** नृपति मेच्चिदेम् वेडिकोळ्ळिमेने ॥

अवनिपनेतगित्तपनेन्-। दवरिवर-बोलुळिद वस्तुवं वेडदे भू-
भुवनम्बणिसे तिप्पूर । वृत्तियं वेडिदं जिनार्च्चन-लुब्धम् ॥
अन्तु वेडि कुडे पडेदु गाजल्लरु-कुडुगेरेय् ओळगाद तिप्पूर

वृत्तियं शकवर्ष १०३९ नेय हेमण(ल?)म्बि-संवत्सरद उत्तरायणसंक्रमणदन्दु तम्म गुरुगळु श्रीमूलसङ्घद काणूरग्गणद तिन्त्रिणिक गच्छद श्रीमन्मेघचन्द्र-सिद्धान्त-देवर कालं कर्च्चि धारापूर्व्वकं माडि बिट्ट दत्ति ॥

प्रियदिन्दितिदनेय्दे काव पुरुषर्ग्गायुं महाश्रीयुं अक्-
के इदं कायदे काय्व पापिगे कुरु-क्षेत्रोर्व्वियोळ् वाणरा-
सियोळ् एक्कोटि-मुनीन्द्ररं कविलेयं वेदाढ्यरं कोन्ददोन्द्-
अयसं सार्ग्गुमिदेन्दु सारिदपुव् ई-शैलाक्षरं सन्ततं ॥

[EC, III, Malavalli tl., n° 31]

[जिनशासनकी प्रशंसाके बाद पोय्सल राजाओंके वंशकी प्रशंसा। इसी वंशमें विनयादित्य उत्पन्न हुआ उसकी प्रशंसा। उससे और उसकी पत्नीसे एरेयङ्ग उत्पन्न हुआ। उसकी पत्नी एचलदेवी। उनसे बल्लाल, विष्णु, और उदयादित्य उत्पन्न हुए। उनमेंसे बीचके विष्णुने पूर्व समुद्रसे पश्चिमतक सारी पृथ्वीपर कब्जा किया। उसके पराक्रमकी ज्वालाओंसे मजबूत छोटे शाही किले कोयतूर, तलवनपुर (जो कि रायरायपुरका ही दूसरा नाम है) नष्ट हो गये।

उस समय वीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन होय्सलदेव अपनी चरमोन्नतिपर पहुँच कर राज्य कर रहे थे। एचि-राजाके पिता मार, माता माकणब्बे और पत्नी पोचिकब्बेकी प्रशंसा। उनके पुत्र महाप्रधान एवं दण्डनायक गङ्गराज हुए।

चोलके अधीनस्थ शासक इडियम और दूसरे लोगोंने जब चोल राजाके दिये हुए प्रदेशको देनेसे इन्कार कर दिया तब गङ्ग-चमूप (गङ्गराज) ने उनसे वे प्रदेश लड़ाई लड़कर ले लिया। अकेले ही गङ्गराजने नरसिंग-वर्म्म और

चोलके अधीनस्थ अन्य वनाम विपक्षी शासकोंको भगा दिया और नाड देशको एक छत्रके नीचे लाकर विष्णुवर्धनको सौंप दिया, जिसपर उसने गङ्गराजसे अपनी इच्छाके माफिक कोई वर माँगनेको कहा। उत्तरमें गङ्गराजने तिप्पूर माँगा।

इस प्रकार इच्छानुसार माँगे हुए और दिये हुए तिप्पूरका, जो कि गावरूरु और गौडुनेरींके बीचमें है, मूलसंघ, काणूर गण और तिन्त्रिणिक-गच्छके मेघचन्द्र-सिद्धान्त-देवको दान कर दिया।]

२६४

चामराजनगर—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०३९=१११७ ई०]

[चामराजनगरमें, पार्श्वनाथस्वामीकी बस्तीके एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं द्वारावतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि मलेराजराजाद्यनेकनामा-वलीसमलंकृतरप्प श्रीमद्भुजबल वीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन बिट्टिग-होय्स-ल-देवरु गङ्गवाडि-तोम्भत्तरु-सासिर कोङ्गाळिगि एकच्छत्रछायेयिं तलेकाडलु कोळाल-पुरदलु सुख-सङ्कथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे।

श्रीमत्स्वामिसमन्तभद्रमुनितो देवाकलङ्कस्ततः
श्रीपूज्याङ्घ्रिरिहाय वृत्तनिलयो श्री-वादिराजान्तुवौ।
आचार्यो द्रविडान्वयो जिनमुनिश्श्रीमल्लिषेणव्रती
श्रीपालः परिपालिताखिलमुनिस्तोऽनन्तवीर्यक्रमः ॥
जिनमिष्ट-देवनजितं। मुनिपति गुरु पोय्सलेशनाडनेनल् सद्
विनुतं माडिसिदं श्री-। जिनगृहमं पुणसु-राज-दण्डाधीशं ॥

मित्र-कुलाब्धि-वर्द्धन-सुधांशु विरोधि-वलान्तकं महा-
मात्य-कुलोद्भवं सकळशासनवाचकचक्रवर्त्ति लो-
कत्रयवर्त्तिकीर्त्ति **पुणिसम्म**-चमूपनवङ्गे शुद्ध-चा-
रित्रे पवित्रे पोचले मनः-प्रिय-वल्लभे तत्तनूभवर् ॥
चावणनाश्रितामर-महीरुहनुद्धतमन्त्रिमन्त्रविद्-
रावणनातनिं किरिय कोरपनन्वितसत्कळा-कळा- ।
पावृत-वोधनाततनुजं सुजनाग्रणि नागदेवना-
ज्ञावनतान्य-मन्त्रि-निचयं कविताग्रुण-पङ्कजासनम् ॥
पुणिस-चमूपनेम्बेसेव शासन-वाचक-चक्रवर्त्तिगेन्-
तेणिसलोडं पोगर्त्ते तनगागिरे पुट्टिद **चामराज** ना-
कण कुमरय्यनेम्ब रतुन-त्रय-मूर्त्तिय पुत्रनोप्पिदं ।
पुणिसम-दण्डनाथनुदितोदित-चाम-चमूप सम्भवम् ॥
अवरोळगे पिरिय चावन । युवतियरप्परसिकव्वेगं चौण्डलेगं ।
भुवन-प्रसिद्धरात्मोद्- । भव [रादर् पु] **पुणिस**मय्यनुं बिट्टिगनुं
कोळनेन्तम्भोजमुणमल् नलिदु महिमे-वेत्तिप्पुवन्तागळु श्री- ।
निळयं विख्यातवृत्तं **पुणिसे**गनवनिं बिट्टिगं पुट्टे मित्रर्-
गळिगेल्लं सप्प्....उद्भविसितखिळ-भव्य-व्रजं नाडेयुं निश्-
चळ-चेतोजातरादर्द्धरेयोळेसेदुदन्ता-महामात्य-गोत्रम् ॥
चावङ्गं सत्प्रियदिं । भावकियेनिपरसिकव्वेगं सुतनोगेदं ।
केवळमे नेगर्द पोय्सल- । भू-वनितेश्वरन सन्धिविग्रहि **पुणिसं** ॥
तोदवनदिर्प्पि **कोङ्गर**नडङ्गिसि **पोलुवरं** पोरळ्चि मा- ।
णदे **मलेयाळ**रम्मडिपि **काळ**-नृपालन तोळ विक्रमम् ।
चेदरिसि पोकु नील-सिळेयं जयलक्ष्मिगे कीर्त्ति[...] मा-

डिद विभु विट्टि-देवन महा-सचिवं पुणिसं बळाधिकम् ॥
अदटिं पोय्सळ-भूपनोर्म्मे वेस····नीळाद्रियं कोण्डु तन्न- ।
ओदविन्दं मलेयाळरं कदनदोळ् वेङ्कोण्डु तत्साहसा- ।
भ्युदयं कैकोळे केरळाधिपतियागिर्द्दिम् बयल्-नाडनं ।
पदपिं काणिसि कोण्डनिन्तु पुणिस-श्री-दण्डनायाधिप ॥
केट्ट नियोगि विट्टु मोदलिल्लदे बन्द कृपीवलं मोदल् ।
गेट्ट किरातनोळगिसल्लारदे सेवकनागे गेट्टुदम् ।
कोट्टु निरन्तरं जगमनिन्तभिरक्षिसुतिर्प्प पेम्पोडम्-
बट्टिरे दण्डनाय-पुणिसं नेगळ्दं भुवनान्तराळदोळ् ॥
दरमिर····लीयदे गं- । गर परियिं गङ्गवाडि-तोम्भत्तरु-सा-
सिरद बसदिगळनाळङ्करिसिदपं पुणिस-राज-दण्डाधीशम् ॥

स्वस्ति श्रीमतु सक-वरुष १०३९ नेय दुर्म्मुखी-संवत्सरद जेष्ठबहुळ १ व मूलार्कवारदन्दु तुलासिय बृहस्पति-लग्नदलु एणेनाड अरकोत्तारदलु श्री-सन्धि-विग्रहि दण्डनायकपुणिसमय्य माडिसिद त्रिकूटद-बसदियोळगागि बसदिगळ्गे बिट्ट गद्दे आ-ऊर हडुवलु अणगनारेय-गेरेय केळगे········खण्डुग हट्टके गुळि १००० आ-ऊर तेङ्कण हेग्गेरेय कीळ्केरियलु गद्दे खण्डुग ऐदके गुळि ५०० बेद्दले········हरदरि खण्डुग एरडक्के ९ गुळि ४००० आ-ऊर हळ्ळि सहित जक्किकोळग धर्म्म-गोळ दान-गोळग कळदु······गुळि ओन्दु होरें गाणदलोम्मान एण्णे तोण्टद गुळि १०० आ-ऊर बडगण कोडेयनहळ्ळि सहित······पुणिस-जिनालयक्के धारा-पूर्व्वक माडि बिट्ट दत्ति (रीतिके अनुसार अन्तिम श्लोक)

वसदिगे बिट्टी-धर्म्मम- । नू ओसेद्गु करं सलिसदिर्द्दं····।
····················।····ब्राह्मणन कोन्द गति समनिसुगुं ॥

[जिनशासनकी प्रशंसा या स्तुति । इस समय अनेक पदोंसे अलङ्कृत वीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन बिट्टिग-होय्सलदेव कोङ्गु तककी गङ्गवाडि ९६००० की जमीनके ऊपर तलकाड और कोळाल-पुरमें सुखसङ्कथा-विनोदसे राज्य कर रहे थे ।

समन्तभद्र, देवाकलङ्क, पूज्यपाद, वादिराज, द्रविड़ान्वयके मल्लिषेण, श्रीपाल, और अनन्तवीर्य (इनका वर्णन किया गया है)। पुणस-राज-दण्डाधीशके देव जिन थे, गुरु अजित मुनिपति थे, और पोय्सळ राजा उनका शासकथा। उन्होंने एक जिनमन्दिर बनवाया। पुणिसम्मकी पत्नी पोचले थी। उनके पुत्र चावण, कोरप, और नागदेव थे। उनको क्रमसे चामराज, नाकण, और कुमरय्य भी कहते थे । वे रत्नत्रयमूर्तिके समान थे । उनके ज्येष्ठ पुत्र चावण तथा उनकी पत्नियों अरसिकव्वे और चौण्डलेसे पुणिसमय्य और बिट्टिग उत्पन्न हुए। चावन और अरसिकव्वेका पुत्र पोय्सळ राजाका सान्धि-विग्रहिक मन्त्री पुणिस हुआ। बिट्टिदेवका महा-सचिव पुणिस था। बिट्टिदेवने तोद लोगोंको डरा रक्खा, कोङ्ग लोगोंको भूगर्भमें भगा दिया, पोलुव लोगोंको कत्ल कर डाला, मळेपाळ लोगोंको मार डाला, काल नृपतिको भयभीत कर दिया और नील-पर्वतपर जाकर उसकी चोटीको जयलक्ष्मीके स्वायत्त कर दिया । पुणिस-दण्डनाथाधिपने एकवार पोय्सल राजाकी आज्ञा मिलनेपर नीलाद्रिपर कब्जा कर लिया और मळेयाल लोगोंका पीछाकर उनकी सेनाको कैदी बना लिया और इस तरह वह केरलाधिपति बन गया और इसके बाद फिर खुले मैदानमें आ गया। जो व्यापारी बिगड़ गये थे, जिन किसानोंके पास बोनेके लिए बीज नहीं था, जिन हारे गये किरात-सरदारोंके पास कुछ भी अधिकार नहीं रह गया था और जो उसके नौकर हो गये थे, तथा सबको जिसका जो-जो नष्ट हो गया था वह सब उसने दिया और उनके पालनणमें मदद की । बिना किसी भय-सञ्चारके, गङ्गोंकी ही तरह, उसने ·· ९६००० की वसदियोंको शोभासे सज्जित किया।

एण्णे-नाड्के मरकोट्टारमें अपने द्वारा बनवाई गई त्रिकूट बसदिकी बसदियोंके लिये उसने भू-दान किया।]

[EC, IV, Chamarajnagar tl., n° 83.]

२६५

मुगुलूर—कन्नड़

[वर्ष हेमलम्बी [१११७ ई० ? (लू० राइस)]

(इस लेखकी पहली १२ पंक्तियाँ इसी नामके तालुकेके २८० वें लेखकी पंक्तियोंसे मिलती हैं)

............पुष्पसेन-सिद्धान्त-देवरु अवर शिष्यरु वासुपूज्य-देवरु हेमलम्बि-संवत्सरद वैशाख-बहुल त्रयोदशी-बुधवारदन्दु सल्लेखन-संनासि-मरणदिं मुडिपि स्वर्गक्के सन्दरु मंगलमहा श्री श्री श्री

[द्रमिल संघान्तर्गत नन्दिसंघके अरुङ्गलान्वयकी प्रशंसा। पुष्पसेन-सिद्धान्त-देवके शिष्य वासुपूज्य-देवने (उक्त मितिको), सल्लेखना धारण करके, देहत्याग किया और स्वर्गको पहुँचे।]

[EC, V, Hasan tl., n° 131.]

२६६

हळेबीड—संस्कृत कन्नड़-भग्न

[काल लुप्त, लगभग १११७ ई०]

[इसका लेख नहीं है, मात्र 'Mysore ins. Translated' में नं० ११७ के शिलाशासनमें लुई राइसके द्वारा अनुवाद[1] दिया हुआ है]

[लेखमें सर्वप्रथम जिनेश्वर पार्श्वनाथको लक्ष्य करके मङ्गलाचरण है। पश्चात् राजा विष्णुवर्द्धन और उसके मन्त्री गङ्गराजकी प्रशंसा है।]

[Mysore ins. translated, n° 117, tr.]

---

१ अनुवाद लम्बा होनेसे मूल लेख भी लम्बा मालूम पड़ता है।

२६७

निदिगि—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न

[वर्ष ४२ वि. चा०=१११७ ई०]

[निदिगि (बिदरे परगना)में, दोड्डमने नविलप्प-गौडके खेतमें एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-त्रिभुवन-मल्लदेवर विजय-राज्यमु····त्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारं-बरं सलुत्तमिरे । तत्पादपद्मोपजीवि ।

उत्तममप्प·····················तोम्- ।
भत्तरु-सासिरं विषयमाप्तननिन्द्य-जिनेन्द्रनाजि-रन् ।
गात्त-जयं जयं जिनमतं मतमागिरे सन्ततं निजो- ।
दात्ततेयिन्दमा-दडिग-माधव-भूभुजराळ्दरुर्व्वियम् ॥
उत्तर-दिक्-तटावधिगे तागे म····मूड तोण्डे-ना- ।
डत्तपराशेगम्बुनिधि चेर्वोळेयिप्प····कोङ्गु म- ।
त्तिसोळगुळ्ळ वैरिगळनिक्कि परावृत गङ्गवाडि-तोम् ।
बत्तरु-सासिरं-दले माडिदरिन्तुट्टु गङ्गरुज्जुगम् ॥

····गंगर्नि भय- । मिल्लद हरिवर्म्म विष्णु-नृपर्नि निजर्दि ।
बले तडङ्गाल्-माधव- । नल्लि वलि चुर्च्चुवाय्द-गङ्ग-नृपाळं ॥
तिपुरुषं शिवमारं । भूपाळकृतान्त भूपना-सयिगोट्टम् ।
: ि.५ ळारि-नृप- । कोपानल-शिखेयेनिप्प विजयादित्यम् ॥

म-येरिद मारसिङ्गना- । कुरुळ-राजिगं पेसर्वेत्ता- ।
मरुळं तन्नृप-तिळकन । पिरियमगं सत्यवाक्यनचळितसौर्य्यम् ॥
गर्व्वद-गं····वसुवेयो- । ळोर्व्वने कलि चागि शौचि गुत्तियगङ्गम
दोर्व्विक्रमाभिरामन- । गुर्व्विन कलि राचमल-भू-नृप-तिलकम् ॥
तेङ्गं मु····हसिय कौ- । बुङ्गं पिड्डिदडसि कोळ्वना-मद-करियं
पिङ्गद निलिसुव साहस- । तुंगं केवळमे नेगळ्द रकस-गङ्गम् ॥
इन्तीनिसि नेगळ्द गङ्ग-वंशोद्भवरोळा-द्डिगन मगं चुच्चुवाय्द-गङ्ग
नातन सुतं दुर्व्विनीतनातन तनेयं श्रीविक्रमनातन पुत्रं भूविक्रमं ।
तत्सूनु श्रीपुरुप-महाराजम् । तत्-तनेयं सिवमार-देवम् । तत्-तनू-
भवनेरेय····तत्पुत्रं बूतुगवेम्र्मांडि । तदात्मजं मरुळ-देवं । तदनुज
गुत्तिय-गङ्गनातन मर्म्मं मारसिंग-देवनातन···गं क····ग-
देवनातनमगं वर्म्म-देवनिन्तु गंग-वंशोद्भवरु राज्यं गेय्ये ।
दक्षिण-देश-निवासी गङ्ग-मही-मण्डलिक-कुल-संधरणः ।
श्री-मूलसंघ-नाथो नाम्ना श्री-सिंहनन्दि-मुनिः ॥
श्री-मूलसंघ-वियदमृ- । तामळ-रुचि-रुचिर-कोण्डकुन्दान्वय-ल- ।
क्ष्मी-महितं जिन-धर्म्म-ल- । लामं क्राणूर्ग्गणं जनानन्द-करम् ॥

आ-गणदन्वयदोळु ।

मणिरिव वनराशौ मालिकेवामराद्रौ
तिळकमिव ललाटे चन्द्रिकेवामृतांशौ ।
इव सरसि सरोजे मत्त-भृङ्गी-निकायः
समजनि जिनधर्म्मो निर्म्मलो वाळचन्द्रः ॥

अवर शिष्यरु ।

विमल-श्री-जैनधर्म्माम्बर-हिमकरनुद्यत्-तपो-राज्य-लक्ष्मी- ।

रमणं भूमण्डलाधीशनुमुभय-सिद्धान्त-रत्नाकरं जं- ।
गम-तीर्थं भव्य-वक्त्राम्बुज-खरकिरणं श्री-प्रभाचन्द्र-सिद्धा- ।
न्त-मुनीन्द्रं क्षीर-नीराकर विशद-यशो-वेष्टिताशा-विभागम् ॥

अवर शिष्यरु ।

गुणियेने जिनमत-रक्षा- । मणियेने कवि-गमक-वादि-वाग्मि-प्रवरा-
ग्रणियेने पण्डित-चूडा- । मणियेने गुणनन्दि-देवरेसेदर्द्धरेयोळ् ॥

तत्-सधर्म्मरु ।

अळवे पेळ् नुडियल्के ··· त्रिरुदं माण् माणेले सांख्य वा- ।
ग्बळमं नच्चदे नीनडङ्गेडरदिर् चार्वाकनैय्यायिका ।
मलेयल् वेडिरु मट्टमेके चलदिन्दी-वन्दपं केम्मनण्- ।
डलेयल् श्री-गुणचन्द्र-देवनमळं वादीभ-कण्ठीरवम् ॥

तत्सधर्म्मरु ।

गङ्गा-वारि-सु-शैवलं सुर-करी दानार्द्र-गण्ड-स्थळः ।
शम्भुः कण्ठ-विलग्न-घोर-गरळश्चन्द्रः कळङ्काङ्कितः ।
कैलासो वन-वल्लरी-परिवृतस्साम्यं कथं वच्म्यहम् ।
कीर्त्या. सह माघनन्दि-यमिनश्चन्द्रातपोघच्छ्रिया ॥

आ-चारित्र-चक्रेश्वर-मुनि-राज-राजनं शिष्यरु ॥ स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द-महा-कल्याणाष्ट-महा-प्रातिहार्य-चतुस्त्रिंशदतिशय-विराजमान-भगवदर्हत्परमेश्वर-परम-भट्टारक-मुख-कमल-विनिर्गत-सदसदादि-वस्तु-स्वरूप-निरूपण-प्रवण-सिद्धान्तामृत-वार्द्धि-वार्द्धैत-विशुद्धेद्ध-बुद्धि-समृद्धरुं सकळ-भुवन-प्रसिद्धरुं शम-दम-यम-नियम-नियमितान्तःकरणरुं वाक्सुन्दरी-स्तन-मण्डन-रत्नाभरणरुमप्प श्रीमत्प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवरेन्तेन्दडे ।

आशीदाशान्तराळ-प्रथित-पृथु-यशो-व्योम-गंगा-तरंगः ।
चञ्चच्चारित्र-धात्री-भवदति-ललितोदार-गम्भीर-मूर्त्तिः ।
वाक्-कान्तोत्तुंग-पीन-स्तन-कळश-लसन्नूत-चूत-प्रवाळः ॥
सिद्धान्त-क्षीर-नीराकर-हिमकिरणश्श्री-प्रभाचन्द्र-देवः ॥

अभिनव-गणधर-रूपं । त्रिभुवन-जन-विनुत-चरण-सरसिरुह-भृङ्गं ।
शुभ-मति-त्रैविद्यास्पद-। नुभय-कवीन्द्रोत्तमं प्रभाचन्द्र-बुवम् ॥

अवर सधर्म्मरु ।

शशि-विशद-कीर्त्ति निर्म्मद-नमदृश-गुण-रत्न-वार्धि श्रमणर्ग्गणसद्-
विसरुह-वनार्कनेम्बुदु । वसुमतियोळनन्तवीर्य्यसिद्धान्तिगरम् ॥

तत्सधर्म्मर ।

मन-वचन-काय-गुप्तिय-। ननुनयदिं तळेदु पञ्च-समितिय वशदिन्-।
दनुवशनाद तपोनिधि । मुनिचन्द्र-व्रतिपनखिळ-राद्धान्तेशम् ॥

इन्तेनिसि नेगर्त्तेयं तळेद श्रीमत्-प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्डं भुज-बळ-गंग-पेर्म्माडि-वर्म्म-देव ।

वळ्वद-वैरिगळं पडल्पडिसि गेल्दुम्राजियोळ् माण्दने ।
चलदिन्दं परिविट्टु वैरि-पुरमं तत्-कोटेयं तद्-मही-।
तळमं कोण्डु धरित्रि वणिगसुविनं श्री वर्म्म-देवं सहीं-।
तळमं तोळ्-वलदिं निमिर्च्चिदनिदेम् पेर्म्माडि शौर्य्यात्मनो ॥

भरदिन्दान्तदटङ्गं । शरणेन्द नृपङ्गवेरदु वन्द नरङ्गम् ।
सुरगिरि वज्रागारं सुर-भूजं वर्म्म-देवनदटरदेवम् ॥

इन्तेनिसिद वर्म्म-देवन पट्ट-महादेवियेन्तेन्दडे ।

जिनेन्द्र-पादाम्बुज-मत्त-भृङ्गी गुणावली-भूषण-भूषिताङ्गी ।
नितम्बिनीनां कळशायमाना विराजते गङ्गमहाधिदेवी ॥

निजवेनिपी-नेगर्त्तेय महागतिगुत्सत्रमं निमिर्च्चुत्रा-।
त्मजरेनिसिर्द तम्मुतोडहुट्टिदरोप्पुव मार········।
स-जयदे सत्य-गङ्गनृपनुं कलि-रकस-गङ्ग-देवनुं ।
भुजवळ-गङ्ग-भूभुजनुमार्ज्जिसिदर्ज्जसमं निरन्तरम् ॥
स्थिरने मेरु-गिरीन्द्रनोळ् सेणसुवं गम्भीरने वार्धियोळ् ।
पुरुडिप्पं कलिये सुरेन्द्र-सुतनं मेचं महा-चागियें ।
सुर-भूजक्कोरे-गट्टुवं चदुरने पाञ्चाळनं गेल्दनन्-।
दिरदी-धारणि वण्णिकुं रण-जय-प्रोत्तुंगनं गङ्गनम् ॥
नुडिदुदे नन्नि माडिदुदे शासनमित्तुदे राम-रेसु मार्-।
प्पिडिदुदे वज्र-लेपमुरदिर्द्दुदे मृत्यु परोपकारदोळ् ।
नडेदुदे वट्टे सद्गुणमे मेय्येने निन्नवोलिन्तु नीतियोळ् ।
नडेव नृपेन्द्रनावनिळेयोळ् कलि-गंग-भूपती ॥

आतन तम्मम् ।
गज-रिपु-विष्टरादि-विभवोदय पार्श्व-जिनेन्द्र-पाद-पं- ।
कज-मद-भृङ्ग-गङ्ग-कुळ-मण्डन-दण्डित-वैरि-वर्ग्ग भा- ।
वजनिभ-मूर्त्ति दिग्वलय-वर्त्तित-कीर्त्ति समस्त-धात्रियोळ् ।
भुजवळ-गङ्ग-भूप निनगार् दोरे मण्डळिकैक-भैरव ॥
आतन-पट्ट-महादेवि ॥

पट्टद····रननुजं । पट्ट····भूपङ्ग गङ्गवाडिगे तळेदळ् ।
पट्टमनेन्दडे गङ्गन । पट्ट-महादेवियन्तु·············· ॥
गङ्ग-महादेवियग्गं भुजबळ-गङ्ग-देवनग्र-तनूजनेन्तेन्दडे ।
कलियनदिर्द्दे····एन्दु निमृदेत्तिद वाहुवे········ ।
····छळद्··············मरे·······सले········ ।

····नासे· गेयन्····अळवि·······नन्नियगङ्गनिन्तु मण्डळिक।
····प्रद····वेसरं देसेयन्तु वरं निमिर्च्चिद॥
····दाज्ञाल्ते पर्व्वि-देण् देसेयोळं त्रिभुजय-स्तम्भवन्त्।
इवेनल् दिग्गजवर्त्ति···········कट्टल् केट्टिदुत्तंग-हम्-॥
तवनान्तन्य-वळके दोर्प्प-नेवदिं कोदण्डदत्तङ्ग नी-।
ळुव नीन. ये गङ्गनात्मकर····संग्राम-रङ्गाग्रदोळ्॥
जस··············अखिळाशा-देवनापाङ्ग-रश्-।
मि-सहस्रं चमरं करीन्द्र-रिपु····विक्रमं········आ-।
गे सुसार्म्राज्य····ताभिवृद्धि विभवं मेच्चुत्तिरल्····।
········इरे सत्य-गङ्गनेसेदं विश्वावनी-भागदोळ्॥

स्वस्ति सत्यवाक्य-कोङ्गुणिवर्म्म धर्म्म-महाराजाधिराज परमेश्वरं कुवळाळपुरवराधीश्वरं नन्दगिरि-नाथ········मद-गजेन्द्र-लाञ्छनम् चतुर-त्रिरिश्वनं पद्मावती-देवी-लब्ध-वर-प्रसादं विचकिळामोदं नन्निय····त्तरंग गंग-कुळ-कुवळय····वेन्द्रं दर्प्पोद्धताराति-वनज-वन-वेदण्डं कुसुम-कोदण्डं गण्डरगण्डं डुट्टरगण्डं नामादि-समस्त·······श्रीमन्नन्निय-गङ्गं नेळ्वीडिनल्लु सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तिरे श्रीमतु कळंबूरु-नगराधिपति पट्टणस्थ···········माडिसिद वसदियेन्तेन्दडे।

इद्दु भू-देवते होत्त होङ्गळ्शमो श्रेवसुवा-भार-भू-।
रदिना·················त्रय-मण्डना-।
रूपदमो तानेन्दु·················लोकं मनो-।
मुददिं वणिगसे वर्म्मि-सेट्टि जिन-चैत्यावासमं माडिदम्॥

भुवन···················महत्त्वदिं·········चातुर्व्वर्ण-संघक्ष-मीष्टम-निच्चेत्तिसि जैन-गेहमनुत्साह-सन्दोह········.

....|

....दनुजनिष्ट-शिष्ट-जन-कल्प-कुजं सदनोपशोभिता-।

भ्युदय-विभूतिगास्पदनुदात्त-कळाधिपनीतनेम्व....।

........उदितोदितं नेगळ्दनी-वसुधा-तळदोळ् निरन्तरम् ॥

वर्म्मि-सेट्टिय वनिते ।

तनगनुवशेयेनिसि जग-। जन-संस्तुत-शील-गुण-गणाळ....।

........................|....................राजिसुतिर्द्दळ् ॥

अवरिर्वर्ग्गमगण्य-पुण्य-जनित-श्रीरायुरारोग्य-वै-।

भव-सम्पन्-महिमौघ.....................................।

....माडुतिर्-।

प्प विळासं वेरसोळ्पुवेत्तवनी-चक्रं मनं-गोळिवनम् ॥

अन्तवर् म्माडिसिद वसदिय पूजा-विधान................................ र्षियर्ग्गाहार-दानक्कं **श्रीमच्चालुक्य-विक्रम-कालद् ४२ नाल्वनेरड-नेय मनुमथ-संवत्सरदुत्तरायण-संक्र**.................पुण्यतिथियन्दु श्रीमन्-**नन्निय-गङ्ग-पेर्म्माडि-देव**निन्दं कुडल्तु पडेदु **वर्म्मिसेट्टियर् म्मेषपाषाण-गच्छाम्बर-शरच्चन्द्र**...**शुभकीर्त्ति-देव-भट्टारकर** कालं कर्च्चि धारापूर्व्वकं सर्व्व-नमस्यं सर्व्व-बाधापरिहारवागि वसदिगे कोट्ट वृत्ति

(आगेकी ५ पंक्तियोंमें दान और सीमाकी चर्चा है तथा अन्तिम वाक्य-पद्धति)

बहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरादिभिः ।

यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥

(हमेशाके अन्तिम श्लोक)

[इस लेखमें नं० २७७ शि० ले० के अनुसार ही गङ्ग राजाओंकी वंशावली तथा क्राणूर-गच्छके सिंहनन्दी आदि आचार्योंकी परम्परा दी हुई है। अन्तमें जिस बातके लिये यह लेख लिखवाया गया है वह यह है—

गङ्ग महादेवी और भुजबल गङ्ग-देवका (प्रशंसासहित) ज्येष्ठ पुत्र नन्नियगङ्ग था, (जिसका छोटा भाई) सत्य गंग था।

जिस समय सत्यवाक्य कोङ्गुणिवर्म्म धर्ममहाराजाधिराज परमेश्वर नन्निय गङ्ग सुख-शान्तिसे राज्य कर रहे थे कलम्बूरु-नगराधिपति वर्म्मि-सेट्टिने एक जिनमन्दिर खड़ा किया (इसकी प्रशंसा)। अपनी बनवाई हुई बसदिकी पूजा तथा ऋषियोंके आहारदानके लिये (उक्त मितिको) नन्निय-गंग-पेर्म्मानडि-देवने (उक्त) भूमि दी और वर्म्मि-सेट्टिने उसे लेकर मेष-पाषाण-गच्छके शुभकीर्त्तिदेव-भट्टारकको पाद-प्रक्षालनपूर्वक अर्पित कर दिया]

[EC, VII Shimoga tl. n° 57.]

२६८

श्रवणबेलगोल—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०३९=१११७ ई०]

[जै. शि. सं., प्र० भा०]

२६९

कल्वदहल्लि—संस्कृत और कन्नड़

[शक १०४६, वर्ष विलम्बि (१०४० शक=१११८ ई० [लु. राइस])

[कल्वदहल्लि (विण्डिगनवले प्रदेश) के, कल्वदराय स्तम्भपर]

(दक्षिणमुख) भद्रमस्तु जिन-शासनस्य ॥

श्री-मूलसङ्घ-गणे जातश्चारुचारित्र-भूधरः ।
भूपालानत-पादाब्जो राद्धान्तार्णव-पारगः ॥
आदावनन्तवीर्य्यस्तच्छिष्यो बालचन्द्र-मुनि-मुख्यस्
तत्सूनुर्जितमदनस्सिद्धान्ताम्भोनिधिर्प्रभाचन्द्रः ॥
शिष्यं कल्नेले(?)देवस्तस्याभूत्तन्मनीषिणस्सूनु-
र्विध्वस्तमदनदर्प्पो गुणमणिरष्टोपवासिमुनिमुख्यः ॥

तन्मौखो(?)विबुधाधीशो **हेमनन्दि**मुनीश्वरः ।
राद्धान्त-पारगो जातस्सूरस्थ-गण-भास्करः ॥
तदन्तेवासिनामाद्यो माद्यतामिन्द्रिय-द्विषाम् ।
यति**र्व्विनयनन्दी**ति विनेताभूत्तपोनिधिः ॥

नाडोळगिदेसेद गोसने । वाडङ्ग्ळोरेगिदन्देमुनिवनितेयरोळ्
कुडिदनेम्बी-नुडियद- । नेडिपुदेले **विनयनन्दि**-देवरचरितं ॥
ओन्दने केळिं बुध-जन- । मेन्दिङ्गं सांक्षि नीमे वसुधा-तळदोळ्
सन्दिळ्द वधू-निवहं । तन्देय वधुवेन्दपोम् प्रियम्वद-दानि ॥

व्रत-समिति-गुप्ति-गुप्तो । जितमोह-परीषहो बुध-स्तुल्यो ।
हतमदमायाद्वेषो यतिपति तत्सूनु**रेकवीरो**ऽभूत् ॥

(पूर्वमुख) दानद पेम्पु दीन-जनकोटिगे कल्प-कुजाळि नोडे सन्-
मानद पेम्पु भव्य-जन-सङ्कुळमन्तणिपित्तु दान-सन्-
मान-तपोपवास-गुण-सन्ततियं सले ताळ्दिदर्ज्जगन्-
मानिगळे**क्कवीर**-मुनि-नाथरे जङ्गम-तीर्थवल्लरे ॥

तस्यानुजस्सकळ-शास्त्र-महार्ण्णवोऽभूद्
भव्याब्ज-षण्ड-दिनकृन्मुनि-पुण्डरीको ।
विध्वस्त-मन्मथ-मदोऽमळ-गीत-कीर्त्तिश्-
श्री-**पल्ल-पण्डित**-यतिर्जितपापशत्रुः ॥

पल्लकीर्त्तिर्य्यथा रूढः पुरा व्याकरणे कृती ।
तथाभिमान-दानेषु प्रसिद्धः **पल्ल-पण्डितः** ॥

पल्ल-पण्डित-नागेन ददतां दानमद्भुतम् ।
भूषितं कलि-कालेऽस्मिन् गङ्ग-मण्डल-काननं ॥

दूरस्थ-गण-गीर्व्वाण-मार्ग्गमालम्बतेऽधुना ।
दान-प्रभा-प्रकाशोऽयं पल्ल-पण्डित-चन्द्रमाः ॥
दान-वारि-परिपूरित-सिन्धुर्नष्टमोहतिमिरो गुण-बन्धुः ।
भव्यलोककुमुदाकरचन्द्रः पल्लपण्डितमुनिर्हततन्द्रः ॥
नानादेशसमागतेन गुणिना लोकेन संसेवितो
जीर्ण्णेनाभिनवेन नूतन-तनु-श्री-लक्षणैर्ल्लक्षितः ।
शुम्भद्भूरिगुणाल्यो मतिमतां अग्रेसरो राजते
देशेऽस्मिन्नभिमानदानिकमुनिस्सर्व्वार्थ-चिन्तामणिः ॥
विद्वज्जनानन्दनकारणेन दानेन भक्त्या मुनि-पुङ्गवेषु ।
दिगन्तविश्रान्तयशोनिधानं विराजते पण्डित-पुण्डरीकः ॥
(उत्तरमुख) नानाभिमानिजन-दान-विधान-भीतो
श्रीमानशेषजनता-मनसोऽभिरामः ।
जातोऽभिमानि-पद-पूर्व्वक-दानि-नाम्ना
ख्यातः खलीकृत-महा-कलि-काल-दोषः ॥
साभिमाने जनेऽभीष्टमभिमानमखण्डयन्
जातोऽभिमानदानीह यथार्थः पल्लपण्डितः ॥
अतिसयमागे दानदोळे बेर्व्वरिदोळ्पुनयोक्तियेम्ब सन्-
मतियोळे पुष्टि शास्त्रदोळे दाक्षुडिबोगि विशेषमप्प सन्-
नुत-गुणदोळियिन्दे मडलागि दिगन्तमनेय्दे पल्ल-पण्-
डितर विलास-कीर्त्ति-लते पर्व्विदुदुर्व्विगे चोद्यमप्पिनम् ॥
दुर-करिय काम-धेनुव । सरदभ्रद कान्तियं पुदुङ्गोळिसुत्तुं ।
शरदमळचन्द्रबिम्बद । दोरेगे मिगिल् पाल्यकीर्त्ति देवरकीर्त्ति ॥
दानमपरिमितमोळ्पमि- । मानं सत्कविते शास्त्रनिपुणते कीर्त्ति-

स्थानमेने सन्दरीगळ् । दानिगळभिमानदानिगळ् वसुमतियोळ् ॥
वननिधि-वेष्टित-धात्रियो-। ळनवरतं नेरेद दीन-जनरिङ्गेल्लम् ।
धन-कनकं माळपरस्सन्-। मनदिन्दं **पाल्यकीर्त्ति**-पण्डित-देवर् ॥
ए-वोगळ्वुदण्ण विभुध-ज-। नावळिगं वेडिदर्त्थि-जनकन्निच्चन् ।
देवतरु कुडुव तेर्रदन्-। तीवर्स्सले **पल्ल-पण्डितर्** व्वसुमतियोळ् ॥
(पश्चिममुख) पुडवियोळग्गळन्नेगळद दानिगळिन्निवरन्नरारो पेळ् ।
नुडियदिरारुमं मरुळे कल्प-महीजद कोडिनन्ते कोड् ।
उडुगदे नग्न-भग्न-नट-गायक-दीन-जनक्के सन्तोसं-
बडे कुडुतिर्प्पे पेम्पिनळवच्चरिपाग्त्तभिमानदानियोळ् ॥

स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वरं त्रिभुवनमल्ल तलेकाडु-गोण्ड भुजबळ **वीर-गङ्ग होय्सळ-देवरु** सुखसंकथाविनोददिं राज्यं गेयुत्तमिरे तत्पाद पद्मोपिजीवि महासमन्ताधिपति श्रीन्महाप्रधानि द्रोह-घरट्ट पिरिय-दण्ड-नायक **गङ्ग-राज तलेकाडं** कोळुवह्लि मुङ्गोळ वेडि-कोण्डु गेल्दडे मेच्चिदेम् बेडिकोळ्केने श्री-**विण्डिगनविलेय**तीर्त्थक्के तळ-वित्तियम्वेडे श्री**विष्णुवर्धन-होय्सळ-देवरु** कारुण्यं गेय्दु कोडे कोण्डु **शक-वरिस** * **१०४६ विलम्बि सम्वत्**-सरद श्रीमूलसंघद **देसिग-गणद पुस्तक-गच्छद कोण्डकुन्दान्वयद शुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवर** कालं कर्च्चि धारापूर्व्वकम्माडि बिट्ट दत्ति पिरिय-केर्रेय तूविन वडगण हळदिं तेङ्कक् कौङ्गिन तोण्ट ओळगागि बिट्ट गद्दे सलिगे मूवत्तु हळ्ळियमुन्दण लक्क-समु············म्म गद्दमुं अन्दूर-कि [रि] यकेर्रेयुं पक्षोपवासि········ बसदिय हडवण-देसे-वर । ई-धर्म्ममनळिदव गङ्गेय तडिय हदिनेण्टु-सासिर कविले कोन्द दोसदल्लु होद ॥

---

* १ लेकिन शक १०४६=क्रोधि; विलम्बि=१०४० ।

[जिनशासनकी समृद्धि-कामना। अनन्तवीर्य सूरस्थगणमें उत्पन्न हुए। उनके शिष्य बालचन्द्र मुनि उनके पुत्र प्रभाचन्द्र, उनके शिष्य कल्नेलेदेव, उनके पुत्र अष्टोपवासी मुनि उनके शिष्य हेमनन्दि मुनि । इनके शिष्योंमें एक विनयनन्दि नामक यति थे जिनके विषयमें नाड्-देशमें यह प्रवाद फैला कि वे शहरोंमें श्राविकाओंके पास जाते हैं; लेकिन यह प्रवाद सही नहीं था। विद्वानो, इस बातको सुनो कि इस विषयमें स्वयं तुम्हीं लोग साक्षी हो कि वे अपने पिताकी पत्नी (अर्थात् अपनी माँ) से जैसा वर्त्तन करते थे वैसा ही वर्त्ताव स्त्री-समुदायसे करते थे । उन अनन्तवीर्यका पुत्र एकवीर था जो अपने गुणोंसे 'जङ्गम तीर्थ' कहलाता था। उसका छोटा भाई पल्ल-पण्डित था। जैसे पूर्वकालमें पाल्यकीर्ति व्याकरणमें प्रसिद्ध था वैसे ही दान देनेमें यह प्रसिद्ध था। आगे उसके दानोंकी प्रशंसा की गई है, उसको नाम भी 'अभिमानदानी' और 'पाल्यकीर्त्तिदेव' दिये गये हैं।

जिस समय वीर-गङ्ग-होय्सल-देव शान्ति और बुद्धिमत्तासे अपना राज्य चला रहे थे; तत्पादपद्मोपजीवी गङ्गराज महाप्रधानको, तळेकाडुपर कब्जा करनेसे पहिले, उन्होंने कोई एक वर माँगनेको कहा। उत्तरमें गङ्गराजने निण्डिगन जिलेके लिये भूमि-दान माँगा और विष्णुवर्द्धन-होय्सल-देवने उसको वह दिया। गङ्गराजने भी उक्त भूमि पाकर शुभचन्द्र-सिद्धान्तदेवके पादप्रक्षालन कर उन्हें सौंप दी। शुभचन्द्र-सिद्धान्तदेव मूलसंघ, देसिग-गण, पुस्तक-गच्छ तथा कोन्द-कुन्दान्वयके थे। शाप।

[EC, IV, Nagamangala tl., n° 19]

२७०, २७१

श्रवणबेलोला—संस्कृत तथा कन्नड़

[क्रमशः शक १०४१=१११९ ई० और
शक १०४२=११२० ई०]

(जै० शि० सं० प्र० भा०)

२७२

वङ्कापुर—कन्नड़

[वि० चा० का ४५ वाँ वर्ष (=शक १०४२=११२० ई० [फ्लीट]।

[बायें हाथकी ओरके शिलालेखमें करीब १७-१७ अक्षरोंवाली ३७ पंक्तियाँ हैं। इसमें एक दानका उल्लेख है जो मादिगवुण्ड और दूसरे गाँव-प्रमुखोंके द्वारा शुभकृत् संवत्सरमें, चालुक्य विक्रमके ४५ वें वर्षमें, किरिय बङ्कापुरके जिनमन्दिरको किया गया था।]

[IA, IV, 205, n° 7, a.]

२७३

मत्तावार—कन्नड़

[बिना कालनिर्देशका पर संभवतः लगभग ११२० ई०]

[मत्तावारमें, पार्श्वनाथ-बस्तिके प्राङ्गणमें एक पाषाणपर]

मरुळहळि-जकवे हट्टिदेडे गे····गन्ति मत्तवूरद वसदि तपसु माडि सिद्धियादळु अब्बेय माजकन मग मारे[य] कल्ल निल्लिसिद

[मरुळहळ्ळिके जकव्वेके द्वारा प्रेषित गे······गन्तिने मत्तवूरकी बसदिमें तपश्चरण करके सिद्धि प्राप्त की। अब्बेय माजकके पुत्र मारेयने यह पाषाण स्थापित किया।]

[EC, VI, Chikmagalūr tl. n° 52]

२७४

सुकदरे—संस्कृत तथा कन्नड़ भग्न

[काल लुप्त, पर लगभग ११२० ई०]

[सुकदरे (होणकेरी परगना), लक्कम्म मन्दिरके सामने पड़े हुए पाषाणपर]

··

·· ।

··········कल्पवृक्ष-सदृशं कीर्त्यङ्गनावल्लभम्

श्री······································पुण्याकरम् ॥

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

नमोऽस्तु ॥ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं द्वारा-वतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि मलपरोळु गण्ड श्रीमत्रिभुवनमल्ल तलकाडु गोण्ड भुजबल .... वर्द्धन पोय्सळ-देवर सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे .... व ।

जिननिष्टदेवमजितं । मुनिपति गुरु पोय्सळेश ....
एचले तायेनेम्कनेसे- । दनो तां जक्कि-सेट्टि यात्रेय-गोत्रपवित्र ।
.... नेगळ्द जक्कि-सेट्टिय गुरु-कुलमदेन्तेन्दडे ।
श्रीमद्द्राविडसंघ .... वळि-लीलेयिन् ।
श्रीमत्स्वामि-समन्तभद्रर्वरिं भट्टाकलङ्काख्य .... ।
.... हेमसेनर्वरिं श्रीवादिराजाङ्करन्त्
आमाहात्म्यविशिष्टरिन्दजितसेन .... ॥
.... परम-मुनिय शिष्यर् । प्पापहरम्मल्लिषेण-मलधारि ... ।
.... र् । म्भूपालसुरसेदरवनीतळदोळ् ।

वनदोळ् वनदं वि .... ।
साहसदिं चागदत्तं चागदोळे जीमूतं जक्कि-सेट्टि .... ।
.... दानि विद्वज्- । जनविनुतं धर्म्मजलधिवर्द्धितचन्द्रम् ।
मनु-नीति-मार्ग .... । .... जक्कि-सेट्टि गोत्र-पवित्रम् ॥

अन्तप्प जक्कि-सेट्टि तम्मूर मुकु .... माडिसियदके निट्ट दत्ति आवूर पसाम्यद केरेयं कट्टिसि ...... केरेयुं वसदियिं वडगलु वेद्दले वेदे खण्डुग एरडु मत्त .... वायाम्यद किल्केरे सहितवागियुं आन्ऌर देव-गोळ्म धर्म्म होरेन्तिप्पे-मुक्क गाणदलरवानेण्गे इन्तिवुम शक-वर्ष .... संवत्सरद ज्येष्ठ शु० १२ बड्डवार स्वातिनक्षत्रदन्दु

वसदि·········करणकवाहारदानकं दयापाल-देवर्गे धारापूर्व्वकं·········
(सदाका अन्तिम श्लोक) मङ्गलमहा श्री श्री नमोऽर्हत्पा··········· ।

··तन्नार्प्पिनिं ।
मनमं तन्न वसक्के तन्दु वळियं सत्-क्षान्तियं·····न् ।
अनेक-पुष्प-वरिप-प्रभावर्दिं भावर्दिं·············।
·· ॥
····सुर-दुन्दुभिगळ्सेये सुर-गणिकेय··············पोगळ्विनेगं ॥
जक्कि-सेट्टिय तम्मं·········

[जिनशासनकी प्रशंसा । जिस समय (अपनी हमेशाकी उपाधियों सहित), विष्णुवर्द्धन पोय्सळदेव शान्ति और बुद्धिमत्तासे अपने राज्यका शासन कर रहे थेः—

आत्रेय-गोत्रको पवित्र करनेवाले जक्कि-सेट्टिके 'जिन' इष्टदेव थे, अजित-मुनिपति गुरु थे, पोय्सल राजा थे और एचल माता थी ।

उस प्रसिद्ध जक्कि-सेट्टिकी गुर्वावली निम्न भाँति हैः—द्राविळ (ड़) में············स्वामी समन्तभद्र हुए,–उनके बाद भट्टाकलङ्क;····हेमसेन; उनके बाद वादिराज;······अजितसेन; परममुनिके शिष्य, पापहर मल्लिषेण मलधारी ।

जक्कि-सेट्टिकी और भी प्रशंसा । इस जक्कि-सेट्टिने अपने गाँव सुकदरेमें एक 'वसदि' और उसके दक्षिण-पूर्वमें एक तालाव बनवाया । 'वसदि' और सरोवरके खर्चके लिये (लेखमें वर्णित) भूमिका दान दिया । साथमें दक्षिण-पश्चिममें स्थित एक छोटासा तालाब, देवका 'कोलग' बोझोंका खर्च और खादके गड्ढे, और तेलके कोल्हुओंसे आधा मन तेल, ये सब चीजें उत्सवों और आहारदानके लिये दीं । ये सब चीजें दयापाल-देवको सौंप दीं ।

जक्कि-सेट्टि और उसके छोटे भाईकी प्रशंसा ।]

[EC, IV, Nagamangal tl., n° 103]

२७५

मुत्तत्ति—कन्नड़

[बिना कालनिर्देशका; बहुत करके लगभग ११२० ई०]

[माधवराय मन्दिरके नवरंग मण्डपके चार स्तम्भोंपर]

(दक्षिण-पश्चिमी खम्भा) स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महामण्डलेश्वर द्वारावतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युम (उत्तर-पश्चिमी) णि सम्यक्त्वचूडामणि तळेकाडु-गोण्ड भुजबळ वीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन-पोय्सळ-देवरु विनयादित्य-दण्ड-(दक्षिण-पूर्व खम्भा)नायक माडिसिद होय्सळ-जिनालयक्के बिट्ट दत्ति श्री-मूलसंघ देशिय-गणद पो(पु)स्तक-गच्छद कोण्डकुन्दान्वयद श्रीमन्मेघचन्द्र-त्रैविद्य-देवर शिष्यरु (उत्तर-पूर्वी खम्भा) श्री-प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर्गे संक्रान्तिव्यतीपात-दन्दु कालं कर्च्चि धारा-पूर्व्वकं माडि बिट्ट दत्ति हिरिय-केरेय केळगे मोदलेरिय गद्दे हत्तु-सलिगेयदुं ओन्दु सलगे तोण्टेयदुं बसदिय मुन्तन इम्मडलु बेदलेयुमं बळ्ळिगट्टमुं बसदिय बडगण................
(दक्षिण-पूर्वी खम्भा) विनयादित्यालय

[(अपने उन्हीं पदों सहित) विष्णुवर्द्धन-पोय्सळ-देवने (उक्त) भूमिका दान श्री-मूलसंघ, देशीय-गण, पुस्तक-गच्छ तथा कुन्दकुन्दान्वयके मेघचन्द्र-त्रैविद्य-देवके शिष्य प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवको विनयादित्य-दण्ड-नायकके द्वारा बनवाये गये होय्सल-जिनालयके लिये किया ।]

[EC, V, Hassan tl., n° 112]

२७६

कोनूर (जि० बेलगाँव)—कन्नड़-भग्न

[विक्रमादित्य चालुक्यका ४६ वाँ वर्ष=११२१ ई०]

परिचय

[इस लेखमें रायणय्य नायक, मारय्य नायक, तथा कोण्डनूरुके दूसरे नायकोंके द्वारा किये गये दानका उल्लेख है। ये दान महातीर्थ वटेश्वरदेवके मन्दिरकी तरफसे किये गये थे। उस समय कुण्डी ३००० में महासामन्त राजा कार्त्तवीर्य राज्य कर रहे थे। इनकी उपाधियोंमें रट्ट-वंश बतलाया गया है। पूर्ववर्ती रट्ट शिलालेखोंकी अपेक्षा इनकी उपाधियाँ कलहोळी शिलालेखकी उपाधियोंसे ज्यादा मिलती हैं। इस लेखकी ४३ वीं पंक्तिमें उनका नाम 'कत्तमदेव' दिया हुआ है, और ये संभवतः कार्त्तवीर्य तृतीय हैं, जैसा कि आगेकी वंशावलीसे प्रकट होगा। कालकी पंक्ति घिस गई है।]

[JB, X. p. 181–182, p. *p.* 287–292, t.; p. 293–298; *tr.*; ins. n° 8, *II part.*]

२७७

कल्लूरगुड्डु—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०४३=११२१ ई०]

[कल्लूरगुड्डु (शिमोगा परगना)में, सिद्धेश्वर मन्दिरकी पूर्वदिशामें पड़े हुए पाषाणपर]

---

१ इस शिलालेखका लेख वही है जो शिलालेख नं. २२७ का अन्तिम भाग है। केवल अंश-भेद है। २२७ नं. का अंश पहिला है और इस लेखका अंश दूसरा है। पर यह अंश-भेद सूक्ष्मरीतिसे अवलोकन करने पर भी, सिवाय तिथि (काल)-भेदके, ठीक-ठीक नहीं मालूम पड़ता। अतः लेख (जो २२७ वें शिलालेखका द्वितीयांश है) यहाँ नहीं दिया जा रहा है। पाठक अपनी बुद्धिसे ही उसे निश्चित करें, क्योंकि हमको उक्त (२२७) लेखमें 'रायणय्य नायक' तथा 'मारय्य नायक' ये दो नाम (जिनके दानका उल्लेख इस लेखमें है) कतई नहीं मिले हैं। 'कोण्डनूरु' का नाम अवश्य पाया जाता है, पर उसके अन्य 'नायकों'का कुछ भी पता नहीं। अतः हमें सन्देह है कि २२७ वें नं० के शिलालेखसे भिन्न कोई दूसरा लेख इस २७६ वें नं० का होना चाहिये। संभव वह गल्तीसे लिखे जानेसे रह गया हो, या मूल 'JBX' पत्रिकामें ही छूट। हो। सम्पादक

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळ-तिळक चाळुक्याभरणं श्रीमत्-त्रैलोक्यमल्ल-देवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारं-बरं सलुत्त-मिरे । गङ्गान्वयावतारमेन्तेन्दोडे ।

सले वृषभ-तीर्थ-कालं । सुलक्षितनेने सकळ-भव्य-चित्तानन्दम् ।
कलि-काल-निर्जितं श्री- । ललना-लावण्य-वर्द्धनं क्रमदिन्दम् ॥
सोगयिसुव-कालदोळ् की- । र्त्तिगे मूल-स्तंभमेनिपयोध्या-पुरदोळ् ।
जगदधिनाथं पुट्टिद- । नगण्यनिक्ष्वाकु-वंश-चूडारत्नम् ॥
धरेगे हरिश्चन्द्र-नृपे- । श्वरनोर्व्वने कान्तनागि दोर्व्वलदिन्दम् ।
विरुदरनदिर्पि विद्या- । परिणतियिं नेरेदु सुखदिनिरे पलकालम् ॥

वृ० ॥ आतन पुत्रनिन्दु-हर-हास-निभोज्वल-कीर्ति सद्गुणो- ।
पेतनुदात्त-वैरि-कुल-भेदनकारि कला-प्रवीणनुद- ।
भूत-मलं सुरेन्द्र-सदृशं भरतं कवि-राज-पूजितम् ।
ख्यातनतर्क्यपुण्यनिलयं सु-जनाग्रणि विश्रुतान्वयन् ॥

ऋजु-शील-युक्तेयेनिसिद । विजय-महादेवी तनगे सतियेने त्रिभुव-
नज-पूज्यं भरतं भा- । वज-सदृशं ताने सकळ-धात्री-तळदोळ् ॥

आ-विजय-महादेविगे गर्ब्भ-दोहळं नेगळ्दे ।

तरळ-तरंग-भंगुर-समन्वितेयं झष-चक्रवाक-भा- ।
सुर-कळहंस-पूरितेयनुद्भव-रत्नाङ्कित-गात्रेयं मनो- ।
हर-नव-शैल-मान्य-शुभ-गन्ध-समीर-निवासेयं तळो- ।
दरि नेरे गङ्गेयं नलिदु मीवभिवाञ्छेयनेय्दे ताळ्दिदळ् ॥

कळहंस-याने पलरुं । केळदियरोड ओगि पूर्ण्ण-गङ्गा-नदियम् ।
विळसितमं पोकु निरा कुलदिन्दोलाडि पाडिं गाडियनान्तळ् ॥

अन्तु मनदलम्पु पोगे गङ्गा-नदियोळ् ओलाडि निज-गृहक्के वन्दु नवमासं नेरेदु पुत्रनं पडेदातङ्गे ।

गङ्गा-नदियोळु मिन्दु ल- । ताङ्गि मगं वडेदळप्प कारणदिन्दम् ।
माङ्गल्य-नामवोन्दुदि- । लाङ्गनेगधिपतिगे **गङ्गदत्ता**ख्यानम् ॥

आ-गङ्गदत्तङ्गे **भरत**नेम्ब मगं पुट्टिदनातङ्गे **गङ्गदत्त**नेम्बं पुट्टि ।

गुण निधिगे गङ्गदत्तं- । गणुगिन पुत्रं विवेक-निधि पुट्टि दया- ।
प्रणियागि **हरिश्चन्द्रं** । प्रणुत-नृपेन्द्रं धरित्रियोळ् शोभिसिदम् ॥

मत्तमा-नृपोत्तमङ्गे **भरत**नेम्ब सुतं पुट्टिदनातङ्गे **गङ्गदत्त**नेम्ब मगनागि-मिन्तु गङ्गान्वयं सलुत्तमिरे ।

हरि-वंश-केतु **नेमी-** । **श्वर-तीर्थं** वर्त्तिसुत्तमिरे गङ्ग-कुळं- ।
बर-भानु पुट्टिदं भा- । सुर-तेजं **विष्णुगुप्त**नेम्ब नृपाळम् ॥

आ-धराधिनाथं साम्राज्य-पदवियं कैकोण्ड**हिच्छत्र-पुर**दोळु सुख-मिर्द्दु नेमितीर्थंकर परम-देव- निर्व्वाण-काळदोळ् ऐन्द्रध्वजवेम्ब पूजेयं माडे देवेन्द्रनोसेदु ।

अनुपमदैरावतमं । मनोनुरागदोळे **विष्णुगुप्त**ङ्गित्तम् ।
जिन-पूजेयिन्दे मुक्तिय- । ननर्घ्यमं पडेगुमेन्दोडुळिदुदु पिरिदे ॥

आ-विष्णुगुप्त-महाराजङ्गं **पृथ्वीमति-महादेवि**गं **भगदत्तनुं श्रीदत्त**नुमेम्ब तनयरागे भगदत्तङ्गे **कलिङ्ग**-देशमं कुडलातनु **कलिङ्ग**-देशमनाळ्दु **कलिंग**-गङ्गनागि सुखदिन्दिरे ।

इत्तलुदात्त-यशो-निधि । मत्त-द्विपमं समस्त-राज्यमुमं श्री- ।
दत्त-नृपङ्गित्तं भू- । पोत्तमने निसिर्द्द **विष्णुगुप्त**-नरेन्द्रम् ॥

अन्तु श्रीदत्तनिन्दित्तलानेयुण्डिगे सलुत्तमिरे ।

प्रियवन्धु-वर्म्मनुदयिसि । नयदिन्दं सकल-धात्रियं पाळिसिदं
भय-लोभ-दुर्लभं ल- । क्ष्मी-युवति-मुखाब्ज-षण्ड-मण्डित-हासम् ॥

व ॥ अन्ता-प्रियवन्धु सुख-राज्यं गेय्युत्तमिरे तत्समयदोळु **पार्श्व-भट्टारकर्गे केवळ-ज्ञानोत्पत्तियागे** सौधर्म्मेन्द्रं वन्दु केवळि-पूजेयं माडे प्रियवन्धु तानुं भक्तियिं वन्दु पूजेयं माडलातन भक्तिगिन्द्रं मेच्चि दिव्यवप्पय्दु-तोडगेगळं कोट्टु निम्मन्वयदोळु मिथ्यादृष्टिगळागलोडं अदृस्यङ्गळ्कुमेन्दु पेळ्दु **विजयपुरक्कहिच्छत्रमेम्व** पेसरनिट्टु दिविजेन्द्रं पोपुदुमित्तलु गङ्गान्वयं सम्पूर्ण्ण-चन्द्रनन्ते पेर्च्चि वर्त्तिसुत्तमिरे तदन्वयदोळु **कम्प**-महीपतिगे **पद्मनाभनेम्व** मगं पुट्टि ।

तनगे तनूभवरिल्लदे । मनदोळु चिन्तिसुतमिर्द्दु पद्मप्रभनाइ-।
ष्पिन-कणि शासन-देवते-। यने पूजिसि दिव्य-मन्त्रदिं साधिसिदं ॥

अन्तु साधिसि साधित-विद्यनागि पुत्ररिर्वरं पडेदु **राम-लक्ष्मणरेम्व** पेसर-निट्टु ।

परमस्नेहदोळिर्व्वरं नडपे लीला-मात्रदिं चन्द्रनन्त् ।
इरे संपूर्ण्ण-कळांगरागि वेळेयल् विद्या-वलोद्योगमुर्-।
व्वरेयोळ् चोद्यमेनल् सलुत्तमिरे कीर्त्ति-श्री दिशा-भागदोळ् ।
परेदाशा-गजमं पळञ्चलेये लक्ष्मी-भारदिन्दोप्पिदर् ॥

अन्तु सुखदिन्दिर्प्पुदुमत्तलुज्जयिनी-पुराधिपति-**महीपाल**-तोडवुगळं
वेडियट्टि दोडे पद्मनाभं कृतान्तनन्ते रौद्र-वेशमं कैकोण्डु ।
एमगदनट्टल्कागदु । तमगे तुडल् योग्यमल्ल सन्तमिरल् वेळ् ।
समरक्के वन्दनप्पडे । निमिषदोळान्तिरिदु वीर-रसमं मेरेवेम् ॥

अन्तु शुडिदडे मन्त्रि-वर्ग्गदोळालोचिसि तन्न तङ्गेयं कन्नेयुं नाल्वत्ते-ण्बरातरप्प विप्र-सन्तानमुं बेरसु कळपिदोडवर्द्दक्षिणाभिमुखरागि बरुत्तुं राम-लक्ष्मणर्ग्गे **दडिग-माधवरेन्दु** पेसरनिट्टु निच्च-पयणदिम् ।

वन्दवर्गळुचित-पदमन-। गुन्दलेयिं कण्डरमल-लक्ष्मी-चित्ता-।
नन्दनमं **पेरूरं** । मन्दार-नमेरु-पुष्प-गन्धाद्रियुमम् ॥

व ॥ अन्तु **गङ्ग-पेरूरं** कण्डल्लिय तटाक-तीरदोळु बीडं बिट्टु चैत्या-लयमं कण्डु निर्ब्भर-भक्तियिं त्रि-प्रदक्षिणं गेय्दु स्तुतियिसि समस्त-विद्या-पारावार-पारगरम् । जिन-समय-सुधाम्भोधि-संपूर्ण्ण-चन्द्ररम् । उत्तम-क्षमादि-दश-कुशळ-धर्म्म-रतरम् । चारित्र-भद्र-धनरम् । विनेय-जनान-न्दरम् । चतुस्समुद्र-मुद्रित-यशः-प्रकाशरम् । सकळ-सावद्य-दूररम् । **क्राणूर्ग्गणा**म्बर-सहस्रकिरणरम् । द्वादश-विधतपोनुष्ठान-निष्ठितरम् । गङ्ग-राज्य-समुद्धरणरम् । **श्री-सिंहनन्द्याचार्य्यरं** कण्डु गुरु-भक्ति-पूर्व्वकं वन्दिसि तम्म बन्दभिप्रायमेल्लमं तिळिय-पेळे कैकोण्डवर्ग्गे समस्त-विद्याभिमुखर्म्माडि केलवानुं देवसदिं **पद्मावती**-देवियं भक्ति-पूर्व्व-कमाह्वानं गेय्दु वरं बडेदु खळगमुं समस्त-राज्यमनवर्ग्गे माडि ।

मुनि-पति नोडल् विद्वज्-। जन-पूज्यं **माधवं** शिला-स्तम्भमनाऱ्-
ऱेनुगेय्दु पोय्यलदु पुण्-। मेने मुरिदुदु वीर-पुरुषरेनं माडऱ् ॥
आ-साहसमं कण्डु ।

मुनि-पति कर्ण्णिकारदेसळोळ् नेरे पट्टमनेय्दे कट्टि सज्-।
जन-जन-वन्द्यरं परिसि सेसेयनिक्कि समस्त-धात्रियम् ।
मनमोसेदित्तु कुञ्चमनगुर्व्विन केतनमागि माडि वऱ्-।
प्पेनितु परिग्रहं गज-तुरङ्गमुमं निजमार्गे माडिदऱ् ॥

अन्तु समस्त-राज्यमं माडि बुद्धियनवर्ग्गिंन्तेन्दु पेळ्दरु ।
नुडिदुदनारोळं नुडिदु तप्पिदोडं जिन-शासनक्कोडम्-।
बडदडमन्य-नारिगेरेदट्टिदडं मधु-मांस-सेवे गेय्-।
दडमकुलीनरप्पवर कोळ्कोडेयादोडमर्त्थिगर्त्थमम् ।
कुडदोडमाहवाङ्गणदोळोडिदडं किडुगुं कुल-क्रमम् ॥
एन्दु पेळ्दु ।

उत्तममप्प **नन्दगिरि** कोटे पोळल् **कुवळाल**मागे तोम्-।
बत्तरु-सासिरं विषयमाप्तननिन्द्य-जिनेन्द्रनाजि-रं-।
गात्त-राज्यं जयं जिनमतं मतमागिरे सन्ततं निजो-।
दात्ततेयिन्दमा-**दडिग-माधव**-भूभुजराळ्दरुर्व्वियम् ॥
मत्तमा-नाडिङ्गे सीमे ।

उत्तर-दिक्-तटावधिगे तागे मदर्क्कले मूड तोण्ड-ना-।
डत्तपरासेगम्बुनिधि चेरमेनिप्पेडे तेङ्क कोङ्गु मत्-।
तित्तोळगुळ्ळ वैरिगळनिक्कि परावृत-**गङ्गवाडि-तोम्**-।
बत्तरु-सासिरं दलेने माडिदरिन्तुट्टु गङ्गरुज्जुगम् ॥
अन्तु धरित्रिगधिपतियागि **दडिग-माधव**रिर्व्वरं **कोङ्कण**-विषय-साधन-निमित्तं वरुत्तं **मण्डलियं** कण्डरदर प्रभाव मेन्तेने ।

नुत-**महेन्द्र-पुरं** धरा-तळदोळोप्पुत्तिर्दविख्यातियिम् ।
कृत-कालं **मदना-पुरं** नेगळे मिका-त्रेतेयोळ् सज्जन-।
स्तुत **मण्डाल-पुरं** तृतीय-पेसरिं द्वापारदोळ् सन्ततोन्-।
नतियिं **मण्डलि**येम्बरिन्तु कलि-कालं सन्दुदिन्ती-पुरम् ॥
अन्ता-नाल्कु-युगकं नाल्कु-पेसरिन्दोप्पुव मण्डलिय वहि-र्भागदोळु सौगन्धमं कूडे पसरिसुव सहस्र-पत्रवेप्पलर्द तावरेगळिं नाना-जलचरि-

युलिपदिन्दोप्पुव हेग्गेरेयं कण्डु वीडं बिट्टु तद्-गिरिय रम्यमं कण्डुमिछि चैत्यालयमं माडिमेन्दु **क्राणूर्ग्गण**-तिळकर् **सिंहनन्द्याचार्य्यर्** प्पेळे महा-प्रसादमेन्दु चैत्यालयमं माडिसि केलवानुं दिवसदिं **कोळालक्के** पोगि सुखदिं राज्यं गेय्युत्तमिरे गङ्गान्वयं पेर्च्चि वर्त्तिसुत्तिरे दडिगंगे **माधव**-नेम्ब सुतनागि राज्यं गेय्यलातन मगं **हरि-वर्म्म**नातन पुत्रं **विष्णु-गोप**नेम्बनागि मिथ्यात्वके सल्वुदुवन्ता-तोडवदश्यङ्गळागि पोगे आतन मगं **पृथ्वी-गंगं** सम्यग्दष्टियातन मगं बिरुदरं तडङ्गाल्व त्रोय्दडि-गिडि-सुव **तडङ्गाल-माधव**नातनमगम्

अविनीत-गङ्गनेम्बं । भुवनक्कधिनाथनागि पुट्टि बुधर्ग्गुत्-।
सवमं पुट्टिसिदं **माध-।व**-रायन मर्म्मनब्धियन्ते गभीरम् ॥

अन्तु शत-जीवियेम्बादेशमं केळ्दु ।

भरदिन्दं चुर्च्चु-वाय्दं पोगळे बुध-जनं बन्द **कावेरियोळ्** मी-।
करमागल् वीर-लक्ष्मी-नयन-कुमुदिनी-चन्द्रमं निन्दु नोडल् ।
परिवारं तन्न कीर्त्ति-प्रभे वळसे दिशा-भागमं चोद्यमागल् ।
परम-श्री-जैन-पादं नेलसे हृदयदोळ् मेरु-शैलोपमानम् ॥

अन्तु चुर्च्चु-वाय्दु बर्द्दुक्किदनातनन्वयदोळु **दुर्विनीत-गङ्ग**नातङ्गे **मु-ष्कर**-नेम्बनादनातङ्गे **श्रीविक्रम**नातन मगं **भूविक्रम**नातन मगनिन्दिर् **नवकाम-श्रीएरगरवरोळु** एरेयन मग**नेरेयङ्ग**नातनिन्दुदयिसिदं **श्रीव-ल्लभ**नातङ्गे **श्री-पुरुष**नादनातङ्गे **शिवमार**नेम्बनातङ्गे **मारसिंह**नुदयं गेय्दम् ।

अवयवदिन्दे साधिसिद माळववेळुवनेय्दे **गङ्ग-मा-**।
ळववेनलक्करं बरेदु कल् निरिसुत्ते कळल्चि **चित्रकू-**।
टवनुरे **कन्नगुञ्जेय-**नृपानुजनं **जयकेसियं** महा-।
हवदोळे **मारसिंह**-नृपनिक्कि निमिर्च्चिदनात्म-शौर्य्यमम् ॥

तनयं श्री-मारसिंहंगनुपमित-जगत्तुंगनादं जगत्-पा-।
वन-लक्ष्मी-वल्लभङ्गिन्तुदिदियिसि नेगळ्दं राचमल्लावनीशम् ।
मनु-मार्गं गङ्ग-चूडामणि जय-वनितावीश-भूवल्लभेशन् ।
जिनधर्म्माम्भोधि-चन्द्रं गुण-गण-निळयं राज-विद्याधरेन्द्रम् ॥

अन्तातन मर्म्मन्दिर् मरुळय्यं बूतुग-पेम्मांडि तदपत्यनेरेयपं तत्सुत-वीरवेडङ्गनेम्बङ्गे ।

उदयं गेय्दं विद्या-। सुदतीशं नार-रूपनुचित-विळासम् ।
विदित-सकलार्थ-शास्त्रं । मृदु-वाक्यं राचमल्लनहितर-मल्लम् ॥

अन्ता-राचमल्लनिन्देरेयङ्गनातन मगं बूतुगनातन मगं मरुळ-देवनातनात्मजं गुत्तिय-गङ्गनातनिन्दं मरेयेरेद मारसिंगनातन सुतं गोविन्दरनातन पुत्रं सैगोट्ट-विजयादित्यनातनिन्दं राचमल्लनातनिं मारसिंगनातन सुतं कुरुळ-राजिगनातनिन्दं गर्व्वद-गङ्गं गोविन्दरन तम्मन मगनप्प मम्म-गोविन्दरन् ।

तेङ्गनुडिदडडु किळ्तं । कौङ्गं मिडुकदिरलेंडद-कय्योळ् मद-मा-।
तङ्गमने पिडिद्दु निलिसिद । गङ्गं सामान्य-नृपने रक्कस-गङ्ग ॥

तदनुजं कलियङ्गनातनिन्दुत्तरोत्तरं गङ्गान्वयं सलुत्तमिरे क्राणूर्-गणदाचार्य्यावतारवेन्तेन्दोडे ।

दक्षिण-देश-निवासी गङ्ग-मही-मण्डलिक-कुळ-समुद्धरणः ।
श्री-मूल-संघ-नाथो नाम्ना श्री-सिंहनन्दि-मुनिः ॥

अवर तदनन्तरं अर्हद्बल्याचार्यरुं बेट्टद-दामनन्दि-भट्टारकरुं बाळचन्द्र-भट्टारकरुं मेघचन्द्र-त्रैविद्य-देवरुं। गुणचन्द्र-पण्डित-देवररिन्द ।

एळेगे गुण-रुचियिनोळ्पगुं-। गळिसिरे गुण-रुचि-विकाश-आगुं-रश्मि-यिनुच्च्-।

चळिसे वदनेन्दु पेम्पम्। तळेदं गुणनन्दि-देव-शब्द-ब्रह्म ॥

अवरिं बळिक्कमकलंक-सिंहासनमनलंकरिसि नेगर्द तार्किक-चक्रेश्वररुं। वादीभ-सिंहरुं। पर-वादि-कुल-कमल-वन-मद-मातंगररुम्। बौद्ध-वादि-तिमिर-पतङ्गररुम्। सांख्य-वादि-कुळाद्रि-वज्रधररुम्। नैयायिकाचार्य्य-भूजात-कुठाररुम्। मीमांसक-मत-घनाघन-प्रचण्ड-पवनररुम्। सिद्धान्त-वार्धि-वर्द्धन-सुधाकररुम्। सकळ-साहित्य-प्रवीणररुम्। मनोभव-भय-रहितरुं। जिन-समयाम्बर-दिवाकररुम्। अप्प श्री-मूल-संघद कोण्डकुन्दान्वयद काणूर्-गण मेषपाषाण-गच्छद श्रीमत्प्रभाचन्द्र-सिद्धान्तदेवरवर शिष्यरु।

अनवद्याचारद्-म्मा-। घनन्दि-सिद्धान्त-देवरधिकृत-जिन-शा-।
सन-संरक्षकरेसेदर्। जिनमतसद्धर्म्म-सम्पदं नेगळ्-विनेगम् ॥

अवर शिष्यरु।

चतुरास्यं चतुरोक्तियिं प्रभुतेयिन्दीशं गुण-व्यापक-।
स्थितियिं विष्णु सु-बुद्धि-विस्तरणेयिं बौद्धं दलीं-जैन-पद्-।
धतियिन्दर्ह्हुमिदेम् विचित्रतरमो चातुर्य्यमांदी-समुन्-।
नत-सिद्धान्त-विभूषणङ्गेनिसिदं श्रीमत्प्रभाचन्द्रमम् ॥

अवर सधर्म्मरु।

नुत-सिद्धान्तमनन्तवीर्य्य-मुनिगं शुद्धाक्षराकारदिम्।
सततं श्री-मुनिचन्द्र-दिव्य-मुनिगं संवर्त्तिसुत्तिर्कुम-।
प्रतिमं तानेने पेम्पु-वेत्तरु दितोदान्तर् जगद्-वन्द्यरुर्-।
ज्जितरुद्योतित-विश्वरप्रतिहत-प्रज्ञर् म्मही-भागदोळ् ॥

अवर शिष्यरु ।

वादि-वन-दहन-हुतवह । वादि-मनोभव-विशाळ-हर-निटिलाक्षं

वादि-मद-रदनि-विद्रुवं । मेदिप मृगराज जयतु श्रुतकीर्त्ति-त्रुधम् ॥

कवि-गमकि-वादि-वाग्मिगळ् अवन्दिरं गेल्दु कनकनन्दि त्रैवि-

द्य-विलासं त्रि-भुवन-मल्ल-वादिराजं दलेनिसिदं नृप-समेयोळ् ॥

अवर सवर्म्मरु ।

चारित्र-चक्रि संयम-। धारि काणूर्ग्गणाग्रगण्यं सदयम् ।

श्री-रमणं सिद्धान्त-वि-। शारदनति-विशद-कीर्त्ति माधवचन्द्रन् ॥

अवर शिष्यरु ।

वर-शाखाम्बुधि-वर्द्धन-। हरिणाङ्कं विरुद-वादि-मद-विस्फाळम् ।

निरुतं तानेनलेसेदं । धरेयोळ् त्रैविद्य-बालचन्द्र-यतीन्द्रम् ॥

श्री-प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर शिष्यरु ।

वसुमतिगोळ्पु-वेत्त धवलातपवारणवागि कीर्त्ति नर-।

त्तिसुवुदु पेम्पु-वेत्त महिमोन्नति मेरुवे मण्डपन् दला-।

गेसेवुदु सद्-गुण-प्रतति मौक्तिक-मालेय लीलेयं समर्-।

र्थिसुवुदु सज्जनके सहजातमेनल् बुधचन्द्र देवर ॥

करवं वारुणिगेन्दु नीडि पिरिदुं निस्तेजमेय्दिर्द्द तन्-।

निरवं नोडदे सत्पद-प्रसुतेयं ताक्दिर्प्प दोषाकरम् ।

दोरेये पेळेनुतं कळङ्क-रहितं सद्-वृत्तदिन्दं तिरस्-।

करिपं चन्द्रननोळ्पु-वेत्त बुधचन्द्रं सन्ततोत्साहदिम् ॥

नुडिगळ् सत्य-सुवर्ण्ण-भूषण-गणं चित्तं सु-रत्नङ्कळम् ।

मडगिर्द्दिर्प्प-करण्डकं तनु तपश्श्री-भामिनी-मासियेन्-

दडे दुष्कीर्त्तियनान्त मत्तिन शठर् दुर्ब्बोधरस्पृश्यरेम् ।
पडिये सद्-बुध-सेव्यनप्प बुधचन्द्र-ख्यात-योगीन्द्रनोळ् ॥
सुर-धेनु प्रति-रूपमं तळेदुदो गीर्व्वाण-भूजातवी-।
धरेयोळ् तापस-रूपदिं नेलसितो पेळेम्बिनम् बर्प्पुदम् ।
करेदर्त्थि-प्रकरक्के कोट्टु विपुळ-श्री-कीर्त्तियं ताळ्दिदम् ।
निरुतं श्री-**बुधचन्द्र-देव**-मुनिपं वात्सल्य-रत्नाकरम् ॥

इन्तेनिसि नेगळ्दाचार्य्य-परमेष्ठिगळन्वय-तिळकरुं जिनसद्म-निर्म्मापणरुमप्प **बुधचन्द्र-पण्डित-देवरु** प्रवर्त्तिसुत्तिरे । **प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर** गुड्ड ।

जय-जया-वल्लभनन्-। वय-वार्धि सीतरोचि भुवन-स्तुत्यम् ।
प्रिय-मूर्त्ति जिन-पदाब्ज-। द्वय-भृङ्गं **बर्म्मदेव भुज-बळ-गङ्गम्** ॥

अन्तेनिसि नेगर्द बर्म्मदेव भुज-बळ-गङ्ग-पेर्म्माडि-देवं मण्डलिय बेट्टद मेले मुन्नं **दडिग-माधवर्** म्माडिसिद बसदियं तम्म गंगान्वयदवर् प्पडिसलिसुत्तुं वरलु तदनन्तरं मर-वेसनागि माडिसि **मण्डलि-सासिरवेड-दोरे-एप्पत्तर** बसदिगळिन्नप्पुव मुन्नादुवक्कुं **पट्टद-बसदिय** प्रतिबद्धवागि समादेयर् म्मुख्यवागि विट्ट दत्ति तट्टकेरे सर्व्व-बाधापरिहार मत्तं बसदियिं तेङ्कण केरेय केळगे तळ-वृत्ति गद्दे गळेय मत्तलु मूरु वेद्दले गळेय मत्तलारुमिन्तु पट्टद-तीर्त्थद बसदिगे सलुत्तमिरे आतन तनूभवरु ।

जय-लक्ष्मी-पति **मारसिंग**ननुजं सत्य-प्रियं सन्द **नन्न**-।
निय-गङ्ग-क्षितिपाळकं तदनुजं तेजस्वि विक्रान्त-च-।
त्रुतं **रक्कस-गंग**नातननुजं वीराग्रगण्यं तद-।
य-लक्ष्मी-गृह-दीपकं **भुजबळ-श्री-गङ्ग**-भूपाळकम् ॥

आ-मारसिंग-देवं आद्रंवल्लियेन्बूरुमं वसदियाग्नेय-कोणरेयिम्बूडल्लु गद्दे गळ्य मत्तलोन्दु वेद्दले मत्तलेरडुमं विट्टन् । माघनन्दिसिद्धान्त-देवर गुड्डं मारसिंग-देवं मत्तवातन तम्म प्रभाचन्द्रसिद्धान्त-देवर गुड्डं नन्नियगङ्ग-देवन् सिरियुरगे येन्बूरननागदेर्यि तेङ्कण कोळद केळगे गळ्य मत्तलोन्दु वेद्दले मत्तलेरडुमं विट्टन् । वर्म्म-देव सक मारसिंग नन्नियगङ्ग ९७६ विज [य] ९८७ [विश्वाव] सु ९९२ सौन्य । अनन्तवीर्य्य-सिद्धान्त-देवर गुड्डं रकस-गंगं नन्निय-गङ्गं विट्ट गदेर्यि तेङ्कलु हरकेरिय सीमे-वरं विट्ट गद्दे गळ्य मत्तलोन्दु वेद्दले गळ्य मत्त-लेरडुं इन्तीन्वृत्ति नण्डलिय होलद भूमियिन्ती-हन्नेरडु मत्तलु वेद्दलेय सीमे मूडण देसे तळवृत्तिय गद्दे । तेङ्क हरकेरिय सीमेय नट्ट कल्लगलु हडुवलु पिरिवल्लु वडग मोरसर-कोळ मत्तं कटकद गोवं रकस-गङ्गं हूलियकेरेय गद्द्युमदर हुत्तण वेद्दलेयुमं विट्टनदर सीमे मूडलु चिक्कवणजिगनकेरे तेङ्कलु तट्टकेरेय गुड्डेय वडगद····नीर्व्वारि हडुवलु नट्ट कल्लि वरलु गुड्डेय मूडण नीर्व्वारि वडगलु वडगण दिन्विन नीर्व्वारि चिक्कवञ्जिगनकेरेय वडगण कोडि ॥

मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्डन् ।

भुज-बळदिं शत्रु-मही- । भुज-कुजमं कित्तु मुत्ति कोण्डेगळं कोण्- ।
डजित-बळनेनिसि नेगर्द । भुजबळ-गङ्ग-क्षितीशनवनिप-तिलकं ॥

- इन्तेनिसि नेगर्द भुजबळ-गंग-पेर्म्माडि-देवं सक-वर्ष १०२७ नेय सर्व्वजितु-फाल्गुण-मासद १ शुक्रवारदन्दु मण्डलिय पट्टद-तीर्त्थद वसदिय नित्य-निवेद्य-पूजेगं ऋषियर्गाहार-दानक्कं विट्ट दत्ति हेग्गणगिले येन्बूरं सर्व्व-बाधा-परिहारं माडि विट्टन् (आगेकी २ पंक्तियोंमें

सीमाकी चर्चा है) **प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्ड नन्नियगंग-पेर्म्माडि-देव।**

आ-भुजवळगङ्ग-····। ··········वन-भ्राजित मग-बुद्दिद····। ·········दिक्-तटं रा-। ज्याभिषवाधिपतियेनिप **नन्निय-गङ्गम्**॥

देसेगळनेय्दे पर्व्विद नेलक्किदे तां नेलगट्टेनिप्प वल्-।
पेसेवुदु तोळोळेण्-देसेय गण्डर मीसेय मेले-मेले वर्-।
त्तिसुवुदु गण्ड-गर्वद जसं वडवाग्निय बायनेय्दे बत्-।
तिसुवुदु तेजमेनधिकनादनो **नन्निय-गङ्ग-**भूभुजम्॥

पद-नखदोळ् दशाननते नम्र-नृपालि-मुखाङ्कदिं जया-।
स्पद-भुजदळ्ळि षण्मुखते दुर्ज्जय-शक्ति-धरत्वदिं चतुर्-।
व्वेदनते वक्त्रदोळ् चतुर-वाणियिनोप्पिरलेन्तु नोर्प्पडा-
भ्युदयमनेय्दिदत्तु पलवुं मुखदिं तवे कीर्त्ति गङ्गनोळ्॥

दिगिभमनोत्ति कीलिडिपनग्गद केसरिवोले वाय्दडम्।
मुगिये तळ-प्रहारदोळे मग्गिपनुङ्कुटदिन्दे मीण्टुवम्।
नगमनिवं कवुङ्कुडिव तेङ्कुडिवन्नने सम्बुशैलमम्।
नेगपिद पन्ति-दोळवननेळिपनेम्बुदु **मारसिङ्गन**[1]॥

स्वस्ति **सत्यवाक्य-कोङ्गुणि-वर्म्म** धर्म्म-महाराजाधिराजम् परमेश्वरम्। **कोळालपुर**-वरेश्वरम्। **नन्दगिरि**-नाथं मद-गजेन्द्र-लाञ्छनम् चतुर-**विरिञ्चनं पद्मावती**-देवी-लब्ध-वर-प्रसादम् विचकिळामोदं **नन्नियगङ्गं**। जयदुत्तङ्गम्। गङ्ग-कुल-कुवळय-शरच्चन्द्रम्। मण्डलिक-देवेन्द्रम्। दर्प्पोद्धताराति-वनज-वन-वेदण्डम्। कुसुमकोदण्डम्। गण्डर-दण्डम्। दुड्डरगण्डम्। नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितम्। श्रीमन्न-

१ यहाँ 'मारसिंग' नन्निय-गंगका ही दूसरा नाम मालूम पड़ता है।

त्रिय-गङ्ग-पेर्म्माडि-देवम् तन्मज्जं वर्म्म-देवं माडिसिद मण्डलिय पट्टद-तीर्थद बसदियं कल्लु-वेसनागि माडिसिद पट्टद-बसदिगे सक-वर्ष १०४३ नेय शुभकृत्-संवत्सरद भाद्रपद-मासद शुद्ध ५ बृहस्पति-वारदन्दु कुरुळिय-बसदियादियागि पञ्चविंशति-चैत्यालयमं धर्म्मप्रभावनेयिन्द माडिसिद प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर शिष्यर् मुख्य-वागि बिट्ट वृत्ति बसदिय मुन्दे गद्देगळ्ये मत्तरोन्दु बेद्दलेगळ्ये मत्तरेरडु बसदियहळ्ळिय हुङ्कमुमं बिट्टरु मत्तं नन्नियगङ्ग-देवनुं पट्ट-महा-देवि कञ्चल-देवियरुं पद्मावती-देविगे हरसि हेम्माडि-देवनं हडेदु काणि-केयं तलाव्व नाडुर्गळोळु शर-मित-पणवं कोट्टरा-चन्द्रार्क-तारं-बरं। बुधचन्द्र-पण्डित-देवर गुड्डम्।

मुनिसि दिग्दन्ति-दन्ताङ्कुळनवयवदिन्दोत्ति वेगं कळल्चम्- ।
विनेगं किचेरने तारेगेगळनदटिन्दाल्किळुन्ददिं सु- ।
सने वार्द्धि-व्रातमं हुर्रने तवुविनेगं पीरने कोपदिं पोय्- ।
यने वेट्टं पिट्ट-पिट्टागिरे सनरदोळी-वीर-पेर्म्माडि-देवम् ॥

(हमेशाका अन्तिम श्लोक)

[इस समय त्रैलोक्यमल्ल-देवका विजयराज्य प्रवर्द्धमान है। गङ्गान्वय (वंश) का अवतार इस प्रकार हुआः—

वृषभ-तीर्थ-कालमें जब कि अयोध्यामें इक्ष्वाकु-वंशमें राजा हरिश्चन्द्रको राज्य करते हुए बहुत समय हो गया था, उसका पुत्र भरत हुआ। उसकी पत्नी विजय-महादेवी थी। जब उसको गर्भ-दोहद हुआ तो उसे जोरसे नृत्य करनेवाली लहरोंसे ओतप्रोत, मत्स्य, चक्रवाक पक्षी तथा चमकीले हंसोंसे पूरित गङ्गामें नहानेकी इच्छा हुई। अपनी इस इच्छाको पूरा करनेके बाद, नौ महीने पूरे होनेपर उसे एक लड़का हुआ। उस लड़केका नाम, चूँकि गङ्गामें नहानेके बाद वह उत्पन्न हुआ था अतः गङ्गदत्त रक्खा गया। गङ्गदत्तका पुत्र भरत हुआ और उसका पुत्र गङ्गदत्त हुआ। इस गङ्गदत्तकी

लड़कीका लड़का हरिश्चन्द्र हुआ, उसका लड़का भरत हुआ और उसका फिर गङ्गदत्त ।

गंग वंशकी परम्परा इस प्रकार जारी थी,—जब कि नेमीश्वरका तीर्थ चल रहा था,—उस समय, राजा विष्णुगुप्तका जन्म हुआ । यह राजा अहिच्छत्र-पुरमें शान्तिसे निवास कर रहा था, उसी समय नेमि तीर्थंकरका निर्वाण हुआ और उसने ऐन्द्रध्वज पूजा की, जिससे प्रसन्न होकर देवेन्द्रने उसे ऐरावत हाथी दिया ।

विष्णुगुप्त-महाराज और पृथ्वीमति-महादेवीसे भगदत्त और श्रीदत्त नामके दो पुत्र हुए । पिताने भगदत्तको राज्य करनेके लिये कलिंग-देश दे दिया और वह उसपर 'कलिंग गंग' नामसे राज्य करने लगा । दूसरी तरफ, उसने वह मत्त हाथी तथा शेष संपूर्ण राज्य राजा श्रीदत्तको दे दिया । इस प्रकार जब श्रीदत्तके समयसे हाथीको मुकुटमें धारण किया गया था,—प्रियबन्धुवर्म्मने उत्पन्न होकर अपनी नीतिसे सारी पृथ्वीकी रक्षा की ।

जिस समय वह प्रियबन्धु शान्तिसे राज्य कर रहा था, उस समय पार्श्व-भट्टारक (तीर्थंकर)को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ, जिसकी पूजाके लिये सौधर्म्मेन्द्रने आकर केवली-पूजा की । इसी अवसरपर स्वयं प्रियबन्धुने भी आकर केवलज्ञानकी पूजा की । उसकी श्रद्धासे प्रसन्न होकर इन्द्रने पाँच आभरण (अलङ्कार) उसे दिये और कहा,—"अगर तुम्हारे वंशमें आगे कोई मिथ्यामतका माननेवाला उत्पन्न होगा, तो ये (आभरण) लुप्त हो जायेंगे ।" ऐसा कहकर, और अहिच्छत्रका 'विजयपुर' नाम रखकर इन्द्र चला गया ।

दूसरी ओर, पूर्ण चन्द्रमाके समान, गंग-वंश बढ़ता ही चला गया और इस वंशमें राजा कम्पके पद्मनाभ नामका एक पुत्र उत्पन्न हुआ । पद्मनाभके, शासन-देवताकी कृपासे, दो पुत्र उत्पन्न हुए, जिनका नाम उसने राम और लक्ष्मण रखा ।

जब ये दोनों कुमार शान्तिसे रह रहे थे, उज्जयिनी–शासक महीपालने उनको जा घेरा और उनसे इन आभूषणोंको माँगा । पद्मनाभने देनेसे [illegible] कर दिया ।

इसके बाद अपने मन्त्रियोंकी सम्मतिसे, उसने अपने पुत्रोंको, अपनी कुमारी छोटी बहिन तथा ४० चुने हुए ब्राह्मणोंके साथ बाहर भेज दिया, और चूँकि वे दक्षिणको जा रहे थे, उनका नाम बदलकर क्रमसे दडिग और माधव रख दिया।

चलते-चलते वे एक अत्यन्त मनोरम स्थानपर आये, जहाँ उन्हें विशाल पेरूर् (शायद कोई तालाव-विशेष) और एक पहाड़ी मिली जो पुष्पाच्छादित मन्दार, नमेरु तथा चन्दनके वृक्षोंसे आवृत थी। उस गङ्ग-हेरूरको देखकर वहीं उन्होंने एक तालावके किनारे अपने तम्बू तान दिये, वहाँ एक चैत्यालय भी उन्हें दिखाई दिया, जिसकी तीन प्रदक्षिणा करनेके बाद, स्तुति करते समय, क्राणूर-गण-आकाशके सूर्य, गङ्ग राज्यके प्रवर्धक श्री-सिंहनन्द्याचार्य दिखाई दिये। गुरुमें श्रद्धा होनेके कारण उन्होंने उनकी विनय की और अपने आनेका उद्देश्य कहा। इसपर वे उनको हाथ पकड़कर ले गये और उन्हें विद्याकी कलामें प्रवीण किया, और कुछ दिनोंके बाद अपने श्रद्धा-बलसे पद्मावती देवीको प्रकट कर वर प्राप्त किया, और उन्हें एक तलवार तथा संपूर्ण राज्य दिया।

जिस समय मुनिपति ऊपरकी ओर देख रहे थे, माधवने अपनी तमाम शक्तिसे एक पाषाण-स्तम्भपर[1] प्रहार किया, और वह स्तम्भ कड़कड़ करते हुए नीचे गिर पड़ा। मुनिपतिने इस शक्तिको देखकर उनको कर्णिकारके परागोंसे तैयार किया गया एक मुकुट पहिनाया, उनके ऊपर अनाजकी वृष्टि की और बहुत खुशीसे तमाम पृथ्वीका राज्य देते हुए, झण्डेके लिये अपनी पीछीको चिह्न बनाया, तथा बहुतसे सेवक, हाथी और घोड़े दिये।

तमाम राज्यका अधिकार देते हुए उन्होंने उन्हें इस उपदेशसे सावधान किया:—अपनी प्रतिज्ञात बातको यदि वे नहीं करेंगे; अगर वे जिनशासनको स्वीकार नहीं करेंगे; अगर वे दूसरोंकी स्त्रियोंको ग्रहण करेंगे; अगर वे मांस और मधुका सेवन करेंगे; अगर वे नीचोंसे सम्बन्ध जोड़ेंगे; अगर वे आवश्यकतावालोंको अपना धन नहीं देंगे; अगर युद्धभूमिसे भाग जायेंगे:—तो उनका वंश नष्ट हो जायगा।

---

१ शिलालेख इस बातमें एक राय हैं कि यह प्रहार तलवारसे किया गया था।

ऐसा कहनेके बाद,—उच्च नन्दगिरि उनका किला हो गया, कुवलाल उनका नगर बन गया, ९६००० उनका देश हो गया, निर्दोष जिन उनके देव हो गये, विजय उनकी युद्धभूमिकी साथिन हो गई, जिनमत उनका धर्म हो गया।

आगे गङ्गवाडि ९६००० की चतुर्दिक्-सीमा दी है।

राज्य प्राप्त करनेके बाद, दडिग और माधव दोनों, जब कोंकण देशको अधीन करनेके लिये आ रहे थे, उन्होंने मण्डलि देखी, जिसके बाहरी प्रदेशमें एक विशाल तालाबको सफेद जल-कमलिनी और हजारपत्तेवाले विकसित कमल तथा बहुत-सी मछलियोंके शब्दोंसे आकर्षक जानकर वहीं उन्होंने अपने तम्बू गाड़ दिये। पहाड़ीकी सुन्दरता देखकर सिंहनन्द्याचार्यने उन्हें वहाँ एक चैत्यालय निर्माण करनेकी प्रेरणा की, जिसे उन्होंने मान्य किया।

और कुछ दिनोंके बाद वे कोलाल चले गये और शान्तिसे राज्य करने लगे। जैसे जैसे गङ्ग-वंश बढ़ता गया, दडिगके माधव नामका एक पुत्र हुआ, जिसने राज्य किया। उसका पुत्र हरिवर्मा, उसका पुत्र विष्णुगोप, जिसके मिथ्यामतके माननेके कारण, वे आभूषण विलीन हो गये थे। उसका पुत्र पृथ्वी गङ्ग हुआ, जिसने सत्यमत अङ्गीकार किया। उसका पुत्र तडङ्गाळ माधव था।

इसका पुत्र अविनीत गङ्ग था। यह अपनी शत-जीवी बातको सुनकर, परीक्षाके लिये, अत्यन्त भयानक बाढ़वाली कावेरीमें कूद गया और फिर तैर कर निकल आया। यह पक्का जिनभक्त था।

उसके बाद दुर्विनीत गङ्ग हुआ, जिसका पुत्र मुष्कर था। मुष्करके बाद क्रमसे एकके बाद एक श्रीविक्रम और भूविक्रम हुए। भूविक्रमके नव-काम और एरग पुत्र हुए। इनमेंसे एरगके एरेयङ्ग पुत्र हुआ; उससे श्रीवल्लभ, उससे श्रीपुरुष, उससे शिवमार और उससे मारसिंह।

मालव सहको स्वाधीनकर और एक पाषाणपर 'गङ्ग-मालव' खुदवाकर मारसिंहने कन्नमुज्जेके राजाके छोटे भाई जयकेसीको युद्धमें मारा।

मारसिंहका पुत्र जगत्तुंग हुआ; उसके राचमल्ल हुआ जो जिनधर्म-के लिये चन्द्रमा था।

उसके नाती मल्लय्य और बूतुगपेर्म्मांडि हुए; बूतुगकी सन्तान एरेयप, उसका पुत्र वीरवेडंग, और उसके राचमल्ल उत्पन्न हुआ।

राचमल्लसे एरेयङ्ग उत्पन्न हुआ; जिसका बूतुग, जिसका मल्ल-देव, जिसका गुत्तिय-गंग, जिससे मारसिंग, उसका पुत्र गोविन्दर, उसका सँगोट्ट विजयादित्य; उससे राचमल्ल उत्पन्न हुआ; उससे मारसिंग, उससे कुल्ल-राजिग, उससे गर्व्वदगङ्ग; गोविन्दरके छोटे भाईका पुत्र नन्न-गोविन्दर था। (उसकी प्रशंसा) उसका छोटा भाई कलियङ्ग था। उसके बाद जिस समय गंगवंश चल रहा था:—

काणूरगणके आचार्योंकी वंशावली निम्न भाँति थीः—

दक्षिण-देशवासी, गङ्ग राजाओंके कुलके समुद्धारक, श्रीमूलसंघके नाथ सिंहनन्दि नामके मुनि थे। तदनन्तर अर्हद्बल्याचार्य, बेट्ट दामनन्दि भट्टारक, बालचन्द्र भट्टारक, मेघचन्द्र त्रैविद्यदेव, गुणचन्द्र पण्डितदेव। इनके बाद शब्द-ब्रह्म गुणनन्दिदेव हुए। इनके बाद महान तार्किक एवं वादी प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव हुए। वे मूलसंघ, कोण्डकुन्दान्वय, क्रानूर-गण तथा मेषपाषाण-गच्छके थे। उनके शिष्य माधनन्दिसिद्धान्तदेव हुए। उनके शिष्य प्रभाचन्द्र हुए।

इनके सधर्मा अनन्तवीर्य मुनि थे; मुनिचन्द्र मुनि भी। उनके शिष्य श्रुतकीर्ति। उनके बाद कनकनन्दि त्रैविद्य हुए, जिन्हें राजाओंके दरबारमें 'त्रिभुवन-मल्ल वादिराज' कहा जाता था। इनके सधर्मा माधवचन्द्र थे। उनके शिष्य त्रैविद्य बालचन्द्र यतीन्द्र थे।

प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेवके शिष्य बुधचन्द्रदेव थे (उनकी प्रशंसा)। जिस समय आचार्य्य-परमेष्टि-अन्वयके तिलकस्वरूप बुधचन्द्र-पण्डितदेव विराजमान थे :—

प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवके गृहस्थ-शिष्य भुजबल-गंग धर्म्मदेव थे।

इन प्रसिद्ध धर्म्मदेव, भुजबल-गंग पेर्म्मांडि-देवने 'बसदि' बनवाई। यह वही बसदि है जिसे पूर्वमें दडिग और माधवने मण्डलिकी पहाड़ीपर बनवाई थी, और जिसके लिये उसके गंगवंशके राजाओंने पूजाका प्रबन्ध जारी रखा था, और जिसे बादमें उन्होंने लकड़ीकी बनवा दी थी,—यह

आजतककी बनी हुई तथा भविष्यमें जो मण्डलि-हजारकी एडदोरे-सत्तरमें बनेंगी उन सभी बसदियोंमें मुख्य थी। इसका नाम पट्टद-बसदि (शाही बसदि) रक्खा था, और इसे (उक्त) भूमिदान दिया।

बर्म्मदेवके ४ लड़के थे—मारसिंग; उसका छोटा भाई नन्नियगंग; उसका छोटा भाई रक्कस-गंग; उसका छोटा भाई भुजबल-गंग।

उक्त मारसिंग-देवने आर्द्रवल्लिमें (उक्त) कुछ भूमिका दान दिया। इसके अतिरिक्त, माघनन्दि सिद्धान्तदेवका गृहस्थ शिष्य मारसिंह-देव (शक ९८७ विश्वावसु) और उसका छोटा भाई, प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देव-का शिष्य, नन्नियगङ्गदेव था। इन दोनोंने सिरियूरमें (उक्त) कुछ भूमिका दान दिया। (शक ९९२ सौम्य)

बर्म्मदेवका दानका समय—शक ९७६ विजय।

अनन्तवीर्य-सिद्धान्त-देवके गृहस्थ-शिष्य रक्कस-गङ्गने (उक्त, सीमा-सहित) भूमिका दान दिया। मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवके गृहस्थ शिष्य भुजबल-गंगने शक १०२७ में, सर्वजितु वर्षमें, (उक्त) भूमिका दान किया। नन्नियगंग-पेर्माडि देवका 'नन्नियगंग' नामका लड़का हुआ। (इसकी प्रशंसा), इसने शक वर्ष १०४३ शुभकृत् वर्षमें मण्डलिकी पट्टद-तीर्थ बसदिके लिये, २५ चैत्यालय और बनवानेके साथ-साथ, कुछ जमीनका दान दिया। इसकी पट्टमहादेवी कञ्चल-देवी थी।]

२७८

श्रवणबेलगोला—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०४३=११२१ ई०]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२७९

श्रवणबेलगोला—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०४४=११२२ ई०]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२८०

तेर्दाळ—कन्नड़

[शक १०४५=११२३ ई०]

[तेर्दाळ दक्षिण महाराष्ट्रके सांगली जिलेका एक बड़ा गाँव है। इस स्थानकी जैन 'बस्ति' में एक पाषाण पीठ (stone tablet) है जिसपर ३ विभिन्न भागोंमें विभक्त एक अभिलेख है। यह लेख उसका प्रथम भाग है, यह इस समूचे लेखकी ५६ वीं पंक्तिपर जाकर समाप्त होता है।]

[IA, XIV, P. 14–26 (Lines 1–56)]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
श्रीमन्नम्रसुरासुरोरगलसन्माणिक्यमौक्तिप्रमा-
स्तोमालंकृतपादपद्मयुगलं कैवल्यकान्तामनः-
प्रेमं सन्मति-नेमिनाथ-जिननाथं तेरिदाळातिशय-
श्रीमत् (द्) भव्यजनके माळ्कनुदिनं दीर्ग्घायुमं श्रीयुमम् ॥
क्षितिभृत्त्राणप्रभावोत्करकरिमकरोधत्प्रयुक्ताब्धिवेला-
वृतजम्बूद्वीपमध्योद्भवकनकनगकीक्षिसल् दक्षिणाशा-
क्षिति कण्गोप्पिप्पुदेत्तं भरतविषयमा देशदोळ् कुन्तळोघत्-
क्षिति तोर्कुं चेल्विनिं तद्धरणियोळेसेगुं कूण्डिनामोद्वदेशम् ॥
तद्विषयमध्योदेशदोळ् ॥

निरुपमगन्धशालिवनदिं वनदिं कोळदिं तटाकदिं गिरिवन-तोय-दुर्ग्ग-कुळ दिन्दगळिं बुध-माधवार्क्क-शंकर-जिन-सद्मदिं विपणि-मार्ग्गदिनोप्पुत तेरिदाळ पनेरडर चेल्वनेय ॥

१ यहाँपर यह लेख असंस्पष्ट और सरलतासे पढ़नेके लिये पंक्तिवार न देकर नियमानुसार पठनीय साधारण शैलीसे दिया जाता है।

पोगळ्ल्कजनुं नेरयं धरित्रियोळ् ॥ तज्जनपदविलासवनितावदन कमळक्के विशाळनयनकमळमेने सोगयिसि ॥ उपमातीतमेनल्कगळ्द्-गळ कोटाचक्रदिं कूडे-कूप- पयोजाकर-कीर-भृङ्ग-वन-नाना-देव-भूदेव-वैश्यपवित्रास्पद- कोटियिं सुजनरिं श्री-तेरिदाळाभिधानपुरं तीवि करं स्थिरं प्रतिदिनं तोर्कुं जगच्चक्रदोळ् ॥ दुर्व्वारातीभ-पञ्चानन-निभ-सुभटानीकदिं विश्वविद्यागर्व्वोन्मत्त प्रसिद्धागमकुशळबुधव्रातदिन्दाश्रितर्गिन्द्रोर्व्वीजातोपमानोन्नतचतुरजनश्रेणियिं तीवि तत्पन्निर्व्वर्गावुण्डरिं कण्गेसेवुदसदळं भाविसल् **तेरिदाळम्** ॥ (श्लोक) भूविनुतचतुस्समयमनावग मेसेवारु दर्शनङ्गळुमं कैगावगद पन्निर्व्वर्गावुण्डुगळिह्रु रक्षिपर्-न्तत्-पुरमं ॥ धन-दन नेवनेन्दु कोरचाडुव काडुव तम्म काञ्चन-निचयङ्गळिं मणिगणंगळ राशिगळिं नवीन-मण्डन-बहुवस्त्रदिं पयगळिं बहुधान्यदिनोप्पि तोर्प्पेनच्चिन परदक्कळिं भरितवागि करं सोगयिक्कु तत्पुरम् ॥ अन्तु सन्तमुं वसन्तमुमेने तीवि सन्ततं सकळधरित्रिगळंकारमागे सोगयिसुव **तेरिदाळ** पन्नेरडर मन्नेय वल्लभर्गे वल्लभराद कुन्तळ-महीतळ-चक्रवर्त्तिगळन्वयावतारमेन्तेन्दडे ॥ वृ ॥

वनज-क्ष्माधर-पद्म-सद्मजनजं प्रोद्भूत-हारीत-नं-
दन-माण्डव्यनिनाद पञ्चशिखनिं वन्दा चळुक्यान्वया-
वनिपर्म्मुं पलरागे मत्तहितरं गेल्दुर्व्वियं ताळ्द तै-
लनदोन्दन्वय मेरुवान्त निळ्यं श्रीरायकोळाहळम् ॥

वृ ॥ मत्तमा वंशदोळ् जयसिंहवल्लभनेम्ब सिंहपराक्रमनादम् ॥
आतन तनयं दुष्टमहीतळ पतिगळननेकरं गेल्दखिळोर्व्वी-
तळमं तळेदं विख्यातं त्रैलोक्यमल्लनाहवमल्लम् ॥

व ॥ अन्तु समस्तधात्रीवल्लभेगे वल्लभनादाहवमल्लदेवन
प्रियतनूजन् ॥ घन-दोर्-व्विक्रान्तदिं गूर्जरनृपवळमं
गेल्दु मारान्त चोळावनिपङ्गाभीळ्काळानळमनोसेदु
सङ्ग्रामदोळ् तोरि भीतावनि पर्ग्गातङ्कमं पुट्टिसदनुनय-
दिं विश्वभूचक्रमं सज्जनवागल्तु रायकोळाहळनेने
तळेदं राय पेर्म्माडिरायम् ॥

व ॥ अन्तु कुन्तळमहीतळकान्ताकान्तनेनिसिद वीर-पेर्म्माडि-
रायन कट्टिदलगेनिसिद तेरिदाळद वीर-गोङ्क-क्षितीश्वर-
नन्वयदोळेनेवरानुं सले निज-जननिगं जनकर्ग्गे पूर्व्वपुण्य-
वेम्ब कळपावनिजक्के फलवुदयिसुवंते पुट्टि ॥ कलिगं
वेत्तिद वीरवान्तहितरं गेल्दुर्क्कि विद्विष्टमण्डलमं चक्रिगे
साधिसित्तळवदेक च्छत्रवागल्तुके निर्म्मळकीर्त्यङ्गनेगार्त्तु
कूर्त्तु कुडुतुं श्रीतेरिदाळावनीतळनाथं नेगळ्दं नृपाळतिळकं
लोकं महीलोकदोळ् ॥

वृ ॥ आतन नन्दनं च(व)ळदोळा रघुनन्दननेक-वाक्य-विख्या-
तियोळर्क्कनन्दननिन्दितशौर्य्यदोळिन्द्रनन्दनं नीतियोळब्ज-
नन्दननेनिप्प महत्त्वमनप्पुकेय्दनुर्व्वीतळदोळ् बुधर्प्पोगळ-
लिन्तेरगुर्व्विवरम् निरन्तरम् ॥

व ॥ तन्नृपोत्तमप्रियपुत्रन् ॥

वृ ॥ वल्लिदरागि पोगदिदिरान्तरिमन्नेयरन्नेयर्क्कळं वल्लहनो-
ल्दु नोडे रणरङ्गदोळोडिसि तेरिदाळदोळ् वल्लभनागि निन्द
जयवल्लभनं सितकीर्तिकामिनीवल्लभनेन्दु वण्णिसदनावनो
मन्नेय मल्लिदेवनतु ॥ क ॥

आ वीर-मल्लिदेव-महीवल्लभनर्धनारि गुणमणिगणदिं भू-त्रधुगेणेयेने वाचलदेवि महीन्द्रजेगे सीतेगोरे दोरेयल्ते ॥ वि (वृ) ॥

अवरिवर्ग्गनुरागदिं सिरिगवा कञ्जोदरंगं मनोभवनद्रिप्रियपुत्रिगं शशिधरंगं षण्मुखं वन्दु पुट्टुववोल् पुट्टि विरोधि-मत्तेयघरट्टं तेरिदाळ-क्षितीश-विळासं परिरञ्जिपं भुवनदोळ् निश्शंकेयिं गोङ्कमन् ॥

त्रि (वृ) ॥ कन्तु-विळास-लक्ष्मियेनिपग्गद वाचळदेवि माते विक्रान्त-विभासि-मल्ल-महीपं जनकं मुनि माघणन्दिसैद्धान्तिकचक्रवर्त्ति गुरु नेमिजिनं मनदिष्ट-देव्ववोरंतेने तेरिदाळद नृपाग्रणि गोङ्कनिदें कृतार्थनो ॥ अडसुव कुत्तवोत्तरिप मृत्यु कडंगुव मारि कोप्विनिं तोडर्वे विरोधि पाय्व पुलि पोय्व सिडिल् पिडिवुग्र पन्नगं सुडुव दवाग्निवाधे कडेगंचुवुदेन्ददे तेरिदाळदी कडुगलि गोङ्क-भूपतिय भव्यते केवळवे निरीक्षिसल् ॥ पसिद सिताहि सोङ्किदोडे संकिसि मन्त्रद तंत्रदासेयिन्द-सुवरेयागि विट्टिरदे पञ्च-पदङ्गळनोदि तद्विषप्रसरमनेव्दे पिङ्गिसि जिन-व्रतदोळु दृढनाद तन्न पेम्पेसेदिरे तेरिदाळदरसं नेगळदं कलि गोङ्क-भूभुजन् ॥ येत्तिसि तेरिदाळदोळगोप्पे जिनेश्वरसद्ममं समन्तेत्तिसिदं जयध्वजमनुर्व्विगे दिग्-मुख-दन्ति-दन्तदोळ् तेत्तिसिदं निजाङ्क-महिमा-क्षरमालिकेयं गडुन्ददेनुत्तमभव्यनो जिनमताग्रणि सद्गुणि गोङ्क-भूभुजन् ॥ सततं कीर्त्तिसदिर्प्पपे[2]रार्भुवनदोळ् भव्यजगत्सेव्यनं

जित-काळेय-कळङ्क-पङ्क-पटह-ध्वान्ताङ्कनं गोङ्कनम्
प्रतिपक्ष-क्षितिनाय-हृत्-सरसिजोद्यातङ्कनं गोङ्कनम्
क्षितियोळ् रञ्जिप तेरिदाळदेसवी निश्शंकनं गोङ्कनम् ॥

---

१ 'म' अक्षर छन्दपूर्तिके लिये है, वैसे इसकी कोई जरूरत नहीं है।
२ यह दूसरा 'प' गलत है।

बन्तेनिसिद गोङ्कमहीकान्त श्री-माघणन्दि-सिद्धान्तिकरं
बन्तेन्तो कोल्लगिरदिं [दं] तरिसि समस्त-भव्यरभिवर्ण्णिपिनम् ॥
तदाचार्य्यप्रभाववेन्तेन्दडे ॥ वरे दुग्धाब्धियिलब्धि चन्द्रनिनिनं
तेजोग्नियिन्देन्त [म]न्तिरली पोस्तक-गच्छ-देसिग-गणं
श्री-कोण्डकुन्दान्वयम्

निरुतं श्री-कुळचन्द्रदेव-यतिपोयधिग्धिपर्य्यरिं सद्गुणा-
कर-सिद्धान्तिक-माघणन्दि-मुनियिं कण्गोप्पुगुं वात्रियोळ् ॥

क ॥ अगणित-गुण-गणविनळेने नगवेर्व्वर्माघणन्दि-सैद्धान्तिकराव-
गनेसेवरसनृ-मतियिं जगदोळ् सामन्त-निम्बदेवन गुरुगळ् ॥

वृ ॥ सन्ततबन्द-चिन्तेगळनोक्कु जिनास्यविनिर्ग्गतागमात्यन्तरचिन्ते-
योळ् नेरेदु निर्ळ्दे सिद्दर सद्गुणंगळं चिन्तिसुतिर्प्प कोल्लगिरदग्गद सन्मुनि
माघणन्दिसैद्धान्तिक-चक्रवर्त्ति जित-मन्मथ-चक्रियेनिप्पनुर्व्वियोळ् ॥

वृ ॥ अन्तरिसिर्द्दि जैन-समयक्कोदिं जिननीगळोर्व्वनेम्बन्ते जिनव्रतक्क-
ळनशेषजनक्कुपदेशलिट्टु सामन्तनेनिप्प निम्बनेसगल् नेगळ्दोप्पुव माघ-
णन्दि सैद्धान्तिक-चक्रवर्त्ति जिन-धर्म्म-दुग्धाब्धि-सुधांशुवागने ॥ अवर-
शिष्यरु ॥

क ॥ वादि-विषोरग-तार्क्ष्य-कल्यादि-महा-गहन-दावदहनर्व्वे (र्व्वे)
लवद्-वादीभसिंहरेसेदर्न्मेदिनियोळ् कनकणंदिपण्डित-देवर् ॥ तत्पर-
वादिम-पञ्चाननर सधर्म्मर् ॥ श्रुतकीर्त्ति-त्रैविद्यव्र (त)तिपर्द्द-तर्क्क-
कर्क्कशर्

पर-वादि-प्रतिभा-प्रदीप-पवन निजदोषर् जगद्दुर्ल्लभ-भुवनान्तर-
दोळ् ॥ तत्परवादि-शिखरि-शिखर-निर्भ्भेदनोद्दण्डपवि-दण्डर सधर्म्मर् ॥

वृ ॥ जित-कुसुमायुधास्त्ररननिन्दितजैनमतप्रसिद्धसाधितहितशास्त्ररं विदळितोन्मद-मान-विमोह-लोभ-भूभृत्-कुलिशास्त्ररं पदपिनिं पोगळ्गुं धरे **चंद्रकीर्त्ति**-पण्डितरनतर्क्य-तार्किक-चतुर्म्मुखरं परवादिशूळरन् ॥ तत्परवादिमस्तकशूळर सधर्म्मर् ॥

वृ ॥ धृति भूभृत्पतियं गभीरवमृताम्भोराशियं साले सन्मति वाचस्पतियं पळंचलेविनम्मेय्वेत्त सन्मार्ग-सन्ततियिन्दं नेगळ्दिं देशिग-गणाधीश-**प्रभाचन्द्रपण्डितदेवो**ज्वळकीर्त्तिमूर्त्ति वडेदादं वर्त्तिकुं धात्रियोळ् ॥ तन्मुनीश्वरर सधर्म्मर् ॥

परवादिप्रकर-प्रताप-महिभृत्-प्राग्रोग्र-वज्रगुणा-
भरणर् श्रीवसुधैकवान्धवजिनेन्द्राधीश्वरोत्तुङ्गमं-
दिरदाचार्य्य नगेन्द्र-रुंद्र-निभ-धैर्य्यवर्द्धमान-व्रती-
श्वररिन्ती धरेयोळ् नेगळ्ते-वडेदं त्रैविद्य-विद्याधरर् ॥

यिन्तु नेगळ्तेगं पोगळ्तेगमधीश्वरराद वर्धमान-त्रैविद्यदेवरज्ज-गुरुगळप्प श्री-**माघणन्दि**-सैद्धान्तिक-देवरदिव्यश्रीपादपद्मगळम् ॥

स्वस्ति समस्तभुवनाश्रयं श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराजं परमेश्वरं परमभट्टारकं सत्याश्रयकुळतिळकं चालुक्याभरणं श्रीमद्-विक्रम-चक्रवर्ति-**त्रिभुवनमल्लदेवर** विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क्कताराम्बरम् कल्याणपुरद नेलेवीडिनोळ् सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि ॥ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द-महामण्डलेश्वरं **लत्तनूरपुर**वराधीश्वरं त्रिवलि-परेघोषणं रट्टकुलभूषणं सुवर्ण्ण-गरुड-ध्वजं सिन्धूर-लाञ्छनं विवेक-विरिञ्चनं गण्डमण्डलिक-गण्डस्थळ-प्रहारि देसकारर-देव मूरु-रायरा-स्थान कलि-विरुदर-गण्ड नुडिदन्ते-गण्ड साहसेनन्नसिंह नामादिसमस्तप्रशस्तिसहितं श्रीमन्महामण्डलेश्वरं

येलेय हेरिंगं अग(?)द (?)न्तरु वत्तिगरु तेगेद्द हेरिङ्गं नूरेलेयिन्ति-
न्तितुवं बिट्टर तेल्लिगरु मान्य-सान्यवेन्नदे देवर संजे-सोडरिंगं धूपारितेगं
गाणके सोल्लगे होरगणिं वन्द एण्णेय कोडके सोल्लगे यिन्तव बिट्टरु
गण-कुम्मारुरु देवर अष्टविधार्च्चने आहारदान नडवन्तागि दानशालेगे
आवगेगळन बिट्टरु हलसिगे-हन्निच्छीसिरद हेव्वट्टेयल् नडेव गात्रिगरु
देवरिगे अष्टविधार्च्चने नडवन्तागि हेरिङ्गे नूरु वोल्लेलेयं बिट्टरु ॥

[IA, XIV, p. 14-26 (lines 1-56), t & tr.]

२८१-८२-८३

श्रवणवेलोला—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०४५=११२३ ई०]

(जै० शि० सं० प्र० भा०)

२८४

होसहोळलु—संस्कृत और कन्नड़

[विना कालनिर्देशका, पर संभवतः लगभग ११२५ ई० का]

[होसहोळलु (कृष्णराजपेट परगना)में, पार्श्वनाथ बस्तिके दक्षिणकी ओरके पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

भद्रमस्तु जिनशासनाय । स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द-महामण्ड-
लेश्वर-द्वारावतीपुरवराधीश्वर-यादवकुलाम्बरद्युमणिसम्यक्त्वचूडामणि मले-
परोळु गण्डाद्यनेकनामालङ्कृत·········त्रिभुवनमल्ल तळकाडुगोण्ड
भुजवळ वीरगङ्ग होय्सळ-देव पृथिवि-यराज्यं उत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्ध-
मानमाचन्द्रार्कतारम्बरं सलुत्तमिरे गङ्गवाडि-तोम्भत्तरु-सासिरमनेक-
च्छत्रच्छायदिं पृथ्वी-राज्यं गेयुत्तिरलु तत्पादपद्मोपजीवि । स्वस्ति समस्त-

पूर्वेकं माडि सव्र्वनमस्यवागि नोळबि-सेट्टियरु कोट्ट····श्री-मूलसंघद पुस्तक-गच्छदवर्गेल्लरु साम्यमिल्ल इन्तु ई-धर्म्मव (हमेशाकी तरह अन्तिम शब्दावली और श्लोक)

[जिनशासनकी प्रशंसा। जिस समय वीरगङ्ग-होयसल-देव इस पृथ्वीपर राज्य कर रहे थे उस समय उनके पादपद्मोपजीवी, शुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवके गृहस्थ शिष्य नोळबि-सेट्टि नामके पोय्सल-सेट्टि थे। देमिकब्बे सेट्टिने त्रिकूट-जिनालय बनवाकर इसके खर्चके लिये दानमें अर्हनहल्लि गाँव दिया; इसीके साथ एक उत्तम तालाब, जिसके बीचमें दानशाला थी ऐसी एक गली या सड़क, दो तेलकी चक्कियाँ और दो बगीचे भी दिये। यह जिनालय उन्होंने मूलसंघ, देसिग-गण, पोस्तकगच्छ और कोण्ड-कुन्दान्वय कुक्कुटासन मलधारिदेवके शिष्य और अपने गुरु शुभचन्द्रसिद्धान्त देवको समर्पित कर दिया। बेट्ट नायकके पुत्र गण्ड-नारायण-सेट्टिने निर्दिष्ट दूसरी जमीन दी। यह सब दान नोळबि-सेट्टिने शुभचन्द्र-सिद्धान्तदेव के स्वाधीन कर दिया। और मूलसंघके पोस्तक-गच्छका जो कुछ था, उस सभीको चुंगी और करसे मुक्त कर दिया।]

[EC, IV, Krishnarajapet tl., n° 3]

२८५

श्रवणबेलगोला—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०४५=११२३ ई०]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२८६

हिरे-आवलि—कन्नड़

[विक्रमचालुक्यका ४९ वाँ वर्ष ?=११२४ ई०]

[हिरे-आवलिमें, रामलिङ्ग मन्दिरके सामने पड़े हुए पत्थरपर]

स्वस्ति श्रीमतु विक्रम-वर्षद ४ [ ] नेय साधा [रण]-सं-...१८ माघ-शुद्ध ५ बृ०-वारदन्दु श्रीमन्मूल-संघद सेन-गणद

पोगरि-गच्छद चन्द्रप्रभ-सिद्धान्त-देव-शिष्यरप्प माधवसेनभट्टारक-देवरु

मनदिं जिननं पदङ्ग्ळोळ् ।

अनुनयदिं निरिसि पञ्च-पदमं नेनेयुत्त् ।

अनुपम-समाधि-विधियिम् ।

मुनि माघ............पडेदम् ॥

[स्वस्ति । (उक्त मितिको), मूल-संघ, सेन-गण और पोगरिगच्छके चन्द्रप्रभ-सिद्धान्त-देवके शिष्य माधवसेन-भट्टारक-देव जिन-चरणोंका मनन करके, पञ्च-परमेष्ठिका स्मरण करके, समाधि-मरण धारण करके स्वर्गको गये ।]

[EC, VIII, Sorab tl., n° 127]

२८७

चल्लु(ल्य)—कन्नड़

[शक १०४७=११२५ ई०]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२८८

सावनूर—कन्नड़

[वर्ष प्लवङ्ग ११२८ ई० (ल्यू. राइस) ।]

[सावनूरमें, मारि-कट्टेके दक्षिणमें पड़े हुए एक पाषाणपर]

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाघनाशिने ।

कु-तीर्थ-ध्वान्त-संघात-प्रभिन्न-घन-भानवे ॥

श्रीमत्-परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ-महाराजाधिराज-परमेश्वर-परमभट्टारक सत्याश्रय-कुळ-तिळक चालुक्याभरण श्रीमत्-**त्रिभुवनमल्ल-पेर्म्माडि-देवर** विजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमा-चन्द्रार्क-तारम्बरं सलुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि ॥

वृत्त ॥ वनधि-व्याप्तावनी-चक्रदोळति-सुभटं विक्रमायत्त-चित्तम् ।
मुनिसिं मारम्पनावं त्रिपुर-विजयिगं शूद्रकङ्गं सुपर्ण्णी- ।
तनयङ्गं फल्गुणङ्गं दशरथ-तनुजङ्गं सहस्रार्जुनङ्गम् ।
दनुजप्रध्वंसिगं कौरव-नृप-रिपुगं **पाण्ड्य-भूपाळकङ्गम्** ॥
भरदिन्दङ्ग-कलिङ्ग-वङ्ग-मगधं नेपाळ-पाञ्चाळ-गुर- ।
ज्जर-गौळ-द्रविळान्ध्र-माळव-तुरुष्का……सौराष्ट्र-बर- ।
ब्बर-काश्मीर……………………………मरोत्- ।
करमं वेङ्कोळुवं भयङ्क……णं **पाण्ड्य-भूपाळकम्** ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरं **काञ्ची-पुर-वराधीश्वरं** यदुवंशाम्बर-द्युमणि सु-भट-चूडामणि निज-कुळ-कमळ-मार्त्तण्डं परिच्छेदि-गण्डं राजिग-चोळ-मनो-भङ्गं श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-देव-पादाब्ज-भृङ्गं नामादि-प्रशस्ति-सहितं……भुवन……दक्षिण-भुजा-दण्डनेनिसि ॥

वृत्त ॥ सततं धर्म्मिये धर्म्मजं……………ळा- ।
न्वितने हं कमळोद्भवं पर-हित-व्यापार……भू-तळ- ।
स्तुत-विद्याधर…………………………सत्य-सङ्- ।
गतने भास्कर-सूनु विक्र……नं **श्री-सूर्य्य-दण्डाधिपम्** ॥
प्रभु-मन्त्रोत्साह-शक्ति-त्रय-गुण-भरितं मान-सन्मान-दान- ।
……………नाराधकं नित्य-लक्ष्मी- ।

प्रसु-शौचाचार-सारं ······ वळ-विळसत्-पाण्ड्य······ ।
························ सूर्य्य-दण्डाधिनाथम् ॥

···अनवरत-विनुत-सुर-नर···घटित-पद-कमल-युगल श्रीमदीश्वर-···पादाराधक विरोधि-निकुरुम्ब······गण्ड पाण्ड्य-मण्डलिकसमा-मण्डन प्रचण्ड-दण्डनाथ······विराजमान सतत-सं···नाभिमान··· ···मन्त्रोत्साह-शक्ति-त्रय-गुण-गण···त नियोगयौगन्धर निखिल-धर्म्म-धारण······पाळ-मस्तक-खण्डन-प्रचण्ड-दोर्-दण्ड पाण्ड्य-मण्डळिक-दक्षिण······गर्व्वपर्व्वतारूढनि ऊढ-प्रौढ-नितम्बिनी-निकुरुम्ब-दिव्य···श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल परिच्छेदि-गण्ड पाण्ड्य-मण्डलिक······ शरणागतवज्र-पञ्जर । मृदु-मधुर··········दार-हित···सतत······ दण्डनाथ-कुळ-कमळिनी-विकासन-सहस्रकिरण । वन्दि-जन-भरणं··· ···तन्निं सूर्य-दण्डाधिनाथम् ॥

कं ॥ आळापदिन्दे पाण्ड्य-नृ- ।
पाळङ्गरगद विरोधि-नृप······ ।
···सि पद-नतरं प्रति- ।
पाळिसिद सु-भट······दण्डाधीशम् ॥

··········जिन-स्तवन···सम्पू···पवित्रोत्तमाङ्ग···दरदिं मुक्त ···विनुरुतर-वज्र···करतळ-रुचियिन्दोप्पुत···नर्त्यदिं भास्वर-कान्ता-रत्नमे······ ॥

कं ॥ मण्डळिय···दडे······केपेयेळु······डगलेनरे
··············· ॥

वृ ॥ दोरे मरु देवी··············ताम् ।
सरि नुत-लक्ष्मि तद्-सद्दशमा-प्रियकारिणि देवियेन्दोडी-

···धरेय·································काळियक्कनोळ् ।
वर-गुण-वार्द्धियोळ् मुनि-जन-प्रिय दान-विनोद-चित्तेयोळ् ॥
पडेदत्थँ कळ्ळरिं दायिगरिमळिपरिं भूपरिं किच्चिनिन्दम् ।··
किडुगं तानन्तदेम् शाश्वतमेनि····शाश्वतं मर्प्पेनेन्दा- ।····
गडे पूण्डि पूर्ण्ण-चन्द्रानने जिनपति-सद्-गेहमं सेम्बनूरोळ् ।
कड्ड-रय्यं तानेनल् माडिसिदळधिक-सद्-भक्तियिं काळियक्कम् ॥

स्वस्ति समस्तवस्तुविस्तार-गोचर·······जगान-जिनेश्वर-चरण-सर-सिरुहमधुकरोपमान-कुटिल-कुन्तळ-कळापे मृदु-मिधुर-सतत-सत्य-वचनालापे । शृङ्गार विरचित·······जन्मभूत·······मान-सूर्य्य-दण्डाधिनाय-विशाल-वक्षस्-स्थळस्थित-लक्ष्मी····ने सम्मान-दाने तार-हार-हर-हासा····शशि-विशद-कीर्त्तिविराजित-प्रवर्द्धमान-गुणवति पद्मावती-देवी-लब्ध-वर-प्रसादे जिन-पूजा-विनोदे धवळ-विशाळ-कुमुद-नेत्रे गोत्र-पवित्रे निश्शंकादि-गुण-मणि-गण-विराजिते सम्यक्त्व-रत्नाकरे पञ्चाणुव्रत-गुणाकरे सकळ-विनेय-जन-चिन्तामणि वनिता-निकर-चूडामणि नामादि-प्रशस्ति-सहितेयप्प श्री-सूर्य्य-दण्डनायकन पिरिय-दण्डनायकित्ति काळियक्कम् ॥

वृ ॥ जिन-धर्म्मं प्राणि····र्म्मं तनगद्दु कुल-धर्म्मं जिन-स्वामि देव्वम् ।
जनकं मिक्कास्तवर्म्मं जननि तनगे जक्कव्वे भव्यर्कळेन्दुम् ।···
तनगासद् तन्न त····गुणि कलि-देवं लसत्- शौर्य्य-धैर्य्यं ।
तनगीशं सूर्य्य-दण्डाधिपनेने तळेदळ् कीर्त्तियं काळियक्कम् ॥

सूर्य्य-चमूपन तम्मम् ।····
धैर्य्य-महा-मेरु वैरि-जन-लय····वत्-।
चौर्य्यं स्वामि-प्रिय-कर-।····
कार्य्यं दण्डाधिनाथनादित्याख्यम् ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-सामन्ताधिपति महाप्रचण्ड-दण्डनायक **चालुक्य-विक्रमादित्य-देव**-सभानर्घ्य-वस्तुनायक प्रभु-मन्त्रोत्साह-शक्ति-गुण-मणि-गणालंकृत-शरीर। भय-लोभ········**त्रिभुवन-मल्ल-पेर्म्माडि-देव**दक्षिण-भुजा-दण्ड रिपु-काळ-दण्ड। प्रसिद्ध-**सेनवर-दण्डनाथ**-प्रिय-पुत्र चारु-चरित्र। सतत-धार्म्मिक-धर्म्मनन्दन। स्वामि-प्रिय-मरुन्नन्दन। हर-चरण-कमल····सळ-सततानत-मधुकर। सकळ-गुणाकर। समग्र-वैरि-कुळ-कुधर-कुळिश-दण्ड। समर-प्रचण्ड। दुर्द्धर-**दुर्विनीत-दण्डनाथ**-वंश-वन-कुठार। सङ्ग्राम-धीर····आयदा-चार्य्य मन्दर-धैर्य्य **आन्ध्री**-नीरन्ध्र-कुच-कळश-दर्प्पण वन्दि-सन्तर्प्पण **कुन्तळी**-कुन्तळ-सुवर्ण्ण-कुसुमाभरण अनिन्दिताचरण पुरुषार्थ-स्वात्मीकृत-जीमूत-वाहन मान-विळसद्वन सतत-दान-सन्तर्प्पित-दीनानाथ-यूथ नामादि-प्रशस्ति-सहितं श्रीम**दादित्य-दण्डाधिनाथम्** ॥

प्रभु-मन्त्रोत्साह-शक्ति-त्रय-गुण-गणदोळ् सन्ततैश्वर्य्यदोळ् सू-।
क्त-भवोद्यद्-भक्तियोळ् सद्-विनय-नय-सदाचारदोळ् चित्तभूसन्-।
निभ-भद्राकारदोळ् तद्-वितरण-गुणदोळ् धार्म्मिक-स्वान्तदोळ् सत्-
प्रभवर्प्पेळ्निरारेम्बिनमेसेदप**नादित्य-दण्डाधिनाथम्** ॥

श्रीमद्-द्रविळ-संघेऽस्मिन् **नन्दि-संघे**ऽस्त्यरुङ्गळः।
अन्वयो भाति योऽशेष-शास्त्र-वारासि-पारगैः ॥
अवटु-तटमटति झटिति स्फुट-पटु-वाचाट-धूर्जटेरपि जिह्वा।
वादिनि **समन्तभद्रे** स्थितवति तत्र सदसि भूपं कास्थान्येषाम् ॥

इन्तेनिसिद **समन्तभद्रस्वामि**गळ सन्तानदोळु ॥

एकत्र गुणिनस्सर्व्वे **वादिराज** त्वमेकतः।
तस्यैव गौरवं तस्य तुळायामुन्नतिः कथम् ॥

अवर शिष्यरु ॥

इन्दोश्व कान्तमति-विस्तृतमम्बराच
भूमेश्व भूरि जळधेश्व गभीरमास्ते ।
मेरोश्व तुङ्गमजितेश यशस्तवोर्व्याम्
मत्तेभ-विम्बमिव मानव-तारकेऽद्य ॥

इन्तेनिसिद जितसेन-भट्टारकरग्र-शिष्यरु ॥

घन-चद्ध-क्रोध-धात्रीधर-कुळ-कुळिशं मान-मायद् गजास्फा
ळन-भद्रेभारि माया-गहन-दहन-दावानळं संस्फुरल्लो- ।
भ-नितान्त-ध्वान्त-विध्वंसन-खर-किरणं श्राव्य-काव्य-प्रियं भ-
व्य-निकायाम्भोधि-संवर्द्धन-हिमकरणं **मल्लिषेण-व्रतीन्द्रम्** ॥

एने नेगळ्द **मल्लिषेण-मलधारि-देवर** शिष्यरु ॥

आळापं वेड नैय्यायिक निज-मतमं नच्चदिर् स्सांख्य माण् चा- ।
चालत्वं सल्ल मीमांसक तोडरदेले बौद्ध पोॅ पोगु वादि- ।
व्याळेभोत्तुंग-कुम्भ-स्थळ विदळन-कण्ठीरवं वन्दपं श्री- ।
पाळ-त्रैविद्य-देवं जिन-समय-सुधाम्भोधि-सम्पूर्ण्णचन्द्रम् ॥

स्वस्ति श्रीमच्चालुक्य-विक्रम-कालद ५३ य **कीलक-संवत्सर-दुत्तरायण-संक्रमणदन्दु** श्रीमत्-सेम्बनूर स्तानाचार्य्य **शान्तिशयन-**पण्डितर कय्यल्लु श्रीमत्-**पिरिय-दण्डनाय**किति काळिकब्बेगळु धारा-पूर्व्वकं माडिसि कोण्डु पार्श्व-देवर कूटकं देवर त्रि····पूजारिय वियकं हलकट्टद केळगे बिट्ट गद्दे कम्म ४५० आ-केरेय हडुवण-कोडियोळगे ळदले मत्त १ इन्ती-धर्म्ममना रोव्वरल्लिय स्थानाचार्य्यरुं देवगुत्तरुं····त्रिर्व्वरुं बेस-चकळुं तप्पदे प्रतिपालिसुवरु मत्त स्थानि···केरेय केळगण

गईयुं अदर वळसि बेद्ल्लेयुम्.............में प्रतिपा (शेष पढ़े जानेके योग्य नहीं है)।

[EC, XI, Davangere tl., n° 90]

[जिनशासनकी प्रशंसा। स्वस्ति। जब, (उन्हीं चालुक्य उपाधियों सहित), त्रिभुवनमल्ल-पेर्म्माडि-देवका विजयी राज्य प्रवर्द्धमान था तब तत्पादपद्मोपजीवी राजा पाण्ड्य था। पृथ्वीपर उसका सामना करनेवाला कोई भी न था। उसने शिव (त्रिपुर), शूद्रक, गरुड, अर्जुन (फाल्गुन), राम, सहस्त्रार्जुन, कृष्ण, भीम, इन सबको जीता था।

उसका दण्डाधिप सूर्य्य यादव-वंशका सूर्य और राजिग-चोळके प्रयत्नोंको विफल करनेवाला था। उसकी पत्नी काळियक्के थी। जो धन चोरों, सगे-सम्बन्धियों, लोभियों, राजाओं, या अग्निसे नष्ट किया जा सकता है, उसकी प्राप्तिमें क्या स्थिरता है,-इसलिए उसने उसकी स्थिरताके लिये सेम्बनूरमें जिनराजका एक उत्तम मन्दिर बनवाया। उसकी प्रशंसा। काळियक्केके पिता आदवर्म्मा, माँ जक्कब्बे,......कलि-देव थे।

सूर्य्य-चमूपका छोटा भाई आदित्य-दण्डाधिनाथ था। उसकी प्रशंसा। द्रविळ-संघके नन्दि-संघमें अरुङ्गलान्वय चमकता है। उसमें समन्तभद्र, वादिराज, उनके शिष्य अजितेश (अजितसेन-भट्टारक) उनके ज्येष्ठ शिष्य मल्लिषेण-मलधारी, उनके शिष्य श्रीपाल-त्रैविद्य-देव हुए। प्रत्येकका एक-एक श्लोकमें गुणवर्णन।

(उक्त मितिको), सेम्बनूरके मन्दिर-पुरोहित शान्तिशयन-पण्डितके हाथोंमें, ज्येष्ठ दण्डनायकिति काळियक्कब्बेने जलधारापूर्वक पार्श्वदेव और उनकी पूजा तथा पुजारीकी आजीविकाके लिये (उक्त) भूमिदान किया। कल्याणकामना और शाप]

२८९-९०

श्रवणबेलोला—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०५०=११२९ ई० (कीलहॉर्न)]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२९१

ऊद्रि—कन्नड़

[विक्रम वर्ष कीलक ११२९ ई० (लु. राइस) ।]

[ऊद्रिमें चौथे पाषाणपर]

स्वस्ति श्रीमद्-विक्रम वर्षद कीलक-संवत्सरद माग (घ)-शुद्ध १३ श्रीमन्महामण्डलेश्वरं एकलरस-देवरुद्धरेयोळ् सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तिरे ॥

परम-जिनेश्वरं तनगधीश्वरनुद्धलसच्चरित्र""।
गुरु हरिण[न्दि]देव-मुनिपोत्तमनग्गद दण्डनायकम्।
वर-गुणि-बोप्पणं जनकनुन्नत-शीलद नागियक्क मा-।
तरेयेनलेम् कृतार्थनो धरित्रिगे सिंगण-दण्डनायकम् ॥

गुणद कणि जैन-चूडा-।
मणि वैरि-बलक्के समर-मुखदोळ् सुभटा-।
ग्रणि जिन-पदङ्गळं सिङ्-।
गण-दण्डाधिपति नेनेदु सद्-गति-वेत्तम् ॥

[स्वस्ति । (उक्त मितिको), जिस समय महा-मण्डलेश्वर एकलरस-देव, शान्ति और बुद्धिमत्तासे राज्य करते हुए उद्धरेमें विराजमान थे उस समय सिंगण दण्डनायक था। वह बड़ा भाग्यशाली था, क्योंकि उसके परम-जिनेश्वर अधीश्वर (इष्ट देव) थे, हरिनन्दि-देव-मुनि उसके गुरु, महान् दण्डनायक बोप्पण उसके पिता, और नागियक्क उसकी माता थी। यह दण्डनायक अपने समयका जैन-चूडामणि था, समरमें सामना करनेवाले ... अग्रणी था,—जिनपदोंका ध्यान करते हुए उसको सद्गति ... थी।]

[EC, VIII, Sorab tl., n° 149]

२९२

हूनशीकट्टि (जिला बेलगाँव)—कन्नड़

[शक १०५२=११३० ई० (लगभग)]

[१] स्वस्ति श्रीमद्-भूलोकमल्लदेवर वर्ष ६ नेय साधा (धा)रण संव-

[२] त्सरद फाल्गुन शु ५ आदिवारदन्दु श्रीमन्महामं-

[३] डलेश्वरं मारसिंहदेवरसरु अग्रहारं कोडन-पूर्व्व-

[४] दवळ्ळिय माणिक्यदेवर बसदिय सम्बन्धियेकसा-

[५] लेय-पार्श्वनाथदेवर विविधपूजाविधानक्के बिट्ट

[६] गद्देय सीमेय गुड्ड [॥] मङ्गळश्री [॥]

[मंगल हो । रविवार, साधारण 'संवत्सर' जो कि श्रीमान् भूलोकमल्ल-देवका छठा साल था, फाल्गुन शुक्ला पञ्चमीको,—महामण्डलेश्वर मार-सिंहदेवरसने कोडनपूर्व्वदवळ्ळि (गाँव) के माणिक्यदेव (देवता) की बसदि (मन्दिर) के एकसालेय-पार्श्वनाथदेव (भगवन्त) की अनेकविध रीतियोंकी पूर्तिके लिये धान्य (चावल) के बहुतसे क्षेत्र दिये ।]

[इ० ए०, १०, पृ० १३१-१३२, नं० ९८]

२९३

हन्तूर—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०५२=११३० ई०]

[हन्तूरु (गोणी बीडु परगना) में, ध्वस्त जैन-बस्तिके पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

---

१ भूलोकमल्लका दूसरा नाम सोमेश्वर तृतीय भी है । यह राजा पश्चिमी चालुक्य वंशका है ।

जयति सकळविद्यादेवतारत्नपीठम्
हृदयमनुपलेपं यस्य दीर्घं स देवः ।
जयति तदनु शास्त्रं तस्य यत् सर्व्व-मिथ्या-।
समय-तिमिर-घाति ज्योतिरेकं नराणाम् ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरं **द्वारावतीपुर**-वराधीश्वरं **यदु**-कुळ-कळश-कळित-नृप-धर्म्म-हर्म्यमूळ-स्तम्भन् । अप्रतिहत-प्रताप-विदित-विजयारम्भ । **शशकपुर**-निवास-वासन्तिका-देवी-लब्ध-वर-प्रसाद । श्रीमन्मुकुन्द-पादारविन्द-वन्दन-विनोदनित्यादि-नामावळीसमन्वितरप्प श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल तळकाडु-गोण्ड भुजबळ वीर-गङ्ग-**विष्णुवर्द्धन-होय्सळ-देवरु** मूडलु नंगलियघट्ट तेङ्कलु कोङ्गु चेरमनमलेहडुवलु बारकनूर घट्ट बडगलु साविमलेयिनोळगाद भूमियं भुज-बळाव-ष्टम्भदिं परिपाळिसुत्तुं **दोरसमुद्रद** नेलेवीडिनोळु सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे ।

वृत्तं ॥ प्रकटाटोपद **चक्रगोट्टदोडेयं सोमेश्वरं** बल्के त- ।
न्न कराळासिय कूर्प्पनेम्मेरदनो **गौडान्धकार-प्रचरण्-** ।
डकरं **माळव**-मेघ-जाल-पवनं **चोळोग्रकाळानळम्** ।
त्रि-कळिङ्ग-त्रिपुर-त्रिणेत्रनदटं श्री-**विष्णु**-भूपालकम् ॥

इन्तेनिसि नेगर्द श्री-**विष्णुवर्द्धन**-अग्र-तनूज निज-वंशाम्बर-द्युमणि । वन्दि-जन-चिन्तामणि । सत्य-शौचाचार-सम्पन्न । बुध-जन-मनःप्रसन्नन् । आळिम्मुन्निरिव सौर्यमं मेरेव । श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल **कुमार-बल्लाळ-देव**ननवरत-मनोरथावाप्तियिं राज्यं गेय्युत्तमिरे ।

क ॥ कळ्के वयल्गोक्क तुळक् । एळेयोळ् माराम्परिल्लदा-दिगधि-परम् ।
शेळदु नेलक्किकल्लु कौ- । वळिपुदु रिपु-नृप-कुमार-भैरवन मन ॥

आवङ्गमाव-धनमुम- । नीव महा-दानि युद्ध-विजयमना-मा- ।
देवङ्गमीयददटर । देवं वल्लाळ-देवनप्रतिम-बल ॥

-अन्तेनिसि नेगर्द श्रीमत्कुमार-बल्लाळ-देवनग्रानुजे हरियब्बरसिये-न्तप्पळेन्दडे सरस्वतियेन्ते सत्-कळान्विते । सीतेयन्ते विनीते । सुसीमा-देवियन्ते सुशीले रुक्मिणियन्ते गुणाग्रणि । अनल्प-कल्प-शाखानीकद-न्तनून-दान-जनित-जन-मनःपुळकेयुं । भगवदर्हत्-परमेश्वर-चरण-नख-मयूख-लेखा-विळसित-ललाट-पळकेयुम् । चातुर्व्वर्ण्ण-वर्ण्णितागण्य-पुण्य-जन-शिखा-मणियुम् । सम्यक्त्व-चूडामणियुमेनिसि ।

वृत्त ॥ धरेयोळनन्त-दिव्य-यति-सन्ततिगन्नमनाद-मीतियिम् ।
वरे पलरङ्गलेम्बभय-वाक्यमनातुररागि वेर्प्वर्ग्ग् ।
इरदे शरीर-रक्षणमनोदलु शास्त्रमनीव पेम्पिनिम् ।
हरियवे ताल्दिदल् पर-हितोक्त-चतुर्व्विध-दान-शक्तियम् ॥
पर-बल-दानव-संहा- । रारुण जल-लिप्त-खर्गनुन्नततेजम् ।
वर-विबुध-विभव-विभवं । हरि- कान्ता- कान्तनेसदपं विसुसिंग ॥
हरि-कान्तेयुमी-कान्तेय । दोरेगे वरल् कोरलेम्ब निम्मदद गुणोत्-करमनोल्कोण्डु हरियवे । पर-हितदिं धरेयोळैदे जसमं तळेदल् ॥

अन्तेनिसि नेगर्द श्रीमतु-हरियल-देवियर गुरुगळेन्तप्परेन्दडे श्रीमूलसंघद कोण्डकुन्दान्वयद देसिग-गणद पुस्तक-गच्छद श्री माघ-णन्दि-सिद्धान्त-देवर शिष्यरु ।

वृ ॥ मोहान्धकार-रिपु-शाक्य-नवोत्पलारिश् ।
चार्वाक-चन्द्र-किरण-प्रतिनाश-हेतुस् ।
सद्-भव्य-वारिज-महोत्सव-तेज-राजिर् ।
उज्जृम्भितो जगति गण्डविमुक्त-भानुः ॥

अन्तु जगद्विख्यातरप्प श्रीमत्-गण्डविमुक्त-सिद्धान्त-देवर गुड्डि हरियब्बरसियरु कोडङ्गि-नाड मलेवडिय हन्तियूरलनेक-रत्न-खचित-रुचिर-मणि-कळश-कलित-कूट-कोटि-घटितमप्प उत्तुंगचैत्यालयमं माडिसि खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धरणक्कं नित्य-पूजेगं ऋषियरजियर्कळाहार-दानक्कं सित-परिहारकं श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-होय्सळ-देवर कय्यल्लुं सर्व्व-बाधा-परिहारवागि गुत्तिय चिण्णन दीवर धम्मनन्तिर्व्वरग्दु हणविन मण्णुमं बिडिसिकोण्डु शक-वर्षद १०५२ नेय सौम्य-संवत्सर दुत्तरायणसंक्रान्तियन्दु तम्म गुरुगळप्प गण्डविमुक्त-सिद्धान्त-देवर कालं कर्च्चि धारा-पूर्व्वकं माडि कोट्टरु ॥ (हमेशाके अन्तिम श्लोक)

श्रीमन्-मल्लिनाथं विरुद-लेखक-मदन-म्महेश्वरं बरेदम् । नागरादि-नागरिक-द्रविळ-समुद्धरणनप्प माणिभोजन मगं विरुदरूवारि-वेश्या-भुजङ्ग बलक्रोजं कण्डरिसिदं मङ्गलम् ॥

[जिनशासनकी प्रशंसा । (अपने पदों सहित) विष्णुवर्द्धन-होय्सळ-देव अपने निवासस्थान दोरसमुद्रमें विराजमान थे । राजा विष्णुने चक्रगोट्टके स्वामी सोमेश्वरको अपनी तलवारकी धारसे डराया । वह गौड, मालव, चोळ, त्रिपुट, त्रि-कलिंग सबके लिये भयावह था । जब विष्णुवर्द्धनका ज्येष्ठ पुत्र श्रीमत् त्रिभुवनमल्ल कुमार वल्लालदेव राज्य कर रहा थाः— (उसकी शूरवीरता और औदार्यकी प्रशंसा करते हुए उसकी स्तुति) । कुमार-वल्लाल-देवकी बहिनोंमें सबसे बड़ी हरियब्बरसि थी । उसका वर्णनः—(जैन रूपमें उसकी भक्तिका प्रदर्शन, उसकी प्रशंसा) । उसका पति सिंग था; (उसकी प्रशंसा) ।

उस हरियब्ब-देवीके गुरु श्री-मूलसंघ, कुन्दकुन्दान्वय, देसिग-गण तथा पुस्तक-गच्छके माघनन्दि-सिद्धान्तदेवके शिष्य गण्डविमुक्त-सिद्धान्तदेव थे (उनकी प्रशंसा)

जगद्विख्यात गण्डविमुक्त-सिद्धान्त-देवकी गृहस्थ-शिष्या हरियब्बरसि ! कोडङ्गि-नाडके मलेवडिके हन्तियूरमें, गोपुरों या शिखरोंसे—जिनमें रत्न-

जड़ित चोटियाँ थीं—समन्वित एक विशाल चैत्यालय, तथा मन्दिरको मरम्मत करने, पूजाका प्रबन्ध करने, ऋषि और वृद्ध स्त्रियोंको आहारदान देने, तथा शीतसे रक्षा करनेके लिये—त्रिभुवनमल्ल होय्सल-देवके हाथोंसे तमाम चुङ्गियों व करोंसे मुक्त भूमि गुत्तिके चिह्न और बम्म मल्लुएसे ५ हणके किरायेसे लेकर (उक्त मितिको), अपने गुरु गण्डविमुक्त-सिद्धान्त-देवके पैरोंका प्रक्षालन करके उन्हें दी। (हमेशाके अन्तिम श्लोक)

मल्लिनाथने इसे लिखा और माणिभोजके पुत्र बलकोजने उत्कीर्ण किया।]

[EC, VI, Mudgere tl., n° 22]

२९४

कम्बदहल्लि—कन्नड़-भग्न

[बिना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग ११३० ई०]

[कम्बदहल्लिमें, जैन बस्तिके सामनेके पाषाणपर]

स्वस्ति यम-नियम-स्वाध्याय-ध्यान-धारण-मौनानुष्ठान-जप-समाधि-शील-गुण-सम्पन्नरप्प श्री-मूलसंघद कोण्डकुन्दान्वयद देशिय-गणद पुस्तक-गच्छद श्री-प्रभाचन्द्रसैद्धान्तिकर शिष्यितियरप्प........काय रुक्मब्बे जकब्बे कन्तियर्ग्गे तव....निसिधियं माडिसि ....स्वर्गस्थरु................

[(सर्वसाधुगुणसम्पन्न) प्रभाचन्द्र-सैद्धान्तिककी शिष्याएँ रुकमब्बे और जकब्बे-कान्तियरकी स्मृतिमें......स्मारक बनवाया।]

[EC, IV, Nagamangala tl., n° 21]

२९५

तगडुरा—कन्नड़

[बिना कालनिर्देशका]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२९६

श्रवणबेलगोला—कन्नड़

[बिना कालनिर्देशका]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२९७

आवल्वाडी—कन्नड़-भग्न

[शक सं० १०५३ (?)=११३१ ई०]

[आवल्वाडी (कोप्प तालुका)में, सीमाकी दीवालके पास]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं **द्वारावतीपुर**-वरा-धीश्वरं **दसकाष्ठनिवास वासन्तिका**-देवि-लब्ध-वर-प्रसाद दशदिश···· तिलक क्रि········कुन्दपादा····तमन्द म····करन्द नन्द········रपा-ळमाथि····क्यं अरि-भीमज रिपु···ञ्जर············ळु गण्डं विश्व-विद्या-विचार····दला················मदि समस्त·····················**गवाडि नोणम्बवाडि** गोण्ड····वीरगङ्ग···विब्र········यिसळ **विष्णुवर्द्धन** ················दुष्टनिग्रहशिष्ट-प्र····सु··········दोळे····के जवर··· ············विष्णु····तारम्बरदोळु···रण····ळु **मल्लिनाथ** ॥ आतन समस्तभुवनख्याति····················गोत्र····ळर सूत्र············· मारसमन्वित····निरु····गोत्र················चूडा···· ॥ तत्पा········ ·······परम-ज·······धर्म्म···भीमं··॥ ···रङ्ग··········माचिकेय धर्म्म·············य वं··················· पाद············ ···न्द्र-जन····नरुळ·······गंरगं ॥ ················यना····जात ····गेने पुण्य····ळिगळु श्री तरव········प्राप्तरं सि····सायरागि तत्

स····न····श्री मूलसंघ, देशिय-गणद पुस्तक-गच्छद सि····द्धान्त-चक्रवर्ति दर्म्मण····तार-देवर सवर्म्मरप्प श्री····द्र-सिद्धान्त-देवर शिष्यरु ॥ रामं···जदि-पुर-गत धूत-कषायरु अतुल-रत्नत्रय-स·········
तदोळु श्रीमन्नयकीर्त्ति-भानुकीर्त्ति-मुनीन्द्ररु ॥ सतिय····कवोक्ष-व्रा····हतियु अदनोन्दु हृदयदलियु सिगळ····लेम्बुदे नयकीर्ति-व्रतिनायनोळु अतनु····दावानळनोळु ॥ विनुत····रुडकादान्वित विमल-वियत्-तिग्म-रुग्-मण्डलं व्रज·······मेनितु अनितु आतलरु····नकरं प्रस्फुरद्दर्प····डप्पन कोव्वजु ज····प्रहरणन् उपमानित-पुण्य····चा····णिक····ति पतिने विश्वविद्यानिदानम् ॥ अरित-व्रातंमुमतिशान्ततेयुं········र-क्रमुव. मात-क्तिणनुमूर्जि····दोळ्सेवन्तिरेसगुं श्रुत-सरसिज-भानु-मा····कीर्त्ति-व्रतियोळु ॥ आ-मुनि-मुख्यस्य यम····ड तन स गरुगळे····रेया····हियाद····ळ गुण-शील-व्रत-निधि मल्लिनाथनोळु मनुज····सि पोगर्त्ते नेगर्त्ते····पेर्ग्गडे मल्लिनाथ····सदियं माडिसि शक-वर्ष १····२ नेय साधारण-संवत्सरद फाल्गुण बहुळ २ सोमवारदन्दु····कीर्त्तिभट्टार कालं कर्चि····पूजेगं खण्ड-स्फुटित-जीर्ण्णोद्धारकं देवर केरेय केळगण·······यल्लु हन्नेरडु सल्लिगे गद्देयुं वसदि····मह····रणज·························ळवट्टमुं बिडिसिद नाम-हरन प····क्षदोळु तदनुजम् ॥ वसं····वागू-वि·······················
·······································ण्णु-मूपनं वसु-मननिरुतमा-केयन् अहरयनं·······लिप्ता·······श सिम················दिन् पेम्पु····सि श्री-मुल्लिन वसदि····गनिद त्रहि·········· गन् उदूव··········
·····························संत्-सर···तरसु······ समस्त-गुण···········
·································श्री चळुन विमळ············सर्वाहित-

[................................चक्रवर्त्तिगळ् एनिसि...................

.........हा...सर्व्व......हेग्गड......................................पूजेयगळु

....तिर्रे यदा रा...................................

....सादी....देन्दु.....................................द मान्चण

[जब कि (अपनी विशाल पदवियोंके साथ) विष्णुवर्द्धन इस जगत्-पर राज्य कर रहे थेः—मूलसंघ, देशियगण और पुस्तकगच्छके......-सिद्धान्तदेवके शिष्य मुनि नयकीर्त्ति और भानुकीर्त्तिके भक्त पेर्ग्गडे मल्लि-नाथने जैन-वसदिका निर्माण किया और इसे धनसे पुष्ट किया।]

[EC, III, Mandya tl., n° 50.]

२९८

श्रवणबेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०५३=११३१ ई०]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२९९

पुरले—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०५४, वर्ष नन्दन=११३२ (ठीक १११२) ई०]

[पुरले (विदरे परगना)में, गाँवके दक्षिण-पश्चिम वीर-सोमेश्वर मन्दिरके सामने पड़े हुए एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं श्री-पृथ्वी-वल्लभं महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिलकं चाळुक्याभरणं श्री-त्रिभुवन-...विजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारम्बरं सलु-त्तिरे ।

एरगेन्दा-विक्रमांकं गड निगळनाणेक्किट्टनो बेगे कौना- ।
शनबोळेम्बन्दु कार्य्यि बिळदे तळेयना-वीरनेन् नाणुवने-नेयु- ।
वेनेनुचं नीतियं-पड्डने कलहु-गण्डुम्मळं-गोण्डु चोक्कन् ।
ननसेन्देक्वाड्डिद्...तनेय तळेयनति-श्रान्तनान्दिन्दु नोक्कुल् ॥

तत्पादपद्मोपजीवि ॥ श्रीमद्देरेयङ्ग-होय्सळनाळ्दं हेम्माडियरसन कीर्त्ति-विशारदसेन्तेन्द्दे ।

इवनिन्दं कण्डेनेकुं-काडल कडेयनेकुं-कुम्दत्-कूटमं दिग्- ।
पत्र-दन्ति-व्रातमं लेकद पवणनेतुत्तुं यशो-ऽस्मि... ।
.......तं तनोन्दरिविनळ्दु तनार्प्पु तनेळ्कों तन्नु... ।
...विळासं तन्न पेम्पड्डळमेनेसिदं हेम्र्म मान्यात-भूपम् ॥
स्वस्ति श्री-जन्म-गेहं निभृत-निरुपमौर्व्वानळोद्दाम-तेजम् ।
विस्तारोपात्त-भू-मण्डळममळ-यशश्चन्द्र-सम्भूति-धामम् ।
वस्तु-व्रातोद्भव-स्थानकमतिशय-सत्वावलम्बं गभीरम् ।
प्रस्तुत्यं नित्यमम्भोनिधि-निभमेसेगुं होय्सळोर्व्वीश-वंशम् ॥
अदरोळ् कौस्तुभदोन्दनर्व्व-गुणमं देवेभदुद्दाम-स- ।
त्वदगुर्व्वं हिमरश्मियुज्वळ-कळा-सम्पत्तियं पारिजा- ।
तदुदारत्वद पेम्पनोर्व्वने नितान्तं ताल्दि तानल्ते पुट्- ।
टिदनुद्वेलित-वीर-वैरि विनयादित्यावनीपाळकन् ॥
नदवद्भूप-वळान्धकार-हरणं तेजोधिकं सन्तता- ।
भ्युदयं संहृत-विद्विषत्-कुवलय-(यं) श्रीकं द्रुहच्चक्र-सं- ।
मद-सम्पादन-हेतु सत्पथगतं पद्मोद्भवोद्भावकम् ।
विदितार्य्यानुग-नामनल्ते विनयादित्यावनीपाळकन् ॥
विनयादित्य-नृपं सज्जनगं दुर्ज्जनगमात्म-विनयं तेजम् ।

जनियिसे नयमं भयमं । विनूतनाळ्दोम् विशाल-भूमण्डलमम् ।
आ-विनयादित्यन वधु । भावोद्भवं-मन्त्र-देवता-सन्निभे सद्- ।
भाव-गुण-भवनमखिलं-क- । ळा-विळसिते केळयबरसियेम्बळ् पेसरिं ।
आ-दम्पतिगे तनूभव- । नादोम् सचिगं सुराधिपतिगं मुनेन्त् ।
आदं जयन्तनन्ते वि- । पाद-विदूरान्तरंगनेरेयङ्ग-नृपम् ॥
॥ आतं चालुक्य-भूपालकन बलद-भुज-दण्डमुद्दण्ड-भूप- ।
व्रात-प्रोत्तुंग-भूभृद्-विदळन-कुळिशं वन्दि-सस्यौघ-मेघम् ।
श्वेताम्भोजात-देव-द्विरदन-शरदभ्रेन्दु-कुन्दावदात- ।
द्योत-प्रोद्यद्यशश्री-धवळित-भुवनं धीरनेकाङ्ग-वीरम् ॥
मालव-सेनेयं तुळिदु धारेयनोवदे सुट्टु तूळ्दि तच्- ।
चोळननीळ्दु तत्-कटकमं कडुपिन्नेरे सूरे-गोण्ड दोश्- ।
शालि कलिङ्गनं मुरिदु भङ्गिसिदात्म-भुज-प्रतापमम् ।
केळे दिशाधिपं नेगळ्दनी-तेरदिन् [द] एरेयङ्ग भूभुजम् ॥
एरेयनखिळोर्व्विगेनिसिर्दे- । रेयङ्ग-नृपाळकनङ्गने चेल्विग्- ।
एरेवट्टु शील-गुणदिं । नेरेदेचल-देवियन्तु नोन्तरुमोळरे ॥
एने नेगळ्दवरिर्व्वर्गं तनूभवर्न्नेगळ्दरल्ते बल्लाळं वि- ।
ष्णु-नृपाळकनुदयादि- । त्यनेम्ब पेसरिन्दमखिळ-वसुधा-तळदोळ् ॥
वृ ॥ अवरोळ् मध्यमनागियुं धरणियं पूर्व्वापराम्भोधियेय्- ।
दुविनं कूडे निमिर्च्चुवोन्दु-निज-बाहा-विक्रम-क्रीडेयुद्- ।
भवदिन्दुत्तमनादनुत्तम-गुण-व्रातैक-धामं धरा- ।
धव-चूडामणि यादवाब्ज-दिनपं श्री-विष्णु-भूपालकम् ॥
एळेगेसेव कोयतूरुत्तच्- । अळवनपुरमन्ते रायरायपुरं वळ्- ।
पळ वलद विष्णु-तेजो- । ज्वळनदे वेन्दवु बलिष्ट-रिपु-दुर्ग्गङ्गम् ॥

...कमलाक्षं पुरुषोत्तमं ...काह्लादनं द्विट-दं- । ...
... ल-मद-ध्वंसननन्त-भोग-युतनुर्व्वी-भार-धौरेयनुत्- ।
... तम-सत्त्वान्वितनुद्भव-यादव-कुळालंकारनेन्दिन्तु वि- ।
... ष्णु-महीशं सले ताने विष्णुवेनियं लक्ष्मी-वधू-वल्लभम् ॥
रू ॥ लक्ष्मी-देवि-खगाधिप- । लक्ष्माङ्केसेदिर्द्दे विष्णुग् यन्तन्ते वल्ल्म् ।
लक्ष्मा-देवि लसन्मृग- । लक्ष्मानने विष्णुगग्र-सतियेने नेगर्दळ् ॥
अवर्गे मनोजनन्ते सुदती-जन-चित्तमनिळ्कोळ्लके सार्व्व- ।
अवयव-शोभेयिन्दतनुवेन्त्वभिधानमनानदङ्गना- ।
निवहमन् ....वीररनेच्चि युद्धदोळ् ।
तविहुवनादनात्मभवनप्रतिमं नरसिंह-भूभुजम् ॥
रिपु-सर्प्पद्-दर्प्प-दावानळ-बहळ-शिखा-जाळ-काळाम्बुवाहम् ।
रिपु-भूपोद्दीप्र-दीप-प्रकर-पटु [तर]-स्फार-ज(झ)ञ्झा-समीरम् ।
रिपु-नागानीक-तार्क्ष्यं रिपु-नृप-नळिनी-षण्ड-वेतण्ड-रूपम् ।
रिपु-भूभृद्-भूरि-वज्रं रिपु-नृप-मद-मातंग-सिंहं नृसिंहम् ॥
स्वस्ति श्री-यदु-वंश-मण्डन-मणिः क्षोणीश-चूडामणिस् ।
तेजःपुञ्ज-विनिर्ज्जिताम्बर-मणिस्सद्वन्ध-चूडामणिः ।
यस्योद्यत्-सु-यशस्सुपर्व्व-सरिता लोकत्रयं शोभते ।
जीयात् पाद-युगानमन्-नृप-कुळश्री-नारसिंहो नृपः ॥
श्री-मूलसंघ-विख्याते मेषपाषाण-गच्छके ।
क्राणूर्-गण-जिनावासो निर्म्मितं हेम्म भूभृतः ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महाशब्द म्हा-मण्डलेश्वरं द्वारावतीपुरवराधीश्वरं ....दावानळ पाण्ड्य-कुळ-कमळ-वन-वेदण्ड गण्ड-भेरुण्ड मण्डलिक-बेण्टेकार परमण्डळ-सूरेकार संग्राम-भीम कलि-काल-काम

सकल-वन्दि-वृन्द सन्तर्प्पण-समर्त्थ-वितरण-विनोद **वासन्तिका**-देवि-लब्ध-वर-प्रसाद मृगमदामोद **यादव**-कुलाम्बर-द्युमणि मण्डलिक-मकुट-चूडामणि कदन-प्रचण्ड मलेपरोळ् गण्ड नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्रीमत् त्रिभुवन-मल्ल **तळेकाडु-कोङ्गु-नङ्गलि-गङ्गवाडि-नोळम्बवाडि-बनवसे-हानुङ्गल्लु-हुलिगेरे-बेल्लवलं**-गोण्ड भुज-बळ वीर-गङ्ग **प्रताप-होय्सळ-नारसिंहदेवरु** सकळ-मही-मण्डळमं दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रतिपाळ-नदिं सुख-संकथा-विनोददिं **दोरसमुद्रद** नेळेवीडिनोळु राज्यं गेय्युत्त-मिरे । तत्पादपद्मोपजीवि ।

तद्राज्ये बुध-कोटि-सम्पदवन-प्राज्ये प्रधानाग्रणीर् ॥
उन्मीळत्-सुकृताम्बुराशि···सम्पत्ति-चन्द्रोदयः; ।
श्रीमत्-**तिप्पण-भूपति**स्समुदगादुद्दान-धारा-जलैर् ।
द्धात्री सम्प्रतिपद्यते प्रतिदिनं···मा···सत्याश्रया ॥
तस्य श्लाघ्य-गुणोदयस्य धरणी-वन्द्योनुजातस्स्वयम् ।
श्रीमन्**नाग-चमूपति**·················यत्त यः ।
यत्तेजः—प्रकरैरजायत परं पद्मानुराग-प्रदैर् ।
दृप्यद्-वैरि-तमो-घटा-विघटनैर्द्देवोऽग्र····ग्रामणीः ॥
श्रीमच्**चामल-देवि** भाति भवतीत्येवं बुधैर्य्या स्तुता ।
तद्वंशे गुण-संगमे नर-मणि················णिः ।
सा जाता भुवनाभिराम-विभवैर्ल्लावण्य-पुण्योदयैर् ।
देवि (सम्प्रति) यन्मुखपङ्कजे विजयते वाणी जगत्पावनी ॥
गङ्गरधात्रियोळवनी- । मंगळमेनिसिर्दे···आ-स्त्री-रत्नम् ।
तुङ्ग-जन················ । ················आगिरे कोट्टळ् ॥
वचन ॥ (य्) **इक्षुवाक**-(क्ष्वाकु)वंशावतारमदेन्तेन्दडे ।
सले **वृषभ**-तीर्थ-कालं सु-ललितमेने सकळ-भव्य-चित्तानन्दं ।

कल्किकालनिर्ज्जितं श्री- । ललना-लावण्य-वर्द्धन-क्रमदिन्दम् ॥
सोगेयिसुव-काळदोळ् की- । र्त्तिगे मूल-स्तम्भयेनिपयोध्या-पुर-दोळ् ।
जगदधिनाथं पुट्टिद- । नगण्यनिक्ष्वाकु-वंश-चूडारत्नम् ॥
धरेगे हरिश्चन्द्र-नृपे- । श्वर नोर्व्वने कान्तनागि दोर्व्वळदिन्दम् ।
विरुदरनदिर्प्पि विधा- । परिणतियिं नेरेदु सुखदिनिरे पल-कालम् ॥
वृ ॥ आतन पुत्रनिन्दु-दर-हास-निभोज्ज्वळ-कीर्त्ति सद्-गुणो- ।
पेतनुदात्त-वैरि-कुळ-भेदन-कारि कला-प्रवीणनुद्- ।
धूत-माळं सुरेन्द्र-सदृशं भरतं कवि-राज-पूजितम् ।
ख्यातनतर्क्य-पुण्य-निळयं सु-जनाग्रणि विश्रुतान्वयम् ॥
ऋजु-शील-युक्तेयेनिसिद । विजय-महादेवि तनगे सतियेने विबुध-
व्रज-पूज्यं भरतं भा- । वज-सदृशं नेगळे सकळ-धात्री-तळदोळ् ॥
वचन ॥ आ-विजय-महादेविगे गर्भ-दोहळं नेगळे ।
वृ ॥ तरळ-तरंग-भङ्गुर-समन्वितेयं क(झ)ष-चक्रवाक-भा- ।
सुर-कळ-हंस-पूरितेयनुद्ध-लताङ्कित-गात्रेयं मनो- ।
हर-नव-शैत्य-मान्द्य-शुभ-गन्ध-समीर-निभास्येयं तळे- ।
दरि नेरे गङ्गेयं नलिदु मीवभिलाष्क्षेयनेय्दे ताळ्दिदळ् ॥
कल-हंस-याने पलरुं । केळदियरोड वागि पूर्ण्ण-गङ्गा-नदियम् ।
विळसितमं पोक्कु निरा- । कुळदिन्दोलाडि पाडि गाडियनान्तळ् ॥
अन्तु मनदलम्पु पोम्पुळि-वोगे गङ्गा-नदियोळोलाडि निज-गृहके वन्दु नव-मासं नेरेदु पुत्रनं पडेदातङ्गे ।
गङ्गा-नदियोळु मिन्दु ल- । ताङ्गि मगं वडेदळप्प कारणदिन्दम् ।
माङ्गल्य-नाममादुदि- । ळाङ्गनेगधिपतिगे गङ्गदत्ताख्यानम् ॥
व ॥ आ-गङ्गदत्ताङ्गे भरतेनम्ब मगं पुट्टिदनातङ्गे गङ्गदत्तनेम्बं मगं पुट्टिदम् ।

कं ॥ गुण-निधिगे गङ्गदत्तं-। गणुगिन पुत्रं विवेक-निधि पुट्टि दया-।
अणियागिं हरिश्चन्द्र- । प्रणुत-नृपेन्द्रं धरित्रियोळ् शोभिसिदम् ॥

मत्तमा-नृपोत्तमाङ्ग भरतनेम्ब सुतं पुट्टिदनातङ्गे गङ्गदत्तनेम्ब मगनागिन्तु गङ्गान्वयं सलुत्तमिरे ।

कं ॥ हरि-वंश-केतु नेमी- । श्वर-तीर्थं वर्त्तिसुत्तमिरे गङ्ग-कुळं- ।
वर-भानु पुट्टिदं भा-। सुर-तेजं विष्णुगुप्तनेम्ब नरेन्द्रम् ॥

व ॥ आ-धराधिनाथं साम्राज्य-पदवियं कय्कोण्डु अहिच्छत्र-पुर-दोळु सुखमिर्दु ।

व ॥ नेमि-तीर्थंकर परम-देवर निर्व्वाण-कालदोळैन्द्र-ध्वजमेम्ब पूजेयं माडे देवेन्द्रनोसेद्दु ।

कं ॥ अनुपमदैरावतमं । मानोनुरागदोळे विष्णुगुप्ताङ्गित्तम् ।
जिन-पूजेयिन्दे मुक्तिय- । ननर्घ्यमं पडेगुमेन्दोडुळिदुदु पिरिडे ॥

व ॥ आ-विष्णुगुप्त-महाराजङ्गं पृथ्वीमति-महादेविगं भगदत्तं श्रीदत्तनेम्ब तनयरागे ।

व ॥ भगदत्ताङ्गे कलिङ्ग-देशमं कुडलातनुं कलिङ्ग-देशमनाळ्दु कलिङ्ग-गङ्गनागि सुखदिनिरे ।

(यू) इत्तलुदात्त-यशो-निधि । मत्त-द्विपमं समस्त-राज्यमुमं ।
श्रीदत्त-नृपाङ्गित्तं भू- । पोत्तमनेनिसिर्द्द विष्णुगुप्त-नरेन्द्रम् ॥

अन्तु श्रीदत्तनिन्दित्तलानेयुण्डिगे सलुत्तमिरे ।

प्रियबन्धु-वर्म्मनुदयिसि । नयदिन्दं सकळ-धात्रियं पालिसिदम् ।
भय-लोभ-दुर्ल्लभं ल- । क्ष्मी-युवति-मुखाब्ज-षण्ड-मण्डित-हासम् ॥

अन्ता-प्रियबन्धु सुखदिं राज्यं गेय्युत्तमिरे तत्-समयदोळु पार्श्व-भट्टार । केवळज्ञानोत्पत्तियागे सौधर्म्मेन्द्रं बन्दु केवळि-पूजेयं माडे प्रिय-

बन्धुवुं तानुं भक्तियिं वन्दु पूजेयं माडलातन भक्तिगिन्द्रं मेच्चि दिव्यम-प्पर्द्दुं तुडुगे-गळं कोट्टु निम्मन्वयदोळु मिथ्यादृष्टिगळागलोडं अदृश्यङ्गळ-क्कुमेन्दु पेळ्दु विजयपुरक्कहिच्छत्रमेन्दु पेसरनिट्टु दिविजेन्द्रं पोपुदित्तलु गङ्गान्वयं संपूर्ण्ण-चन्द्रनन्ते पेर्च्चि वर्त्तिसुत्तमिरे तदन्वयदोळु कम्प-मही-पतिगे पद्मनाभनेम्व मगं पुट्टि ।

कं ॥ तनगे तनूभवरिल्लदे । मनदोळ् चिन्तिसुतमिर्द्दु पद्मप्रभना- ।
र्प्पिन काणि सासन-देवते- । यने पूजिसि दिव्य-मन्त्रदिं साविसिदं

व ॥ अन्तु साविसि (दि) शावित-विचनागि पुत्रिर्व्वरं पडेद्दु राम-लक्ष्मणरेन्दु पेसरनिट्टु ।

वृ ॥ परम-स्नेहदोळिर्व्वरं नडपि लीला-मन्त्रदिं चन्द्रनन्- ।
तिरे संपूर्ण्ण-कळाङ्करागि वेळेयल् विद्या-वळोद्योगमुम्-
र्व्वरेयोळ् चोद्यमेनल् सलुत्तमिरे कीर्त्ति-श्री दिशा-भागदोळ् ।
पेरेदाशा-गजमं पळक्कलेये लक्ष्मी-भारदिन्दोप्पिदर् ॥

व ॥ अन्तु सुखदिमिर्प्पुदु मत्तलुज्जेनिय-पुराधिपति-महीपाळना-तुडुगेगळं वेडियट्टिपडे पद्मनाभं कृतान्तनन्ते रौद्र-वेशमं कैकोण्डु ।

क ॥ येमगदनत्तल्किागढु । तमगे तुडल् योग्यमल्तु सन्तमिरल् वेळ् ।
समर्क्के वन्दनप्पडे । निमिपदोळान्तिरिदु वीर-रसमं मेरेवेम् ॥

व ॥ अन्तु नुडिदट्टि मन्त्रि-वर्ग्ग डोळालोचिसि तन्न तङ्गेयाळव्वेयुं नाल्वतेणवराप्परप्प विप्र-सन्तानमं वेरसि कळिपिदडवर्दक्षिणाभिमुखरागि वरुत्तं राम-लक्ष्मणर्ग्गे दडिग-माधवरेन्दु पेसरनिट्टु निच्च-वयणदिं वरुत्तमिरे ।

क ॥ वन्दवर्गळुचित-पदमन- । गुण्डेलेयिं कण्डरमळ-लक्ष्मी-चित्ता- ।
नन्दनमं पेल्दरं । मन्दार-नमेरु-पुष्प-गन्धाद्रियुमम् ॥

व ॥ अन्तु **गङ्ग-हेरूरं** कण्डल्लिय तटाक-तीरदोळु वीडं बिट्टु चैत्यालयमं कण्डु निर्भर-भक्तियिं त्रि-प्रदक्षिणं गेय्दु स्तुतियिसि समस्त-विद्या-पारावार-पारगरुं जिन-समय-सुधाम्भोधि-संपूर्ण-चन्द्ररुमुत्तम-क्षमादि-दश-कुशळ-धर्म्म-निरतरुं चारित्र-चक्र-धररं विनेय-जनानन्दरं चतुस्समुद्र-मुद्रित-यशः-प्रकाशरं सकळ-सावद्य-दूररं **काणूर-गणाम्बर**-सहस्र-किरणरं द्वादश-विधतपोनुष्ठा[न]-निष्ठितरं **गङ्ग**राज्य-समुद्धरणरं श्री-**सिंहनन्द्याचार्यरं** कण्डु गुरु-भक्ति-पूर्व्वकम् वन्दिसि तम्म बन्दभिप्राय-मेल्लमं तिळिय पेळे कय्कोण्डवर्ग्गे समस्त-विद्याभिमुखर्म्माडि केलवानु दिवसदिं **पद्मावती**-देवियं विधि-पूर्व्वकमाह्वानं गेय्दु वरं बडेदु खळगमुमं समस्त-राज्यमनवर्ग्गे माडे ।

क ॥ मुनि-पति नोडल्क विद्व- । जन-पूज्यं **माधवं** शिलास्तम्भमना- ।
ईनुगेय्दु पोय्यलदु पु- । ण्मेने मुरिदुदु वीर-पुरुषरेनं माडर् ॥

व ॥ आ-साहसमं कण्डु ।

वृ ॥ मुनि-पति कर्ण्णिकारदेसळोळ् नेरे पट्टमनेय्दे कट्टि स- ।
जन-जन-वन्द्यरं परसि सेसेपनिक्कि समस्त-धात्रियम् ।
मनमोसेदित्तु कुञ्चमनगुर्व्विन केतनमागि माडि वे- ।
र्प्पनितु परिग्रहं गज-तुरङ्गमुमं निजमागे माडिदर् ॥

व ॥ अन्तु समस्त-राज्यमं माडि बुद्धियनिवर्ग्गिगन्तेन्दु बेससिदरु ।

वृ ॥ नुडिदुदनारोळं नुडिदु तप्पिदडं जिन-शासनक्कोडम्- ।
बडदडमन्य-नारिगेरेदड्डिदडम्मधु-मांस-सेवे गे- ।
य्दडमकुळीनर्ग्गेवर कोल्कोडेयादडमर्त्थिगर्त्थमम् ।
कुडदडमाहवङ्गणदोळोडिदडं किडुगेुं कुल-क्रमम् ॥

वृ ॥ उत्तममप्प नन्दगिरि कोटे पोळल् कुवळालनाम्को तोम्- ।
मत्तट-सासिरं विषयमातननिन्द-जिनेन्द्रनाजिन्- ।
गात्त-जयं जयं जिन-मतं मतमागिरे मुन्नं निन्नो- ।
दात्ततेयिन्दमा-दडिग-माधव-भूभुजराळ्दरल्वियन् ॥
उत्तर-दिक्-तटावनिगे तागे मोद [कि] ले मूड तोण्डे-ना- ।
डुत्तपराशेगम्बुनिधि चेरोडेदिर्प्प तेङ्क कोङ्गु म- ।
त्तिचोळ्गुङ्क वैरिगळनिक्कि परावृत-गङ्गवाडि-तोम्- ।
मटट-सासिरं दळ्ळे माडिदनिन्तु गङ्गकुलगन् ॥

अन्तु शत-जीवियेम्बुदा-वाव्दमं केव्दु ।

मरदिन्दं चुर्न्दुवाव्दं होगळे बुव-जनं वन्दु कावेरियोळ् मी- ।
रुमागळ् वीर-लक्ष्मी-नयन-कुमुदिनी-चन्द्रमं निन्दु नोडल् ।
परिवारं तन्न कीर्ति-भ्रमे बळ्से दिशा-आगमं चोद्यमागल् ।
परम-श्री-जैन-पादं नेळसे हृदयदोळ् मेरु-शैलोपमानन् ॥

क ॥ कद्···अरिद गङ्गनि भय- । मिडद हरिवर्म्म विष्णु-
भूपनि निजदिं ।

वळ्ळे तडङ्गाल्-माधव- । नळ्ळि वळि चुर्न्दुवाव्द-गङ्ग-नृपाळन् ।
श्रीपुरुषं शिवमारं ।···कं कृतान्त-भूपना-सयिगोट्टन् ।
द्वीपाधिपरोव्वरि-नृप- । कोपानळ-शिखेयेनिप्प विजयादित्यम् ॥
····रे येरिद मारसिंगना- । कुळ-राजिगं पेसर्-वेत्ता- ॥
नळं तनृप-तिळकन । पिरिय मगं सत्य-वाक्यनचळित-शौर्य्यं
गर्व्विद-गङ्गं वसुवेयो- । ळोर्व्विने कलि चागि शौचि गुत्तिय-गंग ।
दोर्व्विक्रमाभिरामन- । गुर्व्विन कलि राचमल्ल-भूप········ ॥
तेङ्गं मुरिवं हसिय क- । अङ्ग पिडिदडसि कोळ्वना-मद-करियम् ।

पिङ्गदे निलिसुत्रं साहस- । तुङ्गं केवळमे नेगळ्द रकस-गङ्गम् ॥
अन्वयवदिन्दे साविसिद-माळ्वमेळुपनेय्दे गङ्ग-मा- ।
ळ्वमेनलक्करं वरेदु कल् निरिसुत्ते-काळ्चिच चित्रकूट- ।
मनुरे कन्नमजेय-नृपानुजनं जयकेसियं-महा- ।
हवदोळे मारसिंग-नृपनिक्कि निमिर्च्चिदनात्म-शौर्य्यमम् ॥
तनयं श्री-मारसिंहङ्गनुपम-जगदुत्तुंगनादं जगत्-शा- ।
वन-लक्ष्मी-वल्लभङ्गिन्तुदयिसि नेगळ्दं राचमल्लावनीशम् ।
मनु-मार्ग्गं गङ्ग-चूडामणि जय-वनितावीश-भूवल्लभेशम् ।
जिन-धर्म्माम्भोधि-चन्द्रं गुण-गण-निळयं राज-विद्या-धरेन्द्रम् ॥

इन्तेनिसि नेगळ्द गङ्ग-वंशोद्भवरा-द्डिगन मगं चुर्व्वुवाय्द-गङ्गनातन सुतं दुर्व्विनीतनातन तनयं श्री····नु श्रीपुरुषमहाराजं तत्-तनयं देव तत्-तनूभवनेरेयङ्ग-हेम्माडि तत्पुत्रं वूतुग-हेम्माडि तदात्मजरु···· देव तदनुज गुत्तिय-गंगनातन मोम्म मारसिंग-देवनातन मगं कलियङ्गदेवनातन मगं वर्म्म-देवनिना-गङ्ग-वंशोद्भवरु राज्यं गेय्ये ।

दक्षिणदेशनिवासी । गङ्ग-मही-मण्डलिक-कुळ-संधरणः ।
श्री-मूल-संघ-नाथो । नाम्ना श्री-सिंहनन्दि-मुनिः ॥
श्री-मूल-संघ-वियदमृ- । तामळ-रुचि-रुचिर····जय-ल- ।
क्ष्मी-महितं जिन-धर्म्म-ल-। लामं काणूर्-गण-जना····करम् ॥

आ-गणद अन्वयदोळु ।

मणिरिव वनराशौ माळिकेवामराद्रौ
तिळकमिव ललाटे चन्द्रिकेवामृतांशौ ।
····इव सरसि सरोजे मत्त-भृङ्गी निकामम्
समजनि जिनधर्म्मा निर्म्मळो वालचन्द्रः ॥

विमळ-श्री-जैन-धर्म्माम्बर-हिमकरनुदत्‌-त....लक्ष्मी- ।
रमणं भूमण्डलाधीश-नुतनुभय-सिद्धान्त-रत्नाकरं जं- ।
गम-तीर्थं भव्य-वक्त्राम्बुज-खर-किरणं श्री-प्रभाचन्द्र-सिद्धान्
त-मुनीन्द्रं क्षीर-नीराकर-विशद-यशो-चेष्टिताशा-विभागं ॥
मनमं नियमिसल्बरिय- । र्त्तनुवं....तोर्प्प मुनियुं मुनिये ।
मनमं तनुवं नियमिस- । ल्बनुदिनमी-नेमि-देवनोर्व्वने वल्लं ॥
अनर शिष्यरु ।

गुणियेने जिनमतरक्षा- । मणियेने कवि-गमक-वादि-वाग्मि-प्रवरा-
ग्रणियेने पण्डित-चूडा- । मणियेने गुणनन्दि-देवरेसेदर् धरेयोळ् ॥
तत्सधर्मरु ।

अळवे पेळ् नुडियल्के निन्न विरुदं माण् माणेले सांख्य वा-
ग्-वळमं नच्चदे नीनडङ्गेडरदिर्च्चार्व्वाके नैय्यायिका ।
मलेयल्‌ वेडिरु मन्तमेके चलदिन्दी-भण्डपं केम्मनण्- ।
डलेयल्‌ श्री-गुणचन्द्र-देवनमळं वादीभ-कण्ठीरवम् ॥
तत्सधर्म्मरु ।

गङ्गा-वारि सु-शैवलं सुर-करी दानार्द्र-गण्ड-स्थल: ।
शम्भुःकण्ठ-विलग्न-घोर-गरल: चन्द्र: कळङ्काङ्कित: ।
कैलाशो वन-वल्लरी-परिवृतस्साम्यं कथं वच्म्यहम्
कीर्त्या तैस्सह माघनन्दि-यमिनश्चन्द्रातपोद्यच्छ्रिया (म्) ।
आ-चारित्र-चक्रेश्वर-मुनि-राज-राजन शिष्यरु स्वस्ति समधिगत-पञ्च-
महा-शब्द महा-कल्याणाष्ट-महा-प्रातिहार्य्य चतुर्स्त्रिंशदतिशय-विराजमान-
भगवदर्हत्-परमेश्वर-परम-भट्टारक-मुख-कमळ-विनिर्ग्गत-सदसदादि-वस्तु-

स्वरूप-निरूपण-प्रवण-राद्धान्तामृत-वार्द्धिवर्द्धन-रात्र्याभरणरुमप्प श्रीमत्तु-**प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवरेन्तेन्दडे ।**

आसीदाशान्तराळ-प्रबळ-पृथु-यशो-व्योम-गङ्गा-तरङ्गः
चञ्चच्चारित्र-धात्रीभवदतिललितोदार-गंभीर-मूर्त्तिः ।
वाक्-कान्ता-तुंग-पीन-स्तन-कळश-लसन्नूत-चूत-प्रवाळः
सिद्धान्त-क्षीर-नीराकर-हिमकिरणः श्री-**प्रभाचन्द्र-देवः** ॥

अभिनव-गणधर··· । त्रि-भुवन-जन-विनुत-चरण-सरसिरुहयुगं ।
शुभमति···रुह-वनार्क्कनेम्बुदु । वसुमतियोळ**नन्तवीर्य्य-सिद्धान्तकरम्** ॥
वादि-वन-दहन-हुतवह । वादि-मनोभव-(वादि)-विशाळ हर-निटलाक्षम् ।
वादि-मद-रदनि-विदुवं । भेदिप मृगराजं जयतु **श्रि(श्रु)तकीर्त्ति-बुधं** ॥
तत्-सधर्म्मरु ।

कवि-गमक-वादि-वाग्मिग- । ळेनेम्बरं गेल्दु **कनकनन्दि-त्रैविद्य-**
विळासं त्रिभुवन-म- । ल्ल-वादिराजं दलेनिसिदं नृप-समेयोळ् ॥
अवर सधर्म्मरु ।

मन-वचन-काय-गुप्तियो- । ळनुनयदिं तळ्दु पञ्च-समितिय वशदिन्
दनुवशनाद तपोनिधि । **मुनिचन्द्र-व्रतिप**नखिळ-राद्धान्तेशम् ॥
अवर शिष्यरु ।

पिरिदं पोगळ्वडेङ्गळ । पुरुळुण्टे-माडलेन्दु-मुनि-पतियेम्बी- ।
वर-चिन्तामणि···· । कुरुळि सु-सन्मान-ध्यानदुरुळियेनिक्कुम् ॥
तपोनुष्ठा [न] निष्ठितरारेन्दडे ।

कनकचन्द्र-मुनीन्द्रन पादमं । मेनेव भव्य-समूहद पाप-सम्- ।
हननमप्पुदु तप्पदु निश्चयम् । मन·······निच्चळुम् ॥
४९ सधर्म्मरु ।

मुनिय............अनवद्याचा(च)रणे जैन-शा- ।
सन-रक्षामणि शान्तने सकळ-राग-द्वेष-दोष-प्रमत्र्- ।
जनतुर्व्वी-सुतने गुण-प्रणयितं तानेम्बिनं वीर मे- ।
दिनियो... धवचन्द्र-देवनेसेदं चारित्र-चक्रेश्वरम् ॥
तत्-सधर्म्मरु ।

वर-शास्त्राम्बुधि-वर्द्धन- । हरिणाङ्कं-विरुद-वादि-मद-विस्फाळम् ।
निरुतं तानेनलेसेदं । धरेयोळ् त्रैविद्य-वाळचन्द्र-मुनीन्द्रम् ॥
अवर सधर्म्मरु ।

वृ ॥........आव्दुं धर्म्ममनुपेक्षिसि तकेडेगीयदागळुम् ।
पीन-नितम्बमं घन-कुच-द्वयमं मरेगोण्डु म-यो- ।
धानमनोल्दु पोक्कु नेरे नील-पटाश्रितरप्प योगिगळ् ।
दान-विनोदनोळ् दोरेगे-वप्परे माधवचन्द्र-देवनो...॥
........सत्य-गङ्गं कुडे कुरुळियोळादन्न-दान-प्रभा-वि- ।
स्तरार्दि श्री-वालचन्द्र-व्रति-पति पडेदं दानदिं जीयनल्कुर- ।
व्वरेयं सम्पूर्णमागळ् तणिसिदमिदु वल्-चोघमक्षीण-रिद्धि- ।
स्फुरितं कम्रगणिम पोण्मुत्तिरे..............व्यनादम् ॥
अवर सधर्म्मरु ।

चतुरास्य-कोटि-कूटदो- । व्वतिशयमेनिसिर्द्द कोपण-तीर्थदोळीगळ् ।
नुतियिप वह्लाचार्य्य- । व्रतिपतिये नेमि-देवरिन्दमे पूज्य ॥
स्थावर-जंगममनितुं । पावनमाद........... ।
...जीयेनिसि वाव्वडिगळ । जीयं श्री-नेमि-देवरुदयिसे शुभदं ॥
अवर सधर्म्मरु ।

अवनगर्गाश्रितर्गिष्ट-सन्ततिगे चातुर्व्वर्ण्ण-संघक्के तान् ।

अधिकोत्साहदिन् ⋯ बयकेयम्बेर्प्पर्त्थमं वाञ्छेयम् ।
क्षुब्र-चिन्तामणि ⋯⋯⋯⋯⋯⋯⋯⋯ कूर्त्तिंतु मा- ।
घवचन्द्रं पडेदं समस्त-भुवन-प्रस्तुत्यमं स्तुत्यमम् ॥

अवर सधर्म्मरु ।

साधिसि गुरूपदेशदो- । ळाधिक्यतेयाग्तु सकळ-षट्-कर्म्मगळु ।
वेदान्तद् म⋯दरिव- । र्ग्गोधूम-घरट्टनोडने तोडर्व्वम⋯ ॥
शाकिनि-डाकि ⋯⋯।-किनि-चोरारि-मारि-देव्येयरनितुं ।
लोकमरियल्के ⋯ । सकळमनरियै विरुदं देवेन्द्रनुमम् ॥

इन्तेनिसि नेगळ्तेयं तळेद श्रीमत्-**प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर** गुड्ड **भुजबळ-गङ्ग-हेम्माडि-बर्म्म-देव** ।

बलवद्वैरिगळं पडल्-वडिसि गेल्दुग्राजियोळ् माणदने ।
चलदिन्दं परियिंट्टु वैरि-पुरमं तत्-कोटेयं तद्-मही- ।
तळमं कोण्डु धरित्रि बण्णिसुविनं श्री-**बर्म्म-देवं** मही- ।
तळमं तोळ्-वळदिं निमिर्च्चिदनिदम् **हेम्माडि** सौर्य्यात्मनो ॥

आतन पट्ट-महादेवियेन्तेन्दडे ।

जिनेन्द्र-पादाम्बुज-मत्त-भृङ्गी ⋯⋯ भूषण-भूषिताङ्गी ।
नितम्बिनीनां तिळकायमाना विराजते **गङ्ग-महाधिदेवी** ॥

वृ ॥ निजवेनिपी-नेगर्त्तेय महासतिगुत्सव [म] म् निमिर्च्चुवा- ।
त्मजरेनिसिर्द तम्मुतोडहुट्टिदरोप्पुव **मारसिंगनुम्** ।
स-जयदे **सत्य-गङ्ग-**नृपनुं **कलि-रक्कस-गङ्ग-**देवनुम् ।
भुजबळ-गङ्ग-भुजनुमार्ज्जिसि पेर्ज्जसमं निरन्तरम् ॥
गजरिपु-विष्टराजि-विभवोदय-**पार्श्व-**जिनेन्द्र-पाद-पङ्- ।
कज-मद-भृङ्ग **गङ्ग-**कुळ-मण्डन दण्डित-वैरि-वर्ग भा- ।

वज-निभ-मूर्त्ति दिग्-वळय-वर्त्तित-कीर्त्ति समस्त-धात्रियोळ् ।
भुजबळ-गङ्ग-भूप निनगाह्वरे मण्डलिकैक-भीरव ॥
आतन पट्ट-महादेवि ।
[·······]आळु-वरननुज । दिट्ट-भूपङ्गे गङ्गवाडिगे तळेदळ् ।
पट्टमनेन्दडे गङ्गन । पट्टमहादेवि यन्तु नोन्तरुमोळरे ॥
वृ ॥ मारित्ताशान्तमं बळ्ळदलल्ळेदुदधि-वातमं वूगे सन्दा- ।
मेरु-श्रोणीन्द्रमं वाशिनोळेणिसि तरङ्गोण्डु नक्षत्रमं पेळ् ।
आरानुं वल्लरे वल्लडे पोगळ्दो··· विश्वम्भरा-भार-वीर- ।
श्री-रामालीढ-वक्ष-स्त्रढिम-घन-भुज-स्तम्भनं गङ्ग निन्नम् ॥
अन्नेयनागिदूट्टिवुव···मोलि····प्रकास येळ्वो ।
रन्नवे हेण्डिरोळ् मनेगोर्व्वरुदारेयरप्पु इट्टरे ।
इन्नियवुळ्ळडेम् जगदोळोर्व्वळे भागिये ताने लेसे इल्ल- ।
नन्नियोळिन्तु गर्व्वितेयरार्ग्गळ चन्दल-देवियन्ददिम् ॥
श्रीमद्-भुजबल-गं[ग]-देवङ्ग गङ्ग-महादेविगं पुट्टिद सत्य-
गङ्गन प्रतापमेन्तेने ।
जसमुचद्धवलातपत्रमखिळाशा-देवतापाङ्ग-र- ।
श्मि-सह·········गजेन्द्र-रिपु-पीठं विक्रमं तानदा- ।
गे सु-साम्राज्य-लताभिवृद्धि-विभवं मय्वेत्तिरल् वल्लिदर ।
व्वेसकेय्युत्तिरे सत्यगङ्गनेदं विश्वावनी-भागदोळ् ॥
आतन-अरसि ।
पति सत्य-गङ्ग-देवं । गति····दार-लक्ष्मि तानेनिसि···· ।
········तळेदळेम्···।····आरो राणि कञ्चल-देवि ॥
भावभवङ्गे रूपु मद-सामज-वैरिगे विक्रम-क्रमं सुरेन्- ।

द्रावनिजक्के दान-गुणमब्धिगे गुण्पमराचळक्के सं- ।
भावित-धैर्य्यमग्गलिपुदेन्दडे गङ्ग-कुभृत्-कुमार···· ।
········पाळक्कंगे दोरेयप्परे मिक्क कुभृत्-कुमारकर् ॥
········यिन्दं क्षीराब्धियु- । मसवसर्दि पेर्च्चुवन्ते गङ्गान्वयमुं ।
पसरिसे पेर्च्चुगे निन्निन्दसदळमौदार्य-शौर्य्य गङ्ग-कुमारा ॥

श्रीमन्महामण्डलेश्वरनेरेयङ्ग-होय्सण-देवनळियं गण्डर दावणि हुसिवर शूळ मावन गन्ध-वारणं हेम्माडि-देवनेडेदोरे····सायिरमुमं हरिगेय नेलेवीडिनोळु सुखदिनाळुत्तिर्दु कुन्तलापुरदोळु चैत्यालयमं माडि देवर पूजा-विधानकं चातुर्व्वर्ण्ण-संघ-समुदाय-चतुस्-समयदाहार-दानक्कं खण्डस्फुटित-जीर्ण्णोद्धारक्कं समुदाय-मुख्य-स्थानं माडि येडदोरे-मण्डलिनाडप्रभु-गावुण्डुगळंकरेयलट्टि धर्म्म आरय्के येन्दु · शक-वर्ष ९८९ नेय प्लवंग-संवत्सरद पुष्य-सु १३ दशि-गुरुवार-वुत्तरा-यण-संक्रमणदन्दु तम्म गुरुगळु श्री-प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर काळं कर्च्चि धारा-पूर्व्वक(कं)माडि बिट्ट दत्तिया-ग्राम-दुभय···सर्व्व-नमस्य-वल्लि इट्टुवायदाय-सुङ्क-निधि-निक्षेप सर्व्व-बाधा-परिहार ॥

मत्ता-राज-सर्व्वन्य सत्य-गङ्ग-देव नेडेहळ्ळिय नेलेवीडिनोळु सुखर्दि राज्यं गेय्युत्तिर्दल्लि कुरुळिय-तीर्त्थदल्ल गङ्ग-जिनालयमं माडि सक-वर्ष १०५४[1] नेय नन्दन-संवत्सरद चैत्र-सुपुण्णमियादिवार-सोम-ग्रहणदन्दु तन्न गुरुगळु श्री-माधवचन्द्र-देवर काळं कर्च्चि धारा-पूर्व्वकं माडि बिट्ट दत्ति····वण्ण········

हामण्डलेश्वर गङ्ग-हेम्माडि-देवर सन्निधियल्लि
·-हेग्गडे लोकिमय्यन मग हेग्गडे-चन्दिमय्यं

परिधावि; नन्दन=१०३४

कुलक्किय तन्न गौंडिकेयं कलियर-मल्लि-बोट्टि मारं कोण्डु अस्तर सल्लिसियल्लु बालचन्द्र-देवर्गे धारा-पूर्व्वकं माडि बिट्टरु ॥

मत्त सिरियम-सेट्टियुमातन मक्कलु…आतन गौंडिकेय नन्नि-यरस-देव हल्लुरदल्लु बालचन्द्र-देवर्गे धारा-पूर्व्वकं माडि कोट्टरु ॥

कन्नमय-श्यानद……सान्य सुङ्क सहित सर्व्व-बाधा-परिहार…………

(आगेकी ५ पंक्तियोंमें सीमाओंकी चर्चा तथा इनशाके अन्तिम श्लोक हैं)

[जिनशासनकी प्रशंसा । जिस समय त्रिभुवन-मल्ल-देवका राज्य प्रवर्धमान था;—

आगेके श्लोकका प्रकरणसे कोई सम्बन्ध नहीं है, सिवाय इसके कि विक्रमांकने, जो कि त्रिभुवन-मल्ल है, बहुत भय उत्पन्न किया ।

तत्पादपद्मोपजीवी पुरेयल्ल-होय्सलका दानाद हेम्माडि-अरस था । उसकी प्रशंसा ।

होय्सल राजाओंके वंशकी प्रशंसा । विनयादित्यसे लेकर नरसिंह तकके राजाओंकी परम्परा ।

मूलसंघके मेष-पाषाण-गच्छके आणूर-नागका एक जैनमन्दिर राजा हेम्मने बनवाया ।

जिस समय प्रताप-होय्सल-नारसिंह-देव दोरसमुद्रमें राज्य कर रहा था:—उनका प्रधान मंत्री (प्रशंसासहित) तिप्पण चमूपति और उसका छोटा भाई नाग-चमूपति था, जिसकी पत्नी चालल-देवी थी । उसने…… का दान किया ।

पश्चात् इक्ष्वाकुवंशका अवतार दिया है । इस भागकी १७० पंक्तियोंमें पूर्वके शिलालेख नं० २०५ और २६७ के भाग ज्यों-के-त्यों मिलते हैं । नं० २०५ "स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय-कालं" से लेकर "पराभूतवादिवादिवोम्मचक्र-शाल्लिरं" तक १०१ पंक्तियाँ; और "अन्तु गव-जीवियेन्तुदा-गच्छमं केल्दु" से लेकर "मेरु-शैलोपमानम्" तक ५ पंक्तियाँ । नं० २६७ "क्रमः…अरिद गहनीं नय-" से लेकर "रक्तस-गहनम्" तक ११ पंक्तियाँ । नं० २७५ "अवयवदिन्दे" से लेकर राज विद्यावरेन्द्रम्" तक ८ पंक्तियाँ । नं० २६७ "इन्तेनिसि नेगल्द" से लेकर "अनन्तवीर्यसिद्धान्तकरम्" तक ४५ पंक्तियाँ ।

श्रुतकीर्तिकी प्रशंसा। पश्चात् क्रमसे सधर्मा कनकनन्दि, मुनिचन्द्र व्रती-की प्रशंसा। मुनिचन्द्रके शिष्य कनकचन्द्र-मुनीन्द्र; उनके सधर्मा माधव-चन्द्र-देव; उनके सधर्मा त्रैविद्य बालचन्द्र-मुनीन्द्र और उनके सधर्मा माधव-चन्द्र-देव। सत्य-गंगने कुरुळिमें बालचन्द्र व्रतिपतिको दान दिया। उनके सधर्मा वड्डाचार्य-व्रतिपति थे। उनके सधर्मा माधवचन्द्र थे।

इसके बाद भुजवळ-गङ्ग हेर्म्माडि-वर्म्म-देवकी प्रशंसा। उनकी पट्टमहिषी गंगमहादेवी तथा इन दोनोंके चार लड़के मारसिंग, सत्य-गंग, कलि-रक्कस-गंग और भुजवल-गंगका उल्लेख।

भुजबल-गंगदेव और गंग-महादेवीसे सत्य-गङ्गकी उत्पत्ति। उसकी प्रशंसा। उसकी रानी कञ्चल-देवी। (उनके पुत्र गंग-कुमारकी प्रशंसा)।

जिस समय एरेयङ्ग-होय्सळ-देवका दामाद हेर्म्माडि-देव हरिगेके निवास-स्थानमें था और एडेडोरे-(मण्डलि) हजारका शासन कर रहा था, कुन्तलापुरमें उसने एक चैत्यालय बनवाया और, उसके लिये तमाम करों इत्यादिसे मुक्त, एक गाँवका दान दिया।

इसके अतिरिक्त, जब सत्य-गङ्ग-देव, अपने एडेहळ्ळिके निवासस्थानमें सुख और शान्तिसे राज्य कर रहा था, उसने कुरुळी-तीर्थमें गङ्ग-जिनालय बन-वाया, और शक-वर्ष १०५४ में[१] अपने गुरु माधवचन्द्र-देवके पैरोंका प्रक्षा-लनपूर्वक,.........का दान किया।

और गंग-हेर्म्माडि-देवकी उपस्थितिमें सर्वाधिकारी, घाणिके हेग्गडे, हेग्गडे चन्दिमय्यने कुरुळीकी अपनी 'गौडिके' भूमि कलियर-मल्लि-सेट्टिको बेची और उसने वह भूमि बालचन्द्र-देवको दान कर दी। और सिरियम-सेट्टि तथा उसके पुत्रोंने हल्लुवुरकी अपनी 'गौडिके' भूमि, नन्नियरसदेवके सामने, बालचन्द्र-देवको भेंट कर दी। (यहाँ सीमाएँ और हमेशाके श्लोक आते हैं।]

[EC, VII, Shimoga tl., n° 64.]

१ ये अङ्क १०३४ होने चाहिये, क्योंकि शक वर्ष १०५४=विरोधिकृत् नन्दन=१०३४।

३००

चन्नदहल्लि—कन्नड़

[विक्रम वर्ष ५८=११३३ ई०]

[चन्नदहल्लिमें, अमृतेश्वर मन्दिरके सामनेके वीरकलके ऊपर]

स्वस्ति श्रीमतु विक्रम-संवत्सरद ५८ परिधावि-संवत्सरदाश्व-यिज-च ५......श्रीमतु मूलसंघद देसिग-गणद श्री-माघणन्दि-भट्टारक-देवर गुड्डं गङ्गवल्लिय दास-गावुण्डन मगं बोप्पयं समाधि-विधियिं मुडिपि स्वर्गस्थनादनु ॥

[स्वस्ति। (उक्त मितिको), मूलसंघ और देसिग-गणके माघनन्दि-भट्टारक-देवके एक गृहस्थ-शिष्य,-गङ्गवल्लिय दास-गावुण्डके पुत्र बोप्पय, समाधि-विधिसे मरण कर, स्वर्गको गये।]

[EC, VIII, Sorab tl., n° 97.]

३०१

हळेबीड—संस्कृत और कन्नड़

[वर्ष प्रमादिन्, ११३३ ई० (लू० राइस)]

[हळेबीडसे लगी हुई बस्तिहल्लिमें, पार्श्वनाथ बस्तिके बाहरकी दीवालमें एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
जयतु जगति नित्यं जैनसंघोदयार्क्कः
प्रभवतु जिनयोगीव्रातपद्माकरश्रीः ।
समुदयतु च सम्यग्दर्शन-ज्ञान-वृत्त-
प्रकटित-गुण-भास्वद्-भव्य-चक्रानुरागः ॥
जगत्रितयवल्लभः श्रियमपथ्यवाग्दुर्ल्लभः ।

सितातपनिवारणत्रितयचामरोद्भासनः ।
ददातु यदघान्तकः पदविनम्रजम्भान्तकः
स नस्सकल-धीश्वरो विजय-पार्श्वतीर्थेश्वरः ॥

सिद्धं नमः ॥

श्रीमन्नतेन्द्रमणिमौलिमरीचिमाळा-
माळार्च्चिताय भुवनत्रयधर्म्मनेत्रे ।
कामान्तकाय जितजन्मजरान्तकाय
भक्त्या नमो विजय-पार्श्व-जिनेश्वराय ॥
होय्सळोर्व्वीश-वंशाय स्वस्ति वैरि-महीभृताम् ॥
खण्डने मण्डलाग्राय शतधाराग्रजन्मने ॥

तदन्वयावतारम् ॥

नेगळ्दा-ब्रह्मनिनत्रि सोमनेसेवा-श्री-सोमजं भूतलं
पोगळुत्तिर्प्प-पुरूरवोर्व्वीपति सन्दायु-र्म्महीवल्लभं ।
सोगयिप्पा-नहुषं ययाति यदुवेम्बुर्व्वीश-सन्तानदोळ् ।
नेगळ्दं श्री-सळनानतान्य-निकरं सम्यक्त्व-रत्नाकरम् ॥
आ-सळ-नृपतिय राज्यश्री-संवर्द्धनमनेय्दे माडुव बगेयिं ।
वासव-वन्दित-जिन-पूजा-सहितं सकल-मंत्र-विद्या-कुशलम् ॥
मुदर्दि जैन-व्रतीशं शशकपुरद पद्मावती-देवियं मं- ।
त्रदिनादं साधिसल् विक्रियेयोळे पुलि मेल् पाये योगीश्वरं कुं-
चद-काविन्दान्तदं पोय्सळ एनलभयं पोय्दुदं पोय्सळाङ्कम् ।
यदु-भूपर्ग्गादुदन्दिन्देसेदुदु सेळेयिं लोळ-शार्दूल-चिह्नम् ॥
आ-सन्द-यक्षी-वरदोळ् वसन्तं । लेसागे तात्कालिक-नामदिन्दं ।
वासन्तिका-देवतेयेन्दु पूजा- । व्यासङ्ग वं माडिदना-नृपाळम् ॥

कय्-सार्द्दिरे पुलि युण्डिगे ।
कय्-सार्द्दिरे वीर-लक्ष्मी रिपु-नृप-रात्यन् ।
कय्-सार्द्दिरे पल्लवादर् ।
प्पोय्सळ-नामदोळे यादवोर्व्वीपतिगळ् ॥
तत्कुलदोळगिर्द्दु माही- ।
भृत्-कुलदोळगाचळ-नायनेनेवन्तेसेदं ।
तत्कुलदोळ् विजितारि-कु- ।
भृत्कुळनादित्य-मूर्त्ति विनयादित्यन् ॥
तदपत्यं रिपु-नृप-भुज- ।
मद-मर्द्दननखिळ-विभुव-जनता-सौख्य- ।
प्रदनुदितोदित-महिमा- ।
स्पदनेनिपेरेयङ्ग-भूभनङ्गज-रूपन् ॥
एरेयङ्गन कूरसि तले- ।
गेरगदे मुन्निरिद्दु बन्द्दु पदकेरगदवर् ।
प्परिये तले मुरिये निर्द्दल्व् ।
ओरद्दुगे त्रिभु-नेवरेरगदिर्प्परे घुरदोळ् ॥
ई-वद्दुवे पोगळ्लेचल- ।
देविगवेरेयङ्ग-नृपतिगं त्रै-पुरुषर् ।
तावेनलाद्द्व्बल्ला- ।
ळावनिपति विष्णु-नृपतियुदयादित्य ॥
अन्तवरोळ् विष्णु-मही- ।
कान्तं निर्मिर्द्दिसिये कूर्म्मुमाप्पुं जसमा- ।

दन्तोळगि वेळगे पेर्म्मेय- ।
नान्तं नळ-नहुष-भरत-चरित-प्रतिमम् ॥
स्थिरमागि विष्णुवर्द्धन- ।
धरणीपाळंगे पट्टमागलोडं सा- ।
गरदन्तनहित-धरणी- ।
श्वररोडनेय्दित्तु विशदकीर्त्तिप्रसरम् ॥
पोडरदे साध्यमायूतु मलेयेल्लमुना-तुळु-देशवेल्लमुं ।
नडेये कुमार-नाडु-तळकाडुगळेम्बिवु कय्गे सार्द्दुव- ।
त्तडियिडे मुन्न्रि कन्न्रि वेसकेय्दुदु विष्णु-नृपं कृपाणमं ।
जडियदे मुन्न्र कोङ्ग-नृपरित्तरिभङ्गळनेम् प्रतापियो ॥
चोळ-नृपाळ-पाण्ड्य-नृप-केरळ-भूप-भुजावलेप-वि- ।
स्फाळननन्ध्र-गन्ध-गज-केसरी लाट-वराट-धारिणी- ।
पाळ-घनानिळं कदन-सूर-कदम्ब-वनाग्नि विष्णु-भू- ।
पाळनवार्य्य-शौर्य्य-निधियातन शौर्य्यमनारो कीर्त्तिपर् ॥

श्रीमन्महामण्डलेश्वरं । द्वारावतीपुरवराधीश्वरं । यादवकुलाम्बरद्युमणि मण्डलिक-चूडामणि शशकपुर-वसन्तिका-देवी-लब्धवर-प्रसादम् । दर-दळन्-मल्लिकामोदम् । परिहसित-शरदुदित-तुहिनकर-कर-निकर-हर-हसन-सु-रुचिर-विशद-यशश्चन्द्रिका-श्री-विलासम् । निरतिशय-निखिल-विद्या-विलासम् । विनमदहित-महिप-चूडालीढ-नूत्न-रत्न-रस्मि-जाल-जटिलित-चरण-नख-किरणम् । चतुस्समय-समुद्धरणम् । कर-कराळ-[illegible]-प्रचलित-दिशा-मण्डलम् । वीर-लक्ष्मी-रत्नकुण्डलम् । हिर-[illegible]र्भ-तुळापुरुषाश्व-रथ-विश्वचक्र-कल्पवृक्ष-प्रमुख-मख-शतमखम् । राज-विद्या-विलासिनीसखं । स्थिरीकृत-यादव-समुद्र-विष्णुसमुद्रोत्तुंग-रङ्गद्-

वहळतर-तरङ्गौघाच्छादित-दिशा-कुञ्जरम् । शरणागतवज्र-पञ्जरम् । आमळक-फळ-तुळित-मुक्ता-लता-लक्ष्मी-लक्षित-वक्षम् । त्रिवुध-जन-कल्प-वृक्षम् । विजयगज-घटोत्तरळ-कदलिका-कदम्ब-चुम्बिताम्बुदम् । प्रति-दिन-प्रवर्द्धमान-सम्पदम् । रिपु-नृप-लय-समय-क्षुभित-वार्द्धि-वीचि-चयोच्चळित-जात्यश्व-हेषा-रवपूरित-दिशा-कुञ्जम् । शस्तोदात्त-पुण्य-पुञ्जम् । इन्दु-मन्दाकिनी-निश्चळोदात्त-गुण-यूथम् । गण्डगिरि-नाथम् । चण्ड-पाण्ड्यवेदण्ड-कूट-पाकलम् । जगद्देव-बळ-कळकळं । चक्रकूटाधीश्वर-**सोमेश्वर**-मदमर्द्दनम् । **तुलु**-नृपासुर-जनार्द्दनम् । **कळपाळ**-तारक-मयूर-वाहनम् । **नरसिंह**-ब्रह्मसम्मोहनम् । **इरुङ्गोळ**-बळ-जळधि-कुम्भ-सम्भवम् । हत-महाराज-वैभवम् । दळितादियम-राज्य-प्रभावम् । कदम्बवन-दावम् । **चेङ्गिरि**-बळ-काळानळम् । जयकेशी-मेघानिळनेन्दिवु मोदलागे समस्त-प्रशस्ति-सहितम् । **तळकाडु-कोङ्गु-नङ्गलि-गङ्गवाडि-नोळम्बवाडि-मासवाडि-हुलिगेरे-हलसिगे-बनवसे-हानुङ्गल्लु-नाडु-गोण्ड** त्रिभुवनमल्ल भुजबळ वीर-गङ्ग-**होय्सळदेवम्** ॥

निरुपमिताङ्गियं रुचिर-कुन्तळेयं नुत-मध्येयं मनो- ।
हरतर-काञ्चियं धृतसरस्वतियं विलसद्विनीतेयम् ।
स्फुरदुरु-कीर्त्तिमन्मधुरेयं स्थिरवागिरे तन्न तोळोळोल्द् ।
इरिसिदनुर्व्वराङ्गनेयनप्रतिमं विभु-**विष्णु**-भूभुजम् ॥

तदीय-पाद-पद्मोपजीवि । निरन्तर-भोगानुभावि । जिनराज-राजत्-पूजा-पुरन्दरम् । स्थैर्य्य-मन्दिरम् । **कौण्डिन्यगोत्र**-पवित्रम् । **एचि-राज**प्रिय-पुत्रम् । **पोचाम्बिको**दारोदन्वत्-पारिजातम् । शुद्धोभयान्वय-सञ्जातम् । **कर्ण्णाट**धरामरोत्तंसं । दानश्रेयांसम् । कुन्देन्दु-मन्दाकिनी-विशद-यशःप्रकाशं । मन्त्र-विद्या-विकाशम् । जिन-मुख-चन्द्र-वाक्-

चन्द्रिका-चकोरम् । चारित्र-लक्ष्मी-कर्ण्णपूरम् । धृतसत्य-वाक्यम् । मन्त्रि-माणिक्यम् । जिन-शासन-रक्षामणि । सम्यक्त्व-चूडामणि । **विष्णुवर्द्धन**-नृप-राज्य-वार्द्धि-संवर्द्धन-सुधाकरम् । विशुद्ध-रत्नत्रयाकरम् । चतुर्विधानूनदानविनोदम् । **पद्मावती-देवी**-लब्ध-वर-प्रसादम् । भय-लोभदुर्लभम् । जयाङ्गना-वल्लभम् । वीर-भट-ललाट-पट्टम् । द्रोह-घरट्टम् । विबुध-जन-फळ-प्रदायकम् । हिरिय-दण्डनायकं । अप्रतिम-तेजम् । गङ्ग-राजम् ।

मत्तिन मातवन्तिरलि जीर्ण्ण-जिनालय-कोटियं क्रमं- ।
वेत्तिरे मुन्निनन्ते पल-मार्ग्गदोळं नेरे माडिसुत्तवत्य्- ।
उत्तम-पात्र-दानदोदवं मेरवुत्तिरे **गङ्गवाडि-तोम्-** ।
बत्तरु-सासिरं कोपणवादुदु **गङ्गण-दण्डनाथनिम्** ॥
नुडि तोदळादोडोन्दु पोणर्दझिदोडन्तेरडन्य-नारियोळ् ।
नुडिगेडेयागे मूरु मरे-वोक्करनोप्पिसे नाल्कु वेडिदम् ।
पडेयदोडय्दु कूडिदेडेगोगदोडारधिपङ्गे तप्पि व- ।
ईडे गडिवेळुवेळु-नरकङ्गळिवेन्दपनल्ते **गङ्गणम्** ॥

आ-गङ्ग-चमूपतिगं ।
नागल-देवीगमधीत-शास्त्रं पुत्रम् ।
चागद बीरद निधियुम् ।
भोग-पुरन्दरनुमप्प **बोप्प-चमूपम्** ॥
परमार्त्थं विद्वदर्त्थं तविसदनधनं व्यर्थवेन्दर्त्थिसार्त्थम् ।
निरवद्यं ज्ञातविद्यं दळित रिपु-मनोद्यं तिरस्कारितार्यं ।
धरे तन्न कीर्त्तिपन्नं त्रिबुध-ततिगे पोन्नं विपश्चित्प्रसन्नं
करेदीवं **बोप्प-देवं** समर-मुख-दशग्रीवनुद्यत्प्रभावम् ॥

समरायाताहित-क्षोणिभृदतुळवळोद्यानदोळ् पावकानु- ।
क्रमदिन्दं क्रीडिसुत्तुं रिपु-नृपति-शिरःकन्दुकक्रीडितं तत्-
समयोद्भूतारुणाम्भो-भरित-समर-धात्री-सरो-मध्यदोळ् त्रि- ।
क्रम-लक्ष्मी-लोलनोलाडुवनेरेद-बुधवर्गप्प दण्डेश-बोप्पम् ॥
लोभिगळं पोलिपुदे य- ।
शो-भाजननप्प बोप्प-दण्डेशनोळिन्नुं ।
ई-भू-भुवनदोळाहा- ।
राभय-भैषज्य-शास्त्र-दानोन्नतियिम् ॥

तदीय-गुरु-कुलम् ॥

गौतम-गणधररिन्दा-यात-परम्परेय **कोण्डकुन्दा**न्वय-वि-ख्यात-**मलधारि-देवर्** । प्पूत-तपोनिधिगळा-मुनीश्वर-शिष्यर् ॥ श्री-राद्धान्त-सुधाम्बुधि-पारग-**शुभचन्द्र-देव**-मुनिपर्व्विमळा-चार-निधि-गङ्ग-राजन ।
धीरोदात्ततेयनाळ्द **बोप्पन** गुरुगळ् ॥ जिन-धर्म्म-वनधि-परिवर्द्धन-चन्द्रं गङ्ग-मण्डलाचार्य्यर्-प्पावन-चरितरेन्दु पोगळ्वु [दु] जनं **प्रभाचन्द्र-देव-सैद्धान्तिकरम्** ॥
इवर्ब्बोप्प-देवन देवतार्च्चन-गुरुगळ् ॥

जळजभवङ्गविन्तु बरेयल् कडेयल् करुविट्टु गेय्यल- ।
त्तळगवेनिप्पुदं तोळप बेळ्ळिय-बेट्टने पोल्वुदं जगत्- ।
तिलकमनी-जिनालयमनेत्तिसिदं विभु-बोप्प-देवन- ।
गळ्ळिकेय राजधानिगळोळोप्पुव **दोरसमुद्र**-मध्यदोळ् ॥

गङ्ग-राजङ्गे परोक्षविनयवागि देवर्गे ।
सासिर देवत्तेदेन-ला-शकनट्टं प्रमादि-माधव-बहुळ- ।
श्री-सोमज-पञ्चमियोळ्सेने बोप्पं प्रतिष्ठेयं माडिसिदम् ॥

प्रतिष्ठाचार्य्यर् श्री-नयकीर्त्ति-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगळ् ॥
भ्रान्तिनोळेनो मुन्नेगळ्द चारण-शोभित-कोण्डकुन्देयोळ् ।
शान्त-रस-प्रवाहवेसेदिर्प्पिनविर्द्द मुनीन्द्र-कीर्त्तिया- ।
शान्तवनेय्दितन्तवर सन्ततियोळ् नयकीर्त्ति-देव-सै- ।
द्धान्तिक-चक्रवर्त्ति जिन-शासनमं बेळगल्के पुट्टिदं ॥

श्री-मूलसंघद देशिय-गणद पुस्तक-गच्छद कोंडकुन्दान्वयद हनसोगेय बळिय द्रोहघरट्ट-जिनालय[मु]-प्रतिष्ठानन्तर देवर शेषेयनिन्द्रर् कोण्डु-पोगि विष्णुवर्द्धन-देवर्गे बङ्कापुरदोळ् कुडुववसरदोळ् ।

कवियेरिंगेन्दु वन्दा-मसणनसम-सैन्यङ्गळं विष्णु-भूपं ।
तवे कोन्दा-प्राज्य-साम्राज्यमनतुळ-भुजं कोळ्वुदुं पुट्टिदं भू-
भुवनक्कुत्साहमागुत्तिरे बुध-निधि लक्ष्मी-महा-देविगागळ् ।
रवि-तेजं पुण्य-पुञ्जं दशरथ-नहुषाचार-सारं कुमारम् ॥
भूभृत्-पति-मद-करि-हरि-शोभास्पद नचळता-समुत्तुङ्ग श्री- ।
प्राभवनुदिताखण्डळ-त्रैभवनेंम् गोत्र-तिळकनादनो पुत्रम् ॥

अन्तु विजयोत्सवमुं कुमार-जन्मोत्सवमुमागे संतुष्ट-चित्तनागिर्द्द विष्णुदेवं पार्श्व-देवर प्रतिष्ठेय गन्धोदक-शेषगळं कोण्डु बन्दिर्द्दिन्द्ररं कण्डु बरवेळ्दिदिरेद्दु पोडेवट्टु गन्धोदकमुं शेषेयुमं कोण्डेनगी-देवर प्रतिष्ठेय-फलदिं विजयोत्सवमुं कुमार-जन्मोत्सवमुमादुवेन्दु सन्तोष-परम्परेयनेय्दि देवर्गे श्री-विजय-पार्श्व-देवरेम्ब पेसरुमं कुमारंगे श्री-विजय-नारसिंह-देवनेम्ब पेसरुमनिट्टु कुमारंगभ्युदय निमित्तमुं सकळ-शान्त्यर्थमुमागि विजयपार्श्व-चतुर्व्विंशति-तीर्थङ्कर त्रि-काल-पूजार्च्चनाभिषेकक्कमी-बसदिय खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारणक्कं जितेन्द्रियरप्प तपोधनराहार-दानक्कं आसन्दि-

नाड जावगल्लुमं वसदियिं वडगण वेनकन-मण्ठेयदिं मूडल्लु राज-हस्त-दल् नूरेण्मत्तु-हस्त-प्रमाण-भूमियोळिर्द्देरडु केरियुमनल्लिन्दाग्नेयद गोण्टिनल्लि नट्ट कल्लिन्दिर्व्वडगलागिर्द्देरडुं केरियुं तेल्लिगरिप्पत्तोकल्लवनल्लि पडुवल् माधवचन्द्र-देवर वसदिवरविद केरियुमनल्लि पडुवण हिरिय-दण्ड-नायकर मनेयिं पडुवल् तेङ्क-देशेय राज-वीथिय मूडण वेल्लूर केरिय हित्तिल् मेरेयागिर्द्द भूमियुमनल्लि वडगल् शिरियङ्गडिये गडि आसिरि-यङ्गडिय मूडण-कडे यरडङ्गडियु । जावगल्लु-सीमे (आगेकी ५ पंक्तियोंमें सीमाकी चर्चा है) इन्ती-स्थळविनितुमं श्री-विष्णुवर्द्धन-होय्सळ-देवं श्री-विजय-पार्श्व-देवर्गे धारा-पूर्व्वकं माडि कोट्टम् (वे ही अन्तिम श्लोक)

विदिताशेष-पदार्त्थ-तत्त-विजय-श्री-पार्श्व-देवोल्लसत्- ।
पद-पूजा-निचयक्के दान-महितं केय् गद्देयं पुण्य-वी- ।
जद पेर्च्चिङ्गे निवासमं सकळभव्याम्भोजिनीभास्करम् ।
मुददिं तेल्लिग-दास-गौण्ड-विभु कोट्टं सन्ततं सत्त्विनम् ॥
इदनूर्ज्जितमेने नीम्मा- ।
क्पुदेन्दु तेल्लिगर-दास-गावुण्डं पु- ।
ण्य-देव-पूजाकर-दान्- ।
ति-न्देव-विभुगमळ-वारि-धारेयनित्तम् ॥

दासगौण्डनहळ्ळिय कुम्बार-गट्टद केळगण-मट्टुविन मोट्टमेडियेयल्लु मूवत्तु-कोळग-गद्दे आ-यरडु-को.... नडुवण एरेय-केय्युळ्ळनितुं मूडल्लु ताव-रेयकेरे हडुवल्लु होल सीमे गडियागिद्द भूमियुळ्ळनितुमं तेल्लिगर-दास-गावुण्डनुं राम-गावुण्डनुं उत्तरायण-संक्रमणदल्लु श्री-विजय-पार्श्वदे-वरष्ट-विधार्च्चनेगे सर्व्व-बाधा-परिहारवागि पूजकर शान्तय्यङ्गे धारा-पूर्व्वकं कोट्टरु ॥

आरुं पोल्वरे युद्ध-दैत्य-विजय-श्री-पार्श्व-भट्टारको-
दार-श्री-पद-पङ्कज-भ्रमरनं सौजन्य-वाक्-सारनम् ।
सारोदार-जिनेश्वरार्च्चन-नियोगोद्योग-विश्रान्त···· ।
····श्री-वधु-कान्तनं पृथुल-कीर्त्त्याशान्तनं शान्तनं ॥

श्री-विजय-पार्श्व-देवर्गे विट्ट जावगल्लु गङ्गऊरदलि खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारक्के जावगल्लु । रङ्ग-भोगद विद्यावन्तरिगे गङ्गऊरु । श्रीमन्न-यकीर्त्ति-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगळ शिष्यरु नेमिचन्द्र-पण्डित-देवर श्री-मूलसंघद समुदायङ्गळु अवर शिष्य-सन्तानगळे ई-धर्म्मवना-चन्द्रार्क्क-तारंबरं सलेसुवरु ॥

[जिनशासनकी प्रशंसाके बाद पार्श्व-जिनेश्वरका माहात्म्य । होय्सल राजाओंके वंशकी परम्पराः—

ब्रह्म-अत्रि-सोम-पुरूरव-आयु-नहुप-ययाति-यदु, जिसके वंशमें सल उत्पन्न हुआ । जिस समय, सलके राज्यकी समृद्धिके लिये, कोई जैन-यतीश मन्त्रों-द्वारा शशकपुरकी पद्मावती देवीको वशमें कर रहा था, एक चीतेने उछल कर आक्रमण किया, चीता इससे उसकी सिद्धि भंग करना चाहता था । उसी समय योगीश्वरने अपने चामर (या पंखे) की मूठको पकड़कर कहा 'पोय् सळ' (सल, मारो): इतना उनके कहते ही उसने निडर होकर उसे मार दिया; उस समयसे यदु राजाओंका नाम 'पोय्सळ' पड़ गया और उनके झण्डेपर चीतेका चिह्न फहराने लगा । उस 'यक्षी' के प्रसादसे ऋतु वसन्त हो गई और उसी ऋतुके नामसे राजाने उसका 'वासन्तिका' देवीके नामसे पूजन किया ।

उसी वंशमें विनयादित्य उत्पन्न हुआ । उसका पुत्र एरेयंग था । उससे ... के द्वारा, ब्रह्मा, विष्णु और शिवकी तरह, बल्लाल, विष्णु और ... उत्पन्न हुए । इन सबमें विष्णुका नाम सबसे ज्यादा प्रसिद्ध ... । (उसकी दिग्विजयका वर्णन, उसकी प्रशंसा)

(उसके पदों और उपाधियोंका वर्णन) उसने तलकाडु, कोङ्ग, नङ्गलि, गङ्गवाडि, नोळम्बवाडि, मासवाडि, हुळिगेरे, हलसिगे, बनवसे और हानुङ्गल्पर अधिकार कर लिया था । इतना ही नहीं, अङ्ग, कुन्तल, मध्यदेश, काञ्ची, विनीत और मधुरा (वर्तमानका मदुरा) ये सब उसीके अधीन थे ।

तत्पादपद्मोपजीवी पुराना दण्डनायक गङ्गराज था । (उसकी बहुत-सी उपाधियोंका उल्लेख) उसने अगणित ध्वस्त जैन मन्दिरोंका पुनर्निर्माण कराया । अपने अनवधि दानोंसे उसने गङ्गवाडि ९६००० को कोपणके समान चमकाया । गंगकी रायमें सात नरक ये थेः—झूठ बोलना, युद्धमें भय दिखाना, परदारारत रहना, शरणार्थियोंको शरण न देना, अधीनस्थोंको अपरितृप्त रखना, जिनको पासमें रखना चाहिये उन्हें छोड़ देना, और स्वामीसे द्रोह करना ।

गंग-चमूपति और नागल-देवीसे बप्प-चमूप उत्पन्न हुआ । (उसकी प्रशंसा) ।

उसका गुरुकुल—गौतम गणधरकी परम्परामें विख्यात मलधारिदेव हुए, जो कुन्दकुन्दान्वयी थे । उनके शिष्य शुभचन्द्रदेव बोप्पके गुरु थे । गंगमण्डलाचार्य प्रभाचन्द्र-देव-सैद्धान्तिक उसके पूजनीय गुरु थे ।

यह जिनमन्दिर—जिसकी शोभा रजतमय कैलाशके समान थी—बोप्पदेवने दोरसमुद्रके बीचमें बनवाया । गङ्गराज (अपने पिता) की मृत्युके स्मारकमें (उक्त तिथिको) बोप्पने मूर्तिकी स्थापना की; प्रतिष्ठापक नयकीर्त्ति सिद्धान्त-चक्रवर्त्ती थे । (उनकी प्रशंसा) ।

श्री-मूलसंघ, देशिय-गण, पुस्तक-गच्छ, कोण्डकुण्डान्वय तथा इनसोगे-बलिके इस द्रोह-घरट्ट (पाप-नाशक) जिनालयकी स्थापनाके बाद, जिस समय पुरोहित (इन्द्रलोग) चढ़ाये हुए भोजन (शेष) को विष्णुवर्द्धनके पास बङ्कापुर ले गये,—उस समय राजा विष्णुने मसणको, जो अपार सेनाके साथ उसपर टूट पड़ा था, हराकर मार डाला, तथा उसका सारा साम्राज्य जब्त कर लिया, और उसी समय (रानी) लक्ष्मी-महादेवीके एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जो गुणोंमें दशरथ और नहुषके समान था, (अन्य प्रशंसाएँ), तब

राजाने उनका स्वागत कर प्रणाम किया तथा यह समझकर कि इन्हीं पार्श्वनाथ भगवानकी स्थापनासे उसकी युद्धमें विजय तथा पुत्रोत्पत्ति तथा सुख-समृद्धि हुई है, उसने देवताका नाम विजयपार्श्व तथा पुत्रका नाम विजय-नारसिंह-देव रक्खा।

अपने पुत्रकी समृद्धि तथा विश्व-शान्तिको बढ़ानेके लिये उसने आसन्दि-नाड्के जावगल्का इस मन्दिरके लिये दान किया। और भी (उक्त) बहुत-से दान दिये।

तेली दास-गौण्डने भगवानके लिये पुरोहित शान्ति-देवको भूमि-दान किया। पार्श्व-जिनकी अष्टविध पूजाके लिये दास-गौण्ड और राम-गौण्डने 'उत्तरायण संक्रमण' के समय (उक्त) दान दिये। शान्तिकी प्रशंसा। नेमिचन्द्र-पण्डित-देव इस कामकी व्यवस्थापर रक्खे गये। ये नयकीर्त्ति-सिद्धान्त-चक्रवर्तीके शिष्य थे।]

[EC, V, Belur tl., n° 124.]

३०२

कोल्हापूर—संस्कृत

[११२५ ई० (फ्लीट)।]

मूल लेख अक्टूबर १९०० ई० तक कहीं प्रकाशित नहीं हुआ था, ऐसा मि० जे. एफ. फ्लीटका कहना है। उन्होंने जो इस लेखका उल्लेख या संकेत किया है वह एक पाण्डुलिपि परसे किया है।

[यह लेख ११३५ ई० का है और कोल्हापुरमें पाया गया है। इसमें बताया गया है कि कवडेगोल्लके सन्तेय-मुद्गोडेमें 'महासामन्त' निम्ब-देवरसके द्वारा निर्मापित एक जैनमन्दिरके मूलनायक पार्श्वनाथ भगवानको कुछ स्थानीय महसूलोंका दान किया गया। लेखमें ७ व्यक्ति तथा उनके स्थानोंके नाम दिये हैं जिन्होंने दान किया था। यह दान कोल्हापुरकी रूपनारायण 'वसदि' के 'आचार्य' श्रुतकीर्त्ति त्रैविद्यदेवके लिये किया गया था। इस लेखमें 'कुण्डिपट्टन' नामके नगरका उल्लेख है। इस नगरके नामसे देशका नाम भी वही पड़ गया था।]

[IA, XXIX, p. 280, a]

अनुक्रमणिका ।

[विशेष नाम-सूची]

इस अनुक्रमणिकामें जैन मुनि, आर्यिका, कवि, संघ, गण, गच्छ, ग्रन्थ तथा राजा, रानी, गृहस्थों और सब प्रकारके स्थानोंके नाम समाविष्ट किये गये हैं। नामके पश्चात्के अंक लेख-नम्बर समझने चाहिये।

क

कि

की

कु

ज